अकबर की शायरी

[अकबर इलाहाबादी के भावपूर्ण व्यङ्ग कविताओं की अपूर्व पुस्तक]

[चारों भाग]

●

सम्पादक

श्री जगदीश नारायण गौड़

प्रकाशक

मातृ-भाषा-मन्दिर, इलाहाबाद

प्रथमावृत्ति] संवत् २०१५ [मूल्य ४)

प्रकाशक
हर्षवर्द्धन शुक्ल
व्यवस्थापक
मातृ - भाषा - मन्दिर
इलाहाबाद

मुद्रक
पन्नालाल सोनकर,
राष्ट्रीय मुद्रणालय, सम्मेलन मार्ग,
इलाहाबाद
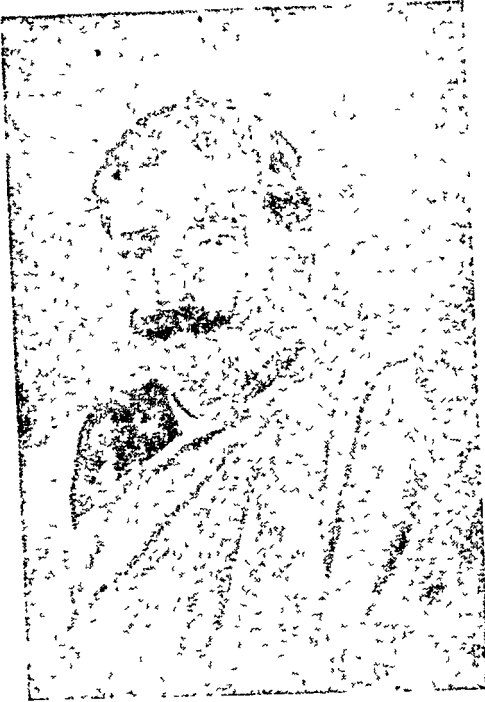
श्री जगदीश नारायण गौड़

आमुख

महाकवि अकबर

संस्कृत साहित्य का कथन है कि

"सजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ।"

उसी को यथार्थ में पैदा हुआ कहना चाहिये जिससे खानदान का सर ऊँचा हो। यह भी कहा गया है कि

गुणिगण गणना रम्भे न पतति कठिनी सुसम्भवा यस्य ।
तेनाम्बर यदि सुहनी वद वन्ध्या कीदृशी भवति ॥

गुणियों की फ़ेहरिस्त बनने के वक़्त जिस शख़्स का नाम उसमें नहीं आता उसकी माँ यदि बच्चे वाली कही जाय तो बतलाइये कि फिर बाँझ किसे कहा जाय ।

संस्कृत साहित्य की ये दोनों सूक्तियाँ कहाकवि अकबर पर पूर्ण रूप से लागू होती हैं ।

महाकवि अकबर का जन्म, जिला इलाहाबाद के बारा नाम की एक तहसील में १६ नवम्बर सन् १८४६ को हुआ था। उनके पिता तफज्जुल हुसैन साहब अरबी-फारसी के विद्वान थे। अकबर साहब बचपन ही से पढ़ने लिखने में बड़े ज़हीन थे। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" इम्तेहान में हमेशा दर्जे मे अव्वल रहते थे। अरबी फारसी की लियाक़त उनकी बपौती थी। १८६६ में आपने मुख़तारी का इम्तेहान अव्वल दर्जे में पास किया। थोड़े ही समय के बाद नायब तहसीलदार हो गये। इसके बाद हाईकोर्ट का इम्तेहान पास कर मुनसिफ़ हो गये और क्रमशः सब जज, जज खफ़ीफ़ा और सेसन्श जज हुए और १९०३ मे पेशन लेकर रिटायर हो गये। नौकरी से अवकाश ग्रहण करने के बाद प्रायः लोग कुछ करते धरते नहीं। ज़िन्दगी एक फर्ज है जीते चले जाते है और चूंकि ग़ालिब के शब्दो में "मौत का एक दिन मुक़र्रर है" वक्त मुरक़र्र पर मर जाते हैं।

अकबर साहब फरमाते हैं।

क्या कहें अहबाब क्या कारे नुमायाँ कर गये।
बी० ए० किया नौकर हुए, पेंशन मिली और मर गये॥

दुनियाँ में प्रायः लोगों की जीवनी इसी एक शर में लिखी जा सकती है। पर अकबर साहब इस तरह मरने के लिये नहीं पैदा हुए थे। मनुष्य जब पैदा होता है उसी वक्त इसका फ़ैसला स्वर्ग में इलकशन से हो जाता है कि वह भाग्यशाली होगा या नहीं। फरिश्ते वोट देते हैं। वहां न तो कनवैसिंग की गुंजाइश होती है और न जाली वोट ही गुज़रते हैं। वैलट वाक्स के बदलने का कोई सवाल नहीं उठता क्योंकि फ़रिश्ते खुली वोटिंग करते हैं। अकबर साहब की पैदाइश सब फरिश्तों ने मुत्तफ़िकः वोट दी कि यह मुश्ते खाक़ अपने व.क्त मे अपने रंग का लाजवाब शायर होगा। जिसके करीब पहुँचना किसी भी शायर के लिये दुश्वार होगा। वही बात हुई।

१९०३ में सैयद अकबर हुसैन की जीवन का पहिला कांड समाप्त हुआ और 'अकबर इलाहाबादी' का दूसरा कांड प्रारम्भ हुआ। हालाँ कि इस दूसरे बाब के लिये मसाला पहिले ही बाब में तैयार हो रहा था। पेंशन लेते ही अकबर साहब खुल खेले। अंग्रेजी मुलाजिमत में, जिसे कहते है 'Under ground' पोशीदा थे, पर आग, कितनी भी राख उस पर पड़ी हो, कहाँ तक पोशीदा रह सकती है। कुरेदने से शोले भड़क उठते ही है। 'मदखूलये गवर्नमेंट' होते हुए भी कुरेदने से मुंह से आह तो निकल ही जाती थी। ग़द्दार इसका मौका नहीं चूकते थे। सरकार आली जाह के क़दमों मे इसकी 'रपट' करते थे। अकबर साहब ने खुद एक जगह कहा है:—

रकीबों ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में।
कि अकबर नाम लेता है .खुदा का इस ज़माने में॥

दूसरी जगह आप फरमाते हैं :—

हुक्म अकबर को मिला है कि न लिखो अशआर।
ख़्वाजा हाफ़िज़ भी निकाले गये मयखाने से॥

पेंशन लेने के बाद जब अकबर साहब ने अपना साहित्यिक जीवन आरम्भ किया तो वे उस वक्त के रंग में लिखने लगे। हालाँ कि वे अशआर ऊँचे दर्जे के होते थे परन्तु उनका असर साहित्य ही के परिधि मे सीमित रहता। लोगों के दिलों में वह असर नहीं पड़ता था जो वे चाहते थे उससे लोगों के ज़ेहन को मस्ती तो होती थी पर आँखें नहीं खुलतीं वे लोगों की आंखें खोलना चाहते थे। वह चाहते थे कि आदमी अपनी असलियत समझे, अपना भला बुरा समझें। नकली फूलों को असली फूल न समझे। ये बातें उस वक्त के रंग के शायरी से हासिल नहीं होती थी। एक कान से आती और दूसरे से निकल जाती थी। उन्होंने खुद इसकी शिकायत की कि लोग कहते है :—

कहो जो चाहो सुन लेंगे, मगर मुतलक़ न समझेंगे।
तबीयत तो खुदा जाने कहां है, कान हाज़िर है॥

तब उन्होंने कान खींचना शुरू किया और अपनी शायरी का रंग बदला।

आप फ़रमाते हैं :—

क़हक़हों की मश्क़ से मैंने निकाला अपना काम।
जब किसी ने क़द्र आहो नालओ ज़ारी न की॥

इस रंग को उन्होंने जीवन पर्यन्त क़ायम रक्खा और उसमें उन्हे सफलता हुई।

अकबर साहब एक बाख़ुदा इन्सान थे। उनकी ईश्वर भक्ति पवित्र और असीम थी। केवल उनकी देश भक्ति उससे होड़ ले सकती थी। दोनों ही की झलक आपको उनके अशआर में मिलेगी।

आप फरमाते हैं :—

तद्बीर की कोई हद न रही और बिल आखिर कहना ही पड़ा।
अल्लाह की मरज़ी सब कुछ है बन्दे की तमन्ना कुछ भी नहीं॥

अतिब्बा को तो अपनी फीस लेना और दुवा देना।
.खुदा का काम है लुत्फो-करम करना और शफ़ा देना॥

किसी के मरने से यह न समझो कि जान वापस नहीं मिलेगी।
बईदशाने-करीम से है किसी को कुछ देके छीन लेना॥

आवागमन का सिद्धान्त इसमें निहित है।

हज़ार सान्इस रंग लाये हज़ार कानून हम बनायें।
.खुदा की क़ुदरत यही रहेगी हमारी हैरत यही रहेगी॥

.खुदा का घर बनाना है तो नकशा ले किसी दिल का।
ये दीवारों की क्या तजवीज़ है जाहिद ये छत कैसी॥

ग़ुरूर उनको है मुझको भी नाज़ है अकबर।
सिवा .खुदा के सब उनका फ़क़त ख़ुदा मेरा॥

जब मैं कहता हूँ कि ऐ अल्लाह मेरा हाल देख।
हुक्म होता है कि अपना नामये-आमाल देख॥

ईश्वर मे अगाध भक्ति और आत्म समर्पण के अनेकानेक शेर उनके दीवान में बिखरे पड़े है। ज़ाहिर सी बात है कि जिस शख़्स के दिल मे .खुदा के लिये इस ऊँचे दर्जे की इबादत थी उसके लिये दुनिया की कोई वक़अत नहीं थी। दुनिया उनके लिये प्रलोभनों का स्थान और .खुदा से ग़ाफिल करने की एक मशीन थी। दुनिया में रहते हुए, दुनिया के फ़रायज़ को अदा करते हुये वे उससे अलग रहते थे। वे दुनिया रूपी रंग मञ्च पर अपना पार्ट ख़त्म कर अपने में लीन हो जाते थे। आपने .खुद एक जगह कहा है :—

दुनिया मे हूँ, दुनिया का तलबगार नहीं हूँ।
बाज़ार से गुज़रा हूँ, खरीदार नहीं हूँ॥

जिन्दा हूँ मगर जीस्त की लज़्ज़त नहीं बाकी।
उलझूँ किसी दामन से वो मैं ख़ार नहीं हूँ॥

इसे हम आख़िरत कहते हैं जो मशग़ूल हक़ रक्खे।
ख़ुदा से जो करे ग़ाफ़िल उसे दुनिया समझते हैं॥

अकबर से मैंने पूछा ऐ वायज़े-तरीक़त।
दुनियाये-दूँ से रक्खूं मैं किस क़दर तअल्लुक़॥
उसने दिया बलाग़त से यह जवाब मुझको।
अंग्रेज़ का है नेटिव से जिस क़दर तअल्लुक॥

ग़रीब अकबर के गिर्द क्यों है जनाबे-वाइज़ से कोई कह दें।
उसे डराते हो मौत से क्या वोह जिन्दगी ही से डर चुका है॥

अजल से वो डरें जीने को जो अच्छा समझते हैं।
यहां हम चार दिन की ज़िन्दगी को क्या समझते है॥
मौत को देखा तो दुनिया से तबीयत फिर गई।
उठ गया दिल दहर से दौलत नज़र से गिर गई॥

फ़ना का दौर जारी है मगर मरते है जीने पर।
तिलस्मे-ज़िन्दगानी भी अजब एक राज़े-फ़ितरत है॥

मैं पहिले कह चुका हूँ कि अकबर साहब एक बा.ख़ुदा इन्सान थे। अकसर देखा गया है कि ऐसे शख्स हँसी मज़ाक़ पसन्द नहीं करते। पर अकबर साहब का मुदआ तो इन्सान को इन्सान बनाना था फ़रिश्ता नहीं। किसी उस्ताद का कहना है कि

फ़रिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना।
मगर इसमे पड़ती है मेहनत ज़ियादा॥
हमने माना हो फ़रिश्ते शेख़जी।
आदमी होना बड़ा दुश्वार है॥

यही वजह है कि उन्होंने अपनी शायरी का रंग बदल दिया और मज़ाक और तानों के ज़रिये आदमियों को गुदगुदा कर उनको जगाने और उनकी आखें खोलने लगे। इस तर्ज़ शायरी का लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। उनके कलाम दिलों के भीतर तीर की तरह चुभते थे और भूला हुआ आदमी शर्म से सर झुका देता था। उनके अशआर में वह ताज़गी थी जो दिलों को

लहलहा देती थी। उनके कलाम के बा असर होने का राज यह था कि उनमें सदाक़त थी। वे दिल से कहते थे। वे दिल पर बीती हुई कहते थे। आप खुद फ़रमाते हैं :—

शेरे अकबर मे कोई कशफो क़रामात नही।
दिल पै गुज़री है और कोई बात नहीं॥

मेरा यह शेरे-अकबर एक दफ्तर है मआनी का।
कोई समझे न समझे हम तो सब कुछ कह गुज़रते हैं॥

कलाम कहने के वक्त उनका दिल सिसकियाँ लेता था मगर अलफाज़ हँसते और हँसाते हैं। कोई विपय ऐसा नहीं था, क्या साहित्यिक, क्या नीतिक और क्या आध्यात्मिक व मज़हबी और क्या सामाजिक, जिनमें गुमराह आदमियों पर उन्होंने फबतियाँ न कसी हों। हां, उनके कहने का तर्ज हमेशा मोहज्ज़ब होता था। उनका उसूल जो उन्होंने खुद फ़रमाया है, यह था

क़लई तो रियाकार की खुलती रहे अकबर।
ताने से मगर तर्जे-मुहज्ज़ब भी न छूटे॥

उनके तानों के कुछ नमूने पेश करता हूँ।

नज्द मे भी मग़रिबी तालीम जारी हो गई।
लैल ओ-मजनू में आख़िर फौजदारी हो गई॥
ख़ुदा के फ़ज्ल से बीवी मियाँ दोनों मुहज्ज़ब हैं।
हिजाब उनको नहीं आता इन्हे ग़ुस्सा नहीं आता॥
बे परदा नज़र आई जो कल चन्द बीबियाँ।
'अकबर' ज़मीं पै ग़ैरते-क़ौमी से ग़ड़ गया॥
पूछा जो मैंने आपका परदा कहाँ गया।
कहने लगीं कि अक़्ल पै मरदों के पड़ गया॥
तालीम लड़कियों की ज़रूरी तो है मगर।
ख़ातूने-ख़ाना हों सभा की परी न हों॥
जीइल्मो मुत्तक़ी हों वले उनके मुन्तज़िम।
उस्ताद पूरे हों मगर उस्ताद जी न हों।

हज़ार शेख ने दाढ़ी बढ़ाई सनकी सी .ज़मानी है ॥
मगर वह बाठ कहाँ मालनी मदन की सी ॥

एक मर्तबा कलकत्ते की मशहूर तवायफ इलाहाबाद आई और अकबर साहब की क़दम बोसी के लिये इशरत मंजिल उनसे मिलने गई। गौहर ने उनसे कोई नया कलाम सुनाने के लिये इल्तेमास किया। अकबर साहब ने फ़रमाया कि मजबूरियों की वजह से उन्होंने बहुत दिनों से कुछ लिखा नहीं है। गौहर के इसरार करने पर एक शेर बर्जस्ता उन्होंने फ़रमाया :—

.खुशनसीब आज यहाँ कौन है गौहर के सिवा।
सब कुछ अल्लाह ने दे रक्खा है शौहर के सिवा ॥

गौहर उछल पड़ी .खुदा जाने शरमाई या नहीं।

मज़हब :- अकबर साहब ने मुल्क को मज़हब पर तरजीह दी है उनके लिये वह मज़हब जो मुल्क को ऊपर नहीं उठाता, जो भाई-भाई में निफ़ाक़ पैदा करता है वह सच्चा मज़हब नहीं है। ऐसा मज़हब कलाम पाक के ख़िलाफ है। आप फ़रमाते हैं

लफ़्ज़ मज़हब पर हमें हरदम अकड़ना चाहिये।
इसके मानी यह हुए आपस मे लड़ना चाहिये ॥

अगर मज़हब ख़लल अंदाज़ है मुल्की मक़ासिद में।
तो शेख़ो-बरहमन पिनहाँ रहे दैरो-मसजिद में ॥

बुजुर्गों का अदब अल्लाह का डर शर्म आँखों में।
इन्हीं औसाफ़ की जानिब मज़ाहिब का इशारा है ॥

पंडित को भी सलाम है और मौलवी को भी।
मज़हब न चाहिये मुझे ईमान चाहिये ॥

.खुदा ही की इबादत जिनको हो मक़सूद ऐ अकबर।
वो क्यों बाहम लड़ेंगे फ़र्क हो तर्ज़ इबादत मे ॥

शोर क्यों गब्रो-मुसलमाँ ने मचा रक्खा है।
दैर में कुछ नहीं काबे मे क्या रक्खा है ॥

मज़हबी बहस मैंने की ही नहीं।
फ़ालतू अक़्ल मुझमें थी ही नहीं॥

नई रोशनी :—

अकबर साहब नई रोशनी के सख़्त खिलाफ़ थे। वे तरक़्क़ी के हामी थे पर उसके लिये ख़ुदकुशी करने के खिलाफ़ थे। इस मसले पर उन्होंने बड़ी चोट की है आप फ़रमाते हैं :—

मुरीदे-दहर हुए वज़ा मग़रबी कर ली।
नये जनम की तमन्ना में ख़ुद कुशी कर ली॥

नई नई लग रही हैं आँचें ये कौम वे कस पिघल रही है।
न मशरक़ी है, न मग़रबी है, अजीब साँचे में ढल रही है॥

हमको नई रविश के हलक़े जकड़ रहे हैं।
बातें तो बन रही हैं और घर बिगड़ रहे हैं॥

नज़र उनकी रही कालिज में बस इल्मी क़वायद पर।
गिरा कीं चुपके चुपके बिजलियाँ दीनो अक़ायद पर॥

नई तहज़ीब मे दिक्क़त ज़ियादा तो नहीं होती।
मज़ाहिब रहते हैं क़ायम फ़कत ईमान जाता है॥

नहीं कुछ इसकी पुरशिस उल्फ़ते-अल्लाह कितनी है।
यही सब पूछते हैं आपकी तनख़्वाह कितनी है॥

तिफ्ल में बू आये क्यों माँ बाप के अतवार की।
दूध तो डब्बे का है, तालीम है सरकार की॥

मजहब छोड़ो, मिल्लत छोड़ो, सूरत बदलो, उम्र गंवावो।
सिर्फ 'किलर की' की उम्मीद, और इतनी मुसीबत, तौबा-तौबा॥

मजहब ने पुकारा ऐ अकबर अल्लाह नहीं तो कुछ भी नहीं।
यारों ने कहा यह क़ौल गलत तनख़्वाह नहीं तो कुछ भी नहीं॥

वाह ! क्या धज है मेरे भोले की।
शक्ल कोले की हैट सोले की॥

स्फुटित :—उपहास।

मार डंडो फोड़ देता इश्क़ के इज़हार पर।
शुक्र कर मजनू कि लैला के कोई भाई न था॥

उसकी बेटी ने उठा रक्खी है दुनिया सर पर।
ख़ैरियत गुज़री की अंगूर के बेटा न हुआ॥
हम तो इन्साँ से हुए जाते हैं बन्दर ऐ हजूर।
आप ख़ुश क़िस्मत थे जो बन्दर से इन्साँ बन गये॥

इत्यादि

इस छोटी सी भूमिका में अकबर साहब का रूप खड़ा कर देना असम्भव है। उसके लिये एक छोटा सा दीवान चाहिये और लिखने वाला दीवाना होना चाहिये। अकबर साहब इलाहाबाद की एक बे मिसाल देन थे। देश को उन पर नाज है। मुख़तसिर से आदमी, मुखतसिर सी डाढ़ी, मुखतसिर सा रहन सहन। परन्तु हृदय इतना विशाल और नज़र इतनी पैनी कि उसकी थाह पानी मुशकिल। खुश्क आँखों से चन्द पोशीदा आँसू से दरिया बहा देने और दिल को कुरेदने मे उन्हे कमाल हासिल था। गम्भीर से गम्भीर विषय को हास्य और व्यंग के पुट से मानव हृदय में बैठा देना उन्हीं का हिस्सा था।

उनके वक्त में किसी पत्रिका के सम्पादक ने उनसे कुछ अशआर माँगे। अकबर साहब के दिल मे बड़ी मुरौवत थी। उन्होंने एक पत्र के साथ कुछ अपनी कृतियाँ भेजी। खत मुख़्तसिर था और इस मजमून का था :—

जनाबमन

"ये परचा जिसमें चन्द अशआर है इरसाले खिदमत है।
मेरे ये लख़्त-दिल है, आपका माले-तिजारत है॥

नियाज़ मन्द

अकबर साहब जिस वक्त सब जज थे एक पारसी महोदय जिनका नाम रुस्तम जी था, सेशन्स जज थे। रुस्तम जी एक जाबिर आदमी थे। उनसे सब डरते थे। हरजुर्म की कड़ी सज़ा देते थे। खून के मुजरिम को थोड़ी सी शहादत पर फाँसी लटका देना उनके बाँये हाथ का खेल था। वे जब रिटायर हुए तो लोगों

ने उभर कर साँस ली। विदा के लिये एक जलसा हुआ। कुरसियों पर लोग क़ायदे से बैठे थे। रुस्तम जी के आने का वक्त गुज़र गया। पर वे नहीं आये। लोगों ने बहुत देर तक उनका इन्तज़ार किया। आख़िर कार कुरसी पर रुस्तम जी की तसवीर रख दी गई। कुरसियाँ अपनी जगह से खसकने लगीं। अकबर साहब ने कुछ लोगों को जो शायर थे और मजमे में शामिल थे करीब बुला लिया उस महफ़िल में एक घरेलू समा हो गया। कारवाई शुरू होने ही वाली थी कि रुस्तम जी आ गये। लोग अपनी-अपनी जगह भागे। इस भाग दौड़ में कुरसियाँ तितर बितर हो गईं और थोड़ी देर के लिये एक हंगामा सा हो गया। रुस्तम जी आकर कुरसी पर बैठे। बगल में अकबर साहब बैठे। अकबर साहब स्पीच के लिये उठे और शुरू ही में बरजस्ता एक शेर पढ़ा।

रंग सब जज का उड़ा तसवीर जज के सामने।
अकबरी दरबार रुस्तम का अखाड़ा हो गया॥

अकबर साहब के रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं हो सकती। हालाँ कि उनका देहावसान हो गया है फिर भी वे अब तक हमारे बीच में मौजूद हैं। एक उस्ताद के लफ्जों में:—

मर के टूटा है कहीं सिलसिलये-क़ैदे-हयात?
हाँ, मगर इतना हैं ज़ंजीर बदल जाती है॥

अकबर साहब का दर्शन अब भी किया जा सकता है। मगर देखने वाले की आँखें बन्द होनी चाहिये।

मैं अपनी श्रद्धाञ्जलि उन्हें अर्पण करता हूँ।

१ सरोजिनी नायडू मार्ग — ब्रज मोहन व्यास
इलाहाबाद
८ अक्टूबर १९५८

अकबर की शायरी

दिल मेरा जिससे बहलता कोई ऐसा न मिला।
बुत[१] के बन्दे मिले अल्लाह का बन्दा न मिला॥
बज़्में[२] यारों से फिरी बादे बहारी[३] मायूस।
एक सर भी उसे आमादये सौदा[४] न मिला॥
गुल के ख़्वाहाँ[६] तो नज़र आये बहुत इत्र फ़रोश[७]।
तालिबे[८] रम्ज़[९] मये बुलबुले शैदा[१०] न मिला॥
वाह क्या राह दिखाई है हमें मुर्शिद[११] ने।
कर दिया काबे को गुम और कलीसा[१२] न मिला॥
रंग चेहरे का तो कालिज ने भी रक्खा कायम।
रंग बातिन[१३] में मगर बाप से बेटा न मिला॥
सय्यद उट्ठे जो गज़ट[१४] ले के तो लाखों आये।
शेख़ क़ोरान दिखाते फिरे पैसा न मिला॥
होशियारों मे तो एक एक से सवा हैं "अकबर"।
मुझको दीवानों में लेकिन कोई तुझ सा न मिला॥

---

(१) मूर्ति (२) मजलिस (३) बहार की हवा (४) नाउम्मीद (५) पागलपन (६) चाहने वाले (७) बेचनेवाला (८) चाहने वाला (९) भेद (१०) आशिक़ (११) गुरू (१२) गिर्जा (१३) छिपा हुआ (१४) गवर्नमेन्ट का अख़बार।

हिज्र[१] में ख़ूने जिगर आख़िर को पीना ही पड़ा।
मौत भी आई नहीं मजबूर जीना ही पड़ा॥
क़ल्बे[२] इन्सॉं में कभी पड़ जाती है इक नेक बात।
जब पड़ा लेकिन तुम्हारे दिल मे कीना[३] ही पड़ा॥
वज़[४] इनकी देखकर लाज़िम[५] हुई कतये[६] उम्मीद।
कल[७] सितम[८] की चल रही थी मुँह को सीना ही पड़ा॥
तजरूबे के बाद नोस्ख़े से कंटा आख़िर गुलाब।
लख़लख़े[९] में तेरे आरिज़[१०] का पसीना ही पड़ा॥
दिल भी काँपा होंठ भी थर्राये शरमाया भी ख़ूब।
शेख़ को लेकिन तेरी मजलिस[११] मे पीना ही पड़ा॥
उल्फ़ते अहमद पै तकमीले[१२] ईमाँ थी ज़रूर।
राह हक[१३] जोई[१४] में ऐ "अकबर" मदीना ही पड़ा॥

× × ×

जलवा[१५] नज़र आया नही ऐ यार तुम्हारा।
तड़पा ही किया तालिबे दीदार[१६] तुम्हारा॥
बढ़ने तो ज़रा दो असरे जज़बये दिल[१७] को।
क़ायम नहीं रहने का यह इन्कार तुम्हारा॥
दम भर के लिये आके उसे शक्ल दिखा जाओ।
मेहमान दमे चन्द है बीमार तुम्हारा॥
हर दम नज़रे शौक किया करता हूँ तुम पर।
हर वक़्त मैं रहता हूँ गुनहगार तुम्हारा॥

---

(१) जुदाई (२) दिल (३) मैल (४) तौर तरीक़ा (५) ज़रूरी (६) बिल्कुल (७) मशीन (८) ज़ुलम (९) एक क़िस्म की दवा (१०) गाल (११) महफिल (१२) पूरा होना (१३) सच्चाई का रास्ता (१४) ढूंढ़ना (१५) चमक (१६) देखने की ख़्वाहिश (१७) दिल का उमंग।

सदमे[1] शबे फुर्क़त[2] के उठाये नहीं जाते।
अब मौत का तालिब[3] है तलबगार तुम्हारा॥
आज़म[4] हो तुम ऐ हज़रते दिल कूयेबुतां[5] के।
अल्लाह रहे यार व मददगार तुम्हारा॥
किस नाज से कहता है शबेवस्ल[6] वह ज़ालिम।
बरहेम[7] न करे गेसुओ[8] को प्यार तुम्हारा॥
"अकबर" की तमन्नाओं से कहता है यह गरदूं[9]।
इस दौर[10] से उठने का नही वार तुम्हारा॥

× × ×

फ़ितरत[11] में सिलसिला है कमालो[12] ज़वाल[13] का।
घटना है बदर[14] का तो है बढ़ना हलाल[15] का॥
परतो[16] जो इसमें है तेरे हुस्न व जमाल[17] का।
आलम[18] है शेफ्ता[19] मेरे रंगे ख़्याल का॥
नज़्ज़ारा[20] कर रहा हूँ बुते बेमिसाल का।
शाने खोदा है साथ शबाबो[21] जमाल का॥
हम अपने फक्र[22] में भी हैं एक आन बान से।
कमली हमारी रंग दिखाती है शाल का॥
इस मिसपे कौन मेरे सिवा हो फरेफ्ता[23]।
गाहक मैं ही हूं हिन्द मे लन्दन के माल का॥

---

(१) रंज (२) जुदाई की रात (३) चाहनेवाला (४) बड़ा (५) माशूक की गली (६) मिलन की रात (७) गुस्सा (८) बाल (९) आसमान (१०) जमाना (११) चाल की बातें। (१२) बलन्दी (१३) घटना (१४) पूरणमासी का चाँद (१५) दुइज का चाँद (१६) अक्स (१७) ख़ूबसूरती (१८) ज़माना (१९) आशिक़ (२०) देखना (२१) जवानी (२२) फकीरी (२३) आशिक।

रखना पड़ा है उस बुते काफ़िर[१] से मेल जोल।
मौक़ा नहीं है बहेस हरामो हलाल का॥
उल्फ़त[२] में फ़र्ज़ है बुते काफ़िर का इत्तेबा[३]।
मौक़ा नहीं है बहेस हरामो हलाल का॥
दौरे फलक[४] में चांद की क़िसमत भी ख़ूब है।
बस है उरूज[५] ख़ात्मा इसके ज़वाल का॥
एक अक्स नातमाम पे आलम को वज्द[६] है।
क्या पूछना है आपके हुस्न व जमाल का॥
माज़ी[७] तो ख़त्म हो चुका मुस्तक़बिल[८] आयेगा।
मुमकिन नहीं बयान करूँ हाल हाल का॥
बुलबुल की शाख़ गुल पे न बाकी रहे नज़र।
नशाद नुमा[९] जो देखले उस नौनिहाल[१०] का॥

× × ×

तरीके इश्क मे मुझको कोई कामिल[११] नहीं मिलता।
गये फरहाद व मजनूँ अब किसी से दिल नही मिलता॥
भरी है अंजुमन[१२] लेकिन किसी से दिल नही मिलता।
हमी मे आगया कुछ नुक्स[१३] या कामिल नहीं मिलता॥
पुरानी रोशनी मे और नई में फ़र्क इतना है।
उसे किश्ती नहीं मिलती इसे साहिल[१४] नहीं मिलता॥
पहुँचना दाद[१५] को मज़लूम[१६] का मुश्किल ही होता है।
कभी काजी नहीं मिलते कभी कातिल नहीं मिलता॥
हरीफों[१७] पर ख़ज़ाने हैं खुले या हिज्र[१८] गेसू है।

---

(१) माशूक़ (२) मोहब्बत (३) ताबेदारी (४) आसमान (५) ऊँचाई या बलन्दी (६) झूमना (७) गुज़रा हुआ (८) आने वाला (९) बढ़ना (१०) नया पौदा (११) पूरा (१२) महफ़िल (१३) बुराई (१४) किनारा (१५) मदद (१६) सताया हुआ (१७) दुश्मन (१८) जुदाई।

वहां पेविल[१] है और या साँप का भी विल नहीं मिलता ॥
यह हुस्न व इश्क़ ही का काम है शुबहा करें किस पर ।
मिज़ाज़ इनका नही मिलता हमारा दिल नहीं मिलता ॥
हवास[२] व होश गुम है वहरे इरफाने[३] इलाही में ।
यही दरिया है जिसमें मौज[४] को साहिल[५] नहीं मिलता ॥

× × ×

न किताबों से न क़ालिज के है दर से पैदा ।
दीन[६] होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा ॥
जो ख़िरदमंद[७] हैं वह ख़ूब समझते हैं यह बात ।
ख़ैर ख्वाही वह नहीं है जो हो डर से पैदा ॥
रंज दुनिया से बहुत मुज़तीरवुलहाल[८] था यह ।
दिल में तसकीन हुई मज़हब के असर से पैदा ॥

× × ×

वह हिजाव[९] उनका आज तक न गया ।
न गया उनके दिल से शक न गया ॥
एक झलक उनकी देखली थी कभी ।
वह असर दिल से आज तक न गया ॥
क्या ठहरता हमारे आगे ग़ैर ।
देखिये आख़िरश खिसक न गया ॥

× × ×

सीने का ज़ख़्म[१०] आह की सख़्ती से छिल गया ।
अच्छा हुआ मज़ा तो मोहब्बत का मिल गया ॥
ऐसे सितम[११] किये कि मेरा क़ल्ब[१२] हिल गया ।
और इस तरह कि सीने का का हर दाग़ छिल गया ॥

---

(१) अंगरेजी लब्ज़ है इसके मानी तंख्वाह का बिल (२) सूझ-बूझ (३) पहचान (४) लहर (५) किनारा (६) मज़हब (७) अक़िलमंद (८) परेशान हाल (९) शर्म (१०) घाव (११) ज़ुल्म (१२) दिल ।

तेरा पता चमन को सबा[१] से जो मिल गया।
बुलबुल को वज्द[२] आगया गुंचा भी खिल गया॥
तालीम मज़हबी का खुलासा यही तो है।
सब मिल गया उसे जिसे अल्लाह मिल गया॥
होता है इनबेसात[३] ग़िजायेलतीफ़[४] से।
गुंचे को देखिये कि हवा खा के खिल गया॥
किसने निगाहे नाज़ से देखा है इस तरफ।
फ़रियाद कर रहा है जिगर हाय दिल गया॥
ख़ुश किस्मतीये अपनी बजा है करूं जो नाज़।
अपने ही दिल में मुझको मेरा रब[५] भी मिल गया॥
खुलता नहीं कि शेख़ से "अकबर" ने क्या कहा।
आया था जोश दिल से मगर मुज़महिल[६] गया॥

× × ×

वह मुज़तरिब[७] और वह साज़ व गाना बदल गया।
नींदें बदल गईं वह फ़िसाना[८] बदल गया॥
रंगे रुखे बहार की ज़ीनत[९] हुई नई।
गुलशन में बुलबुलो का तराना बदल गया॥
फितरत[१०] के हर असर में हुआ एक इंक़लाब[११]।
पानी फ़लक[१२] पे खेत में दाना बदल गया॥
हर शहर आफियत[१३] की नई तर्ज़ पर बँधी।
वह चौकियाँ बदल गईं थाना बदल गया॥

× × ×

जो नासेह[१४] मेरे आगे बकने लगा।

---

(१) सुबह की हवा (२) झूमना (३) खुशी (४) अच्छा खाना. (५) ईश्वर (६) रंजीदा (७) परेशान (८) क़िस्सा (९) सजावट खूब सूरती (१०) चालफेर (११) उलट फेर (१२) आसमान (१३) आराम (१४) नसीहत करनेवाला।

में क्या करता मुँह उसका तकने लगा ॥
मोहब्वत का तुमसे असर क्या कहूँ ।
नज़र मिल गई दिल धड़कने लगा ॥
वदन छू गया आग सी लग उठी ।
नज़र मिल गई दिल धड़कने लगा ॥
रकीबों[१] ने पहलू दवाया तो चुप ।
मैं बैठा तो ज़ालिम सरकने लगा ॥
जो महफ़िल मे "अकवर" ने खोली ज़वान ।
गुलिस्ताँ[२] मे वुलवुल चहकने लगा ॥

× × ×

खोदा ने अक़्ल की नेयामत[३] अता की मेहरवाँ होकर ।
अदाये शुक्र कर दीवानये हुस्ने वुता होकर ॥
खुलें वह शर्मगी[४] आँखे शवे वसलत[५] जवाँन होकर ।
मोहब्वत की नज़र ने दी इजाज़त मुझको हा होकर ॥
कमाल इस दामेगेसू[६] में था या कुछ नोक़्स[७] था दिल मे ।
फँसा आखिर यह क्योकर तायरे[८] अर्शे[९] आशियां[१०] होकर ॥
अता[११] करकिस्मतेतसनीफे[१२] 'सादी' यारव इस गुलको ।
फले फूले जमाने मे गुलिस्ता वोस्ताँ होकर ॥
मुझी से सव यह कहते है कि नीची रख नज़र अपनी ।
कोई इनसे नही कहता न निकलो यों अयाँ[१३] होकर ॥
झुकाया है जवी[१४] को आसताने[१५] यार पर मैंने ।

---

(१) दुश्मन (२) वाग़ (३) उम्दा चीज़ (४) शर्म से भरी हुई (५) मुलाकात की रात (६) वाल का जाल (७) वुराई (८) चिड़िया (६) आसमान (१०) घोंसला (११) वख़्शना (१२) लिखना (१३) ज़ाहिर होना (१४) मत्था (१५) चौखट ।

सआदत[1] है अगर रह जाय संगे आसतां होकर ॥
कमाल इनकी इनायत[2] है नेहायत मेहरबानी है ।
कहीं आयें मोहल्ले में इन्हें जाना यहां होकर ॥
अगर अल्लाह देता कूअते गुफ्तार[3] शमओ[4] को ।
तो दादे[5] हिम्मते परवाना देतीं एक ज़वां होकर ॥
हवाये नफ्स[6] से होकर अलग उलफ़त में मर जाना ।
वह हालत है कि रह जाती है जिन्दा दास्तां[7] होकर ॥
मजाले गुफ्तगू[8] किसको है उनके हुस्न के आगे ।
ज़बानें बन्द करदीं इन बुतों ने बेज़बॉ होकर ॥
करीबे ख़त्म थी मजलिस, कि आ निकले इधर वह भी ।
ग़रज़ वायेज़ की मेहनत रह गई सब रायगॉ[9] होकर ॥
यह इरशाद[10] आपका बिल्कुल बजा है हजरते वायेज ।
मगर मैं क्या कहूं कुछ बन नहीं पड़ती जबॉं होकर ॥
निगाहें मिल गईं थीं मेरी उनकी रात महफ़िल में ।
यह दुनियां है बस इतनी बात फैली दास्तॉ होकर ॥
फिरी क़िमस्त हवा की आपकी ज़ुल्फों के सदके[11] में ।
परेशां हो के उट्ठी थी चली अंबरफिशॉ[12] होकर ॥

× × ×

हरलहजा[13] देखता हूं ज़माने की शान और ।
गोया ज़मीन और है और आसमान और ॥
दिल उस बुतेफिरङ्ग[14] से मिलने की शक्ल क्या ।
मेरा तरीक़ और है उसको है शान और ॥

---

(१) नेकबख़्ती (२) मेहरबानी (३) बातचीत (४) बत्ती (५) तारीफ़ (६) ख़्वाहिश (७) किस्सा । (८) बातचीत (९) बेकार (१०) हुक्म (११) नेवछावर (१२) अंबर गिराने वाली (१३) हर वक़्त (१४) मेम ।

क्यों कर ज़बाँ मिलाने की हसरत बयाँ करूँ।
इसकी ज़बान और है मेरी ज़बान और॥

× × ×

ख़्याले इज़्ज़ते मजनू न छोड़ ऐ दामने मजनू।
नहीं है होश इसको खुद तो उड़जा धज्जियाँ होकर॥
नगीने बेबहा[1] था दिल ज़रूरत थी हिफाज़त की।
तेरा नक्शे तसव्वर[2] इसमें बैठा पासबाँ[3] होकर॥
मेरी ज़रदीय रुख़[4] का ज़िक्र है लबहाय[5] जाना पर।
मज़ा देखो कि हलुवे मे पड़ा हूँ ज़ाफ़रों होकर॥
बलन्दीये मरातिब[6] से तलव्वन[7] हो गया पैदा।
बदलते हैं हज़ारों रंग अब वह आसमां होकर॥
इसी से आशकारा[8] है बलन्दी तेरे ईवाँ[9] की।
पड़ा है आसमाँ भी तेरे दर पर आस्ताँ होकर॥
मैं पछताया तलाशे पीर[10] की देकर सलाह उनको।
हुये वह और भी ज़ालिम मुरीदे आसमां होकर॥
बहार आई खिले गुल ज़ेबे[11] सहने बोस्ताँ[12] होकर।
अनादिल[13] ने मचाई धूम सरगरमे फोग़ाँ[14] होकर॥
बिछा फर्शे ज़मुर्रद[15] ऐहतेमामे[16] सब्ज़यें तर में।
चली मस्तानावश[17] बादेसबा[18] अम्बर फिशां होकर॥
उरूजे नशये नशोवनुमां[19] से डालियाँ भूमीं।
तराने गाये मुर्ग़ाने चमन[20] ने शादमाँ,[21] होकर॥

---

(१) क़ीमत (२) ख़्याल (३) चौकीदार (४) चेहरा (५) माशूक़ का ओंठ (६) दर्जा (७) (८) ज़ाहिर (९) महल (१०) बुज़ुर्ग (११) उम्दा (१२) बाग़ (१३) बुलबुल (१४) शोर (१५) एक कीमती पत्थर (१६) इन्तेज़ाम (१७) मस्तों की तरह (१८) सुबह की हवा (१९) ज़ाहिर (२०) बाग़ (२१) खुश।

बलायें शाखेगुल[1] की लीं नसीमे सुब्हगाही[2] ने।
हुई कलियां शिगुफ्ता[3] रूये रंगीने बुताँ होकर॥
जवांनाने चमन ने अपना अपना रंग दिखलाया।
किसी ने था समन[4] होकर किसी ने अरग़वाँ[5] होकर॥
किया फूलो ने शबनम[6] से बजू[7] सहने गुलिस्ताँ मे।
सदाये नग़मये[8] बुलबुल उठी बाँगें अज़ाँ होकर॥
हवाये शौक में शाखें झुकी खालिक़[9] के सिज्दे[10] को।
हुई तसबीह[11] में मसरूफ़[12] हर पत्ती ज़बाँ होकर॥
ज़बाने वर्गे गुल ने की दुआ रंगी इबारत[13] में।
खुदा[14] सरसब्ज़ रक्खे इस चमन को मेहरबाँ होकर॥
निगाहे कामिलो[15] पर पड़ ही जाती हैं ज़मानें की।
कही छिपता है "अकबर" फूल पत्तो मे नेहां[16] होकर॥

× × ×

कमसिन हो अभी तजरूबा दुनियाँ का नही है।
तुम खुद ही समझ लोगे खोदा भी है कोई चीज़॥
तदबीर सदा रास्त जो आती नहीं "अकबर"।
इन्सान की ताकत के सिवा भी है कोई चीज़॥
हम मसलहते[17] वक्त के मुंकिर[18] नहीं "अकबर"।
लेकिन यह समझ लो कि वफा भी है कोई चीज़॥
मैंने कहा क्यो लाश पे आक़ा[19] के है मरता।
होटल की तरफ जा के ग़िज़ा[20] भी है कोई चीज़॥

---

(१) फूल की शाख (२) सुबह की हवा (३) खिला हुआ (४) एक किस्म का फूल (५) गुलाबी (६) ओस (७) हाथ मुँह धोना (८) आवाज़ (९) ईश्वर (१०) झुकना (११) माला (१२) लीन या लगा हुआ १३)मज़मून (१४)हरा भरा (१५) होशियार (१६) छिपा हुआ (१७) भेद (१८) इन्कार करने वाला (१९) मालिक (२०) खाना।

कुत्ते ने कहा हो यह जेहालत का तास्सुब[१]।
लेकिह मेरे नज़दीक वफ़ा भी है कोई चीज़॥
× × ×
गिनती मे ज्यादा नहीं है कौल मेरा एक।
बेख़ौफ़ मैं कहता हूँ इसे यानी ख़ोदा एक॥
तसलीस के क़ायल[२] ने भी ख़ालिक़ को कहा एक।
थी तीन पे सूई मेरी हैवत[३] से बजा एक॥
कहते है मुसलमान हैं अल्लाह के तालिब[४]।
दस पांच नही मुझको दिखा दो तो भला एक॥
यारब रहे जमीयते मुसलिम योंही क़ायम।
रुख़ एक रसूल एक किताब एक ख़ोदा एक।
× × ×
क्या जानिये सय्यद थे हक़ आगाह कहाँ तक।
समझे न कि सीधी है मेरी राह कहाँ तक॥
मंतिक़[५] भी तो यक चीज़ है ऐ क़िबलाओ कावा।
दे सकती है काम आप की वल्लाह कहां तक॥
इफ़लाक[६] तो इस अहेद[७] में साबित हुये मादूम[८]।
अब क्या कहूं जाती है मेरी आह कहाँ तक॥
कुछ सनअतव हिरफत[९] पे भी लाज़िम है तवज्जह।
आख़िर व गवर्मेन्ट से तनख़्वाह कहाँ तक॥
मरना भी ज़रूरी है ख़ोदा भी है कोई चीज़।
ये हिर्स के वन्दो हवस वजाह कहाँ तक॥
तहसीन[१०] के लायक़ तेरा हर शैर है "अकबर"।
अहबाव[११] करें बज़्म मे अब वाह कहाँ तक॥

---

(१) बुरा ख्याल (२) मानलेना (३) डर (४) चाहने वाले (५) एक क़िस्म का इल्म है। (६) आसमान (७) ज़माना (८) गायब (९) कारीगरी (१०) तारीफ़ (११) दोस्त।

मिल गया शरह से शराब का रंग—खूब बदला गरज जनाब का रंग ॥
चल दिये शेख़ सुबह से पहले—उड़ चला था ज़रा ख़िजाब का रंग ॥
पाई है तुमने चाँद सी सूरत—आसमानी रहे नक़ाब[1] का रंग ॥
सुबह को आप हैं गुलाब का फूल—दोपहर को हैं आफताब[2] का रङ्ग ॥
लाख जानें निसार हैं उस पर—दीदनी है तेरे शबाब का रङ्ग ॥
टकटकी बँध गई है बूढ़ों की—दीदनी है तेरे शबाब का रङ्ग ॥
जोश आता है होश जाता है—दीदनी है तेरे शबाब का रङ्ग ॥
रिन्द[3] आलीमोक़ाम[4] है "अकबर"—बू है पक़वा[5] की और शराब का रङ्ग ॥

× × ×

दिले मायूस[6] में वह शोरिशें[7] बरपा[8] नहीं होतीं ।
उम्मीदें इस क़दर टूटीं कि अब पैदा नहीं होतीं ॥
मेरी बेताबियाँ भी जुज़्व[9] है एक मेरी हस्ती की ।
यह ज़ाहिर है कि मौजे[10] ख़ारिज अज़ दरिया नहीं होती ॥
वही परियाँ हैं अब भी राजा इन्दर के अखाड़े में ।
मगर शहज़ादये गुलफ़ाम पर शैदा नहीं होती ॥
यहाँ की औरतों को इल्म की परवा नहीं बेशक ।
मगर यह शौहरों से अपने बे परवा नहीं होतीं ॥
तअल्लुक़ दिल का क्या बकी मैं रक्खू बज़्म दुनियां से ।
वह दिल कश सूरतें अब अंजुमन आरा[11] नहीं होतीं ॥
हुआ हूँ इस क़दर अफ़सुर्दा[12] रंगे बाग़ हस्ती से ।
हवायें फ़स्लेगुल की भी निशात अफ़ज़ा[13] नहीं होतीं ॥

---

(१) बुर्का (२) सूरज (३) परहेज़गार (४) ऊँची जगह (५) पहरेज़गारी (६) नाउम्मीद (७) जलन (८) उभरना (९) हिस्सा (१०) लहरें (११) महफिल को सजाने वाले (१२) रंजीदा (१३) ख़ुशी बढ़ाने वाला ।

कज़ा[1] के सामने बेकार होते हैं हवास "अकबर" ।
खुली होती हैं गो आँखें मगर बीना[2] नहीं होती ॥

× × ×

साँस लेते हुये भी डरता हूं–यह न समझें कि आह करता हूँ ॥
उनका घर छोड़ कर कहाँ जाऊं–दिल ही के साथ मैं ठहरता हूँ ॥
बहरे हस्ती में हूँ मिसाले हुबाव[3]-मिट ही जाता हूँ जब उभरता हूं॥
इतनी आज़ादी भी ग़नीमत है–साँस लेता हूं बात करता हूं ॥
शेख़ साहब खुदा से डरते हों–मैं तो अंगरेजों ही से डरता हूं ॥
लन्तरानी[4] नहीं है मान ये इश्क़–मैं तेरेनाम ही पेमरता हूं ॥
आप क्या पूछते हैं मेरा मिज़ाज–शुक्र अल्लाह का है मरता हूं ॥
यह बड़ा ऐब मुझमे है "अकबर"–दिल मे जो आये कह गुज़रता हूं॥

× × ×

फ़िलसफी को बहेस के अन्दर ख़ुदा मिलता नहीं ।
डोर को सुलझा रहा है और सिरा मिलता नहीं ॥
मार्फत ख़ालिक[5] की आलम मे बहुत दुश्वार[6] है ।
शहरेतन[7] मे जब कि खुद अपना पता मिलता नहीं ॥
ग़ाफिलों[8] के लुत्फ को काफ़ी है दुनियावी खुशी ।
आकिलों को वे ग़मेउक़बा[9] मज़ा मिलता नहीं ॥
किश्तिये दिल की इलाही बहरे हस्ती[10] मे हो ख़ैर ।
नाखुदा[11] मिलते है लेकिन बा ख़ुदा मिलता नहीं ॥
ग़ाफिलो को क्या सुनाऊँ दास्ताने[12] इश्क़ यार ।
सोने वाले मिलते हैं दर्दआशना[13] मिलता नहीं ॥

---

(१) मौत (२) देखने वाली (३) बुलबुला (४) लम्बी चौड़ी बातें करना (५) ईश्वर (६) मुश्किल (७) अरमान (८) लापरवाह (९) आक़बत का अफसोस (१०) हस्ती के समुन्दर (११) मल्लाह (१२) क़िस्सा (१३) दर्द का पहचानने वाला ।

ज़िन्दगानी का मज़ा मिलता था जिनकी बज़्म में।
इनकी क़ब्रों का भी अब मुझको पता मिलता नहीं॥
पोख़्ता तबओ[१] पर हवादिस[२] का नही होता असर।
कोहसारों[३] मे निशाने नक्शेपां[४] मिलता नहीं॥
शेख़ साहब अहम से लाख बरतें दोस्ती।
बे भजन गाये तो मन्दिर से टका मिलता नहीं॥

× × ×

जिसपे दिल आया है वह शीरीं अदा[५] मिलता नही।
ज़िन्दगी है तल्ख़[६] जीने का मज़ा मिता नहीं॥
लोग कहते हैं कि बदनामी से बचना चाहिये।
कह दो बे इसके जवानी का मजा मिलता नहीं॥
अहेल ज़ाहिर जिस क़दर चाहें करें बहसो जेदाल[७]।
मैं यह समझा हूं खुदी में तो खोदा मिलता नहीं॥
चल बसे वह दिन कि यारों से भरी थी अंजुमन।
हाय अफ़सोस आज सूरत आशना[८] मिलता नहीं॥
मंज़िले इश्क व तवक्कुल[९] मंजिले ऐज़ाज[१०] है।
शाह सब बसते हैं यां कोई गदा[११] मिलता नहीं॥
चांदनी रातें बहार अपनी दिखाती हैं तो क्या।
बे तेरे मुझको तो लुत्फ ऐ महलका[१२] मिलता नही॥
मानिये दिल का करे इज़हार "अकबर" किस तरह।
लफज मौजूं[१३] बहरे कशफे[१४] मुद्दोआ मिलता नहीं॥

---

(१) मज़बूत दिलवाले (२) घटना (३) जंगल (४) पैर का निशान (५) अच्छे अदावाला (६) कड़वा (७) दुश्मनी, लड़ाई (८) पहचान वाला (९) ईश्वर पर भरोसा करना (१०) बलन्दी या इज़्ज़त करना (११) फ़कीर (१२) खूबसूरत (१३) ठीक (१४) खोलना।

मौसिमेगुल[१] में सबा[२] को जो हुई नाच की धुन ।
लहने[३] बुलबुल से-भी पैदा हुई खमाच[४] की धुन ॥
यह क्लाक अच्छे सुरों में तो बजा करती है ।
मुफ्त पैदा हुई है आप को क्यो वाच की धुन ॥
नग़मा संजी[५] से भी आती थी ख़्वातीन[६] को शर्म ।
साजे मग़रिब से मगर हो गई अब नाच की धुन ॥

× × ×

दिल ज़ीस्त[७] से बेज़ार है मालूम नहीं क्यों ।
सीने पे नफ्स[८] बार है मालूम नहीं क्यो ॥
इक़रार वफ़ा यार ने हर एक से किया है ।
मुझसे ही बस इन्कार है मालूम नहीं क्यो ॥
हंगामये महशर[९] का तो मक़सूद[१०] है मालूम ।
देहली में यह दरबार है मालूम नहीं क्यो ॥
जिससे दिले रंजूर[११] को पहुँची है अज़ीयत[१२] ।
फिर उसका तलबगार है मालूम नहीं क्यो ॥
ऐ गुल तेरा नज्ज़ारा दिलाआवेज़[१३] है लेकिन ।
पहलू में तेरे ख़ार है मालूम नहीं क्यो ॥
इफ़लास[१४] में मस्ती तो मुझे खुश नहीं आती ।
साक़ी को यह इसरार[१५] है मालूम नहीं क्यो ॥
अन्दाज़[१६] तो उश्शाक़[१७] के पाये नहीं जाते ।
"अकबर" जिगर अफगार[१८] है मालूम नहीं क्यो ॥

---

(१) वसंत ऋतु (२) सुबह की हवा (३) चोंच (४) एक राग (५) गाना गाना (६) औरतों (७) ज़िन्दगी (८) साँस (९) क़यामत (१०) इरादा किया हुआ (११) बीमार (१२) तकलीफ (१३) दिल पसन्द (१४) ग़रीबी (१५) ज़िद (१६) नाज़ व नखरा (१७) आशिक़ों (१८) जख़्मी ।

जीने पे तो जान अहलेजहां देते हैं "अकबर"।
फिर यह तुझे दुश्वार[1] है मालूम नहीं क्यों ॥

× × ×

हिज्र[2] की रात यों हूं मै हसरते क़द्दे यार में।
जैसे लहद[3] में हो कोई हश्र[4] के इन्तेज़ार में ॥
दिल है मलूल[5] फ़ुरकते क़ामत[6] व रुखे यार में।
भाड़ में जायें सर व गुल आग लगे बहार में ॥
सोज़े[7] नेहां[8] है फ़ुरक़ते[9] शमये[10] जमालेयार[11] में।
आग सी है लगी हुई रिश्तये जानेज़ार[12] में ॥
क्या मैं खुशी से हूं बसा कूचये ज़ुल्फे यार में।
कोई बला में क्यों फंसे दिल हो जो अख़्तियार में ॥
होने दे इन्क़ेलावे[13] चर्ख़[14] कोहे अलम[15] को ले उठा।
वज़न मगर सुबुक न हो दीदये ऐतबार में ॥
करदिया ऐसा ज़ार व खुश्क[16] मंजिले इश्कने मुझे।
ख़ार चुभेगा मुझसे क्या मैं ही चुभा हूं ख़ार में ॥
आई नसीम बाग़ में मेरे यहां न आये तुम।
लाला व गुल बहुत खिले दिल न खिला बहार में ॥
मस्तिये इश्क़[17] का मज़ा अहदे शबाब[18] ही में है।
बादाकशी[19] का लुत्फ़ अगर है तो फ़क़त बहार में ॥
महरेकरम[20] ने आप के ज़र्रा नेवाज़ियाँ[21] यह कीं।
बात तो वरना कुछ न थी बन्दये खाकसार में ॥

---

(१) मुश्किल (२) जुदाई (३) क़ब्र (क़यामत (५) रंजिदा (६) क़द्द (७) जलन (८) छिपा हुआ (६) जुदाई (१०) मोमबत्ती (११) माशूक़ का जलवा (१२) परेशान (१३) उलट फेर (१४) आसमान (१५) रंज (१६) सूखा (१७) मोहब्बत (१८) जवानी (१६) शराब पीना (२०) मेहरबानी (२१) खाकसारी।

तुम तो भुला के वादे को शाम से पड़ के सो रहे।
जागा किया मैं सुबह तक हसरत[१] व इन्तेजार में॥
सीने से तेरे मुत्तसिल[२] शायद इसे क़रार हो।
गूथ[३] ले मेरे दिल को भी अपने गले के हार में॥
रंगे जहाँ के साथ काश मेरी भी हो योंही बसर।
जैसे गुल व नसीम की निभ गई चाह प्यार में॥
वक़्क़े रीश[४] शेख को देख के यह हुआ यक़ीन।
खिरमने[५] खस भी शर्त है गुलशने एतबार में॥
खिलने पे आई है कली बुलबुलों को है बेकली।
हुस्न तो है उभार पर इश्क़ है इन्तेजार में॥
जिक्र मेरा है कूबकू[६] फैली है बात चार सू।
आती है कुछजुनू की बू बैठा हूं कूययार[७] में॥
सीने में क्यों खलिश[८] है यह जान में क्यों तपिश है यह।
अक़्ल की सरजनिश[९] है यह दिल को रख आख्तियार में॥
उलफतें[१०] जुल्फें क हर[११] है हक[१२] में हमारे जहर है।
बहरें बला[१३] की लहर है रूह है इन्तेशार[१४] में॥
भंवरे हैं मस्त बुये गुल तीतरयां हैं सूय गुल।
सब को हैं जुसतुजूये[१५] गुल मोसिमे खुशगवार[१६] में॥

× × ×

दौरे[१७]शराब लालाफाम[१८] क्योन हो लालाजार[१९] मे।
कुछ तो मजा हो जीस्त[२०] का कुछ तो खिलें बहार में॥

---

(१) आर्जू (२) बराबर (३) पिरोना (४) डाढ़ी (५) खलिहान (६) जगह-जगह (७) गली या रास्ता (८) कसक (९) बुरा भला कहना (१०) बाल (११) बुरा (१२) सच या वास्ते (१३) मुसीबत (१४) परेशानी (१५) तलाश (१६) अच्छा मालूम होना (१७) जमाना (१८) लाला फल की तरह रंग रखने वाला (१९) लाला फूल के पैदा होने की जगह (२०) जिन्दगी।

बादे सबा का नाच हो नग़मेंसरा[१] हों बुलबुलें ।
शाखों की गोद में हों गुल वह हों मेरे कनार[२] में ॥
हो असरे सरूरेमय[३] कैफ़[४] में हो हर एक शै ।
दिल में हों जमज़मो[५] की लै बोल बजेंन सितार में ॥
आँख की नातवालियां[६] हुस्न की लनतरानिया[७] ।
फिर भी हैं जांफेशांनियां[८] कुचये इन्तेज़ार में ॥
इश्क मे नफा है जरर[९] अश्क[१०] गिरें तो है गोहर[११] ।
यां तो हैं पारये जिगर लाल के ऐतबार मे ॥
इश्क़ हो किस तरेह नेहां[१२] लब[१३] पे है मय की दास्तां ।
कहने मे अब नहीं जबां दिल नहीं अखतियार में ॥

× × ×

पेश[१४] कर देना शिकायत का तो कुछ मुश्किल नहीं ।
लेकिन उनको रञ्ज होगा मुझको कुछ हासिल नहीं ॥
आशिकों की जीस्त पर क्योंकर न रश्क आये मुझे ।
ज़िंदिगी के भी मज़े फिर मौत से ग़ाफिल[१५] नहीं ॥
क्या तरीक़े तालिबे दुनियां की जानिब[१६] रुख़ करूँ ।
दिल को हो जिसमें सुकू[१७] ऐसी कोई मंजिल नहीं ॥
क़ौम में गो इल्म फूंके भी हवाये जिंदिगी ।
जान क्या पैदा हो जब दो शक्स भी एक दिल नहीं ॥

× × ×

कुछ न पूछ ऐ हमनशीं[१८] मेरा नशेमन[१९] था कहां ।
अब तो यह कहना भी मुश्किल है वह गुलशन[२०] था कहां ॥

---

(१) गाना गाना (२) गोद (३) शराब का नशा (४) हाल (५) राग (६) कमजोरी (७) अपनी तारीफ आप करना (८) मेहनत, कोशिश (६) नोकसान (१०) आंसू (११) मोती (१२) छिपा हुआ (१३) ओठ (१४) सामने (१५) लापरवाह (१६) तरफ (१७) तस्कीन (१८) पास बैठने वाला या दोस्त (१६) घोंसला (२०) बाग़ ।

सामने वह थे तो कहता हालते दिल किस तरह ।
होश में उस वक़्त मैं ऐ मुशफ़िक़े[1] मन था कहां ॥
दिल जवानी में हमारी जान का ख्वाहां हुआ ।
आज तक सीने में पोशिदा[2] यह दुश्मन था कहां ॥
दहेर मे खारे[3] तअल्लुक से उलझता किस तरेह ।
कर चुका था मैं जुनू[4] को नज़्र दामन था कहां ॥

× × ×

सच है किसी की शान यह ऐ नाजनीं नहीं ।
तू हर जगह है जलवागर[5] और फिर कहीं नहीं ॥
मैंने वफ़ूरेशौक़[6] में शायद सुना न हो ।
या शायद आप ही ने न की हो नहीं नहीं ॥
इन तेवरों का मैं तो हूँ कुशता[7] शवे वेसाल ।
दिल में हज़ार शौक ज़बां पर नहीं नहीं ॥
दस्ते जुनू[8] से कता[9] हुआ पैरहन[10] मेरा ।
दामन नहीं है जेब नहीं आसती नहीं ॥
क्यां ज़ोर तबा[11] हो कि नहीं कोई मोतरिज[12] ।
क्या नोक़्ता संजिया[13] हों कोई नोकताची[14] नहीं ॥
मैं तुमसे क्या बताऊँ कि इस वक़्त हूँ कहाँ ।
जब तुम हो पेशचश्म[15] तो फिर मैं कहीं नहीं ॥
मेरी निगाहे शौक का अल्लाह रे असर ।
माशूक भूल जाते हैं अपनी नहीं नहीं ॥

---

(१) मेरे दोस्त (२) छिपा हुआ (३) कांटा (४) पागलपन (५) ज़ाहिर (६) मिटने की आरजू (७) फूंका हुआ या मारा हुआ (८) पागलपन (६) टुकड़ा (१०) कपड़ा (११) तबियत (१२) ऐतराज करने वाला (१३) बारीकी मालूम करना (१४) आँख निकालना (१५) आँख के सामने ।

जब से गुनाह[1] छोड़ दिये सब खिसक गये ।
अब कोई मेरा दोस्त नहीं हमनशीं नहीं ॥
है जिसको शौक अपनी खुदी की नमूद[2] का ।
सच पूछिये तो उसको खोदा पर यक़ीं नहीं ॥
तालिब[3] खोदा को राह में सर रक्खे मिस्ले माह[4] ।
नूरेजबीं[5] कहां हो जो दाग़े जबीं नहीं ॥
"अकबर" हमारे अहेद[6] का 'अल्लारे इन्क़लाब ।
गोया वह आसमान नहीं वह जमीं नहीं ॥

× × ×

यह तमाशे हैं यहीं जेरेजमीं[7] तो कुछ नहीं ।
ज़िन्दगी जब तक है सब कुछ है नहीं तो कुछ नहीं ॥
वह यह कहते हैं कि दुनियां ही मे है सब कुछ हुज़ूर ।
मै यह कहता हूँ कि ऐ हजरत यहीं तो कुछ नहीं ॥
कारेदुनियां[8] शौक से करते रहो ऐ दोस्तो ।
लेकिन इसके साथ बिगड़ा कारदों[9] तो कुछ नहीं ॥
उनका घर और उनकी बातें देख कर कहना पड़ा ।
कस्र[10] आलीशान[11] है लेकिन मकीं[12] तो कुछ नहीं ॥

× × ×

हवाये नफ्स[13] का तूफ़ा है बहरेजिन्दगानी[14] में ।
खोदा महफ़ूज[15] रक्खे किश्तिये[16] दिल को जवानी में ॥
नहीं जमता किसी का नक़्श[17] इस दुनियाय फ़ानी[18] मे ।
हुबाब आसा[19] मिटा उभरा जो बहरे जिन्दगानी में ॥

---

(१) बुराई (२) जाहिर होना (३) चाहने वाला (४) चाँद (५) मत्थे की रोशनी (६) जमाना (७) जमीन के नीचे (८) दुनिया का काम (९) मजहब का काम (१०) महल या मकान (११) ऊँचा (१२) मकान का मालिक (१३) साँस की हवा (१४) जिन्दगी का समुन्दर (१५) हिफ़ाजत से (१६) नाव (१७) नक़्शा (१८) मिटनेवाली (१९) बुलबुले की तरह ।

हुबाब आसा रही वक़्त जो उभरा जिन्दगानी में।
अबस[1] है खुदनुमाई[2] की हवा इस बहरे फानी में॥

सुकूने क़ल्ब[3] की दौलत कहां दुनियाये फ़ानी में।
बस एक ग़फ़लत[4] सी हो जाती है और वह भी जवानी में॥

तेरी पाकीज़ा[5] सूरत कर रही है हुस्नेज़न[6] पैदा।
मगर आँखो की मस्ती डालती है बदगुमानी[7] में॥

अजल[8] की नींद आ जाती है आख़िर सुनने वाले को।
क़यामत[9] का असर पाता हूँ दुनियाँ की कहानी में॥

नसीमे सुबहगाही निगहते गुल[10] से है बेपरवा।
मगर गेसू तेरे मसरूफ़[11] हैं अम्बर फ़ेशानी में॥

हुबाब[12] अपनी ख़ुदी से बस यही कहता हुआ गुज़रा।
तमाशा था हवा ने एक गिरह देदी थी पानी में॥

न पूछ ऐ हमनशीं वह किस्सये ऐशवतरब[13] हम से।
किसे अब याद है एक ख्वाब देखा था जवानी में॥

कमर का क्या हूँ आशिक खुल गई ज़ुल्फ़ें दराज़[14] उनकी।
कमर खुद पड़ गई है एक बलाऐ आसमानी[15] में॥

ज़बाने हाल से परवानये बिस्मिल[16] यह कहता है।
हुज़ूरी[17] हो अगर हासिल मजा है नीमजानी[18] में॥

---

(१) फ़ुजूल (२) अपने को ज़ाहिर करना (३) दिल का करार (४) लापरवाही (५) पाक (६) औरत की खूबसूरती (७) बुरा ख्याल (८) मौत (९) ठहरना (१०) फूल (११) मशग़ूल या लगा हुआ (१२) बुलबुला (१३) आराम व खुशी (१४) बड़ी (१५) ईश्वरी मार या आसमानी मुसीबत (१६) अधमरा (१७) सामने रहना (१८) अधमरा।

अदाये शुक्र करके ऐहतेराज[१] ऊला[२] है ऐ "अकबर"।
हजारों आफ़तें शामिल हैं इनकी मेहरबानी में॥

× × ×

परेशां होश को करते है टुकड़े दिल के करते है।
मगर आक़िल[३] भी हैं करते हैं जो कुछ मिलके करते है॥
ज़रीफ़ो[४] से लगावट करते है आपस मे लड़ते है।
योंही बरबादियां आती हैं योंही घर बिगड़ते है॥
खुशामद करते है ग़ैरों की और आपस मे लड़ते है।
योही बरबादियां आती हैं योही घर बिगड़ते है॥
बुजुर्गो मे अदावत दोस्ती बादा फ़रोशों[५] से।
और उस पर मुद्दई तहजीब के बनकर अकड़ते है॥
उलझना जुल्फ़े मग़रिब[६] मे दिखाता है रहे दुनियां।
मगर दीनी मकासिद[७] मे हजारो पेच पड़ते हैं॥
ताज्जुब नख़वते[७] अहले जमीं पर मुझको आता है।
यह इसपर क्यों अकड़ते है कि जिसमे मर के गड़ते है॥
हमारा जोश मे आना दिखा ही देगा रंग अपना।
अभी इस मैकदे[९] मे हम पड़े गोशे[१०] मे सड़ते है॥
तहिय्युर[११] आपकी गज़लो पर आता है मुझे 'अकबर'।
बुतों पर आप मरते है कि शैतानो से लड़ते है॥

× × ×

वजन[१२] अब उनका मोअइयन[१३] नही हो सकता कुछ।
बर्फ़ की तरह मुसलमान घुले जाते है॥

---

(१) बचना (२) बड़ा (३) अकलमन्द लोग (४) कमीनो (५) शराब बेचने वाले (६) पच्छिम (७) वसूल (८) घमंड (९) शराब की जगह (१०) कोना (११) हैरत या ताज्जुब (१२) बोझा (१३) मोक़र्रर (११) लहरों (१२) झूमना (१३) बुजुर्गों की पगड़ी।

दाग अब उनकी नजर में हैं शराफत के निशान।
नई तहजीब की मौजों[1] से धुले जाते हैं ॥
इल्म ने रस्म ने मजहब ने जो की थी बंदिश।
टूटी जात है वह सब वन्द खुले जाते हैं ॥
शेख को वज्द[2] में लाई हैं पियानो की गत।
पेच दसतारे फजीलत[3] के खुले जाते हैं ॥

× × ×

जलाया दिलको तड़पाया जिगर को-खोदा रक्खे सलामत उस नजर को ॥
दिलै सोजा[4] की गरमी बढ़ती है और-खोदा के वास्ते पहलू से सरको ॥
जवानी मार[5] ही रखती है "अकबर"-संभालो दिलको या रोको नजर को ॥

× × ×

फहेम[6] व अदराक[7] मे हो अकल मे हो जान में हो।
हक़ तो यह है कि तुम्हीं जलवागर[8] इन्सान में हो ॥
हाथ हो काम मे और दिल तेरे अरमान में हो।
है यही तर्जे अमल[9] खूब जो इमकान[10] में तो ॥
मैं तो सौ जान से मरता हूँ मेरी जां तुम पर।
तुम मेरी जान बचाओ अगर इमकान मे हो ॥
चांद प्यारा है तू क्या उससे सवा प्यारा है।
सेहन[11] में बैटूं मै क्यों यार जो दालान में हो ॥
प्यारी सूरत पे तो इन्सान को आता ही है प्यार।
दिल को रोकें कोई साहब अगर इमकान में हो ॥
हुस्न जिस चीज में हो देख के खुश कर दिल को।
वन्द करले मगर आँखें अगर इन्सान मे हो ॥

---

(१) लहरों (२) झूमना (३) बुजुर्गी की पगड़ी (४) जलने वाला (५) सांप (६) समझ (७) समझ या अक़्ल (८) जाहिर बुजुर्गी (९) काम करने का तरीका (१०) बस मे (११) दालान।

झूठ से नफरते कुल्ली[1] हो तमा[2] से परहेज़।
हो न कुछ और पर इतना तो मुसलमां में हो॥
दिल जहां होगा वहां इश्क भी होगा पैदा।
ख्वाह अफरीका मे हो ख्वाह पारिस्तान में हो॥
है गुलामी ही जो किस्मत में तो हो लुत्फ़ के साथ।
कह दो हिन्दी से कि आवाद परिस्तान में हो॥

× × ×

आपकी आंख में किसने यह भरा है जादू।
इसका ईमां है कि लग़जिश[3] मेरे ईमान में हो॥
काहिली और तवक्कुल[4] से बड़ा फ़रक है यार।
उट्ठो कोशिश करो बैठे हुये किस ध्यान में हो॥
ठीक हो दिल की जो निस्बत[5] तो असर दें नाले।
सुर में आवाज हो "अकबर" तो मजा तान में हो॥

× × ×

निगहतेगुल[6] से शमीमे जुल्फ़[7] याद आही गई।
आज तो मुझको नसीमे सुवह तड़पाही गई॥
बादये इरफ़ां[8] की मस्ती रूह[9] को भाही गय।
अक़्ल सर में रह गई दिल में कुछ और आही गई॥
इस जफ़ा[10] पर भी तबियत उस पे बस आही गई।
एक अदा ज़ालिम ने ऐसी की कि वह भाही गई॥
आशिकों मे रस्म ऐसे दीनवी[11] रायज[12] नहीं।
कैस कब दूल्हा बना लैला कहां व्याही गई॥

---

(१) बिलकुल (२) लालच (३) कॅपकॅपी या लड़खड़ाहट (४) ईश्वर पर भरोसा करना (५) लगावट (६) फूल की खुशबू (७) सूंघना (८) मारफत की शराब (९) जान (१०) जुल्म (११) मज़हबी (१२) रिवाज।

मुख़तलिफ[१] शक्लों में आकर हो गई आख़िर हवा ।
अब्र[२] की फबती[३] मेरी उम्मीद पर छाही गई ॥
अशवाहाये[४] दुश्मने ईमां का एक तूफ़ान था ।
देख कर बुत को मगर यादे ख़ुदा आही गई ॥
ख़ुश नसीबी ज़ाले दुनियाँ की ताज्जुबख़ेज़[५] है ।
चाहे जाने के, नथी लायक मगर चाही गई ॥
मस्तिये मय से नज़र उनकी थी तेग़े वे न्याम[६] ।
नशये इश्को जुनूं से फिर भी शरमा ही गई ॥
सीख लो बदली से तुम तरज़ेअमल[७] ऐ आमिलो[८] ।
जो समुन्दर से लिया था हम पे बरसा ही गई ॥
अपने तमकीन[९] व तहम्मुल[१०] पर बहुत नाज़ां[११] था मैं ।
एक बुते काफ़िर की चश्मे मस्त[१२] तड़गाही गई ॥

× × ×

कुछ तर्ज सितम[१३] भी है कुछ अन्दाज वफ़ा[१४] भी ।
खुलता नहीं हाल उनकी तबियत का ज़रा भी ॥
अशवाभी है शोख़ी[१५] भी तबस्सुम[१६] भी हया[१७] भी ।
ज़ालिम मे और एक बात है इन सब के सिवा भी ॥
ईमान भी था इल्म भी था अक्लरसा[१८] भी ।
वह ले गये दिल और कोई बोला न ज़रा भी ॥
उल्फ़त[१९] ही में करते हैं शिकायत भी गिला[२०] भी ।
अब उसको भुला दो कुछ गर मैंने कहा भी ॥

(१) खिलाफ़ (२) बादल (३) ताना (४) छिपाकर काम करना या नाज (५) अनोखापन पैदा करनेवाली (६ मियान (७) हुकूमत का तरीका (८) काबिलों (९) तारीफ़ (१०) सब्र (११ मरने का वक्त (१२) मस्त आँखें (१३) जुल्म (१४) वफ़ादारी या मोहब्बत (१५) चुलबलापन (१६) मुस्कुराहट (१७) शर्म (१८) अक्लिमन्द (१९) मोहब्बत (२०) शिकायत ।

सच बात का इन्कार क्योंकर करूं ऐ बुत।
बेशक मुझे आती है कभी यादे खोदा भी॥
कुछ क़द्र न की अहेद[1] जवानी की सदअफ़सोस[2]।
हम रह गये ग़फ़लत[3] मे यह आया भी गया भी॥
तसदीक[4] हुई देख के वह कामते जेंबा[5]।
सुनता था कि फितने[6] है कयामत के सिवा भी॥
देखें किसे हासिल हो कदमबोसिये[7] जाना।
पिस्ने को है मौजूद मेरा दिल भी हिना[8] भी॥
बाकी न रहा खून भी अब मेरे जिगर मे।
अफसोस हुआ चाहती है तर्क[9] ग़ेजा भी॥
क्योंकर कहूँ रंगोनिये बातिन[10] से है इज्जत।
पामाल[11] नजर आती है मुझको तो हिना भी॥
चुप रहता हूँ तो कहते हैं उल्फ़त[11] नहीं तुझको।
करता हूँ ख़ुशामद तो यह फ़रमाते[12] है जा भी॥
सुनते हैं कि "अकबर" ने किया इश्क़ बुता[13] तर्क[14]।
इस बात से तो ख़ुश न हुआ होगा खोदा भी॥

× × ×

चमन[15] की यह कैसी हवा होगई—कि सरसर[16] से बदतर सबा होगई॥
अयादत[17] को आये शफ़ा[18] होगई—अलालत[19] हमारी दवा होगई॥
वह उट्ठे तो लाखों ही फ़ितने[20] उठे—चले तो कयामत बपा हो गई॥
पढ़ी यादे रुख में जो मैंने निमाज—अजब हुस्न के साथ अदा होगई॥

---

(१) जमाना (२) बहुत अफ़सोस (३) लापरवाही (४) दुरुस्त (५) अच्छा मालूम होना या दुरुस्त (६) फ़साद ७) कदम चूमना (८) मेहंदी (९) छोड़ना (१०) झूठा (११) मोहब्बत (१२) कहते (१३) मूर्तियाँ (१४) छोड़ना (१५) बाग़ (१६) आंधी या तेज हवा (१७) बीमार का हाल पूछना (१८) आराम (१९) बीमारी (२०) फ़साद।

तमाशाय मक़तल[१] को आये जो वह—तड़पने की लज़्ज़त सवा होगई ॥
मोहब्बत की गरमी भी क्या चीज है—तबीयत मेरी क्या से क्या होगई ॥
लगावट बहुत है तेरी आंख मे—इसीसे तो यह फितनाजा[२] होगई ॥
मैं मम्नून[४] हूँ वादये यार का—तसल्ली तो ख़ैर एक ज़रा होगई ॥
बुतो ने भुलाया जो दिल से मुझे—मेरे साथ यादे खादा होगई ॥
उन्हीं ने अता[५] की थी जानेहज़ीं[६]—हुआ ख्वाब उन्ही पर फिदा[७] होगई ॥

× × ×

मेरी रूह तन से जुदा होगई—किसी ने न जाना कि क्या होगई ॥
बहुत दुख़्तरेरिज[९] थी रंगीं मिजाज[१०]—नजर मिलते ही आशना[११] होगई ॥
मरीजे मुहब्बत तेरा मरगया—खोदा की तरफ से दवा होगई ॥
नहीं थी जो तो नामे कमर क्यों हुआ—जो पैदा हुई थी तो क्या होगई ॥
न था मंज़िले आफ़ियत[१२] का पता—कनाअत[१३] मेरी रहनुमा[१४] होगई ॥
मिला मैं भी एक रात दुनिया से खूब-गेरे घर भी यह बे सवा होगई ॥
सताया बहुत हासिदो[१५] ने मुझे—तेरी मेहरबानी जफा[१६] होगई ॥
घटी गोकि रिन्दी[१७] से वकत मेरी—तबीयत मगर बेरिया[१८] होगई ॥
गवारा[१९] न था ज़िक्र खूने[२०] जिगर मगर अब तो मेरी ग़िजा[२१] होगई ॥
बुतों को मुहब्बत न होती मेरी—खोदा का करम[२२] हो गया होगई ॥
इशारा किया बैठने का मुझे—इनायत[२३] की आज इन्तहा[२५] होगई ॥
रहे मारफत[२६] में जो रक्खा कदम—खुदी भी बस एक नकशेपा[२७] होगई ॥

---

(१) कतल करने की जगह (२) जायका (३) फेसाद (४) मना या मोमानियत (५) बखश दिया (६) रंजीदा होना (७) आशिक (८) अलग (९) अंगूर की शराब (१०) खुश मिजाज (११) दोस्त (१२) आराम (१३) सब्र (१४) रास्ता देखने वाली (१५) हसद करने वाले (१६) जुलम (१७) पहरेजगारी (१८) उलटा काम करने वाला (१९) पसन्द (२०) याद करना (२१) खोराक (२२) व (२३) मेहरबानी (२४) हद, आखीर (२५) ईश्वर-रास्ता या पैर का निशान (२६) सच्चाई, असलियत (२७) शुरू ।

कि गावे हकीकत[1] करे कौन खदम—कि हर एक ख्वर मुवतेदा[2] होगई ॥
वह सारी उम्मीदें मिली खाक में—जो वदली उठी थी हवा होगई ॥
फ़लक[3] से मिटा दिल का सारा उभार, जो वदली उठी थी हवा होगई ॥
यह थी कीमते रिज्क[4] टूटे जो दांत, गरज कौड़ी कौड़ी अदा होगई ॥
फंसी जिस्म खाकी मे रूहेलतीफ[5], असीरे[6] कमंदे हवा होगई ॥
दवा क्या कि वक़्ते दुआ भी नहीं, तेरी हालत "अकवर" यह क्या होगई ॥

× × ×

वहुत रहा है कभी लुत्फेयार[7] हमपर भी,
गुजर चुकी है यह फसले वहार हमपर भी ॥
उरुसे दहेर को आया था प्यार हमपर भी,
यह वे सवा थी किसी शव[8] निशार[9] हमपर भी ॥
विठा चुकी है जमाना हमें भी मसनद[10] पर,
हुआ किये हैं जवाहर निसार हमपर भी ॥
अदू[11] को भी जो वनाया है तुमने मोहरिमराज,
तो फ़ख[12] क्या जो हुआ एतवार हमपर भी ॥
ख़ता किसी की हो लेकिन खुली जो उनकी जवां,
तो हो ही जाते हैं दो एक वार हमपर भी ॥
हम ऐसे रिन्द मगर यह जमाना है वह गजव,
कि डाल ही दिया दुनियां का वार[13] हमपर भी ॥
हमें भी आतशे उलफ़त[14] जला चुकी "अकवर",
हराम हो गई दजख[15] की नार[16] हमपर भी ॥

---

(१) आसमान (२) खाना (३) उम्दा, साफ़सुथरा (४) कैदी (५) दोस्त की मेहरवानी (६) रात (७) नेवछावर (८) तकिया (९) दुश्मन (१०) घमन्ड (११) वोझ (१२) मोहव्वत की आग (१३) नरक (१४) आग ।

नई तहज़ीब से साक़ी ने ऐसी गर्म जोशी[१] की।
कि आखिर मुसलिमों में रूह फूंकी बादा नोशी[२] की॥
तुम्हारी पालिसी[३] का हाल कुछ खुलता नहीं साहब।
हमारी पालिसी तो साफ़ है ईमां फ़रोशी[४] की॥
छिपाने के एवज[५] छपवा रहे हैं खुद वह ऐब अपने।
नसीहत क्या करूँ मैं क़ौम को अब ऐबपोशी[६] की॥
पहनने को तो कपड़े ही न थे क्या बज़्म में जाते।
खुशी घर बैठे करली हमने जशने ताजपोशी की॥
शिकस्ते[७] रंगे मजहब का असर देखे नये मुर्शिद[८]।
मुसलमानों में कसरत[९] हो रही है बादानोशी की॥
रिआया को मुनासिब है कि बाहम दोस्ती रक्खें।
हिमाकत[१०] हाकिमों से है तवक़्क़ा[११] गर्म जोशी की॥
हमारे काफ़िये तो हो गये सब खत्म ऐ "अकबर"।
लक़ब अपना जो देदे मेहरबानी है यह जोशी की॥

× × ×

हुस्न है बेवफ़ा भी फ़ानी[१२] भी–काश समझे इसे जवानी भी।
बढ़ता जाता है हुस्ने कौम मगर–साथ ही इसके नातवानी[१३] भी॥
सब पे हावी है लाबेताने फिरंग–चुप है बेगम भी बुत है रानी भी।
आई होगी किसी को हिज्र[१४] में मौत–मुझको तो नींद भी नहीं आती॥
आक़बत[१५] में बशर से है यह सबा–जानवर को हँसी नहीं आती।
हाल वह पूछते हैं मैं हूँ खामोश–क्या कहूँ शायरी नहीं आती॥

---

(१) तेजी (२) शराब पीना (३) अंग्रेजी शब्द है इसके मानी चालाकी (४) ईमान बेचना (५) बजाय या बदला (६) बुराई छिपाना (७) मुरझाया हुआ (८) गुरू (९) ज़्यादती (१०) बेवकूफ़ी (११) उम्मीद (१२) मिटने वाला (१३) कमज़ोरी (१४ जुदाई (१५) आखिर।

हमनशीं वक्त के अपना सर न फेरा—रंज मे हूँ हँसी नहीं आती।
इश्क को दिल में दे जगह "अकबर"—इल्म से शायरी नहीं आती॥

× × ×

इश्क़ व मजहब में दोरंगी होगई—दीन व दिल में ख़ानाजंगी[1] होगई।
सख्तिये अइयाम[2] का देखो असर—गुलबदन की जा पे संगी होगई॥
दोख्तरिज़ शीशे से निकली वेहिजाब[3]—सामने रिन्दो के नंगी होगई।
इल्म योरप का हुआ मैदांवसी[4]—रिज़्क में हिन्दी के तंगी होगई॥

× × ×

करदिया निज़ा[5] ने वाक़िफ़[6] कि यह हस्ती क्या थी।
होश आया तो खुला हाल कि मस्ती क्या थी॥
रंगे हाफ़िज़[7] पे वहक जाते हैं अरवाब मजाज़[8]।
यह समझते नहीं वह वादा परस्ती[9] क्या थी॥
फ़ुर्कते यार[1] मे वदली का मजा कुछ न मिला।
मेरी नजरो मे तो रोती थी वरसती क्या थी॥
मैं तो वुतख़ाने में गाहक न हुआ इज्जत का।
दीन के वदले में मिलती थी तो सस्ती क्या थी॥

× × ×

वक़्त[11] पीरी आगया "अकवर" जवानी हो चुकी।
सांस लेना रह गया अब जिन्दगानी हो चुकी॥
हिज्र[12] में दिल की सजा ऐ मेरी जानी हो चुकी।
मिलिये अव वहरे ख़ोदा ना मेहरवानी हो चुकी॥
ऐड़ियों तक पहुँची जुल्फ़ उनकी तो मुझको क्या उम्मीद।
राहते[13] जां यह वलाये[14] आसमानी हो चुकी॥

---

(१) आपस की लड़ाई (२) जमाना (३) वेपरदा (४) चौड़ा (५) मरने का वक्त. (६) जाननेवाला (७) कोरान को याद रखनेवाला (८) झूठा (९) निचाई (१०) दोस्त की जुदाई (११) वुढ़ाई का वक्त. (१२) जुदाई (१३) जान को आराम पहुँचानेवाला (१४) मुसीवत।

वक्त लुत्फ़ो मेहर[१] है ऐ जान अशवे[२] छोड़ दे।
कीजिये दिलदारियां[३] अब दिलसितानी[४] हो चुकी ॥
जोफ़[५] ऐसा है तो क़सदे कूये जाना[६] क्या करूँ।
हिम्मतेआली[७] तो नजरे नातवानी[८] हो चुकी ॥
रंग गुलज़ारे[९] जहां है हाय कितना बे सबात[१०]।
दो ही दिन मे लाला व गुल की जवानी हो चुकी ॥
एक आलम[११] मुंतजिर[१२] है बस उल्टिये अब नक़ाब[१३]।
कीजिने बरपा[१४] कयामत लन्तरानी[१५] हो चुकी ॥
आशिकीये शाहिदे[१६] कालिज[१७] है बरबादिय उम्र।
पास तक पहुँचे नहीं हम और जवानी हो चुकी ॥
हजरते दिल होगये इस अहेद[१८] मे जुज[१९] व शिकम[२०]।
कीजिये अरजीनवीसी[२१] शैर ख़्वानी हो चुकी ॥

× × ×

अपना रंग उनसे मिलाना चाहिये—आज कल पीना पिलाना चाहिये ॥
खूब वह दिखला रहे हैं सब्जबाग़[२२] हम को भी कुछ गुलखिलाना चाहिये ॥
चाल में तलवार है दिल की घड़ी—तोप से इसको मिलाना चाहिये ॥
कौल[२३] बाबू है कि जब बिल पेश हो--पेश हाकिम बिलबिलाना चाहिये ॥
कुछ न हाथ आये मगर इज़्जत तो है--हाथ उस मिस से मिलाना चाहिये ॥

---

(१) मेहरबानी (२) नखरा (३) प्यार (४) दिल को सताना (५) कमजोरी (६) माशूक की गली (७) बड़ी (८) कमजोरी (९) दुनियां का बाग़ (१०) जिसका कोई वजूद न हों (११) जमाना (१२) इन्तजार करनेवाला (१३) बुरका (१४) उठा (१५) अपनी तारीफ़ करना (१६) गवाह (१७) जमाना (१८) सेवाय (१९) पैट (२०) अरजी लिखना (२१) बढ़ावा देना (२२) नई बात करना (२३) बात।

हम इनको खुशी के लिये क्या कुछ नहीं करते।
लेकिन[1] वह जफ़ाओं के सेवा कुछ नहीं करते॥
वह कहते हैं यह ठीक है हम कहते हैं जी हाँ।
बिलफ़ल[2] तो हम इसके सिवा कुछ नहीं करते॥
बुतखान[3]से कुछ फ़ैज़[4] न होगा तुम्हें "अकबर"।
तुमयां भी वजुज[5] ज़िक्र[6] खोदा कुछ नहीं करते॥

× × ×

न बहते अश्क तोतासीर[7] में सवा होते,
सदफ़[8] में रहते यह मोती तो बेबहा[9] होते॥
जनूने इश्क[10] में हम काश मुबतिला[11] होते,
खोदा ने अक़्ल जो दी थी तो बाखोदा होते॥
लिया न तख्लिये[12] में इनका बोसा चूक हुई,
बला से मुझपे वह होते अगर ख़फ़ा[13] होते॥
समझ गये कि ये अपने हवास[14] ही में नहीं,
हमारी बात पे अब वह नहीं ख़फ़ा होते॥
यह खाकसार[15] भी कुछ अर्ज़ेहाल[16] कहलेता,
हुज़ूर अगर मुतवज्जे[17] इधर जरा होते॥
यह जिसने आँख हमें दी है वह काबिलेदीद[18],
फिर इसको छोड़ के क्या महवे मासेवा[19] होते॥
मुझ ऐसे रिन्द से रखते जरूर ही उलफ़त[20],
जनाब शेख़ अगर आशिक़े खोदा होते॥

---

(१) जुल्म (२) इस वक्त (३) मन्दिर (४) फायदा (५) सेवा (६) ईश्वर की याद (७) असर (८) सीप (९) बेशकीमती (१०) मोहब्बत (११) फंसा (१२) अकेला (२३) नाराज़ (१४) होश (१५) ग़रीब (१६) अपना हाल बयान करना (१७) ध्यान देना (१८) देखने के लायक (१९) अलावा (२०) मोहब्बत।

दिलों को उल्फते दुनिया[१] ने सख्त ही रक्खा,
हवाये नफ्स[२] से गुंचे शिगुफ्ता[३] क्या होते ॥
गुनाहगारों ने देखा जमाले रहमत[४] को,
कहाँ नसीब[५] यह होता जो वेखता होते ॥
है जाहिदों[६] को जो वहेशत[७] जमाले इंसां[८] से,
तो काश[९] दोखतरेरिज़ ही के आशना होते ॥
वह जुल्म तुममें है मेरे सिवा कोई बन्दा,
तलाश[१०] से भी न पाते जो तुम खुदा होते ॥
जनाव हज़रते नासेह का वाह क्या कहना,
जो एक वात न होती तो औलिया[११] होते ॥
मजाक इश्क़ नही शेख में यह है अफसोस,
यह चासनी भी जो होती तो क्या से क्या होते ॥
कभी यह मैंने न चाहा कि हो वह दोस्त मेरे,
उम्मीद क्या थी कि होते तो वेरेया होते ॥
वजू से हो गई जायज़ नेमाज यारों को,
जवाजे[१२] इश्क भी होता जो दिल सफा होते ॥
तुम्हारे हुस्न के भी तजकिरे[१३] हैं शहरों में,
मेरे सोखन[१४] के भी चर्चे[१५] हैं जावजा[१६] होते ॥
महेलशुक्र[१७] है "अकबर" यह दुरफिशा[१८] नज़्में,
हर एक जवां को यह मोती नहीं अता होते ॥

× × ×

(१) दुनियां की मोहब्बत (२) सांस (३) खिला हुआ (४) मेहरवानी (५) भाग (६) परहेंज़गार (७) घिड़ना (८) आदमी की खूवसूरती (९) अगरचे (१०) ढूंढना (११) ईश्वर के दोस्त के माने मे आता हैं। (१२) सही होना (१३) जिक्र या चर्चे (१४) वातचीत (१५) वातचीत (१६) जगह वजगह (१७) शुक्र की वात (१८) अच्छी।

ज़रूरी काम नेचर[1] का जो है करना ही पड़ता है,
नहीं जी चाहता मुतलक़[2] मगर मरना ही पड़ता है ॥
ख़ोदाको मानना ही पड़ता है दुनियां को जब बरतो,
ख़ेयाले मर्ग[3] से इंसान को डरना ही पड़ता है ॥

× × ×

आपके क़स्र[4] दिल आवेज़ का[5] कहना क्या है,
मगर अकबर को ग़रज़ क्या उसे रहना क्या है ॥
सांस लेने को ज़रा ठहरा हूं मैं दुनियां में,
कैसा सामाने अक़ामत[6] मुझे रहना क्या है ॥
कह चुका इस क़दर और फिर वही उलझन[7] दिलकी,
कुछ समझ में नहीं आता मुझे कहना क्या है ॥
मुसकुरा कर वह लगे कहने कि ज़िल्लत ज़िल्लत[8],
जब यह पूछा कि सिवा रंज के सहना क्या है ॥

× × ×

उम्मीद व बीम[9] के झगड़ों से आगाही नहीं रखते ।
सबब यह है कि हम कोई तमन्ना[10] ही नहीं रखते ॥
तुझे ऐ चर्ख़[11] क्या मुश्किल है हमको मुतमइन[12] रखना ।
फक़ीरे बेनवा[13] है शौकते शाही[14] नहीं रखते ॥

× × ×

लब आशनाये[15] दोआ हूं न मासवा[16] के लिये ।
पुकारिये जो ख़ोदा को तो बस ख़ोदा के लिये ॥

---

(१) प्राकृतिक (२) बिलकुल (३) मृत्यु (४) महल (५) दिल को पसन्द आना (६) एक जगह रहना (७) परेशानी (८) गुनाह (९) आरज़ू (१०) आसमान (११) बेफिक्र या इतमीनान से रहना (१२) बेसामान (१३) बादशाही शान व शौकते (१४) दोस्त (१५) सेवाय (१६) अपना हाल बयान करना ।

मोकामे शौक में ऐ दिल वह रङ्ग पैदा कर।
नज़र ज़ुबान वने अर्ज़े मुद्दोआ[१] के लिये॥
सिवाय मर्ग नहीं कुछ इलाज दर्दे फेराक[२]।
अजल को ढूंढ़ते फिरते हैं हम दवा के लिये॥
जो हो सके तो उन्हे लाओ बस मैं अच्छा हूँ।
यह ऐहतेमाम[३] अंबस[४] है मेरी दवा के लिये॥
जो आरज़ूये अजल हो तो दिल किसी से लगा।
वहाना चाहिये आखिर कोई कज़ा के लिये॥
शवेफेराक़[५] में आया खेयाले ज़ुल्फे सियाह[६]।
यह और तुर्रा हुआ गेसुये बला के लिये॥
हसीन होना ही काफी है ज़ुल्म करने को।
तलाशे उज्र[७] यह क्यों है तुम्हें जफा[८] के लिये॥
बुतों के वासते जाता हूं मैं तो जानिबे दैर[९]।
सिधारे शेख ही जी काबे को खोदा के लिये॥

× × ×

मजहव कभी साइंस को सिजदा[१०] न करेगा।
इन्सान उड़े भी तो खोदा हो नही सकते॥
अज़राह ताल्लुक कोई जोड़ा करे रिश्ता।
अंगरेज तो नेटिव[११] के चचा हो नहीं सकते॥

---

(१) मतलव (२) जुदाई (३) कोशिश (४) वेफायदा या फजूल (५) जुदाई की रात (६) काला वाल (७) वहाना (८) जुल्म (९) कावा (१०) झुकना या सर जमीन पर रखना (११) अंगरेजी शब्द है मानी हिन्दुस्तानी।

नेटिव नहीं हो सकते जो गोरे तो है क्या ग़म,
गोरे भी तो बन्दे से खोदा हो नहीं सकते ॥
हम हों जो कलक्टर तो वह हो जायें कमिशनर,
हम इनसे कभी ओहदा बरा[1] हो नहीं सकते ॥

× × ×

दोही दिन मे रुखेगुल[2] जर्द[3] हुआ जाता है,
चमने दहेर[4] से दिल सर्द हुआ जाता है ॥
इल्म व तक़वा[5] पे बड़ा नाज था मुझको लेकिन,
आप के सामने सब गर्द हुआ जाता है ॥
हो रही है मेरी फरियाद की उलटी तासीर[6],
वह तो कुछ और भी बेदर्द हुआ जाता है ॥

× × ×

रातों को बुतों से वह लगावट भी चली जाय,
और सुबह को वह नारये यारब भी न छूटे ॥
करता है हेकारत[7] की नजर पीर मोग़ा[8] भी,
अफसोस अगर उनसे शराब अब भी न छूटे ॥
क़लई भी रेयाकार[9] की खुलती रहे "अकबर",
तानें से मगर तर्जे मोहज्जब[10] भी न छूटे ॥

× × ×

मानी[11] को भुला देती है सूरत है तो यह है,
नेचर[12] भी सबकसीख ले जीनत[13] है तो यह है ॥

---

(१) बराबर (२) फूल का चेहरा (३) पीला (४) ज़माना (५) परहेजगारी (६) असर (७) बुरी नज़र से देखना (८) आग का पुजारी, माशूक़ (९) मक्कार (१०) तहज़ीब तरीका (११) मतलब (१२) अङ्गरेजी लफ्ज़ है मानी प्रकृति (१३) सजाना ।

क़मरे मे जो हँसती हुई आई मिसे राना,
टीचर ने कहा इल्म की आफ़त है तो यह है ॥
यह बात तो अच्छी है कि उलफ़त हो मिसों से,
हूर उनको समझते हैं क़यामत है तो यह है ॥
पेचीदा मसायल[१] के लिये जाते है इङ्गलैन्ड,
ज़ुलफों मे उलझ आते है शामत है तो यह है ॥
पब्लिक मे ज़रा हाथ मिला लीजिये मुझसे,
साहब मेरे ईमान की क़ीमत है तो यह है ॥

× × ×

कौन ऐसा है जो यो मुझ पे इनायत[२] रक्खे,
सद[३] व सी[४] साल खोदा तुमको सलामत[५] रक्खे ॥
सच तो यह है कि सलीका[६] भी है हर काम मे शर्त[७],
बुत को चाहे तो बरहमन की तबीयत रक्खे ॥
नशरीयत न तरीकत[८] न मोहब्बत न हया[९],
जिसपे जो चाहे वह इस अहेद[१०] मे तोहमत[११] रक्खे ॥
आदमी के लिये दुनियां मे मसायब[१२] है बहुत,
खुश नसीबी है जो वह सब्र की आदत रक्खे ॥
क्या बताऊँ तुम्हें अच्छाई की पहचान "अकबर",
बस वही खूब है जो तुम से मोहब्बत रक्खे ॥

× × ×

मेरे हवास इश्क़ में क्या कम है मुंतशिर[१३],
मजनू का नाम हो गया किस्मत की बात है ॥
दिल जिसके हाथ में हो न हो उसपे दसतरस[१४],
बेशक यह अहलेदिल[१५] पे मुसीबत की बात है ॥

---

(१) टेढ़े मामले (२) मेहरबानी (३) सौ (४) तीस (५) हिफ़ाजत से (६) शऊर (७) जरूरी (८) राह (९) शर्म (१०) जमाना (११) ऐब लगाना (१२) मुसीबत (१३) परेशान, बिखरे हुये (१४) पहुँच (१५) दिलवाले ।

परवाना रेंगता रहे और शमा जल बुझे,
इससे ज़्यादा कौन सी जिल्लत[1] की बात है ॥
मुतलक[2] नहीं महले अजब मौत दहेर[3] में,
मुझको तो यह हयात[4] ही हैरत की बात है ॥
तिरछी नजर से आप मुझे देखते हैं क्यों,
दिल को यह छेड़ना ही शरारत की बात है ॥
राजी तो हो गये हैं वह तासीरे इश्क[5] से,
मौक़ा निकालना सो यह हिकमत[6] की बात है ॥

× × ×

दिल को मेरे तुम एक नज़र देख तो लेते,
होते न ख़रीदार मगर देख तो लेते ॥

× × ×

मुल्क में मुझको ज़लील व ख़्वार[7] रहने दीजिये,
आप अपनी इज़्ज़ते दरबार रहने दीजिये ॥
दिल ही दिल में बाहमी एक़रार रहने दीजिये,
बस खोदा ही को गवाह ऐ यार रहने दीजिये ॥
खूब फ़रमाया कि अपना प्यार रहने दीजिये,
आप ही यह ग़मज़ा[8] व इन्कार रहने दीजिये ॥
देखियेगा लुत्फ़ क्या क्या गुल खिलेंगे शौक से'
मुझको आप अपने गले का हार रहने दीजिये ॥
चाँदनी बरसात की निखरी[9] हैं चलती है नसीम[10],
आज तो लिल्लाह यह इन्कार रहने दीजिये ॥

---

(१) रुसवा होना (२) बिलकुल (३) जमाना (४) जिन्दगी (५) मोहब्बत का असर (६) अकलमन्दी (७) रुसवा (८) आख से इशारा करना (९) निकली है (१०) सुबह की हवा ।

चश्म बद्दूर[१] आप की 'नजरें' है खुद मौजे शराब[२],
बस मुझे बे मय पिये सरशार[३] रहने दीजिये ॥
कीजिये अपनी निगाहे फितना अफजा[४] का इलाज,
नरगिसे बीमार को बीमार रहने दीजिये ॥
किस बलाग़त[५] से कहा उसने कि रखिये हद्में शौक,
मुद्दोआ[६] को क़ाबिले इजहार[७] रहने दीजिये ॥
'लन्तरानी खुद शराबे मारफत[८] है ऐ कलीम,
आरजूये शरबते दीदार[९] रहने दीजिये ॥
छोड़ने का मैं नहीं अब आप को ऐ जाने जां,
है अगर मुझ पर खोदा की मार रहने दीजिये ॥
कीजिये साबित खुशएखलाक़ी[१०] से अपनी खूबियां,
यह नमूदे[११] जब्बा व दस्तार[१२] रहने दीजिये ॥
जालिमाना मशवरों में मैं नहीं हूँगा शरीक,
गैर ही को मोहरमे इसरार[१३] रहने दीजिये ॥
खुल गया मुझ पर बहुत हैं आप मेरे खैरख्वाह,
खैर चन्दा लीजिये तूमार[१४] रहने दीजिये ॥
कीजिये रिश्वतसेतानी[१५] से जरा परहेज आप,
खैरख्वाही का यह सब इजहार रहने दीजिये ॥
मिल के बरहम[१६] कीजिये अगियार से[१७] बहेसवजेदाल[१८],
बे नतीजा बाहमी तकरार रहने दीजिये ॥

---

(१) बुरी आँखों से दूर (२) शराब की लहर (३) भरा हुआ, सर से पांव तक (४) फसाद को बढ़ाने वाली (५) खूबसूरती (६) आरजू (७) जाहिर करना, कहना (८) ईश्वर को पहचाना (९) देखना (१०) अच्छा तरीका (११) जाहिर (१२) पगड़ी (१३) जिद (१४) बढ़चढ़ कर बात करना (१५) रिश्वत लेना (१६) आपस में (१७) गैर लोग। (१८) झगड़ना।

टेम्स[1] में मुमकिन नहीं नज़्ज़ारये मौजेफेरात,
ऐसी ख़्वाहिश को समुन्दर पार रहने दीजिये ॥
हमकेनार उस वहरेपूवी[2] से न होंगे "अकबर" आप,
ऐसे मंसूबे[3] समुन्दर पार रहने दीजिये ॥

× × ×

दुनिया में बेख़बर है जो परविरदिगार से,
शायद है जिन्दा अपने ही वह अख़्तियार से ॥
ऐ साने अजल[4] तेरी कुदरत के मैं निसार[5],
क्या सूरतें बनाई है मुश्ते गुबार[6] से ॥
तेरी बातों से गो दिल में मलाल[7] ऐ यार आता है,
मगर जब देखता हूं तेरी सूरत प्यार आता है ॥
जो जलता है दिले सोज़ां[8] का इञ्जन राहे उलफ़त में,
ख़बर देने को फ़ौरन आंसुओं का तार आता है ॥
जो राहे इश्क़ में दिल पर मुसीबत कोई पड़ती है,
ख़बर देने को फ़ौरन आंसुओं का तार आता है ॥

× × ×

दिल हो ख़राब दीन पे जो कुछ असर पड़े,
अब कारे आशिकी तो बहेरकैफ़[9] कर पड़े ॥
इश्के बुतां का दीन पे जो कुछ असर पड़े,
अब तो निबाहना है जब एक काम कर पड़े ॥
मजहब छोड़ाया अख़्वये दुनियाने शेख़ से,
देखी जो रेल ऊँट से आख़िर उतर पड़े ॥
बेताबियां नसीब न थीं वरना हमनशी,
यह क्या जरूर था कि उन्हीं पर नजर पड़े ॥

---

(१) विलायत में एक नदी है (२) पूबी का समुन्दर (३) किसी काम की तदबीर (४) खुदा की शान (५) न्योछावर (६) मुट्ठी भर धूल (७) अफ़सोस (८) जलता हुआ (९) बहेर हाल ।

बेहतर यही है क़स्द[1] इधर का करे न वह,
ऐसा न हो कि राह में दुश्मन का घर पड़े ॥
दाना[2] वही है दिल जो करे आप का खेयाल,
बीना[3] वही नजर है कि जो आप पर पड़े ॥
होनी न चाहिये थी मोहब्बत मगर हुई,
पड़ना न चाहिये था ग़जब[4] मे मगर पड़े ॥
शैतान की न मान जो राहत नसीब हो,
अल्लाह को पुकार मुसीबत अगर पड़े ॥
ऐ शेख इन बुतों की यह चालाकियां तो देख,
निकले अगर हरम[5] से तो "अकबर" के घर पड़े ॥

× × ×

जो क़ाने[6] है किसी दिन उसकी क़िसमत लड़ ही जाती है,
जो अहले हिर्स[7] हैं उन पर मुसीबत पड़ ही जाती है ॥
हसीनाने जहाँ से आंख अपनी लड़ ही जाती है,
दिल आही जाता है आखिर मुसीबत पड़ ही जाती है ॥
जवानी में हलाकत[8] दिल की है उसका दवा रखना,
कि ऐसी चीज दब कर गरमियो मे सड़ ही जाती है ॥
गुलिस्तां मे गुले रङ्गी को जीनत[9] की जरूरत क्या,
मगर इस लाल पर इलमासे[10] शबनम[11] जड़ ही जाती है ॥

× × ×

अपने बरताव से गो वह मुझे नाखुश रक्खे,
है दुआ मेरी यही इसको खोदा खुश रक्खे ॥
मुंह छुपा लेते है जुलफो से मै गो हूँ नाखुश,
हँस के कहते हैं तुझे मेरी बला खुश रक्खे ॥

---

(१) इरादा (२) अक्लिमन्द (३) देखना (४) मुसीबत (५) काबा (६) सब्र करनेवाला (७) लालची (८) मारडालना (९) सजावट (१०) हीरा (११) ओस ।

वाह किस चाल से गुंचों[1] को हँसाया तूने,
लुतफ़वारी[2] तुझे ऐ वादे सवा खुश रक्खे ॥
इन बुतों को नहीं कुछ सिद्क[3] व सफा[4] से मतलब,
बस खुशामद से कोई इनको जरा खुश रक्खे ॥
बाग़ व सहरा[5] में भी बे लुत्फ़ रहा करता हूँ,
रंज दे चर्ख़[6] तू क्या आब व हवा खुश रक्खे ॥
इस मिसे शोख़ से राहत[7] न मिलेगी मुझको,
उम्र भर खैर वह एक शब तो भला खुश रक्खे ॥
आप फर्माते हैं "अकबर" से मुझे खुश रक्खो,
खुद जो मग़मूम[8] हो वह और को क्या खुश रक्खे ॥

× × ×

उलझा न मेरे आज का दामन कभी कल से,
मांगी न मेरे दिल ने मदद तूलेअमल[9] से ॥
इनकी निगाहे मस्त है लबरेज़[10] मआनी,
मिलती हुई तासीर[11] मे हाफिज की ग़जल से ॥
इदराक[12] ने आंखे शबे अवहाम[13] में खोलीं,
वाकिफ[14] न हुआ रोशनी ये सुबहे अजल से ॥
क़ोरान है शाहिद[15] कि ख़ोदा हुस्न से खुश है,
किस हुस्न से यह भी तो सुनू हुस्ने अमल[16] से ॥
हुक्म आया खमोशी का तो बस हश्र तलक चुप,
अजमत[17] तेरे पैग़ाम[18] की जाहिर है अजल से ॥

(१) कलियाँ (२) ईश्वर की मेहरबानी (३) सच्चाई (४) सफाई (५) जङ्गल (६) आसमान (७) आराम (८) रञ्जीदा (९) दुनियां (१०) मरा हुआ (११) असर (१२) अकिल (१३) शुबहा (१४) जाननेवाला (१५) गवाह (१६) काम (१७) बुजुर्गी (१८) सन्देशा ।

बहसे कोहन[1] बनो मैं समझता नहीं "अकबर",
जो ज़र्रा[2] है मौजूद हैं वह रोज़े अजल से ॥
हो दावये तौहीद[3] मोबारक तुम्हें "अकबर"
साबित भी करो इसको मगर तर्ज़े अमल[4] से ॥

× × ×

दीन व मिल्लत[5] की तरक़्क़ी का खेयाल अच्छा है,
अस्ल मज़बूत हो ज़िसकी वह नेहाल[6] अच्छा है ॥
'बाखोदा हिन्द के पुर्ज़े भी ग़ज़ब ढाते हैं,
यह ग़लत है कि विलायत ही का माल अच्छा है ॥
घर के खत में है कि कल होगा चहल्लुम उसका,
पानियर[7] लिखता है कि बीमार का हाल अच्छा है ॥

× × ×

मौत से वहशत[8] बशर[9] का एक ख़्याले खाम[10] है,
अस्ल फितरत[11] में फक़त[12] आराम ही आराम है॥
इस तिजारतगाह दुनिया का कहूँ क्या तुमसे हाल,
कारख़ाने सब ख़ोदा के हैं हमारा नाम है ॥
पेशे नज़र[13] सनम[14] है बस आशिकी का ग़म है,
दुनिया की फिक्र कम है अल्लाह का करम[15] है ॥
सैय्यद की रोशनी को अल्लाह रक्खे कायम,
बत्ती बहुत है मोटी रोग़न[16] बहुत ही कम है ॥
क्या खूब पढ़ रहे थे मिसरा[17] महन्त साहब,
भण्डार तो हैं ख़ाली भारी मगर भरम है ॥

× × ×

(१) पुराना (२) छोटा टुकड़ा (३) एक मात्रा (४) हुकूमत का तरीक़ा (५) मेल (६) पौदा (७) पानियर एक अँगरेजी अख़बार है (८) डर (९) आदमी (१०) बुरा ख़्याल (११) चाल (१२) सिर्फ (१३) नज़र के सामने (१४) माशूक (१५) मेहरबानी (१६) तेल (१७) शैर का आधा हिस्सा ।

यही खुशियां रहेंगी दहेर[१] में ऐसे ही ग़म होंगे,
मगर एक वक़्त आयेगा न तुम होगे न हम होंगे ॥
उम्मीदें टूटती है तो बहुत सदमा[२] पहुँचता है'
जो उम्मीदें करेगा कल उसे सदमे भी कम होंगे ॥

× × ×

इसमे अक्स[३] आपका उतारेंगे, दिल को अपने यो हीं संवारेंगे ॥
बहेस मे मोलवी न हारेंगे, जान हारेंगे जी न हारेंगे ॥
आप नाहक[४] पे और हम हक़[५] पर, आप से हम कभी न हारेंगे ॥
हमसे करती है यह बहुत ग़मजे[६], हम भी दुनिया पे लात मारेंगे ॥
रिज़्क़[७] मक़सूम[८] ही मिलेगा उसे, कोई दुनिया मे दौड़े या रेंगे ॥
इश्क़ कहता है लुत्फ होंगे बडे, हिज्र[९] कहता है जान मारेंगे ॥
लीजिये जान है यही जो खुशी, कीजिये हिज्र दम न मारेंगे ॥
दिल की अफसुर्दगी[१०] न जायेगी, हां यह चाहेगे तो उभारेंगे ॥
मुबतिलायेबला[११] तो हूँ ग़ाफिल, यह भी अल्लाह को पुकारेंगे ॥
लाये भी तो खोदा कहीं वह घड़ी, कहते है तुझको खूब मारेंगें ॥
दिल न दूँगा मै आपको हरगिज, मुफत मे आप जान मारेंगें ॥
पन्द[१२] "अकबर" को देंगे क्य नासेह,[१३] गुल को क्या बाग़बा संवारेंगे ।

× × ×

ज़िद है उन्हें पूरा मेरा अरमां न करेंगे,
मुंह से जो नही निकली है अब हां न करेंगे ॥
क्यों जुल्फ़ का बोसा मुझे लेने नही देते,
कहते है कि वल्लाह परेशां न करेंगे ॥

---

(१) जमाना (२) रञ्ज (३) प्रतिविम्ब (४) ग़लत (५) सही (६) आंख से इशारा करना (७) खोराक (८) बांटा हुआ (९) जुदाई (१०) मुरदापन (११) मुसीबत में फँसा हुआ (१२) नसीहत या सीख (२६) नसहीत करने वाले ।

है ज़ेहन से एक बात तुम्हारे मोताल्लिक़[1] ।
ख़िलवत[2] मे जो पूछोगे तो पिन्हां[3] न करेंगे ॥

वायज़[4] तो बनाते है मुसलमान को काफ़िर ।
अफ़सोस यह काफ़िर को मुसलमां न करेंगे ॥

क्यों शुक्रगुज़ारी[5] का मुझे शौक़ है इतना ।
सुनता हूँ वह मुझ पर कोई ऐहसां न करेंगे ॥

दीवाना न समझे हमे वह समझे शराबी ।
अब चाक कभी जेब व गरेवां[6] न करेंगे ॥

वह जानते हैं ग़ैर मेरे घर मे है मेहमां ।
आएँगे तो मुझ पर कोइ ऐहसां न करेंगे ॥

× × ×

परागन्दा[7] बहुत है दिल मेरा दुनिया के धन्धों से ।
छोड़ा दे मुझको या रब नौकरी के सख़्त फन्दों से ॥

ग़ुलामाना तरीक़ों पर मुझे मजबूर करते हैं ।
ख़ोदाया बेनयाज़ी[8] दे मुझे इन खुद पसन्दो से ॥

कबाब आया तो क्या जब दिल हुआ जल कर कबाब अपना ।
मुझे नानेजुई[9] बेहतर है बस ऐसे पसन्दों से ॥

यह ख़्वाहिश है कि ज़िक्रे हक़[10] से दिल ताजा रहे हरदम ।
ख़ोदा बन्दा मिला दे मुझको अपने नेक बन्दों से ॥

मुसलमानों की खुशहाली[11] की बेशक धुन है सय्यद को ।
मगर यह काम निकलेगा न लेकचर से न चन्दो से ॥

---

(१) बारे मे (२) अकेलापन (३) छिपा (४) सीख देनेवाला (५) ईश्वर का शुक्रिया अदा करना (६) गला (७) परेशान (८) बेपरवाही (९) जव की रोटी (१०) ईश्वर की याद (११) अच्छी हालत में रहना ।

दुरुस्ती[1] तख्त इज़्ज़त की कहां इन कील काटा में ।
तवक़्क़ा[2] शहसवारी की न रक्खो नाल बन्दों से ॥
कुजा[3] वह गेसुये मिशकी कुजा यह ढीली स्पीचें ।
दिले वहशीय[4] "अकबर" फँस चुका ऐसी कमन्दो से ॥

× × ×

सीने से लगाये तुम्हे अरमान यही है ।
जीने का मज़ा है तो मेरी जान यही है ॥
सब्र इसलिये अच्छा है कि आइन्दा है उम्मीद ।
मौत इसलिये बेहतर है कि आसान यही है ॥
तू दिल मे तो आता है समझ में नही आता ।
बस जान गया मै तेरी पहचान यही है ॥
गेसू के शरीक और भी थे क़त्ल मे मेरे ।
क्या वजह है इसकी कि परेशान यही है ॥
दिल तेरी मोहब्बत मे दो आलम[5] को भुलादे ।
मजहब है यही और मेरा ईमान यही है ॥
इस बुत ने कहा बोसए बेअजा[6] पे हँस कर ।
बस देख लिया आपका ईमान यही है ॥
करते है वह तदरीज[7] व ज़ुल्मो मे इज़ाफा[8] ।
मुझ पर अगर इनका है कुछ एहसान यही है ॥
हम फिलसफा को कहते हैं गुमराही[9] का बायस[10] ।
वह पेट देखाते है कि शैतान यही है ॥
"अकबर" को दोआ देते है अहबाब यह कहकर ।
अब अपनी जमाअत[11] मे मुसलमान यही है ॥

× × ×

---

(१) ठीक होना (२) उम्मीद (३) कहां (४) जंगली जानवर या पागलपन (५) मुल्क (६) बे हुक्म या इजाजत (७) दर्जा ब दर्जा ज़्यादती (८) गलत रास्ते पर चलना (१०) वजेह या सब्ब (११) जत्था, ग्रोह ।

सिधारें शेख़ काबे को हम इंगलिसतान देखेंगे।
वह देखें घर ख़ोदा का हम ख़ोदा की शान देखेंगे॥

जवानों को ज़रा परवा नहीं वे ऐतेदाली[1] की।
बुढ़ापे में नतीजे उसके यह नादान देखेंगे॥

हसीनाने वदूये[2] इत्तेका[3] का सामना होगा।
मैं देखूँगा उन्हें और वह मेरा ईमान देखेंगे॥

तेरी दीवानगी पर रहम आता है हमे "अकबर"।
कोई दिन वह भी होगा हम तुझे इन्सान देखेंगे॥

× × ×

अक़्ल है ईमां है दिल है जान है—लीजिये सब आप पर क़ुरबान[4] है॥
ख़ूबिये मजहब[5] दमे आख़िर[6] खुली—नज़ा मे मौनिस[7] फक़त ईमान है॥
मिल के यारों से हुआ शौक़े गुनाह[8]—आदमी का आदमी शैतान है॥
क्या मुझे करते हो जिन्दों में शुमार—सांस लेता हूं बस इतनी जान है॥
खुद बना है क्या वह बुत इतना हसीन—लुत्फ फितरत[9] है ख़ोदा की शान है॥
लुत्फ साक़ी[10] से न छलके नामे[11] दिल—ज़र्फआली[12] की यही पहचान है॥
दिल जिसे समझा है सामाने वकार[13]—ग़ौर से देखो तो एक तूफ़ान है॥
बेवक़ूफी है ताज्जुब मौत पर—अक़ल तो जीने ही पर हैरान है॥
आलमे हस्ती पे हैरत है मुझे—किस लिये आख़िर यह सब सामान है॥
या मुसीबत अमरे[14] मानी खेज़[15] है—या यह नेचर[16] खुद बहुत नादान है॥
इसको नादानी मगर मानेगा कौन—ज़र्रा ज़र्रा आक़िली की जान है॥

---

(१) बरावर होना (२) दुशमन (३) बचना (४, निछावर (५) धर्म (६) आखीर वक़्त (७) दोस्त (८) गुनाह करने की ख़्वाहिश (९) पैदाइश या खसलत (१०) शराब पिलानेवाला (११) शराब पीने का प्याला (१२) बड़ा अक़िलमन्द (१३) आराम (१४) हुकुम (१५) उठनेवाला (१६) प्राकृत।

र उठी है आपकी तेग़े सितम¹–मुझ में क्या बाकी अभी कुछ जान है ॥
हुकम खामोशी है और मेरी जवां–आपकी वातें है मेरा कान है ॥

× × ×

लुत्फ़ था जिनसे नज्जारे का हसीं वह न रहे ।
जिनसे रौनक थी मकानों की मकीं² वह न रहे ॥
मैं जो रोता हूँ कि अफसोस जमाना वदला ।
मुझ पे हँसता है जमाना कि तुम्हीं वह न रहे ॥

× × ×

तलव हो सब्र की और दिल में आरजू आये ।
गजब है दोस्त की ख़्वाहिश हो और ओदू आए ॥
वहार में भी न राहत⁴ मिले जो फुर्क़त⁵ हो ।
सवा से भी गुले दाग़े जिगर की वू⁶ आए ॥
वुतों के जुल्म को कर दूँ मैं हर तरह सावित ।
मगर खोदा न करे ऐसी गुफ्तगू आए ॥
तुम अपना रंग वदलते रहो फलक⁶ की तरह ।
किसी की आंख में अशक⁷ आए या लहू⁸ आए ॥
तेरी जुदाई से है रूह⁹ पर यह जुलम हवास ।
मै अपने आप में फिर क्यों रहूँ जो तू आए ॥
रेमा¹⁰ का रंग न हो मुसतनद हैं वह एमाल¹¹ ।
कलाम¹²पोख़्ता¹³है जब दर्द दिल की वू आए ॥
लवों का बोसा जिसे मिल गया हो वह जाने ।
कदम तो इस वुतेवेदीं¹⁴ के हम भी छू आए ॥
खुली जो आंख जवानी में इश्क आ पहुंचा ।
जो गरमियों मे खुलें दर तो क्यों न लू आए ॥

---

(१) जुल्म (२) मालिक मकान (३) आराव (४) जुदाई (५) खुशबू (६) आसमान (७) आँसू (८) खून (९) जान (१०) ज़ाहिरदारी (११) काम (१२) वात (१३) पक्का (१४) वेधर्म ।

वह मै[1] नसीब[2] कहां इन हवस परस्तों को ।
कि हो क़दम को न लग़ज़िश[3] न मुंह से बू आए ॥

× × ×

होता है नफ़ा[4] योरोपियन नान पाव से ।
मैं खुश हूँ एशिया के खाली पोलाव से ॥
तन्हा[5] वह रह गये थे तो मैं खुद न बैठता ।
नाहक मुझे ज़लील, किया जाव जाव से ॥
ईमान बेचने पे हैं अब सब तुले हुये ।
लेकिन ख़रीद हो जो अलीगढ़ के भाव से ॥

× × ×

बे नाला[6] व फ़रियाद[7] व फ़ोग़ां[8] रह नहीं सकते ।
क़हेर[9] इस पे यह है इसका सबब कह नहीं सकते ॥
मौजें[10] हैं तबीयत में मगर उठ नहीं सकतीं ।
दरिया हैं मेरे दिल में मगर वह नहीं सकते ॥
पतवार शिकस्ता[11] है नही ताक़ते तरमीम[12] ।
है नाव में सूराख मगर कह नहीं सकते ॥
कह दोगे कि है तजुर्बा इस बात का बरअक्स[13] ।
क्योंकर यह कहें जुल्म सितम[14] सह नहीं सकते ॥
इज़्ज़त कभी वह थी कि भुलाये से न भूली ।
तहकीर[15] अब ऐसी है जिसे सह नहीं सकते ॥

× × ×

इन बुताने बेवफ़ा के हुसन का दिलदादा[16] है ।
फ़िक्र है "अकबर" की रङ्गी दिल नेहायत सादा है ॥

---

(१) शराब (२) क़िस्मत (३) डगमगाहट (४) फ़ायदा (५) अकेला (६) शोर (७) शोर (८) शोर (९) ज़बरदस्ती (१०) लहरें (११) टूटा हुआ (१२) मरम्मत करना (१३) उलटा (१४) जुल्म (१५) बेईज़्ज़ती (१६) दिल का चाहनेवाला ।

रक्स[१] परवाने का गिरदेशमा[२] देखे अहले जौक ।
किस खुशी से जान देने के लिये आमादा[३] है ॥
मायले खालिक[४] मुझे करती है यों रफ़तारे खल्क ।
चश्मबीना[५] के लिये हर नक़शेपा[६] सज्जादा[७] है ॥

× × ×

मिसों के सामने क्या मजहबी बहाना चले ।
चलेंगे हम भी उसी रुख[८] जिधर जमाना चले ॥
मैं जानता हूं न छोड़ेंगे आप चाल अपनी ।
किसी का काम चले ऐ हुजूर या न चले ॥
खोदा के वास्ते साकी यही निगहे करम[९] ।
चला है दूर तो फिर क्यों रुके चला न चले ॥
खिला है बागे कनायत[१०] में गुंचये खातिर ।
खोदा बचाए कहीं हिर्स[११] की हवा न चले ॥
नसीब हो न सकी दौलते कदमबोसी[१२] ।
अदब से चूम के हजरत का आस्ताना[१३] चले ॥
फरोग़[१४] इश्क का बे आह के नहीं मुमकिन ।
न फैले बूए गुलिस्तां[१५] अगर हवा न चले ॥
खुले केवाड़ जो कमरे के फिर किसी को क्या ।
यह हुक्म भी तो हुआ है कि रास्ता न चले ॥
खुदी की हिस[१६] से भी होता है इन्तेशार[१७] "अकबर" ।
कहां रहूं कि मुझे भी मेरा पता न चले ॥

× × ×

---

(१) नाचना (२) रोशनी के चारो तरफ (३) तय्यार (४) ईश्वर (५) देखनेवाली आँख (६) पैर का निशान (७) सिजदा करने के लायक या पूजा करने के लायक (८) मुंह (९) मेहरबानी की निगाह (१०) सब्र (११) लालच (१२) पैर का चूमना (१३) चौखट (१४) रोशनी (१५) बाग़ (१६) मालूम होना (१७) फैलना ।

मेरे दिल को वह बुते दिलख़्वाह[1] जो चाहे करे।
अब तो दे डाला उसे अल्लाह जो चाहे करे॥
हज़रते "अकबर" सा जाबित[2] और यह बेताबियां[3]।
आपकी तिरछी नजर वल्लाह जो चाहे करे॥
मञ्जिले सिद्क़[4] व सफा[5] है हर तरह खतरों से पाक।
नेक बख़तों[6] में से तै यह राह जो चाहे करे॥
शेख़ की मन्तिक[7] हो या चश्मेफिसूं[8] साजेबुतां[9]।
सीधा साधा हूं मुझे गुमराह[10] जो चाहे करे॥
देखकर पोथी[11] ब्रह्मन कहते है इस अहेद में।
शादी तो आसां नहीं हां ब्याह जो चाहे करे॥
ख़र्च की तफसील[12] पूछूंगा न मांगूंगा हिसाब।
लेले वह बुत कुल मेरी तंख़्वाह जो चाहे करे॥
अच्छे अच्छे फंस गये हैं नौकरी के जाल में।
सच यह है अफ़ज़ू[13] नये तंख़्वाह जो चाहे करे॥
बाअसर[14] होना तो है मौकूफ़[15] दिल के रञ्ज पर।
जोश में यूं आके "अकबर" आह जो चाहे करे॥

× × ×

वह खूब समझते हैं यह क्यो मुझको ग़शी[16] है।
यह भी एक अदा है जो यह बेगाना वशी है॥
इफकारे[17] दो आलम ने किया है मुझे बीमार।
सुनता हूँ इलाज इसका फक़त वादा कशी[18] है॥

---

(१) दिल को पसन्द आनेवाला (२) बरदास्त करनेवाला (३) परेशानियाँ (४) सच्चाई (५) साफ़ (६) अच्छे तकदीरवाला (७) एक तरह का इल्म है (८) जादू भरी आँख (९) बाजा (१०) बहकाना या रास्ता भुलाना (११) किताब (१२) ब्योरा (१३) बढ़ा हुआ (१४) असरवाला (१५) ठहरना (१६) बेहोशी (१७) फिकरें (१८) शराब पीना।

महबूबा[१] भी रुख़स्त हुई साक़ी भी सिधारा।
दौलत न रही पास तो अब ही[२] है न शी[३] है॥
मैं कौनसा मुंह लेके उन्हें शक्ल देखाऊँ।
गोरे को कहा जब यह निगोड़ा हवशी है॥

× × ×

मोतीय[४] व ताबएफ़र्मा[५] को उज्र[६] ही क्या है।
खुले तो हाल कि मरज़ी हुज़ूर की क्या है॥
जनाब शेख को है मेरे हाल पर अफसोस।
कहो कि इससे भी होगा सवा अभी क्या है॥
सदाए सूर[७] को है इब्तेदा[८] जमाने में।
बढ़ेगी इसकी बतदरीज[९] लै अभी क्या है॥
वह इश्क क्या जो न हो हादिये[१०] तरीक[११] कमाल।
जो अकल को न बढ़ाये वह शायरी क्या है॥
हर एक को है जमाने में जिन्दगी मकसूद।
किसे ख़बर है कि मकसूद ज़िनदगी क्या है॥
बुतों को देते हैं हम जान दिल्लगी के लिए।
मगर यह जान गँवाना है दिल्लगी क्या है॥
मुरीद[१२] लोग भी अब ऐतना[१३] नहीं करते।
जो देखते है तो कहते हैं शेख़ जी क्या है॥
जो तेरे महो[१४] हैं उनको बुतो से क्या मतलब।
वह हूर[१५] की नहीं सुनते तो फिर परी क्या है॥

---

(१) प्यारी (२) अँगरेजी लफ़ज़ है मर्द के वास्ते आता है अर्थ वह (३) अँगरेजी लफ़ज है औरत के वास्ते आता है अर्थ वह (४) हुकुम माननेवाला (५) हुकुम माननेवाला (६) इनकार (७) सङ्ख (८) शुरू (६) धीरे-धीरे (१०) अच्छा रास्ता दिखाने वाला (११) तरीक़ा (१२) चेला (१३) मेहरबानी करना (१४) लगे हुये (१५) एक क़िस्म की परी।

इस इन्केलाव[1] को हैरत से देखता हूँ मैं।
जमाना कहता है देखा करो अभी क्या है॥

× × ×

अपने पहलू से वह गैरों को उठा ही न सके।
उनको हम क़िस्सये ग़म[2] अपना सुना ही न सके॥
ज़ेहन[3] मेरा वह क़्यामत कि दो आलम पे मोहीत[4]।
आप ऐसे कि मेरे जेहन में आही न सके॥
देख लेते जो उन्हें तो मुझे रखते माजूर[5]।
शेख साहब मगर उस बजम[6] में जाही न सके॥
अकल महँगी है बहुत इश्क़ खिलाफे तहजीब[7]।
दिल को इस अहेद[8] में हम काम में लाही न सके॥
हम तो खुद चाहते थे चैन से बैठें कोई दम।
आप की याद मगर दिल से भुलाही न सके॥
इश्क़ कामिल[9] है उसी का कि पतंगों की तरह।
ताब नज़्ज़ारए माशूक़ की लाही न सके॥
दामहसती[10] की भी तरकीब अजब रक्खी है।
जो फँसे उसमें वह फिर जान बचा ही न सके॥
ऐसी मंतिक़ से तो दीवांगी बेहतर "अकबर"।
कि जो खालिक की तरफ़ दिल को झुका ही न सके॥

× × ×

शेख जी अपनी सी बकते ही रहे—वह थियेटर में थिरकते ही रहे॥
डफ बजाया ही किये मजमूंनिगार[11]—वह कमेटी में भटकते ही रहें॥
सरकशों[12] ने ताअतेहक़[13] छोड़ दी—अहलेसिजदा[14] सर पटकते ही रहे॥

---

(१) उलट-फेर (२) अफ़सोस (३) समझ (४) घेरा हुआ (५) ऐतराज किया हुआ (६) महफ़िल (७) तहजीब के खिलाफ़ (८) ज़माना (९) पूरा (१०) जिन्दगी का जाल। (११) मजमून का लिखनेवाला (१२) बाग़ी (१३) ईश्वर की पूजा (१४) सर झुकानेवाले।

गायें सबजा पा गई करके कुलेलं–ऊँट कांटो पर लपकते ही रहे ॥
जो गुबारे थे वह आखिर गिर गये–जो सितारे थे चमकते ही रहे ॥

× × ×

अगर मिलना नहीं मंजूर आँखें क्यों मिलाते हो ।
यह तड़पाने से हासिल फ़ायदा बेचैन करने से ॥
न रहने देगा मुझको ज़ोशे दिल अब दस्तकश[१] हर्गिज़ ।
कयामत हो गया है आप का सोना उभरने से ॥
जवानी की है आमद[२] शरम से झुक सकती है आँखें ।
मगर सीने का फितना[३] रुक नही सकता उभरने से ॥

× × ×

और भी दौरे फलक[४] है अभी आने वाले ।
नाज इतना न करें हमको मिटाने वाले ॥
सैकड़ो दौरे जुनू[५] हैं अभी आने वाले ।
मुतमइन[६] क्या है मुझे होश मे लाने वाले ॥
उठते जाते हैं अब इस बज़्म से अरबाबेनजर[७] ।
घुटते जाते हैं मेरे दिल के बढ़ाने वाले ॥
खातमा ऐश[८] का हसरत[९] ही पे होते देखा ।
रोही के उट्ठे है इस बज़्म से गाने वाले ॥
हद्दे इदराक[१०] में दाखिल न हुआ सरे अजल[११] ।
कुछ समझ ही न सके होश मे आनेवाले ॥
मौजे[१२] मानी हुई गुम[१३] बंध गये अलफाजके पुल ।
कुछ खबर है तुझे ऐ बात बताने वाले ॥
आप अंधेरे में हैं बिजली से मदद ले लेते ।
चाँद सूरज हैं हमें राह दिखाने वाले ॥

---

(१) अलहदा रहनेवाला (२) आना (३) फेसाद (४) आसमान, (५) पागलपन (६) इतमीना से (७) अच्छे लोग (८) आराम (९) तमन्ना (१०) अक़्ल (११) मौत (१२) लहर (१३) खोजाना ।

वारेऐहसां[१] जिसे कहते हैं वह है कोहे[२] जफा[३] ।
काश नादिम[४] हों यह ऐहसान जताने वाले ॥
आप मुंकिर[५] है गुलामी भी नहीं मिलती है ।
सलतनत[६] कर गये उकबा से डराने वाले ॥
क़दमे शौक बढ़े उनकी तरफ क्या "अकबर" ।
दिल से मिलते नही ये हाथ मिलाने वाले ॥

× × ×

सब में वहशत[७] है जमाने के बदल जाने से ।
दिल अब अपने से न मिलता है न बेगाने से ॥
रहम कर कौम की हालत पे तो ऐ जिक्रे खोदा ।
बे अदब हो गई मजलिस[८] तेरे उठ जाने से ॥
जब हमीं वह न रहे फिर यह बदलना कैसा ।
यह कहो मिट गये दुनिया के बदल जाने से ॥
नुक्स[९] तालीम[१०] से अब उसकी समझ ही न रही ।
दिल तो बढ़ जाता था अजदाद[११] के अफसाने से ॥
शेख़ मरहूम[१२] का कौल[१३] अब मुझे याद आता है ।
दिल बदल जायेंगे तालीम बदल जाने से ॥
हुक्म "अकबर" को हुआ है कि करो तर्क[१४] सोख़[१५] ।
ख्वाजा हाफिज़ भी निकाले गये मैखाने से ॥
दम लबो[१६] पर था दिले जार[१७] के घबराने से ।
आगई जान में जान आप के आजाने से ॥
तेरा कूचा[१८] न छुटेगा तेरे दीवाने से ।
इसको काबा से न मतलब है न बुतखाने से ॥

---

(१) नेकी का बोझ (२) पहाड़ (३) जुलम (४) शरमिन्दा (५) इंकार करने वाला (६) बादशाहत (७) पागलपन (८) महफिल (९) बुराई या कमी (१०) पढ़ाई-लिखाई (११) बाप दादा (१२) मरा हुआ (१३) बात (१४) छोड़ना (१५) शायरी करना या मजमून लिखना (१६) ओठों (१७) परेशान (१८) गली ।

बचता हूँ कूए हसीनान[१] की हवा खाने से।
फायदा क्या है दबी आग के भड़काने से॥
रक्स[२] करती है सवा गर्म नवा[३] है बुलबुल।
कुश्ता[४] इस नाच का हूँ मस्त हूँ इस गाने से॥
जो कहा मैंने करों कुछ मेरे रोने का खेयाल।
हँस के बोले मुझे फुरसत नहीं है गाने से॥
जांबलब[५] देख के सीने से लगाया उसने।
घट गई शर्म मेरे शौक के बढ़ जाने से॥
ख़ैर चुप रहिए मजा ही न मिला बोसे का।
मैं भी बेलुत्फ[६] हुआ आपके झुंझलाने से॥
खुश करे क्या मुझे गुंचे का शिगुफ्ता[७] होना।
रंज होता है वहुत फूलों के कुम्हलाने[८] से॥
अपने दिल ही की रिफाकत[९] में बसर[१०] की मैंने।
शुक्र अल्लाह का है निभ गई दिवाने से॥
शेख नाफहेम[११] हैं करते जो नहीं क़द्र उसकी।
दिल फरिश्तों के मिले हैं तेरे दीवाने से॥
मुज़्तरिब[१२] इश्के बुतां[१३] में हूँ अबस[१४] मैं इतना।
राम[१५] हो जाएँगे क्या वह मेरे घबराने से॥
मेहमां चर्ख सितमगर[१६] का किया किसमत ने।
कोई चारा नहीं अब ख़ूने जिगर खाने से॥

---

(१) खूबसूरत लोग (२) नाचना (३) आवाज करना या चहचहाना (४) मारा हुआ (५) ओठों पर जान (६) बेमज़ा (७) खिलना (८) मुरझाना (९) दोस्ती (१०) गुज़र करना (११) नासमझ (१२) परेशान (१३) माशूक की मोहब्बत (१४) फ़ज़ूल (१५) ताबेदार या मेहरबान (१६) जालिम।

रौनके इश्क़ बढ़ा देती है वेतावीये दिल ।
हुस्न की शान फेज़ू[1] होती है शरमाने से ॥
दिले सद[2] चाक[3] से खुल जायेंगे हस्ती के यह पेच ।
बल निकल जायेंगे इस ज़ुल्फ[4] के इस शाने[5] से ॥
कौन हमदर्द किसी का है जहां मे "अकवर" ।
एक उभरता है यहां एक के मिट जाने से ॥
सफयेदहेर[6] पे है नक़शे मोखालिफ[7] "अकवर" ।
एक उभरता है यहां एक के मिट जाने से ॥

× × ×

आंखें मुझे तलुओं से वह मलने नहीं देते ।
अरमान मेरे दिल का निकलने नहीं देते ॥
ख़ातिर से तेरी याद को टलने नहीं देते ।
सच है कि हमीं दिल को सभलने नहीं देते ॥
किस नाज से कहते हैं वह झुंझला के शबे वस्ल[8] ।
तुमतो हमे करवट भी बदलने नहीं देते ॥
परवानों ने फानूस को देखा तो यह बोले ।
क्यों हमको जलाते हो कि जलने नहीं देते ॥
हैरान हूँ किस तरह करूँ अर्जे तमन्ना[9] ।
दुश्मन को तो पहलू से वह टलने नहीं देते ॥
दिल वह हैं कि फरियाद से लवरेज[10] है हर वक़्त ।
हम वह हैं कि कुछ मुँह से निकलने नहीं देते ॥
गरमीय मोहब्वत[11] मे है वह आह के माने ।
पंखा नफसे सरद[12] का झलने नहीं देते ॥

× × ×

ग़मज़ा[13] नहीं होता कि इशारा नहीं होता ।
आँख उनसे जो मिलती है तो क्या-क्या नहीं होता ॥

---

(१) वढ़ना (२) सौ (३) टुकड़ा (४) वाल (५) कंघी (६) ज़माने का वर्क़ (७) दुश्मन (८) मुलाक़ात की रात (९) आरज़ू (१०) मुंहतक भरा हुआ (११) मोहब्वत की तेज़ी (१२) ठंडी सांस (१३) आंख से इशाराकरना

जलवा न हो मानी का तो सूरत का असर क्या ।
बुलबुल गुले तस्वीर का शैदा[१] नही होता ॥
अल्लाह बचाये मरीजे इश्क से दिल को ।
सुनते हैं कि यह आरजा[२] अच्छा नहीं होता ॥
तशबीह[३] तेरे चेहरे को क्या दूं गुलेतर से ।
होता है शिगुफ्ता[४] मगर इतना नहीं होता ॥
मैं नेजा में हूँ आयें तो ऐहसान है उनका ।
लेकिन यह समझलें कि तमाशा नहीं होता ॥
हम आह भी करते है तो हो जाते हैं बदनाम ।
वह कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता ॥

× × ×

ग़मे फेराक़[५] का सदमा उठा नही सकता ।
अब अपनी जान मैं ऐ जां बचा नही सकता ॥
किसी को रंगे मोहब्बत देखा नहीं सकता ।
जो दिल में है वह जुबां पर मै ला नहीं सकता ॥
हयाये[६] हुसन[७] उन्हें है हेजाब[८] इश्क मुझे ।
ग़रज़ वह आ नही सकते मै जा नहीं सकता ॥
यह कह के उठ गये हंगामये[९] नेजा मुझसे रफीक[१०] ।
यह राह वह है कोई साथ जा नही सकता ॥
लगाले सीने से या कतल कर मुझे जालिम ।
तेरे कदम[११] से मैं अब सर उठा नहीं सकता ॥
तुम्ही मिलो तो मिलो वरना और से क्या काम ।
मैं अपने दिल को कही अब लगा नहीं सकता ॥

---

(१) आशिक (२) बीमारी (३) दूसरे से मोक़ाबला करना (४) खिलाना (५) जुदाई (६) शर्म (७) खूबसूरती (८) पर्दा (९) भीड़ (१०) दोस्त (११) पैर ।

नज़र लगाये है दिल पर हर एक तरफ से हँसी ।
किसी तरह से मैं पहलू बचा नहीं सकता ॥
गुज़र चुका है मेरा काम जव्त[1] से "अकबर" ।
मैं राजे इश्क़ अब अपना छिपा नहीं सकता ॥

× × ×

यार ने कुछ खबर न ली दिल ने जिगर ने क्या किया ।
नालये शब[2] से क्या हुआ आहे सहेर[3] ने क्या किया ॥
दोनों को पाके बे ख़बर कर गये काम हुस्नो इश्क ।
दिल ने हमारे क्या किया उनकी नजर ने क्या किया ॥
साहबेताजो वखत भी मौत से यां न बच सके ।
जाह[4] व हशम[5] से क्या हुआ कसरतेजर[6] ने क्या किया ॥
खुल गया सब पे हाल दिल हँसते हैं दोस्त बरमला[7] ।
जब्त[8] किया न राज़े इश्क दीदयेतर[9] ने क्या किया ॥
"अकबरे" ख़सता दिल[10] का हाल काबिले रहेम हो गया ।
इससे सलूक[11] क्या कहूँ तेरी नजर ने क्या किया ॥

× × ×

नसीहत वायजो की अब करेगी क्या असर अपना ।
जमाना हो चुका है योंही रिन्दी में बसर अपना ॥
न रोऊँ किस तरह गुरबत[12] मे मैं दिल खोल कर अपना ।
हिजाब[13] अब है यहां किसका न शहर अपना न घर अपना ॥
राहोरसमे[14] मोहब्बत इन हसीनो से मै क्या रक्खूं ।
जहां तक देखता हूँ नफा[15] उनका है ज़रर[16] अपना ॥

---

(१) सब्र (२) रात का शोर (३) सुबह (४) इज्जत, मरतबा (५) नौकर चाकर (६) ज्यादा रुपया, मालदार (७) बेसाख्ता या ठट्ठामारकर (८) सब्र (९) भीगी आंख (१०) जख़मी दिल (११) अच्छा बरताव (१२) ग़रीबी या परदेस (१३) परदा (१४) मेलजोल (१५) फायदा (१६) नुकसान ।

रहे आवारा यों एक उम्र दुनिया में तो क्या हासिल।
मजा तब था बना लेते किसी के दिल में घर अपना॥
महल गैरत[1] का हैं चेहरे पे लूँगा वार कातिल के।
मुझे इस मारके[2] में मुँह न दिखलाये सिपर[3] अपना॥
मोहब्बत खुल गई अपने पराये ताने देते हैं।
अजब हालत है गैरत से उधर उनका इधर अपना॥
मोहब्बत में यह नासेह और भी एक क़हेर ढाते[4] हैं।
कहें क्या नाक में दम है उधर उनका इधर अपना॥

× × ×

गुलिस्ताने मजामी बसके है मद्दे नजर[5] अपना।
गुलतर से लताफत[6] मे फुजूं[7] है शैर तर अपना॥
हुआ है बेखुदी के कूचे में जब से गुज़र अपना।
निगाहे शौक़ से मैं खुद हूँ मंजूरे नज़र अपना॥
उठाता था हजारों सख़्तियों दिल में इसे रख कर।
मेरे संगे लहद[8] पर आरजू[9] पटकेगी सर अपना॥
उरुजे[10] हसतियेफ़ानी[11] पे क्या सरगरम[12] इशरत[13] हूँ।
फ़रोगे[14] चन्द साइत[15] है यहां मिसले शरर[16] अपना॥
जगह दे आमद आमद है नवेदे[17] वस्लेजाना[18] की।
उढ़ाले सीने से बिस्तर तू ऐ दर्दे जिगर अपना॥
नहीं कुछ आज ही से मेरी किस्मत में परेशानी।
अजल से हिस्सये सौदाये गेसू मे है सर अपना॥

---

(१) शर्म (२) लड़ाई (३) ढाल (४) जबरदस्ती करते हैं (५) निगाह के सामने (६) अच्छाई (७) ज्यादा या बढ़कर (८) कब्र (९) उम्मीद (१०) ऊँचाई (१०) मिटने वाला (१२) मस्त या खुशी (१३) आराम (१४) रोशनी (१५) थोड़ी देर (१६) चिन्गारी (१७) अच्छी खबर (१८) माशूक की मुलाक़ात।

लहेद की फ़िक्र भी लाज़िम[1] है मुनयेम[2] क़स्रे[3] अलीमे ।
मश्राले[4] कार भी कुछ सोच ले ऐ वेख़बर अपना ॥
अमानत[5] इश्क़ की वाद अपने क्या जाने मिले किसको ।
न मालुम जाय किसके सर यह दर्द सर अपना ॥
ग़रज क्या उनको है पापोश[6] उनकी पांव धोती है ।
लिए फिरता है क्यो मुहरे फलक[7] यह तश्तेजर अपना[8] ॥
निगाहे शौक़ पर दस्तेहवस[9] को क्यों न रश्क़[10] आऐ ।
कि यह मजबूर हैं वह काम करती है इधर अपना ॥
कहीं देखा न हस्ती व अदम[11] का इश्तेराक[12] ऐसा ।
जहाँ में मिस्ल रखती ही नहीं उनको कमर अपना ॥
नेहायत जल्द आकर वायसेतसकीन[13] ख़ातिर[14] हो ।
सरापा[15] मुंतज़िर[16] समझे मुझे उनकी ख़बर अपना ॥
नहीं पाती नहीं पाती रसाई[17] गोशे[18] जानां तक ।
वदलती है तरीका सौ तरह मेरी ख़बर अपना ॥
ग़ज़ल ऐसी पढ़ो ममलू[19] जो हो आली मजामी[20] से ।
करो अब दूसरे कूचे मे ऐ "अकबर" गुजर अपना ॥

× × ×

हुबावग्रासा[21] उठाया वहरेहस्ती[22] मे जो सर अपना ।
वनाया वस वहीं मौजेफना[23] ने हमसफ़र[24] अपना ॥

---

(१) जरूरी (२) अमीर (३) ऊँचा मकान या महल (४) दौलत या धन (५) धरोहर (६) जूता (७) आसमान (८) सोने चाँदी का थाल (९) दीवाना होना (१०) हसद (११) मौत (१२) समा (१३) वजेह (१४) दिल जमई के वास्ते (१५) सरसे पांव तक या पूरा (१६) इन्तेजार करने वाला (१७) पहुँच (१८) कान (१९) दिमाग़ में वैठ जाना या पसन्द आना (२०) ऊँचे ख़्याल वाले (२१) मिस्ले (२२) ज़िन्दगी का समुद्र (२३) खत्म होने वाली लहर (२४) साथी ।

बसर[१] तीरा द्रूनो[२] में हो क्यों कर अहले बीना[३] की।
अंधेरे मे नही कुछ काम कर सकती नजर अपना॥
पहुँच जाऊँगा सिज्दों से मोक़ामे कुर्बवारी[४] मे।
क़दम के वदले मे इस राह मे रक्खूंगा सर अपना॥
ख़तेमौहूम[५] को है नोकतये[६] फ़र्जी से एक निसवत[७]।
तुम्हीं अपने दहेन[८] से कुछ करो वसफे[९] कमर अपना॥
तसव्वर[१०] भी कभी मरक़द[११] का आता था न दुनिया मे।
यह ग़फलत[१२] थी कि हम भूले हुए वैठे थे घर अपना॥
रहे तौहीदमे[१३] खटका नही है ग़ैर का मुझको॥
खुदी का ख़ौफ[१४] है लेकिन रहा करता है डर अपना॥
हमारी सुर्खिये दाग़ेजिगर[१५] से जर्दरू[१६] होंगे।
जमायेंगे वहां क्या रंगे उलफत[१७] अहलेजर अपना॥
तरद्दुद[१९] कुछ नहीं ईजादेहन्दो[२०] को रसाई[२१] में।
तमन्ना[२२] वेतकल्लुफ दिल मे करलेती है घर अपना॥
नसीमेऐश[२३] हो या सरसरेग़म[२४] हम नहीं हटते।
जमा है पाय इस्तेक़लाल[२५] यहाँ मिस्ले शजर[२६] अपना॥

× × ×

जो पेशेचश्म[२७] मानी जलवये[२८] हुसने बशर[२९] आया।
तमाशा परतवे अनवारे[३०] ख़ालिक़[३१] का नज़र आया॥

---

(१) गुजर (२) अन्धे लोग (३) देखने वाले (४) भगवान के पास (५) छिपा हुआ ख़त (६) मानी हुई चीज (७) लगाव (८) ज़वान (९) तारीफ़ (१०) ख़्याल (११) मौत या कब्र (१२) भूल (१३) एकमात्र (१४) डर (१५) कलेजे का दाग़ (१६) पीला चेहरा (१७) मोहब्बत (१८) रुपया वाले (१९) तकलीफ़ या फ़िक्र (२०) दुख पहुँचाने वाले (२१) पहुँच (२०) ख्वाहिश या आरजू (२३) आराम (२४) ग़म की आँधी (२५) सब्र का पांव (२६) पेड़ (२७) आँख के सामने (२८) अपने को दिखाना (२९) इनसान की खूबसूरती (३०) रोशनी (३१) पर ईश्वर या परमात्मा।

रहा दम भर फरोग[1] इसको. कभी जो ओज[2] पर आया।
मेरे हिस्से में शायद अख़्तरे[3] वख़्ते[4] शरर आया॥
तसव्वर[5] जलवयेतौहीद[6] का है मिस्ल आईना।
किया शौक़े तमाशा जब कभी मैं खुद नजर आया॥
तसव्वर उनके आरिज[7] का जेवस रंगी व नाजुक था।
परी बनकर हमारे शीशये दिल में उतर आया॥
मिला है हमको यह मजमूनेरोशन[8] चश्मेबीना[9] से।
कि छोड़ी जिसने खुदबीनी[10] उसे सब कुछ नजर आया॥
गया था होके रुख़्सत[11] सूरते तसकीन[12] दिल मुझ से।
बरंगेहोश वां से फिर के अपना नामाबर[13] आया॥
हसीनों को तेरे होते हुए ऐ बुत मैं क्या देखूं।
मुझे तो हुस्न तेरा खुद तमाशाई नजर आया॥
हुआ है बायसे[14] ईजाद[15] आलम[16] हुस्न यह किसका।
यह किसके देखने को मजमूये[17] अहले नज़र आया॥
जगह भी बैठने की अब मुझे मिलती नहीं साहेब।
वही अच्छा रहा इस बज़्म[18] में जो पेश्तर[19] आया॥
सिवा अफसानये[20] दिल के कहा भी कुछ नहीं मैंने।
यह गुस्सा आप को फ़रमाइये[21] किस बात पर आया॥
हुये सरसब्ज[22] लाखो नख़्ल[23] इस गुलजार[24] हस्ती में।
न लेकिन रङ्ग पर अपनी तमन्ना[25] का शजर[26] आया॥

× × ×

---

(१) रोशनी (२) बलन्दी, ऊँचाई (३) सितारा (४) क़िस्मत का सितारा (५) ख़्याल (६) ईश्वर का जलवा (७) गाल (८) अच्छा मजमून (९) होशियार लोग या अकिलमन्द लोग (१०) घमन्ड (११) विदाई (१२) चुप (१३) चिट्ठी ले जानेवाला (१४) वजेह (१५) कोई नई चीज बनाना या निकालना (१६) जमाना (१७) जमा होकर (१८) महफिल (१९) पहले (२०) किस्सा (२१) कहिये (२२) हरे भरे (२३) पेड़ या पौदे (२४) बाग़ (२५) ख़्वाहिश (२६) पेड़।

न हासिल हुआ सब्र व आराम दिलका ।
न निकला कभी तुमसे कुछ काम दिल का ॥
मोहब्बत का नशा रहे क्यो न हरदम ।
भरा है मयेइश्क[१] से जाम[२] दिल का ॥
फँसाया तो आँखों ने दामेबला[3] मे ।
मगर इश्क मे हो गया नाम दिल का ॥

हुआ खूब रुसवा[४] यह इश्केबुतां[५] में ।
खोदा ही है अब मेरे वदनाम दिल का ॥
यह बांकी आदायें यह तिरछी निगाहें ।
यही ले गईं सब्र व आराम दिल का ॥

धुआँ पहले उठता था आग़ाज[६] था वह ।
हुआ खाक अब यह है अंजाम[७] दिल का ॥
जब आग़ाज उल्फ़त[८] ही में जल रहा है ।
तो क्या खाक बतलाऊँ अंजाम दिल का ॥

खोदा के लिये फेर दो मुझको साहब ।
जो सरकार में कुछ न हो काम दिल का ॥
पसेमर्ग[९] उन पर खुला हाले उल्फ़त ।
गई लेके रूह[१०] अपनी पैग़ाम[११] दिल का ॥
तड़पता हुआ यो ही पाया हमेशा ।
कहूँ क्या मैं आग़ाज व अन्जाम दिल का ॥
दिल उस बेवफा को जो देते हो "अकबर" ।
तो कुछ सोच लो पहले अन्जाम दिल का ॥

× × ×

---

(१) मोहब्बत की शराब (२) प्याला शराब पीने का (३) मुसीबत का जाल (४) जलील (५) माशूक की मोहब्बत (६) शुरू (७) नतीजा (८) मोहब्बत (९) मरने के बाद (१०) जान (११) सन्देशा ।

फरोग़े[1] कम बज़ाअत[2] रौनके[3] आलम नहीं होता।
महे[4] नौबद्र[5] होकर नइयरे[6] आज़म नहीं होता॥
बुतों के कौल से शादां[7] दिले पुरग़म[8] नहीं होता।
दिल उनका संग[9] है पर अहेद[10] मुस्तहकम[11] नहीं होता॥

खोदा महफ़ूज[12] रक्खे उलफ़ते मिजगाने[13] खूबां से।
यह जौके[14] नशतरे दिल मरते मरते कम नहीं होता॥
मौक़ामे बेखुदी[15] मे आरज़ू[16] क्या अर्ज[17] मतलब क्या।
वहां यह दिल नहीं होता यह है आलम[18] नहीं होता॥

दस्ते[19] सफाये सीना तक तसव्वर किस तरह पहुँचे।
वह सीना आश्नाये दस्ते ना मो हरम नहीं होता॥
तुम्हारे वाज़ मे तासीर[20] तो है हजरते वायज़।
असर लेकिन निगाहे नाज[21] का भी कम नहीं होता॥

तमन्नाये[22] वेसाले[23] यार मे हर वक्त रोता हूं।
फेराके[24] आसतीन व दीदये पुरग़म[25] नहीं होता॥
शिकस्ता[26] सोख्ता[27] मजरूह[28] उसपर यह तमन्नायें।
दिले आशिक सा दुनिया में कोई बेग़म नहीं होता॥

---

(१) रोशनी (२) पूंजी या सामान (३) ज़माने की चमक (४) नया चाँद ५) चौदस का चाँद (६) सूरज (७) खुश (८) रन्जीदा (६) पत्थर (१०) किसी काम की जिम्मेदारी लेना या कोई पक्का इरादा करना (११) मजबूत या पक्का (१२) सलामती से (१३) माशूक का पलक (१४) शौक़ या मजा (१५) आपे मे न होना (१६) तमन्ना (१७) कहना (१८) दुनियां (१६) ख्याल (२०) असर (२१) प्यार की आँख या नज़ाकत की आँख (२२) आरजू (२३) माशूक़ की मुलाक़ात (२४) जुदाई (२५) अफसोस से भरी हुई आँख या रन्जीदा आँख (२६) टूटा हुआ (२७) जला हुआ (२८) घायल।

अगर दिल वाकिफ़े[१] नैरंगीये तब ये[२] सनम[३] होता।
जमाने की दो रङ्गी का इसे हरगिज न ग़म होता॥
यह पावन्दे[४] मुसीबत दिल के हाथों हम तो रहते हैं।
नहीं तो चैन से कटती न दिल होता न ग़म होता॥
उन्हीं की बेवफाई का यह है आठों पहर सदमा[५]।
वही होते जो कावू[६] मे तो फिर काहे को ग़म होता॥
लब व[७] चश्में सनमगर[८] देखने पाते कहीं शायर।
कोई शीरी सोखन[९] होता कोई जादू[१०] रकम होता॥
बहुत अच्छा हुआ आये न वह मेरी अयादत[११] को।
जो वह आते तो ग़ैर आते जो ग़ैर आते तो ग़म होता॥
अगर कब्रें नजर आईं न दारा व सिकन्दर की।
मुझे भी इश्तेयाके[१२] दौलतो जाहो[१३] हशम[१४] होता॥
लिये जाता है जोशे शौक हमको राहे उलफत मे।
नही तो जोफ[१५] से दुश्वार[१६] चलना दो कदम होता॥
न रहने पाये दीवारों में रोजन[१७] शुक्र है वरना।
तुम्हें तो दिल्लगी होती गरीबों पर सितम होता॥

× × ×

न परवाने से महफिल और न बुलबुल से चमन[१८] छूटा।
मुझी से जलसये रङ्गीन[१९] याराने[२०] वतन छूटा॥

---

(१) जाननेवाला (२) मक्कार, फरेबी (३) माशूक (४) जाल फसा हुआ (५) रञ्ज (६) अख़तियार (७) होंठ (८) माशूक की आंखें (९) मीठा बोलने वाला (१०) जिसके लिखाई में जादू हो (११) हाल चाल लेने (१२) शौक (१३) इज्जत, कद्र, रुतबा (१४) नौकर चाकर (१५) कमजोरी (१६) मुशकिल (१७) सूराख़ (१८) बाग़ (१९) अच्छी मजलिस (२०) अपने मुल्क के रहने वाले।

ह तिर्छी नजरों से देखा किये और मैं रहा विस्मिल[१] ।
न बेतावी[२] गई मेरी न उनका बांकपन छूटा ॥
पोशीदा[३] आंखो में कभी दिल मे नेहां[४] रहा ।
बरसों ख़्याले यार मेरा मेहमां रहा ॥
फरियाद किसकी थी पसे दीवार[५] रात भर ।
क्या मुझसे पूछते हो तू कल शब[६] कहां रहा ॥
बेजा मेरे सफ़र ये हैं यह बदगुमानियां[७] ।
पेशे नजर तुम्ही तो रहे मैं जहां रहा ॥

× × ×

हम जो समझे थे न वह हासिल हुई तावीर ख़्वाब[८] ।
ख़्वाब मे भी फिर नजर आई न वह तसवीरे ख़्वाब ॥
आलमें ईजाद[९] भी एक आलमें मौहूम[१०] है ।
जितनी तामीरें[११] हैं यां की हैं यह सब तामीरे ख़्वाब ॥
ख़्वाब में देखा कि वह दामन छोड़ा कर चलदिये ।
हश्र के दिन होगे यारव हम गरेबां गीरे[१२] ख़्वाब ॥
कौन ऐसा है जो हर शब चैन[१३] से सोता नहीं ।
एक हमी महरूम[१४] है ऐ फ़ैज़े आलमगीर[१५] ख़्वाब ॥
हजरते युसुफ को लपटा कर जुलेखा ने कहा ।
आप के मिलने से मुझको मिल गई तावीर ख़्वाब ॥
ख़्वाब में शायद कही है तुमने "अकवर" यह ग़जल ।
सारे मजमूं है ख़्याली है यह सब तकरीरे[१६] ख़्वाल ॥

---

(१) घायल (२) बेक़रारी (३) छिपा हुआ (४) छिपा हुआ (५) दीवार के पीछे (६) रात (७) बुराख़्याल (८) सपने का मानीं बतलाना (९) नई चीज निकालना (१०) शक किया हुआ (११) मकान बनाना (१२) गला पकड़े हुये (१३) हर रात (१४) रोका गया (१५) ईश्वर की मेहरवानी (१६) वात करना ।

आगया वक्ते अजल[1] ऐ शौके दुनियां[2] अलवेदा[3] ।
अलवेदा ऐ हसरते दिल[4] ऐ तमन्ना[5] अलवेदा ॥
अलवेदा ऐ साक़िये[6] मैख़ानये[7] तूले अमल[8] ।
ऐ सरूरे[9] वादये[10] उम्मीद फरदा[11] अलवेदा ॥
ऐ खुमे[12] महरावे ईवां[13] खुश आईन अस्सलाम ।
ऐ शिकवये[14] रफअते[15] क़सरे मोअल्ला[16] अलवेदा ॥
अलवेदा ऐ मसन्दो[17] फरशो[18] कबा व[19] पै रहन[20] ।
ऐ हरीरो[21] अतलसो[22] कम ख़्वाब[23] व दीबा[24] अलवेदा ॥
अलवेदा ऐ रंगे वहशत[25] अलवेदा ऐ फ़र्ते शौक[26] ।
रुखसत[27] ऐ जोरोजुनू[28] ऐ सैरे सहरा[29] अलवेदा ॥
अलवेदा ऐ जलवये[30] नैरंगिये[31] हुसने[32] बुतां ।
ऐ ख़्याले आरिज़ो[33] ज़ुलफे[34] चलीपा अलवेदा ॥
अलवेदा ऐ आलमे नैरंगिये बाग़े जहां ।
ऐ निगाहे दीदये[35] महवे तमाशा[36] अलवेदा ॥

---

(१) मौत (२) दुनियां में रहने को ख़्वाहिश (३) विदा (४) दिल का अरमान (५) आरज़ू (६) शराब पिलाने वाला (७) शराब घर (८) दुनियां (९) खुशी (१०) उम्मीद की शराब (११) कल (१२) मेटका (१३) महल (१४) शिकायत (१५) उंचाई (१६) ऊंचा मकान या महल (१७) तकिया (१८) बिछौना (१९) पहनने का कपड़ा (२०) कपड़ा (२१) रेश्मी कपड़ा (२२) रेश्मी सादा कपड़ा जिसमें बेलबूटा न हो (२३) एक तरह का कपड़ा है (२४) एक तरह का रेश्मी कपड़ा (२५) नफरत या पागलपन (२६) ज्यादती (२७) विदा (२८) पागलपन (२९) जंगल (३०) रोशनी (३१) मक्कारी (३२) माशूक की ख़ूबसूरती (३३) गाल (३४) जन्जीर (३५) देखने वाला (३६) तमाशे मे लगा हुआ ।

आजमे[1] मुलके अदम है "अकबरे" खूंने जिगर ।
अलवेदा ऐ उम्र ऐ बजमे अहिब्बा[2] अलवेदा ॥

× × ×

हुआ फिर क़ैदिये जुल्फे दोता[3] दिल ।
बला[4] में हो गया फिर मुबतिला[5] दिल ॥
निगाहें चितवने[6] अश्वे[7] करिश्मे[8] ।
उधर इतने इधर तनहा[9] मेरा दिल ॥
न छोड़ा आतशे उलफत[10] ने पीछा ।
जिगर जलने लगा जब जल चुका दिल ॥
लगावट ग़ैर से हमसे रुखाई[11] ।
इन्हीं बातों से तुमसे फिर गया दिल ॥
यह वक्ते नेजा[12] है दम भर तो ठहरो ।
न तोड़ो आशिके रंजूर[13] का दिल ॥
बड़े सदमें[14] उठाये तुमने "अकबर" ।
बुतों को अब न दो बहरे खोदा[15] दिल ॥

× × ×

हासिले[16] उम्र सेवा मौत के जब कुछ भी नहीं ।
चार दिन के लिये यह ऐशोतरब[17] कुछ भी नहीं ॥
वजेह क्या तुमसे कहूँ इसकी तबीयत ही तो है ।
दिल को एक जोश है रोता हूँ सबब कुछ भी नहीं ॥
जिन्दगी में तो रहा करते थे क्या क्या सामान ।
कब्र मे बाद फेना[18] आए तो अब कुछ भी नहीं ॥

---

(२) महफिल (२) दोस्त लोग (३) झुका हुआ बाल (४) मुसीबत (५) मुसीबत में फंसा हुआ (६) तिरछी निगाह से देखना (७) नाज़ (८) मौका इशारा (९) अकेला (१०) मोहब्बत की आग (११) बे मुरव्वती (१२) मरने का वक्त (१३) बीमार (१४) मुसीबत (१५) ईश्वर के लिये (१६) नतीजा (१७) खुशी (१८) मरने के बाद ।

न तो खिलवत[१] ही मोयस्सर[२] है न कुछ लुत्फ[३] की बात ।
क्यों बुलाया है मुझे आप ने जब कुछ भी नहीं ॥
न वह अहबाव[४] न वह लोग न वह शमा[५] न बज़्म[६] ।
सुबह दम वह असरे जलसये शब[७] कुछ भी नहीं ॥
कोई "अकबर" सा भी दीवाना नजर आया है कम ।
पहरों[८] रोता है जो पूछो तो सबब कुछ भी नहीं ॥

× × ×

संभालें दिलको कि हम हालते जिगर देखें ।
तमाम आग लगी है किधर किधर देखें ॥
करें न लुत्फ व करम[९] वह तो क्या वफा[१०] न करूं ।
यही समझ है तो अच्छा सितम[११] भी कर देखें ॥
यह कह के रूहने[१२] दिल को किया सिपुर्द उनके ।
कि हम तो जाते है अब आप अपना घर देखें ॥
तड़प के जान अभी दूं कि हों खिजिल[१३] अगियार ।
खोदा करे कि मुझे भी वह एक नजर देखें ॥
कभी तो वोसये सबवे जकन[१४] इनायत[१५] हो ।
ने हाले ऐश[१६] को एक दिन तो बार वर[१७] देखें ॥

× × ×

जोहादे[१८] खुश्क[१९] हुसने बुतां से है वेनसीवा ।
आंखें खोदा ने दी है मगर देखते नहीं ॥
मैं जिनके देखने को समझता हूं जिन्दगी ।
इनका यह हाल है कि इधर देखते नहीं ॥

---

(१) अकेलापन (२) हासिल (३) मजा (४) दोस्त (५) रोशनी (६) महफ़िल (७) रात की बैठक (८) बहुत देर (९) मेहरबानी (१०) वादा पूरा करना (११) जुल्म (१२) जान (१३) शरमिन्दा होना (१४) ठुड्डी (१५) मेहरबानी (१६) आराम का पौदा (१७) फलदार (१८) जाहिद लोग (१९) सूखा ।

तासीर[१] इन्तेजार[२] ने यह हाल कर दिया।
आंखें खुली हुई हैं मगर देखते नहीं॥
बेखौफ़[३] दिल को करते हो पामाल[४] ऐ बुता।
यह शोखियां[५] खोदा का भी घर देखते नहीं॥
डोरे तो डालने दो जरा चश्मे शौक़[६] को।
देखेंगे किस तरह वह इधर देखते नहीं॥
जख्मी तेरी नजर से भी हो जब्त[७] भी करें।
इतना हम अपने दिल का जिगर देखते नहीं॥
मेरी जो पूछते हो सो देता हूं उनपे जान।
इनका यह हाल है कि इधर देखते नहीं॥
है इन्कलाब[८] हुस्न का आलम[९] में किस क़दर।
दो दिन भी एक शक्ल क़मर[१०] देखते नहीं॥
"अकबर" न सेंक शोलये[११] हुसने बुतां[१२] पे आंख।
आक़िल[१३] जो लोग है वह इधर देखते नहीं॥

× × ×

सौ जान से महवे[१४] रुखे जाना है तो हम है।
इस आइनये खाने मे जो हैरां है तो हम हैं॥
गुलगश्त[१५] करें फूल चुनें इनको है क्या ग़म[१६]।
आवारये सेहराये मो-ग़ीलां[१७] है तो हम हैं॥
भड़की हुई हैं आतशे गुल[१८] अपने ही दम से।
सोजे जिगरे[१९] बुलबुले नालां[२०] हैं तो हम हैं॥

---

(१) असर (२) राह देखकर (३) निडर (४) बरबाद (५) शोखी या मस्ती (६) आशिको की आंख (७) बरदास्त (८) उलट फेर (९) जमाना या दुनियां (१०) चाँद (११) आग (१२) माशूक की खूबसूरती (१३) अक़िलमंद, समझदार (१४) लगा हुआ या मिटा देना (१५) मकानों की सैर (१६) रंज अफ़सोस (१७) जंगल में बबूल का पेड़ (१८) फूल की आग (१९) दिल की जल[illegible] रोता हुआ।

शोर अपने ही जलवे[१] का है यह देरव[२] हरम में[३] ।
मकसूद[४] दिले गब्र[५] व मुसलमां हैं तो हम हैं ॥
ऐ वर्क[६] तड़पने में हमीं हैं तेरे साथी ।
ऐ अब्र[७] तेरे साथ जो गिरियां[८] हैं तो हम हैं ॥
दिन रात रक़ीबों[९] पे है साहब की इनायत[१०] ।
बस एक ग़मेहिज्र[११] में नालां हैं तो हम हैं ।

× × ×

आचुकी बस मेरे हिस्से में शबे वस्ल ऐ दिल ॥
गर्दिशे[१२] चर्ख में ऐसे मेरे मक़सूम[१३] नहीं ।
बाद मुद्दत के जो तकरीर[१४] भी की तुमने तो वह ॥
जिसके मतलब नहीं मानी नहीं मफहूम[१५] नहीं ॥
कमरे यार है[१६] बारीकी से गायब हरचन्द[१७] ।
मगर इतना तो कहूंगा कि वह मादूम[१८] नहीं ॥
तिर्छी चितवन से खोदा जाने वह देखें मुझे कब ।
मौत का वक्त किसी शख्स को मालूम नहीं ॥
मेरा अहवाल[१९] जो यारों ने कहा कुछ उनसे ।
हंस के फ़रमाया कि होगा मुझे मालूम नहीं ॥
दम निकलता है हमारा खबर इनको नहीं कुछ ।
जान जाती है हमारी इन्हें मालूम नहीं ॥

(१) अपने को जाहिर करना (२) मन्दिर (३) मसजिद (४) इरादा किया हुआ (५) आग का पूजा करने वाल (६) बिजली (७) बादल (८) रोने वाला (९) एक औरत के दो चाहने वाले एक दूसरे के रकीब कहलाते हैं (१०) मेहरबानी (१२) जुदाई का अफसोस (१२) आसमान का चक्कर (१३) तक़दीर (१४) बात करना (१५) समझाया गया (१६) पतला होना (१७) या हर तरह जितना कुछ (१८) गायब (१९) हाल ।

जब कहा मैंने मेरे हिस्से में आओगे कभी ।
हँस के फ़रमाया[1] कि ऐसे तेरे मकसूम[2] नहीं ॥
खूब करता हूँ रक़ीबों की बुराई उनसे ।
मजहबे इश्क़ में ग़ैबत[3] कहीं मज़मूम[4] नहीं ॥

× × ×

हरम[5] क्या दैर[6] क्या दोनों यह वीरां होते जाते हैं ।
तुम्हारे मोतक़िद गब्र[7] व मुसलमां होते जाते हैं ॥
अलग सब से नज़र नीची ख़िराम[8] आहिस्ता आहिस्ता ।
वह मुझको दफ़न करके अब पशेमां होते जाते हैं
सेवा तिफ्ली[9] से भी है भोली बातें अब जवानी में ।
क़यामत है कि दिन पर दिन वह नादां[10] होते जाते हैं ॥
कहां से लाऊँगा ख़ूने जिगर उनके ख़ाना को ।
हजारों तरफ के ग़म दिल के मेहमां होते जाते हैं ॥
ख़राबी खाना खाये ऐश की है दौर गरदूं[11] में ।
जो बाकी रह गये हैं वह भी वीरां होते जाते हैं ॥
बयां मैं क्या करूँ दिल खोल कर शौक़े शहादत को ।
अभी से आप तो शमशीर उरियाँ[12] होते जाते हैं ॥
ग़ज़ब की है अइयारियां[13] वल्लाह तुमको भी ।
ग़रज़ क़ायल तुम्हारे हम तो ऐ जां होते जाते है ॥
इधर हमसे भी बातें आप कहते हैं लगावट की ।
इधर ग़ैरों से भी कुछ अहद[14] व पैमा[15] होते जाते है ॥

× × ×

---

(१) कहा (२) बांटा हुआ क़िसमत (३) पीठ पीछे (४) बुरा (५) काबा (६) मन्दिर (७) दिल के यकीन करने वाला (८) आग का पुजारी (९) मस्त चाल (१०) लड़कपन (११) आसमान की चाल (१२) नङ्गी तलवार (१३) चालांकी (१४) किसी काम की ज़िम्मेदारी लेना (१५) वादा ।

ग़म है इतना कि दिलेज़ार[1] काबू[2] भी नहीं।
जब्त यह है कि कहीं आँख में आंसू भी नहीं॥
क्या मेरे अहेद[4] में बदली है गुलिस्तां की हवा।
रङ्ग कैसा कि किसी फूल में ख़ुशबू भी नहीं॥

× × ×

ग़म नहीं इसका जो शोहरत[5] हो गई।
हो गई अब तो मोहब्बत हो गई[6]॥
अब कहां अगले से वह राज़ोनेयाज़।
मिल गये साहब सलामत हो गई॥
हाय क्या दिल कश[7] है इसकी चश्मेमस्त[8]।
आँख मिलते ही मोहब्बत हो गई॥
चौदवां साल उनको है नामे ख़ोदा।
उम्र आफत थी कयामत हो गई॥
नाज से उसने जो देखा शेख को।
उनकी दीदारी ही रोख़सत हो गई॥

× × ×

तुम्हीं से हुई मुझको उल्फत[9] कुछ ऐसी।
न थी वरना मेरी तबीयत कुछ ऐसी॥
जहां दिल दुखा बस निकल आये आंसू।
बिगाड़ी मोहब्बत ने आदत कुछ ऐसी॥
हया[10] की निगाहों ने मारा है मुझको।
नहीं चितवनों की शरारत कुछ ऐसी॥
गिरे मेरी नजरों से ख़ूबाने आलम[11]।
पसन्द आ गई तेरी सूरत कुछ ऐसी॥

---

(१) परेशान दिल (२) बस (३) बर्दाशत (४) ज़माना (५) चारों तरफ खबर होना (६) मोहब्बत या दोस्ती (७) दिल को लुभाने वाली (८) मस्त आँखें (१०) मोहब्बत (११) शर्म (१२) जमाने भर माशूक।

मैं रोने लगा हाले दिल कहते-कहते ।
एका एक भर आई तबीयत कुछ ऐसी ॥
यह गैरों ने अब उनको बरहम[1] किया है ।
न थी वरना रंजिश की सूरत कुछ ऐसी ॥
बसर[2] क्यों न हो इश्कखूबां[3] में "अकबर"
खोदाही ने दी है तबीयत कुछ ऐसी ॥

× × ×

नजरे लुत्फ वकरम[4] चाह की अब वह न रही ।
पहले एक बात जो थी प्यार की अब वह न रही ॥
ना उम्मीदी सी हुई देख के गैरों का हुजूम[5] ।
आर्जू तेरे तलबगार[6] की अब वह न रही ॥
वह लगावट थी फकत दिल के लुभाने के लिये ।
मेहरबानी बुते[7] काफिर की अब वह न रही ॥

× × ×

तेरी नजरों से हमारी जब नज़र मिलती न थी ।
हमको ऐसी लज्जते[8] दर्दे जिगर मिलती न थी ॥
हर गली कूचे में चर्चा मेरी बीमारी का था ।
क्या किसी से आपको मेरी खबर मिलती न थी ॥
वह भी क्या दिन थे तेरी शर्म व हया के ऐ परी ।
आईने में चश्म जौहर से नज़र मिलती न थी ॥

× × ×

मैं अपनी आह किये जाऊँ बां असर न सही ।
मुझे तो बे खबरी है उन्हें ख़बर न सही ॥

---

(१) उलट-पुलट या ख़फा (२) गुज़र (३) माशूकों की मोहब्बत (४) मेहरबानी (५) भीड़ (६) चाहनेवाला (७) चालाक । (८) स्वदा या जायका

वह बेहिजाब[1] सरेशाम बाम[2] पर आना।
हया[3] भी तो कोई शै[4] है किसी का डर न सही॥
असर यही है मोहब्बत का गो है जब्त मुझे।
जिगर में दर्द तो रहता है चश्मेतर[5] न सही॥
निकाल लेने दे ऐ चर्ख़[6] हौसले दिल के।
शबाब[7] तक तो रहे ऐश उम्र भर न सही॥
खोदा के वास्ते तशरीफ लाएँ[8] आज जरूर।
रहें वह दो ही घड़ी पास रात भर न सही॥
हसीन जितने हैं ख़्वाहां[9] हैं सब तेरे ऐ दिल।
बस एक इनकी तवज्जेह नहीं अगर न सही॥
यह सोच क्या है मुझे रंज का है कौन महल।
तमाम शहर पड़ा है एक उनका घर न सही॥

× × ×

तमाम हसरतें[10] पीरी में हो गई रुख़सत[11]।
बस एक रह गई मरने की आरज़ू[12] बाक़ी॥
जो जिबह[13] करता है पर खोल दे मेरे सय्याद[14]।
कि रह न जाय तड़पने की आरज़ू बाकी॥
हमारे शहर पे यारब यह क्या पड़ी आफत।
न ख़ूबरू[15] रहे बाक़ी न खुश गुलू[16] बाकी॥

× × ×

ख़फा हो वे सबब मुझसे कहो मेरी खता क्या है।
हुआ भी जुल्फ मिसकीं को तो आफ़त क्या बला[17] क्या है॥

---

(१) बेपर्दा (२) कोठा (३) शर्म (४) चीज़ (५) भीगी आँखें (६) आस्मान (७) जवानी (८) आयें (९) चाहने वाले। (१०) अरमान (११) रवाना (१२) तमन्ना (१३) गला घोटना (१४) शिकारी (१५) खूबसूरत (१६) मीठे बोलने वाले (१७) मुसीबत

क़यामत है तबीयत आ गई उस आफते[1] जाँ पर।
जिसे इतना नहीं मालूम उलफत[2] क्या वफा[3] क्या है॥
उन्हें भी जोश उल्फत हो तो लुत्फ[4] आए मोहब्बत का।
हमी दिन रात अगर तड़पे तो फिर इसमे मजा क्या है॥
मुसीबत ऐन राहत है अगर हो आशिक़े सादिक[5]।
कोइ परवाने से पूछे कि जलने मे मज़ा क्या है॥
कोई दिन का हूँ मेहमां आ चुकी है जान होठों पर।
वही खुद देखलें आकर कि अब मुझमें रहा क्या है॥
तबीबों[6] से मैं क्या पूँछू इलाजे दर्द दिल अपना।
मरज़ जब ज़िन्दगी खुद हो तो फिर इसकी दवा क्या है॥
संभालो दिल को "अकबर" हिज्र[7] में रोको तबियत को।
यह रोना यह तड़पना खैर है तुमको हुआ क्या है॥

× × ×

आज आराइशे[8] गेसूए दोता[9] होती है।
फिर मेरी जान गिरफ्तार[10] बला होती है॥
शौक[11] पाबोसिये[12] जाना मुझे बाक़ी है हनोज़[13]।
घास जो उगती है तुर्बत[14] पे हिना[15] होती है॥
फिर किसी काम का बाकी नही रहता इन्सान।
सच तो यह है कि मोहब्बत भी बला[16] होती है।
जो ज़मीं कूचये क़ातिल[17] में निकलती है नई॥
वक़्फ़[18] वह बहरे[19] मजारे शोहदा[20] होती है॥

---

(१) मुसीबत (२) मोहब्बत (३) वादा पूरा करना (४) मजा (५) सच्चा आशिक़ (६) हकीम (७) जुदाई (८) सवारंना (९) उलझा हुआ बाल (१०) मुसीबत मे फँसना (११) आजू (१२) पैर चूमना (१३) अब भी (१४) क़ब्र (१५) मेहंदी (१६) मुसीबत (१७) कत्ल करने वाले की गली (१८) किसी चीज़ को दे देना (१९) वास्ते (२०) शहीदो की कब्र।

जिसने देखी हो वह चितवन कोई उससे पूछे ।
जान क्योंकर हदफ़ेतीरे[1] क़ज़ा[2] होती है ॥
नेज़ा का वक़्त बुरा वक़्त है ख़ालिक़[3] की पनाह ।
है वह साअत कि क़यामत से सवा होती है ॥
रूह[4] तो एक तरफ़ होती है रुख़सत[5] तन[6] से ।
आरज़ू[7] एक तरफ़ दिल से जुदा होती है ॥
ख़ुद समझता हूँ कि रोने में भला क्या हासिल ।
पर करूँ क्या यों ही तसकीन[8] ज़रा होती है ॥
रौंदते फिरते हैं वह मजमुये अग़ियार[9] के साथ ।
ख़ूब तौक़ीरे[10] मज़ारे शोहदा होती है ॥
मुर्ग़ बिस्मिल[11] की तरह लोट गया दिल मेरा ।
निगाहे नाज़ की तासीर[12] भी क्या होती है ॥

× × ×

नाला[13] कर लेने दें लिल्लाह न छेड़ें अहबाब[14] ।
ज़ब्त[15] करता हूँ तो तकलीफ़ सेवा होती है ॥
जिस्म[16] तो ख़ाक में मिल जाते हुये देखते हैं ।
रूह[17] क्या जाने किधर जाती है क्या होती है ॥
हूँ फ़रेबे[18] सितमेयार[19] का क़ायल "अकबर" ।
मरते-मरते न खुला यह कि जफ़ा[20] होती है ॥

× × ×

---

(१) तीर का निशाना (२) मौत (३) ईश्वर (४) जान (५) जाना (६) बदन (७) नतीजा (८) तसल्ली (६) पराये या गैर लोग (१०) अपने व दूसरे के इज्जत का ख़्याल रखना (११) ज़ख्मी (१२) असर (१३) रोना चिल्लाना (१४) दोस्त लोग (१५) बर्दाश्त करना (१६) शरीर (१७) जान (१८) दगा या मक्कार (१६) यार का जुल्म (२०) जुल्म

असर दिखाने पे यह जज़्ब[1] व दिल जो आता है।
कूएँ से हजरते युसुफ को खींच लाता है॥
फलक[2] जो रोज नया दाग़ एक दिखाता है।
हमारे हौसलये दिल को आजमाता है॥
कभी जो दानऐ मंसूर मे शक आता है।
ख़ेयाले यार मुझे आइना दिखाता है॥
वह वात हूँ कि जो लाती है जोश मे दिल को।
वह हाल हूं कि जिसे सुनके वज्द आता है॥
जो वेखुदी मे मुझे छोड़कर वह जाते[3] हैं।
तो मेरे हाल पे रोने को होश आता है॥
इलाही खैर हो इस वुत के नाज वेजा की।
दिले ग़रीव को मेरे वहुत सताता है॥
ज्यादा जान से क्योंकर न रक्खूँ दिल को अज़ीज[4]।
यह आइना तेरी सूरत मुझे दिखाता है॥
वह दो ही हाथ में समझे कि आर्जू निकली।
दहाने ज़ख्म[5] इसी पर तो मुसकुराता है॥
हमें तो आठ पहर रहती है तुम्हारी याद।
कभी तुम्हें भी हमारा ख़ेयाल आता है॥
न जाने क्या तो नही जानते वहाना कुछ।
हज़ार हीला[6] न आने का तुमको आता है॥
वह मैक़दा[7] है हमारा कि जिसमे मस्तो से।
हजार साग़रे[8] जिसमे रोज टूट जाता है॥
ख़ोदा पनाह[9] में रक्खे कशाकशे[10] ग़म से।
इसी से तारेनफस[11] जल्द टूट जाता है॥

---

(१) दिल का खिंचाव (२) आसमान (३) नख़रा या प्यार (४) प्यारा (५) ज़ख्म का मुँह (६) वहाना (७) शराव पीने की जगह (८) शराव का प्याला (९) वचाव (१०) हीचतान (११) ज़िन्दगी की साँस।

मसाएबे[1] शबे फ़ुर्क़त[2] उठा चुका हूँ मैं।
अज़ाबेगोर[3] से वायज़ किसे डराता है॥
न पूछिये सितमेजोशे[4] हसरते दीदार[5]।
यह जानेज़ार[6] को आँखों में खींच लाता है॥
दोई का दख़्ल नही वज़्मे वसल में मंजूर।
बगर न आप में आना तो मुझको आता है॥
फना[7] का ख़ौफ[8] कुछ अहले हयात[9] ही को नहीं।
हवा से शमा[10] का शोला[11] भी कांप जाता है॥
मोकामे[12] शुक्र है ग़ाफ़िल[13] मुसीवतें[14] दुनिया।
इसी बहाने से अल्लाह याद आता है॥
ख़ोदा के वास्ते यादे ख़ोदा कर ऐ "अकबर"।
बुतो के इश्क में जान अपनी क्यो गँवाता है॥

× × ×

दिल को गफलत[15] ने कदूरत में छिपा रक्खा है।
बोख़्ल[16] ने जर को तहेख़ाक[17] दबा रक्खा है॥
शोर क्यों गब्र व मुसलमां ने मचा रक्खा है।
दैर में कुछ भी नही कावे मे क्या रक्खा है॥
बेजरी[18] में कोई माशूक़ तो पहलू मे कहाँ।
दाग़े इफलास[19] को सीने से लगा रक्खा है॥
आपको पर्दा[20] नशीनी ही जो आई है पसन्द।
मुझको क्यों मुफ्त मे दीवाना बना रक्खा है॥

---

(१) मुसीबतें (२) जुदाई की रात (३) कब्र की तक्लीफ (४) जुल्म (५) देखने की आरज़ू (६) परेशान जान (७) मिटना या मरना (८) डर (६) जिन्दालोग (१०) रोशनी या मोमबत्ती (११) लौ या लपट (१२) जगह या ठहरने की जगह (१३) लापरवाह या बेख़बर (१४) दुनियां की तकलीफ (१५) भूल चूक (१६) कंजूसी (१७) ज़मीन के नीचे (१८) ग़रीबी (१६) ग़रीबी (२०, पर्दे में बैठना।

जोशिशे[1] फसले बहारी है कि हंगामा ये[2] हश्र ।
बुलबुलो ने तो ग़ज़ब शोर मचा रक्खा है ॥
देखिये सुबह तलक बदले वह क्या क्या पहलू ।
मिन्नतो से उसे या आज सुला रक्खा है ॥
आपके शोहरमे[3] रहमत ने तो ढ़ाया है ग़जब ।
एक आलम को गुनहगार बना रक्खा है ॥
आज़ू मर्ग[4]की "अंकबर" न कर अल्लाह से डर ।
तुझसे आसी[5] के लिये कब्र मे क्या रक्खा है ॥

× × ×

किसी की क़िस्मत मे जहरेग़म[6] है किसी को हासिलमय तरब[7] है ।
वही बिगाड़े वही बनाये उसी की क़ुदरत का खेल सब है ॥
नजर जो आये वह आफ़ते जां तो दिल को क्योकर बचाये इन्सां ।
अदा[8] है बाकी निगाह तिरछी सितम है अरवा[9] हया ग़जब है ॥
जला चुकी आतशे[10] मोहब्बत तमाम मेरे दिल व जिगर को ।
तुम्हे नहीं है यक़ीन अब तक यही तो ऐ मेरी जां ग़जब है ॥
गुजर गया है जो अहेद हशरत[11]न रख तु नादां फिर उसकी हसरत ।
कयाम[12] इसीका समझ ग़नीमत जो वक़्त पेशे निगाह अब है ॥
यह उनकी जितनी लगावटें है यह जाहिरा सब बनावटें हैं ।
यह जी लुभाने की एक अदा है यह दिलके लेने का एक ढ़ब[13] है ॥
दिलाते हैं नजा मे जो पैहम[14] खोदा[15]की याद आके यार व हमदम ।
भला मैं भूलूंगा उसको क्योंकर वह मेरा मालिक है मेरा रब है ॥

---

(१) जोश (२) कयामत की भीड़ (३) फूलों का सेहरा जो दूल्ह दुल्हिन को बाँधा जाता है (४) मरने की ख्वाहिश (५) मुसीबत जदा (६) जदी (६) मुसीबत जहेर है (७) शराब व खुशी (८) अच्छा नाज नखरा (९) नाज़ (१०) आग (११) खुशी का जमाना (१२) ठहरना (१३) तरीका (१४) बराबर (१५) दोस्त या जो बराबर साथ रहे ।

यह भी आराम पाइयेगा, कहां अब इस वक्त जाइयेगा।
अँधेरा छाया है अब्रतारी[१] है मेह बरसता है वक्त शब है॥
दोआ है "अकबर" यह अपनी हरदम लेहद[२] मे निकली जबासेपैहम।
मोहम्मद अपना रसूल बरहक[३] खोदाये बरतर[४] हमारा रब है॥

× × ×

सुनता हूं कि तासीर[५] मोहब्बत में भी कुछ है।
क्यों कर न कहूँ उनकी तबीयत में भी कुछ है॥
बेचैन हुये सुन के मेरे शौक का किस्सा।
सद[६] शुक्र मजा इनकी तबीयत में भी कुछ है॥
जब कहता हूँ उनसे कि मेरे दिल में है हसरत[७]।
किस नाजसे कहते है कि हसरत में भी कुछ है॥
वायज मैं ग़जब[९] ही का सजावार नहीं हूँ।
हिस्सा मेरा गनिये[१०] रहमत मे भी कुछ है॥
रिन्दो[११] में तो है लुत्फमैब[१२] साकी[१३] व मुतरिब[१४]।
वायज[१५] यह बता तू तेरि सोहबत मे भी कुछ है॥
वह कूचये जाना के मजे एक न पाये।
हम पहले समझते थे कि जन्नत मे भी कुछ है॥
विगड़े हुये तेवर[१६] ही से साबित नहीं रंजिश।
इनरोजो तो फर्क उनकी तबीयत मे भी कुछ है॥
फरमाते हैं वह सुन के मेरे रोने का अहवाल[१७]।
यह बात हो दाखिल तेरी आदत मे भी कुछ है॥

---

(१) बादल छाया हुआ (२) कब्र ३) सच या दुरुस्त (४) बढ़चढ़ कर (५) असर (६) सौ ७) अरमान (८) गुस्सा (९) ईश्वर की मेहरबानी (१०) परहेजगार (११) सजा या मेहरबानी १२) शराब (१३) शराब पिलानेवाला (१४) गानेवाला (१५) नसीहत करने वाला (१६) चढ़ी हुई आँख (१७) हाल।

गो राज़े मोहब्बत का छिपाना है बहुत ख़ूब।
लेकिन बख़ोदा लुत्फ़ तो शोहरत[1] में भी कुछ है॥
अफ़सानये[2] हसरत[3] मेरा सुन सुन के वह बोले।
है सब यह जवानी कि तबियत में भी कुछ है॥
ख़ुश वस्ल[4] से कोई, कोई नज़्ज़ारे[5] से दिलशाद[6]।
ऐ गरदिशे गरदूं[7] मेरी किस्मत में भी कुछ है॥
बालायेज़मीं[8] पास सिकन्दर के था सब कुछ।
अब जाके ज़रा देखिये तुर्बत[9] में भी कुछ है॥
तुम आने न दो याद भी क्या करने न दोगे।
दख़्ल[10] आपको बन्दे की तबीयत में भी कुछ है॥

× × ×

क़ैद एहसान से तेरी ऐ फ़लक[11] आज़ाद रहे।
बेकसी[12] का हो भला बेवतनी[13] शाद[14] रहे॥
मये गुलगूं[15] से छके मस्त हुये शाद रहे।
साकिया खानये[16] एहसां तेरा आबाद रहे॥
अजल[17] आती है ग़मेहिज्र[18] में अल्ला रे नसीब[19]।
मलिकुल मौत[20] को किस तरह यह हम याद रहे॥
है यह हसरत तेरी हसरत के सेवा सब हो फ़ना[21]।
दोनों आलम[22] न रहे शहरे दिल आबाद रहे॥

---

(१) मशहूर होना (२) क़िस्सा (३) अरमान (४) मुलाक़ात (५) देखने वाले (६) दिलख़ुश (७) आसमान का चक्कर (८) जमीन के ऊपर (९) कब्र (१०) अन्दर आना (११) आसमान (१२) लाचारगी (१३) मोसाफिरत (१४ ख़ुश (१५) लाल रंग की शराब (१६) नेकी का घर (१७) मौत (१८ जुदाई का अफ़सोस (१९) तक़दीर या क़िस्मत (२०) वह फ़रिशता जो जान निकालता है (२१) मिटना (२२) दोनों जहान या दोनों मुल्क।

हश्र[1] बरपा जो हुआ भूल गया एक को एक ।
ऐसी आफ़त में भला कौन किसे याद रहे ॥
गोशये[2] ख़ातिरे आली में जो पाए न जगह ।
कहिये फिर जाके कहां आशिक़े नाशाद[3] रहे ॥
नेज़ा मे नाम लिया कब्र में मजकूर[4] आया ।
कौन सी जा थी जहां वह न मुझे याद रहे ॥

× × ×

जख्मी किया सीने को नजर है कि गजब है ।
खून होके भी क़ायम है जिगर है कि गजब है ॥
वह कहते हैं मैं पीने को तो पी नही सकता ।
ऐ शेख यह अल्लाह का डर है कि ग़जब है ॥
गुजरी है शबे वस्ल कि आई है मेरी मौत ।
वह होते है रोख़सत[5] यह सहर[6] है कि गजब है ॥
लपटा के मुझे सीने से वह आज यह बोले ।
"अकबर" तेरी आहो का असर है कि गजब है ॥

× × ×

दिल शिकसता[7] हू मगर दिल मे खोदा का नूर[8] है ।
यह वह वीराना[9] है रोशन जिसमें शमये तूर[10] है ॥
आप की प्यारी अदा पर दिल न मै देता कभी ।
बस यही कहिये कजा[11] से आदमी मजबूर है ॥

---

(१) क़यामत का आना (२) कोना (३) नाखुश (४) ज़िक्र किया गया (५) विदा (६) सुबह से पहले का हिस्सा (७) टूटा हुआ (८) ईश्वर का जलवा या ईश्वर की रोशनी (९) उजड़ा हुआ (१०) तूर का जलवा या तूर की रोशनी (११) मौत ।

नोटः—तूर उस पहाड़ का नाम है जहां मुसलिमों के एक पैगम्बर हजरत मूसा को ज्ञान प्राप्त हुआ था ।

कौन ऐसा है नहीं है मौत की जिसको खबर।
फिर जो ग़फ़लत[1] है तो यह दुनिया का एक दस्तूर[2] है॥
गूज[3] से बोले की जुल्फ़ उलझी मैं आशिक हो गया।
यह न खौफ़ आया कि वह अफ़ई[4] है यह जम्बूर[5] है॥
शैर गोई की वकालत में मुझे फुर्सत कहाँ।
यह भी "अकबर" खातिरे अहेबाब[6] गोरखपूर है॥

× × ×

मेरी चश्म क्यों न हो खूँ फेशां न रही वह बज़्म न वह आसमां।
न वह तर्जे ग़रदिशे[7] चर्ख[8] है न वह रंगे लैलोबहार है॥
जहाँ कल था ग़लग़लये[9] तर्ब[10] वहां हाय आज है यह ग़ज़ब।
कहीं एक मकां है गिरा हुआ कहीं एक शिकस्ता[11] मजार है॥
ग़म व यास[12] व हसरत व बेकसी कि हवा कुछ ऐसी है चल रही।
न दिलों से अब वह उमङ्ग[13] है न तबीयतों में उभार है॥
हुये मुझपे जो सितमे फ़लक कहूँ किस से उसको कहां तलक।
न मुसीबतों की है कोई हद न मेरे ग़मो का शुमार[14] है॥
मेरा सीना दाग़ों से है भरा मेरे दिल को देखिये तो जरा।
यह शहीदे इश्क़ की है लहद पड़ा जिसपे फूलों का हार है॥
मैं समझ गया वह है बेवफा मगर उनकी राह मे हूँ फ़िदा[15]।
मुझे खाक में वह मिला चुके मगर अब भी दिल से ग़ुबार[16] है॥

× × ×

लगावट की अदा[17] से उनका कहना पान हाजिर है।
कयामत है सितम[18] है दिल फ़िदा है जान हाजिर है॥

---

(१) भूल चूक (२) तौर तरीका (३) बालों की मोड़ (४) साँप (५) बर्रे (६) दोस्त लोग (७) उलटफेर या दौरा (८) आसमान (९) शोर व गुल (१०) खुशी (११) टूटा हुआ (१२) नाउम्मेदी (१३) जोश (१४) गिनती (१५) आशिक (१६) मैल या रंज (१७) नाज व नखरा (१८) जुलम या बेइनसाफी।

कहो जो चाहो सुन लेंगे मगर मुतलक[1] न समझेंगे।
तबीयत तो खोदा जाने कहां है जान हाजिर है॥
निगाहें ढूँढ़ती हैं जिनको इनका दो निशां[2] यारो।
इसे मैं क्या करूँगा वह जो सब सामान हाजिर है॥
बिठा कर गैर की महफिल में मुझको उसने फरमाया।
सुनो "अकबर" की गजलें देखो यह मस्ताना हाजिर है॥

× × ×

एक बोसा दीजिये मेरा ईमान लीजिये।
गो बुत है आप बहरे खोदा[3] मान लीजिये॥
दिल लेके कहते हैं तेरी खातिर से ले लिया।
उलटा मुझी पे रखते हैं एहसान लीजिये॥
गैरों को अपने हाथ से हँस कर खिला दिया।
मुझसे कबीदा[4] होके कहा पान लीजिये॥
मरना क़ुबूल[5] है मगर उल्फत नहीं कुबूल।
दिल तो न दूंगा आपको मैं जान लीजिये॥
हाजिर हुआ करूँगा मैं अक्सर हुजूर में।
आज अच्छी तरह से मुझे पहचान लीजिये॥

× × ×

अपनी हस्ती जो हिजाबे[6] रुखे जाना[7] न रहे।
वां रहें हम कि जहां फिर कोई अरमां न रहे॥
सूरते यार जो सौ परदों मे पिन्हा[8] न रहे।
बहेस फिर तुममे यह ऐ गब्रो व मुसलमां न रहे॥
मांगता हूँ जो दोआ सुबह की कहती है अजल[9]।
यह भी मुमकिन है रहो तुम शबे हिजरा[10] न रहे॥

---

(१) बिलकुल (२) पता (६) ईश्वर के लिये, ईश्वर के वास्ते (४) रंजीदा (५) मन्जूर करना या मानना (७) परदा (७) माशूक का चेहरा (८) छिपा (६) मौत (१०) जुदाई की रात।

आप ही ने तो किया है मुझे दीवानये इश्क़ ।
आप ही कहते हैं अब आप तो इन्सां न रहे ॥
मैं तो इश्क़े बुते जालिम से न बाज आऊँगा ।
अक्ल छुट जाये जिगर टुकड़े हों ईमां न रहे ॥
आइने को है यह हैरत[1] कि सिकन्दर हुये खाक ।
होश परियों के उड़े है कि सुलेमा न रहे ॥
चश्मे नरगिस[2] से कोई हाल चमन का पूछे ।
देखते देखते क्या क्या गुलेखंदा[3] न रहे ॥
सुबह तक हिज्र सनम[4] मे यह दोआ थी अपनी ।
मैं रहूं या न रहूँ यह शबे हिजरां न रहे ॥
इनका यह नाज कि आ जायेंगे जल्दी क्या है ।
अपना यह हाल किं दम भर के भी मेहमां न रहे ॥
मुँह न मोड़ो सितम[5] व जौरे[6] बुतां से "अकबर" ।
बन्दगी[7] कैसी अगर तावये[8] फरमां न रहे ॥

× × ×

होगा क्या रंजिश जो तुमसे ऐ परी हो जायगी ।
जिससे दिल लग जायगा एक दिललगी हो जायगी ॥
टाल देते है यही कहकर मेरे मतलब की बात ।
आज पर क्या मुन्हसर[9] है फिर कभी हो जायगी ॥
आयेगा आगोश[10] में मेरी जो वह रश्के[11] चमन[12]।
निगहतेगुल की तरह से बेखुदी हो जायगी ॥

---

(१) ताज्जुब या भौचक्का (२) नरगिस के फूल की तरह आँख (३) हँसे हुये फूल यानी खुश मिजाज लोग (४) माशूक की जुदाई (५) जुलम (६) जुलम (७) गुलामी, नौकरी (८) हुक्म के तावेदार या फरमाँबरदार (९) निरभर (१०) गोद (११) हसद (१२) बाग़ ।

रूह को कालिब[1] में आने से बड़ा इन्कार था।
यह न समझी थी कि आखिर दोस्ती हो जायगी॥
नेजा मे हूँ अब भी आजायें वह दम भर के लिये।
और तो क्या एक निगाहे आखिरी हो जायगी॥

× × ×

जो इस सरोकद[2] से जुदाई हुई है।
कयामत मेरे सर पे आई हुई है॥
जरा देखना फिर उन्ही चितवनो से।
यह प्यारी अदा दिल को भाई हुई है॥
नहीं रुये रंगी पे[3] जुल्फो का जलवा।
गुलिस्तां पे बदली यह छाई हुई है॥
किसी का नही है गुजर इस गली मे।
यह किस्मत से अपनी रसाई[4] हुई है॥
मेरा सोजे दिल[5] आप क्या देखते है।
यह आग आपही की लगाई हुई है॥
न देखेंगे वह इस तरफ आँख उठाकर।
कुछ और इनके दिल में समाई हुई है॥
दिखाते न थे आप यो मुझको आंखें।
यह शोखी[6] किसी की सिखाई हुई हैं॥
मोक़द्दर[7] किया था रकीबों[8] ने उनको।
बड़ी मुशकिलों से सफाई हुई है॥
जो चाहे करें बेवफाई वह "अकबर"।
तबीयत मेरी उनपे आई है॥

---

(१) जिस्म (२) जिस्म या बदन (३) सरो के पेड़ की तरह सीधा (४) खुबसूरत (५) पहुंच (६) दिल की जलन (७) शोखी या चालाकी।

उल्फ़त जो कीजिये तो ग़रज़ आश्ना[1] से क्या ।
वादा जो लीजिये तो बुते बेवफ़ा से क्या ॥
मूसा ने कोहे तूर पे बातें ख़ोदा से की ।
रुतबा[2] बशर[3] का देखिये होता है क्या से क्या ॥
मरता हूं जान जाती है अब्र हिज्र[4] में मगर ।
इजहार[5] इसका कीजिये उस बेवफ़ा से क्या ॥
लुत्फे[6] चमन[7] है वादये गुलगूं है यार है ।
अब्र मौसिमे बहार में मांगू खोदा से क्या ॥
कातिल[8] तुम्हे कहेंगे जहां में हमें शहीद[9] ।
ऐ यार और होगा तुम्हारी जफा[10] से क्या ॥
दारे[11] फ़ना[12] से ले न चले कुछ तो ग़म नहीं ।
फरमाइये तो लाये थे मुल्के बक़ा से क्या ॥
तेरे मरीज ग़म को जो करती असर नहीं ।
कुछ कह दिया है आके कजा[13] ने दवा से क्या ॥
क्या क्या सिफत[14] लिखो तेरी ज़ुल्फ़े दराज की ।
मजमून हाथ आये हैं फिक्रे रसा[15] से क्या ॥
लेता है यां ग़मे शबे हिज्रां[16] तो अपनी जां ।
उम्मीद सुबह देती है हमको दिलासे क्या ॥
सद चाक[17] मिस्ल शाना[18] करे आशिकों का दिल ।
होगा बस और आपकी ज़ुल्फ़े दोता[19] से क्या ॥
दिल में जो है वह होगा शबे वस्ल में जरूर ।
होगा हुजूर आपको शर्म व हया से क्या ॥

---

(१) दोस्त (२) दरजा (३) आदमी (४) जुदाई (५) हाजिर करना (६) मजा (७) बाग़ (८) क़त्ल करने वाला (९) जो बेगुनाह सच्चाई के रास्ते में मार डाला गया हो (१०) ज़ुल्म (११) सूली (१२) मिटना (१३) मौत (१४) तारीफ (१५) पहुँचना (१६) जुदाई (१७) सौ टुकड़े (१८) कंघी (१९) कुबड़ा ।

मैं हाले दिल तमाम शब[1] उनसे कहा किया।
हंगामे सुबह[2] कहने लगे किस अदा से क्या॥
बहरे[3] नमूदे[4] ग़ैर गवारा हो अपना खूं।
मजमून हाथ आया है बर्गे[5] हिना से क्या॥

× × ×

जलवये रफ़तार[6] जाना है नमूना हश्र का।
हक़ ब जानिब[7] है जो है जाहिद[8] को धड़का हश्र का॥
बेतआम्मुल[9] तेरी कामत[10] के जो मजनूं मिलगये।
शायद अब नजदीक आ पहुँचा जमाना हश्र का॥
जलवये कामत ने कुछ ऐसा हमें घबरा दिया।
जीते जी हम समझे आ पहुंचा जमाना हश्र का॥
मेरी आंखें नूह के तूफ़ां की दिखलाती थीं सैर।
उनकी चितवन[11] ने तो दिखलाया तमाशा हश्रका॥
यादे कामत ने किया है वायजों का मोतकिद[12]।
रोज मैं सुनने को जाता हूं फ़साना हश्र का॥
लवहे किस्मत[13] के मोताबिक[14] नामये इसियां[15] है जब।
फिर भला होने लगा क्यों मुझको खटका हश्र का॥
है शबे हिज्रां[16] दराजी में बसाने[17] ज़ुल्फ़ेयार[18]।
तूल[19] में रोजे जुदाई[20] दिन है गोया हश्र का॥
यादेक़ामत से जो उस दिन मिल गई फ़ुर्सत हमें।
देख लेंगे दूर से हम भी तमाशा हश्र का॥

---

(१) रात (२) सुबह की भीड़ (३) वास्ते (४) जाहिर (५) मेंहदी की पत्ती (६) माशूक की चाल (७) सच्चाई की तरफ (८) परहेजगार (९) बे सोचे (१०) कद (११) देखना (१२) दिल से यकीन करने वाला (१३) क़िस्मत की तख़्ती यानी भाग (१४) मोवाफिक (१५) गुनाह (१६) जुदाई की रात (१७) बड़ी (१८) माशूक़ का बाल (१९) नशा (२०) बिछड़ना।

बेख़बर जो एक के अहेवाल[1] से है दूसरा।
आपकी महफिल भी गोया है नमूना हश्र का॥
फतेहा पढ़ने मेरी तुर्वत[2] पै खुश क़द[3] आते हैं।
हर शबे आदीना[4] यां होता है मेला हश्र का॥
क्या क़यामत नामा पढ़पढ़ कर सुनाता है मुझे।
खौफ[5] तू मुझको दिलाता है भला क्या हश्र का॥
इनतिहा[6] का हुस्न बख्शा[7] है उसे अल्लाह ने।
क्यों दिल व जा से न मैं हो जाऊँ शैदा हश्रका॥
नामये ऐमाल[8] मेरा इसकी है जुल्फ़ें सियाह[9]।
नूर[10] रहमतहाय[11] हक़ है रूये जेबा[12] हश्र का॥
बहशते दिल[13] मुझसे कहती है चलो भी यां से अब।
तै अभी बरसों न होगा यह बखेड़ा हश्र का॥
ख़्वाहिशे[14] खुलदेवरी[15] से आरजूये हूर में।
कौन मुद्दत तक उठाये नाज़ बेजा हश्र का॥
हश्र तक अब हाथ आने के नहीं मज़मूने हश्र।
तुमने ऐ "अकबर" कोई पहलू न छोड़ा हश्रका॥

× × ×

अभी से खून रुलाती है मुझको फ़िक्र मआल।
चमन से बाद तेरे ऐ बहार क्या होगा॥
उन्हे पसन्द नहीं और उससे मैं बेज़ार[16]।
इलाही फिर यह दिले बेकरार[17] क्या होगा॥

---

(१) हाल (२) कब्र (३) अच्छे क़द वाला याने खूबसूरत (४) शुक्रवार की रात (५) डर (६) ज्यादा (७) खूबसूरती दी (८) काम (६) काला बाल (१०) रोशनी (११) ईश्वर की मेहरबानी (१२) खूबसूरत चेहरा (१३) दिल का पागलपन या (१४) आर्जू या तमन्ना (१५) बहिश्त (१६) परेशान (१७) परेशान।

अजीजो सादा ही रहने दो लौहे तुर्वत[1] को।
हमी मिटे तो यह नक्श व निगार[2] क्या होगा॥

× × ×

जमाना हो गया विस्मिल[3] तेरी सीधी निगाहों से।
खोदा नाख्वास्ता[4] तिरछी नज़र होती तो क्या होता॥
मोहब्बत हो न हो उनको मुझे क्या मैं तो आशिक हूँ।
न होने से है इसके क्या अगर होती तो क्या होता॥
पिसा जाता हूं मैं सौ जान से इस वेवफ़ाई पर।
मोहब्बत यार को मुझसे अगर होती तो क्या होता॥
मेरी हसरत की नज़रों ही पे ज़ालिम इस कदर बिगड़ा।
कहीं दर्दे जिगर से चश्म तर होती तो क्या होता॥
न रक्खी आसमां ने एकदम भी वस्ल की साइत।
घड़ीभर[5] चैन से अपनी बसर होती तो क्या होता॥
क़फ़स इस नातवानी[7] पर तने बिस्मिल बना तुमसे।
जो ताक़त भी कहीं ऐ बाल व पर होती तो क्या होता॥

× × ×

किस क़दर जोशे मसर्रत[8] मे है सर पर सेहरा।
खुद है खुशबू की तरह जामे से बाहर सेहरा॥
मिस्ल खूबी का तो नौशाह है मिसले युसुफ।
साय्ये लुत्फ खोदा है तेरे सर पर सेहरा॥
आरिजो[9] खाल[10] का तेरे है इसे कुर्ब[11] नसीब।
किस तरह से न हो रश्के महो अख्तर[12] सेहरा॥
आज हर गुल की तमन्ना है यही गुलशन में।
कि तेरे फर्क मोबारक पे हो आकर सेहरा॥

---

(१) कब्र की तख्ती (२) बेलबूटा (३) जख्मी (४) खोदा ऐसा न करे (५) थोड़ी देर (६) पिंजड़ा या जेल (७) कमजोरी (८) खुशी (९) गाल (१०) तिल (११) नज़दीक (१२) सितारा।

निगहते[1] गेसुये मशर्की[*] ने दिखाया जो असर।
होगया और भी खुशबू से मोअत्तर[2] सेहरा॥
रोजे रौशन[3] का गुमा[4] क्यों शवे इशरत[5] पे न हो।
अक्स रुखसार[6] से है मेहरे मुनौव्वर[7] सेहरा॥
गुलशने[8] हुस्न[9] मे अल्ला से रसाई[1] उसकी।
हो गया सुम्बुले गेसु[11] के बराबर सेहरा॥
जीनते हुस्न[12] खोदादाद[13] जो शादी से हुई।
बन गया चेहरये पुरनूर[14] का जेवर सेहरा॥
जलवये हुस्न के नज़्ज़ारे की लाता नही ताव।
इसलिये चेहरे से हट जाता है अक्सर सेहरा॥
कह दिया हमने यह एक दोस्त की फरमाइश[15] से।
वरना वाकिफ़[16] भी नहीं कहते हैं क्योंकर सेहरा॥

× × ×

लाख जुरअत[17] की कितन्हाई[18] मे लपटालें उन्हे।
दिल मे रोबे[19] हुस्न से खौफ व खतर[20] आही गया॥
मैं भी अब अच्छी तरह गैरो से करता हूँ फसाद[21]।
रंज तो मुझसे तुझे ऐ फितनागर[21] आही गया॥
गो बहुत कुछ रंज यारानेवतन[23] से था हमे।
आंख मे आंसू मगर वक्ते सफर आही गया॥
मेरी आंहे सुनके कान अपने किये थे तुमने बन्द।
रोदिये आखिर को दिल मे कुछ असर आही गया॥

---

(१) खुशबू (२) खुशबूदार (३) दिन (४) ख्याल (५) खुशी की रात (६) गाल (७) रौशन (८) बाग़ (६) खूबसूरती (१०) पहुँच (११) बाल की खुशबू (१२) खूबसूरती की सजावट (१३) ईश्वर दी देन (१४) खूबसूरती से भरा हुआ चेहरा (१५) आग्रह (१६ जानना (१७) हिम्मत (१८) अकेलापन (१६) खौफ या डर (२०) डर (२१) झगड़ा (२२) फसाद करने वाला (२३) अपने देश के रहने वाले, दोस्त।

आके जब गश[1] में मुझे देखा तो घबरा कर कहा।
होश में आ अब तो मैं ऐ बेखबर आही गया॥
बाद मुद्दत के नजर आई जो सूरत यार की।
सौ तरह दिल को संभाला गश मगर आही गया॥
हसरत[2] का शहर इश्क[3] में भेजा खोदा ने जब।
रहने को खानये दिले मुजतर[4] बना दिया॥
पहले ही चाल आपकी थी फितनाजा[5] हुजूर।
घुंघरू ने और फितनये महशर बना दिया॥
लिक्खी यहाँ तलक सिफत उस नौनेहाल[6] की।
खामे[7] को हमने शाखे गुलेतर बना दिया॥

× × ×

नज्जारा रोजव[8] शब[9] है मुसहफे रुखसारे कातिल[10] का।
यही सूरत रही तो बस खोदा हाफिज मेरे दिल का॥
खेजा[11] में क्या उदासी छाई है सेहने गुलिस्ता[12] पर।
न वह फूलों की रंगीनी न वह नगमा[13] अनादिल[14] का॥
यह जीनत[15] बन्दिशे अलफाज[16] की है हुस्न मानी से।
न हो जलवा जो लैला का तो फिर क्या लुत्फ महमिल[17] का॥

× × ×

समझे वही उसको जो हो दीवाना किसी का।
"अकबर" यह गजल मेरी है अफसाना किसी का॥
दिखलाते है बुत जलवये मस्ताना किसी का।
यों कावये मकसूद है बुतखाना किसी का॥

---

(१) बेहोशी (२) अरमान या अफसोस (३) मोहब्बत का शहर (४) बेचारा (५) फसाद बरपा करने वाली (६) नया पौदा या बच्चा (७) कलम (८) दिन (९) रात (१०) गाल (११) पतझड़ (१२) बाग (१३) आवाज (१४) बुलबुल (१५) सजावट (१६) लफ्जों का बाधना (१७) कजावा जो ऊँट पर कसते हैं।

गर शेख व ब्रहमन सुने अफ़साना किसी का ।
सोविद[१] न रहे क़ावा व वुतखाना किसी का ॥
अल्लाह ने दी है जो तुम्हें चांद सी सूरत ।
रोशन भी करो जाके सियहखाना[२] किसी का ॥
इस कूचे से है गब्र[३] व मुसलमां की अकीदत[४] ।
कावा जो किसी का है तो वुतखाना किसी का ॥
अश्क[५] आंखो में आ जाये ऐवज नींद के साहब ।
ऐसा भी किसी शव सुनो अफसाना किसी का ॥
जान अपनी जो दी शमा के शोलो[६] से लपट कर ।
समझा रुखे रोशन उसे परवाना किसी का ॥
शमये रुखे रोशन का वह जलवा तो दिखायें
है हौसला भी सूरते परवाना किसी का ॥
क्या वर्क़[७] की शोखी मेरी आंखों से समाये ।
है पेशे नजर जलवये मस्ताना किसी का ॥
उल्फ़त मुझे उससे है उसे ग़ैर से है इश्क ।
मैं शेफता[८] उसका हूँ वह दीवाना किसी का ॥
इशरत[९] नहीं आती जो मेरे दिल से न आये ।
हसरत ही से आबाद है वीराना किसी का ॥
हैरां हूँ इसे तावे जमाल आ गई क्योंकर ।
वेखुद है जो दिल सुनही के अफसाना किसी का ॥
पहुंची जो निगह आलमेमस्ती[१०] में फ़लक पर ।
हम समझे महेनों[११] को भी पैमाना किसी का ॥

---

(१) इवादत करने वाला या पूजा करने वाला (२) काला घर (३) आग का पुजारी (४) जिस मजहब पर यकीन किया जाय (५) आसू (६) लौया लपट (७) विजली (८) आशिक (९) खुशी (१०) मस्ती का जमाना या शवाब का जमाना (११) नया चाँद

करने नहीं देते जो बयाँ हालते दिल को ।
सुनियेगा लबे गोर[1] से अफसाना किसी का ॥
सामाने तकल्लुफ नजर आयेंगे जो हर सू ।
जन्नत[2] में भी याद आयेगा काशाना किसी का ॥
नालां[4] है अगर वह तो यह है चाक[5] गरेबा[6] ।
बुलबुल की तरह गुल भी है दीवाना किसी का ॥
चश्म व दिले आशिक का न कुछ पूछिये अहेवाल[7] ।
वह महवे[8] किसी का है यह दीवाना किसी का ॥
तासीर जो की सोहबते आरिज[9] ने दमेख्वाब[10] ।
खिजलत[11] वह आइना हुआ शाना किसी का ॥
कोई न हुआ रूह का साथी दमे आखिर ।
काम आया न उस वक्त मे याराना[12] किसी का ॥
कुछ दूर नही साक़िये[13] कौसर के करम से ।
भर दे मये वहदत[14] से जो पैमाना किसी का ॥
रखता है कदम कूचये गेसू मे जो वेखौफ ।
क्या तू दिले सदचाक[15] है ऐ शाना[16] किसी का ॥
तासीर[17] मोहब्बत से जो हो जाते है बेचैन ।
रो देते हैं अब सुन के वह अफ़साना किसी का ॥
अहबाब[18] ने पूछा जो मेरा हाल तो बोले ।
सुनते हैं वह इन राजों है दीवाना किसी का ॥

---

(१) क़ब्र (२) बैकुठ (३) झोपड़ा (४) शोर करना (५) फटा हुआ (६) कंठ (७) हाल (८) मिटा हुआ या लीन (९) गाल (१०) सोते वक़्त (११) शरमिन्दाहोना (१२) दोस्ती (१३) वैकुंठ मे एक नहर है जिसका नाम कौसर है वहाँ के पानी पिलाने वाले को साकिये कौसर कहते है यानी ईश्वर (१४) एक होना या तनहाई (१५) सौ टुकड़े (१६) कंधा (१७) असर (१८) दोस्तो

देखा है अजब रङ्ग कुछ इस दौरे[1] फलक[2] में।
कोई नहीं ऐ साकिये मैखाना किसी का॥
याँ शीशये दिल खूने तमन्ना से है लवरेज़[3]।
वाँ बादये गुलफाम[4] से पैमाना किसी का॥
सब मस्त भये शौक़ हैं उन आँखो से ऐ दिल।
इस दौर में खाली नही पैमाना किसी का॥
बख्शी है जबीसांई की दर पर जो इजाज़त।
वाजिब है मुझे सिजदये शुकराना किसी का॥
ऐ हज़रते नासेह[5] न सुनेगा यह तुम्हारी।
मेरा दिले वहशी[6] तो है दीवना किसी का॥
करते वह निगाहों से अगर बादा[7] फरोशी[8]।
होता न गुजर जानिबे[9] मैखाना किसी का॥
हसरत ही रही ज़ुल्फों के नज़्ज़ारे[10] की मुझको।
यह पंजयेमिज़गां[11] न बना शाना किसी का॥
किस तरह हुआ मायले[12] गेसू नहीं मालूम।
पाबन्द[13] न था यह दिले दीवाना किसी का॥
हम जान से बेज़ार[14] रहा करते है "अकबर"।
जब से दिले बेताब है दीवाना किसी का॥

× × ×

मोबारक मैकशो[15] मौसिम फिर आया बादाख्वारी[16] का।
चमन में शोर है फिर आमदे[17] फ़सलेबहारी[18] का॥

---

(१) ज़माना (२) आसमान (३) भरा हुआ (४) गुलाब के फूल की तरह रंग यानी माशूक़ (५) नसीहत करने वाला (६) जंगली या पागल (७) शराब (८) बेचना (९) तरफ (१०) देखना (११) पलक का पंजा यानी पलक (१२) बाल की ख्वाहिश करने वाला (१३) क़ैदी (१४) परेशान (१५) शराब पीनेवाला (१६) शराब पीना (१७) आना (१८) बसंत ऋतु।

निहायत[१] इजतेमाये[२] आतश[३] व सीमाव[४] मुश्किल है।
ख़्याले रुख़[५] में क्योंकर हाल लिक्खूं बेक़रारी का ॥
हमारा गु'चये[६] ख़ातिर[७] शिगुफ़ता[८] कर नहीं सकती।
फ़क़त कलियां खिलाना काम है बादे बिहारी का ॥
चमन में खन्दाज़न[९] गुल है तो मैख़ाने में पैमाना[१०]।
यहां है फ़ैज़े[११] साकी वां करम[१२] बादे बहारी का ॥
मुसख़्ख़र[१३] करता हूं परियों को मैं जादू बयानी से।
हसीनों में फ़साना[१४] है मेरी जां अख़्तियारी का ॥
हुई हैं उल्फ़तें माबूद[१५] में दीवानी मुझको।
मोकिर[१६] क्योंकर न एक आलम[१७] हो मेरी होशियारी का ॥

ज़ायल[१८] ऐ दिल यह मेरा दर्दे जिगर हो क्योंकर।
वस्ले[१९] जाना है दवा इसकी मगर हो क्योंकर ॥
महफिले इशरते अग़ीयार में रहते हैं हुजूर।
हालेग़म[२०] दीदये हिजरां[२१] की ख़बर हो क्योंकर ॥
जलवये शाहिदेमानी[२२] की है मुश्ताक़ आंखें।
हुस्न सूरत मुझे मन्ज़ूरे नजर हो क्योंकर ॥
सीमतन[२३] हैं उन्हें रहती है बहुत ख़्वाहिशे ज़र।
वां भला हमसे ग़रीबों का गुज़र हो क्योंकर ॥
हाज़री का जो मिला हुक्म तो यह हो इर्शाद।
दरेदौलत[२४] पे जो आऊं तो ख़बर हो क्योंकर ॥

× × ×

---

(१) इन्तेहा (२) जमा होना (३) आग (४) पारा (५) चेहरा या शक्ल (६) दिल की कली (७) खिली हुई (८) हँसते हुये (९) शराबख़ाना (१०) शराब पीने का गिलास (११) शराब पिलाने वाले मेहरबानी (१२) मेहरबानी (१३) ताबे में करना या काबू में करना (१४) किस्सा (१५) पूजा किया गया (१६) एकरार करना, मान लेना (१७) जमाना (१८) अफसोस का हाल (१९) जुदाई अख़्तियार करना (२०) ईश्वर का जलवा (२१) ख़्वाहिश मंद (२२) चांदी के ऐसा बदन (२३) हुक्म (२४) मकान

वह रश्क[1] गुल न हुआ हमसे हम किनार[2] अफसोस।
वहार उम्र[3] खेजां[4] हो गई हजार अफसोस॥
बहुत पसंद तेरा रंग है मुझे लेकिन।
बक़ा[5] नहीं मुझे ऐ मौसिमे वहार अफसोस॥
बुतों की याद में तोवा भी भूले हम दमे मर्ग[6]।
चले जहान से आख़िर गुनाहगार अफसोस॥
जो वेक़रारी ने आने दिया न दिल के क़रीव।
तो मेरे हाल पे करने लगा क़रार अफसोस॥
किसी ने वज़्म[7] मे समझा न वायसे गिरियां[8]।
तमाम रात रही शमा[9] अश्कवार[10] अफसोस॥
तरीक़े इश्क[11] मे हादी व रहनुमा "अकवर"।
जो एक दिल भी मिला है वह वेक़रार अफसोस॥

× × ×

आप से आते हो कव उश्शाके मुजतर[12] की तरफ।
जजवेदिल[13] यह तुम को लाया है मेरे घर की तरफ॥
पूछता है जब कोई उनसे किसे है तुमसे इश्क।
देखते हैं प्यार से शरमा के "अकवर" की तरफ॥

× × ×

उन्हें निगाह है अपने जमाल[14] ही की तरफ़।
नजर उठा के नहीं देखते किसी की तरफ़॥

---

(१) जिस पर फूलो को हसद है (२) गोद (३) वहार की उमर यानी जवानी (४) पतझाड़ यानी वुढ़ापा (५) क़ायम रहना (६) मरते वक्त (७) महफिल (८) रोने का शवब (९) मोमवत्ती या रोशनी (१०) आंसू गिराना या रोना (११) इश्क़ का तरीका (१२) अच्छा रास्ता देखाने वाला या रहनुमां (१३) वेचारा आशिक (१४) दिल का खिंचाव (१५) खूबसूरती

तवज्जेह[१] अपनी हो क्या फ़न्ने शायरी की तरफ़ ।
नज़र हर एक की जाती है ऐब ही की तरफ़ ॥
लिखा हुआ है जो रोना मेरे मोकद्दर[२] में ।
ख़ेयाल तक नहीं जाता कभी हँसी की तरफ़ ॥
तुम्हारा साया भी जो लोग देख लेते हैं ।
वह आंख उठा के नहीं देखते परी की तरफ़ ॥
बला[३] में फँसता है दिल मुफ्त जान जाती है ।
ख़ोदा किसी को न ले जाय इस गली की तरफ़ ॥
कभी जो होती है तक़रार गैर से हमसे ।
तो दिल से होते हो दरपर्दा[४] तुम उसी की तरफ़ ॥
निगाह पड़ती है उनपर तमाम महफिल की ।
वह आंख उठा के नहीं देखते किसी की तरफ़ ॥
निगाह इस बुते खुदबीं[५] की है मेरे दिल पर ।
न आइना की तरफ़ है न आरसी की तरफ़ ॥
कुबूल कीजिये लिल्लाह तोहफ़ये दिल को ।
नज़र न कीजिये इसकी शिकस्तगी[६] की तरफ़ ॥
यही नज़र है जो अब कातिले ज़माना हुई ।
यही नज़र है कि उठती न थी किसी की तरफ़ ॥
गरीब ख़ाने[७] में लिल्लाह दो घड़ी बैठो ।
बहुत दिनों में तुम आये हो इस गली की तरफ़ ॥
ज़रा सी देर ही हो जायेगी तो क्या होगा ।
घड़ी घड़ी न उठाओ नज़र घड़ी की तरफ़ ॥
जो घर में पूछे कोई ख़ौफ़[८] क्या है कहदेना ।
चले गये थे टहलते हुये किसी की तरफ़ ॥

---

(१) किसी की तरफ़ मुंह करना, किसी की तरफ़ मोख़ातिब होना (२) तकदीर या किस्मत (३) मसीबत (४) छिपे तौर पर (५) अपने को देखना (६) टूटा हुआ (७) घर (८) डर

हज़ार जलवये हुस्ने बुतां हों ऐ "अकबर"
तुम अपना ध्यान लगाये रहो उसी की तरफ़ ॥

× × ×

जानिबे[२] ज़ंजीर गेसू[३] फिर खिचा जाता है दिल ।
देखिये अब मेरे सर पर क्या बला[४] लाता है दिल ॥
लोग क्योंकर छोड़ देते हैं मोहब्बत दफ़ातन[५] ।
मैं तो जब यह क़स्द[६] करता हूँ मचल जाता है दिल ॥
रख के तसवीरे ख़्याली यार की पेशे नज़र ।
रात भर मुझको शबे फ़ुर्क़त[७] में तड़पाता है दिल ॥
दाग़हायेसीनये गुल[८] हैं आहे सर्द[९] अपनी नसीम[१०] ।
गुलशने हस्ती[११] में क्या अच्छी हवा खाता है दिल ॥
बारगाहेइश्क़[१२] कहिये तेरे दौलत ख़ाने[१३] को ।
जो कोई आता है यां तुझसे लगा जाता है दिल ॥
ख़ौफ़ के पर्दे में छुप जाती है जाने नातवां[१४] ।
आशिक़ी के मार्के[१५] में काम आ जाता है दिल ॥
साथ साथ अपने जनाज़े[१६] के यह चिल्लाती थी रुह ।
इनको मिट्टी में मिलाने को लिये जाता है दिल ॥
शेख़ अगर काबे में खुश है ब्रहमन बुतख़ाने में ।
अपने अपने तौर[१७] पर हर शख़्स बहलाता है दिल ॥
क़स्द करता हूँ जो उठने का तो फ़र्माते है वह ।
और बैठो दो घड़ी साहब कि घबराता है दिल ॥
यह नहीं कहते यहीं रह जाव अब तुम रात को ।
बस इन्ही बातों से "अकबर" मेरा जल जाता है दिल ॥

---

(१) माशूक़ की ख़ुबसूरती (२) तरफ़ (३) बाल की लट (४) मुसीबत (५) एकाएक (६) इरादा करना (७) जुदाई की रात (८) फूल के छाती के धब्बे (९) ठंढी आह (१०) सुबह की ठंढी हवा (११) हस्ती का बाग़ (१२) मोहब्बत करने की जगह (१३) घर (१४) कमज़ोर (१५) लड़ाई का मैदान (१६) अर्थी (१७) ढङ्ग

जो अपना जिन्दगानी को हुबाव आसा समझते हैं।
नफ्स[1] की मौज[2] को मौजे लबे[3] दरिया समझते हैं॥
गवाही देंगे रोजे हश्र यह सारे गुनाहों की।
समझता मैं नहीं लेकिन मेरे आजा समझते हैं॥
शरीके हाल दुनियां मे नजर आता नहीं कोई।
फकत एक बेकसी[4] है जिसको हम अपना समझते हैं॥
जो हैं अहले बसीरत[5] इस तमाशा गाहे[6] हस्ती में।
तिलिस्मे[7] जिन्दगी को खेल लड़कों का समझते हैं॥
मोबर्रा[8] हूं होनर से मैं सरापा[9] ऐब हूं "अकबर"।
इनायत[10] है अहिब्बा[11] की अगर अच्छा समझते हैं"

× × ×

शौके नज्जारा[12] कभी दिल से निकलता ही नहीं।
जी हमारा बे तेरे देखे बहलता ही नहीं॥
चैन से हो बैठना क्योंकर नसीब ऐ हमनशीं[13]।
जोशे वहशत[14] से मिजाज अपना संभलता ही नहीं॥
वस्ल के अय्याम[15] में क्या-क्या दिखाये इन्क़ेलाब[16]।
हिज्र में रंगे फलक[17] अब तो बदलता ही नहीं॥
किस गजब का है मआजअल्लाह[18] तूले रोजे[19] हिज्र।
हश्र मुझ पर हो गया लेकिन यह ढलता ही नहीं॥
हर कदम पर दिल फटे हैं हसरतेपामाल[20] में।
अब जमीं पर पांव रख कर यार चलता ही नहीं॥

---

(१) सांस (२) लहर (३) नदी का किनारा (४) लाचारगी (५) अक्लिमंद लोग, होशियार लोग (६) तमाशे की जगह (७) जादू (८) नंगा (९) सर से पाँव तक (१०) मेहरबानी (११) दोस्त लोग (१२) देखना (१३) पास बैठने वाले या दोस्त (१४) पागलपन (१५) जमाना (१६) उलट फेर (१७) आसमान (१८) बचा (१९) जुदाई का दिन (२०) बरबाद य मुसीबत जदा

चन्द रोज आया था मेरी क़ब्र पर वह शोलरू ।
अब तो मुद्दत से चिराग़े गोर[1] जलता ही नहीं ॥

हमने चाहा था न हो लेकिन हुई सुबहे फेराक़ ।
मौत का जब वक्त आ जाता है टलता ही नहीं ॥

बोसा कैसा गाली देने में भी उनको बोख़्ल है[3] ।
उन लबों से काम अपना कुछ निकलता ही नहीं ॥

सूरते परवाना जलकर ख़ाक भी मैं हो गया ।
दिल तेरा ऐ शमयेरू[4] लेकिन पिघलता ही नहीं ॥

नख़्ले[5] हसरत वह हूँ में जिसको है एकसां[6] चार फ़स्ल ।
वह शजर[7] हूँ बागे आलम[8] में जो फलता ही नहीं ॥

वह तमन्ना हूँ जो रहती है हमेशा जी के साथ ।
हौसला[9] वह हूँ जो दुनियां में निकलता ही नहीं ॥

रंग वह हूँ जो ज़माने के है बाहर रंग से ।
वह ज़माना हूँ जो रंग अपना बदलता ही नहीं ॥

शौक वह हूं वसअते[10] दिल जिसके आगे तंग है ।
हर्फ मतलब वह हूँ जो मुँह से निकलता ही नहीं ॥

दिल वह हूं जिसमे चुभे हैं ख़ारे हसरत[11] सैकड़ों ।
ख़ारे हसरत वह हूँ जो दिल से निकलता ही नहीं ॥

नकद सौदा वह हूं जो रायज[12] नहीं बाजार मे ।
सिक्कये दागे जुनूं वह हूँ जो चलता ही नहीं ॥

× × ×

अभी तो मौसमे गुल भी न आया था गुलिस्तां में ।
मैं क्यों जामे से बाहर हो गया शौक़े बियाबां मे ॥

---

(१) कब्र (२) जुदाई की सुबह (३) कंजूसी (४) सोसनी जिसे चेहरे पर हो यानी खूबसूरत (५) पौदा या पेड़ (६) बराबर (७) पेड़ (८) दुनियां का बाग़ यानी दुनियां (९) हिम्मत (१०) दिल की चौड़ाई (११) अरमान के काटे यानी अरमान (१२) जिसका रिवाज न हो यानी जो चलता न हो ।

नजर आता नहीं जुज़[1] आह कोई मोनिस हमदम[2]।
बदल जाती है दुनियां की हवा शबहाय हिज्रां में॥
मैं देता जाऊं याराने वतन को क्या पता अपना।
खोदा जाने मुझे ले जाय वहशत किस बियाबां में॥
समां[3] आंखों में फिर जाता है जब फस्ले बहारां का।
गुलों को याद करके खूब रोता हूं गुलिस्तां में॥
वह बालीं[4] पर हैं वक्ते नज़ा[5] क्योंकर उनसे रोख़सत[6] हूं।
नहीं ताक़त इशारे की भी मुझ दम भर के मेहमां में॥
मजा क्या जब हसीनों ने अताअत[7] की हकूमत में।
नहीं कुछ लुत्फ परियां थीं जो क़ाबूये सुलेमां में॥
बफ़र[8] अश्क से यों हैं हरे दागे जिगर अपने।
चमन सर सब्ज हो जाता है जैसे फस्लेबारां[9] में॥
यही था गौहरे[10] आमुर्जगारी[11] को जो मिलने का।
दुर्रे आखिर तलक डूबे रहे हम बारे इसियां[12] में॥
हैं अपने दाग़े सीना ताबाजन[13] खुरशेद महेशर[14] पर।
तमाशा हश्र का है कुल्बये चाके गरेबां में॥
यह सुन दीवाने को अकसर सदा[15] आती है जिन्दां[16] से।
खुला है खानये जनजीर[17] का दरशौक़े मेहमां[18] में॥
अजब[19] क्या मौसिमे पीरी[20] में ऐ दिल ठंडी सांसों का।
हवायें[21] सर्द अकसर चलती है फसलेजमिस्तां[22] में॥

---

(१) सेवाय (२) दोस्त (३) नकशा (४) सिरहना या तकिया (५) मरने का वक्त (६) विदा (७) तबेदारी (८) आसू की ज्यादती (६) बरसात का मौसिम (१०) मोती (११) गुनाह का बख्शनेवाला यानी ईश्वर (१२) गल्ती का बोझा (१३) किसी के काम में ऐब निकलना (१४) सूरज (१५) आवाज (१६) क़ैद खाना या जेल (१७) जंजीर का मुंह (१८) मुंह (१६) ताज्जुब क्या (२०) बुढ़ापा (२१) ठंडी हवा (२२) जाड़ा।

वक़ौले रिन्द मेहमाने फ़लक मे भी हूं ऐ "अकबर"।
मेरी क़िस्मत क़ा टुकड़ा भी है इसके ख्वानेअलवा[१] में॥

× × ×

फिर गई आप की दो दिन मे तबीयत कैसी।
यह वफा कैसी थी साहव यह मुरौवत कैसी॥
दोस्त अहवाब से हंस बोल के कट जायेगी रात।
रिन्द आज़ाद है हमको शवेफुर्कत[२] कैसी॥
जिस हँसी से हुई उलफत वही माशूक़ अपना।
इश्क़ किस चीज को कहते हैं तबीयत कैसी॥
जिस तरह हो सके दिन जीस्त[३] के पूरे करलो।
चार दिन के लिए इन्सान को हसरत कैसी॥
है जो किसमत में वही होग। न कुछ कम न सेवा।
आर्जू कहते है किस चीज को हसरत कैसी॥
हाल खुलता नहीं कुछ दिल के धड़कने का मुझे।
आज रह रह के भर आती है तबियत कैसी॥
कूचये यार मे जाता ती नजारा करता।
क़ैस आवारा है जंगल मे यह वहशत[४] कैसी॥
हुस्ने एखलाक़[५] पे जो लोट गया है मेरा।
मे तो कुश्ता[६] तेरी बातों का हूं सूरत कैसी॥
आप वोसा जो नही देते तो मैं दिल क्यों दूं।
ऐसी बातो मे मेरी जान मुरौवत कैसी॥
हम न कहते थे कि जीनत[७] भी है माशूक़ को[८] यही।
क्यों नजर आती है आइने मे सूरत कैसी॥

× × ×

---

(१) हड्डी का रंग (२) जुदाई की रात (३) ज़िन्दगी (४) नफ़रत (५) तरीका (६) मारा हुआ कत्ल किया हुआ (७) सजावट (८) जरूरी होना या लाज़िम होना।

बे तकल्लुफ बोसये ज़ुल्फ़े चलीपा लीजिये।
नकद दिल मौजूद है फिर क्यों न सौदा लीजिये॥
दिल तो पहले ले चुके अब जान के ख्वाहां हैं आप।
इसमे भी मुझको नही इनकार अच्छा लीजिये॥
पांव पड़कर कहती हैं जन्जीर ज़िन्दा[1] में रहो।
वहशते दिल का है ईमां राहे सेहरा[2] लीजिये॥
ग़ैर को तो करके ज़िद[3] करते हैं खाने में शरीक।
मुझसे कहते हैं अगर कुछ भूख हो खा लीजिये॥
खुशनुमां[4] चीजे हैं बाजारे जहां[5] मे बेशुमार[6]।
एक नकदे दिल से यारब मोल क्या क्या लीजिये॥
कुश्ता[7] आखिर आतशे फुर्कत[8] से होना है मुझे।
और चन्दे सूरते सीमाब[9] तड़पा लीजिये॥
फ़स्ले गुल के आते ही "अकबर" हुये बेहोश आप।
खोलिये आंखो को साहब जामे सहबा[10] लीजिये॥

× × ×

शायरी रंग तबीयत का देखा देती है।
बूये गुल राह गुलिस्तां[11] की बता देती है॥
सैरे ग़ुर्बत[12] कोई जलसा जो दिखा देती है।
यादे अहबाबे-वतन मुझको रुला देती है॥
बेखुदी पर्दये कसरत जो उठा देती है।
हर तरफ जलवये तौहीद[13] देखा देती है॥

---

(१) क़ैदखाना या जेल (२) जंगल (३) इसरार (४) अच्छी मालूम होने वाली (५) दुनियाँ (६) बहुत (७) मारा हुआ या कत्ल किया हुआ (८) जुदाई की आग (९) पारा (१०) सफेद अंगूर की शराब (११) फूल की महक (१२) मोसाफिरत या परदेश (१३) एक मानना।

आमदेयास[१] पे हो क़हर[२] खोदा का नाज़िल[३] ।
रहरवे[४] मन्ज़िले उल्फ़त[५] को डरा देती है ॥
हो न रंगीन तबीयत भी किसी को यारब ।
आदमी को यह मुसीबत में फंसा देती है ॥
निगहे लुत्फ[६] तेरी बादे बहारी[७] है मगर ।
गुंचये खातिरे[८] आशिक़ को खिला देती है ॥
अच्छी सूरत में भी ख़ालिक़[९] ने भरा है जादू ।
अपने मुश्ताक़[१०] को दिवाना बना देती है ॥
पूछता हूँ मैं जो इबरत[११] से मआले[१२] हस्ती ।
रास्ता गोरे ग़रीबों[१३] का बता देती है ॥
नजर आता जो नहीं नेजा में बालीं[१४] पे कोई ।
बेकसी उनके तग़ाफ़ुल[१५] को दोआ देती है ॥
क्या सफ़ाई रुखे जाना की है अल्ला अल्ला ।
देखने वालो को आइना बना देती है ॥
दुश्मने अहले नजर है निगहे हुस्नपरस्त[१६] ।
उल्फ़ते पाक[१७] को भी ऐब लगा देती है ॥
मौत से कोई न घबराय अगर यह समझे ।
कि यह दुनियाँ के बखेड़ो से छोड़ा देती है ॥
बदसलूकी[१८] तेरी लाती हैं ख़राबी मुझपर ।
मेरी तक़दीर को इल्जाम[१९] लगा देती है ॥

---

(१) नाउम्मेदी (२) ग़ुस्सा, ज़ोर (३) उतरना (४) रास्ता चलनेवाला (५) मोहब्बत की मंज़िल (६) मेहरबानी की नजर (७) बहार की हवा (८) दिल (९) ईश्वर (१०) चाहने वाला (११) नसीहत (१२) नतीजा (१३) मोसाफिरों का क़ब्र (१४) सिरहाने (१५) ग़फलत या लापरवाही (१६) खूबसूरतों की पूजा करने वाले यानी आशिक़ (१७) साफ या बेगुनाह (१८) बुरा बर्ताव (१९) तोहमत ।

निगहे शौक़ से क्योंकर न गुलों को देखूं ।
इनकी रंगत तेरे आरिज[1] का पता देती है ॥
कुश्ता[2] हूं मर्ग[3] हसीना की मैं वेदारी का ।
ख़ाक में चांद सी सूरत को मिला देती है ॥
फ़िक "अकबर" गुले मजनूं का देखाकर जलवा ।
महफ़िले शैर में रंग अपना जमा देती है ॥

× × ×

ज़ेर गेसू[4] रुये रोशन[5] जलवागर देखा किये ।
शाने हक[6] से एक जा शाम व सहर देखा किये ॥
गुल को खंदा[7] बुलबुलों को नौहागर[8] देखा किये ।
बाग़े आलम की दोरंगी उम्र भर देखा किया ॥
जुम्बिशे[9] अबरू ही काफी थी हमारे कत्ल को ।
आप तो नाहक[10] सुये तेग़वतबर[11] देखा किये ॥
सब्र कर बैठे थे पहले ही से हम तो जानेज़ार[12] ।
इश्कने जो कुछ दिखाया वेखतर[13] देखा किये ॥
देखिये अब क्या देखाये क़िस्मते वद बादे मर्ग[14] ।
रंज व अंदोह[15] व अलम[16] तो उमर भर देखा किये ॥
ख्वावे ग़फलत[17] से न चौंके अहले[18] आलम है ग़ज़ब ।
गो बहुत नैरंगिये[19] शाम व सहर[20] देखा किये ।
हसरतो हिर्मा[21] व अन्दोह व ग़मो रंज व अलम ॥
जो देखाया आसमां ने उम्र भर देखा किये ॥

---

(१) गाल (२) मारा हुआ (३) मौत (४) बाल (५) चमकदार चेहरा (६) ईश्वरी शान (७) हँसता हुआ (८) रोता हुआ (९) हिलना (१०) तरफ़ (११) एक किसिम का हथियार (१२) परेशान जान (१३) बेख़ौफ़ (१४) मरने के बाद (१५) ग़म (१६) रंज (१७) लापरवाही की नींद (१८) दुनियाँ वाले (१९) मक्कारी (२०) सुबह शाम (२१) नाउम्मेदी ।

वादये शब[1] पर गुमानें[2] सिदक[3]से सोये न हम ।
राह उस पैमां[4] शिकन की रात भर देखा किये ॥
याद मे रुखसारे तावांने[5] सनम[6] की रात भर ।
दीदये हसरत[7] से हम सूये क़मर[8] देखा किये ॥

× × ×

शबाब[9] जोश पे है वलवले[10] हैं जोबन के ।
कभी वह झूम के चलते हैं और कभी तन के ॥
जब उनको रहम कुछ आया हया ने समझाया ।
बिगड़ बिगड़ गई तकदीर मेरी बन बन के ॥
मरीजे गम को डराया करे न फिर इतना ।
क़ज़ा[11] जो देख ले तेवर[12] तुम्हारी चितवन[13] के ॥
निगाहे नाज से सारा ज़माना बिस्मिल है ।
हमी शहीद नही तेरी तिर्छी चितवन के ॥
कमर पे यार की रहता है कबेजये[14] खन्जर ।
शहीद हम तो हुये रश्के बख्ते[15] आहन के ॥

× × ×

इन दिनो यार के कुछ जेहन नशीं[16] और भी है ।
जानता है कि नशिस्त[17] उनकी कहीं और भी है ॥
एक दिल था सो दिया और कहा से लाऊं ।
झूठ कहिये तो मैं कह दूं कि नहीं और भी है ॥

---

(१) रात का वादा (२) ख़्याल या शक (३) सच्चाई (४) वादे का तोड़ने वाला (५) चमकदार गाल (६) माशूक़ (७) देखने का अरमान (८) चांद (६) जवानी उभार पर है (१०) जोश व खरोश (११) मौत (२) बदला हुआ रुख़ (१३) आंख (१४) तलवार का दस्ता या तलवार की मूठी (१५) लोहे की ऐसी क़िस्मत (१६) दिल मैं बैठी हुई (१७) बैठक।

नाज बेजा[1] न किया कीजिये हमसे इतना।
इसी अन्दाज[2] का एक यार हसीं और भी है॥
गमे फुर्कत[3] में भी आती नही ऐ चर्ख[4] जो मौत।
क्या कोई सदमा पये[5] जाने हजीं[6] और भी है॥
कहिओ इस गैरते लैला से यह पैगामे सबा।
पहलुये क़ैस में एक दश्त नशीं[7] और भी है॥
जान देता जो हो लाजिम[8] है उसे दम देना।
तुम्हीं बतलाओ यह दस्तूर[9] कहीं और भी है॥
मेरे बोलवाने का एहसान जताओ न बहुत।
मेहरबां एक बुते पर्दानशीं और भी है॥
इन रदीफ़ों मे गजल क्यों न हो दुशवार[10] "अकबर",
नातेरा शैदा कोई ऐसी ज़मी और भी है॥

× × ×

क्या ही रह रह के तबीयत मेरी घबराती है।
मौत आती है शबे हिज्र[11] न नींद आती है॥
वह भी चुप बैठे हैं अगियार भी चुप मै भी खमोश।
ऐसी सोहबत से तबीयत मेरी घबराती है॥
क्यों न हो अपनी लगावट को नजर पर नाजां।
जानते हो कि दिलों को यह लगा लाती है॥
बज़्मे इशरत[1] कही होती है तो रो देता हूँ।
कोई गुज़री हुई सोहबत मुझे याद आती है॥

× × ×

---

(१) गैरवाजिब (२) तरीक़ा (३) जुदाई का रंज (४) आसमान (५) पीछे (६) रंजीदा जान (७) जंगल में बैठने वाला (८) जरूरी (९) रस्म व रिवाज (१०) मुश्किल (११) जुदाई की रात (१२) खुशी की महफिल।

खोली है जबां खुशबयानी[१] के लिये।
उट्ठा है क़लम गौहरफेशानी[२] के लिये॥
आया हूं मैं कूचये सोखन में "अकबर"।
नज्जारये शाहिदे मानी के लिये॥

× × ×

जब लुत्फ[३] व करम[४] से पेश आये महबूब[५]।
अगले रंजों को भूल जाना अच्छा॥
जब मिस्ल नसीम[६] वह गले से लग जाय।
मानिन्द कली के फूल जाना अच्छा॥

× × ×

क्या तुमसे कहे जहान को कैसा पाया।
गफलत[७] ही मे आदमी को डूबा पाया॥
आँखें तो बेशुमार देखीं[८] लेकिन।
कम थी बखोदा कि जिनको बीना[९] पाया॥

× × ×

ऊंचा नीयत का अपनी ज़ीना[१०] रखना।
अहबाव से साफ अपना सीना रखना॥
गुस्सा आना तो नेचुरल[११] है "अकबर"।
लेकिन है शदीद[१२] ऐब[१३] कीना[१४] रखना॥

× × ×

बेपर्दा कल जो आईं नजर चन्द[१५] बीबियां।
"अकबर" जमी में गैरते क़ौमी[१६] से गड़ गया॥
पूछा जो उनसे आप का पर्दा वह क्या हुआ।
कहने लगी कि अकल पे मर्दों की पड़ गया॥

× × ×

---

(१) अच्छी बात कहना (२) मोती झाड़ना यानी अच्छी बात लिखना (३) मेहरबानी (४) मेहरबानी (५) दोस्त (६) ठंडी हवा (७) भूलचूक (८) बहुत (९) देखने वाले यानी होशियार (१०) सीढ़ी (११) अंग्रेजी लफ्ज है यानी प्राकृतिक (१२) सख्त या बुरा (१३) बुराई (१४) दुश्मनी (१५) कुछ (१६) क़ौम की शरमिन्दगी।

इन्क़ेलांबे[1] जहाँ को देख लिया-हुब्बे[2] दुनियाँ से क़ल्ब[3] पाक हुआ।
कल कली खिल के हो गई थी फूल-फूल कुम्हिलाके आज खाक हुआ॥

× × ×

लामज़हवी[4] से हो नहीं सकती फलाहे[5] क़ौम।
हरगिज़ गुजर सकेंगे न इन मन्ज़िलों से आप॥
काबे से बुत निकाल दिये थे रसूल[6] ने।
अल्लाह को निकाल रहे हैं दिलों से आप॥

× × ×

पीरी आई हुई जवानी रोख़सत।
साथ इसके वह लुत्फे[7] जिन्दगानी रोख़सत॥
है अब तो इसी का इन्तेजार ऐ "अकबर।
हमको भी करे जहान फानी[8] रोख़सत॥

× × ×

देखा मनाज़िरो[9] का बहुत उसने रंग ढंग।
"अकबर" के दिल से अब न रही वहेस की उमंग॥
कहते बहुत सही थे यह हजरते मज़ाक[10]।
ईसां बराय[11] ताअत व[12] मज़हब बराय जंग[13]॥

× × ×

इल्म व हिकमत[14] मे हो अगर ख़्वाहिशे फेम[15]।
सरकार की नौकरी को हरगिज न कर एम[16]॥

---

(१) उलट फेर (२) मोहब्बत (३) दिल (४) नासतिक (५) अच्छाई (६) मोहम्मद साहब को मुसलमान लोग रसूल कहते हैं (७) जिन्दगी का मजा (८) मेटनेवाली दुनियाँ यानी दुनियाँ (६) नज़्ज़ारा करना, देखना (१०) खाँ बहादुर शेख़ अहमद हुसेन को कहते हैं यह परियाँवाँ के ताल्लुकेदार थे (११ वास्ते (१२) पूजा (१३) लड़ाई (१४) अकिलमंदी (१५) अंगरेज़ी लफ्ज़ है यानी शोहरत (१६) अंगरेज़ी है यानी धेय।

शादी न कर अपनी • क़बूल तहसीले ओलूम ।
बुत हो कि परी हो ख्वाह वह हो कोई मेम ॥

× × ×

भूले जाते है हिस्ट्री भी अपनी ।
मज़हब को भी ज़ईफ[1] पाते हैं हम ॥
है दौलत व जाह[2] भी कमी पर हर रोज़ ।
ज़ाहिर यह है कि मिटते जाते हैं हम ॥

× × ×

इस बज़्म से सब के सब उठे जाते है ।
तसकीन[3] के जो थे सबब उठे जाते हैं ॥
एक कूवते मज़हबी अक़ीदों[4] से थी ।
वह भी तो दिलों से अब उठे जाते हैं ॥

× × ×

दुनिया से मेल की जरूरत ही नहीं ।
मुझको इस खेल की जरूरत ही नहीं, ॥
दरपेश[5] है मंज़िले अदम ऐ अकबर ।
इस राह में रेल की जरूरत की नहीं ॥

× × ×

कहा अहबाब[6] ने यह दफ़न[7] के वक्त ।
कि हम क्योंकर वहा का हाल जानें ॥
लेहद[8] तक आपकी ताज़ीम[9] करदी ।
अब आगे आप के आमाल[1] जानें ॥

× × ×

---

(१) कमज़ोर या बूढ़ा (२) इज़्ज़त (३) ढारस (४) भरोसा दिल का (५) सामने (६) दोस्त लोग (७) गाड़ना (८) क़ब्र (९) इज़्ज़त (१०) काम ।

वह ग़ैरत[१] वह सब्र वह ईमान है कहां।
हुसने अमल के दिल में वह अरमान है कहां॥
एक ग़ुल मचाहुआ है कि मुसलिम हैं खस्ताहाल[२]।
पूछे ज़रा कोई कि मुसलमान है कहां॥

× × ×

है सब्र व क़नायत[३] एक बड़ी चीज़ "अकबर"।
लज्ज़त[४] अभी इसकी तूने चक्खी है कहां॥
दुनियां तलबी के बाज़ में महो[५] है तू।
यह भी तो ज़रा समझ कि रक्खी है कहां॥

× × ×

चुग़लियां[६] एक दूसरे की वक़्त पर जड़ते भी हैं।
नागहां[७] ग़ुस्सा जो आ जाता है लड़ पड़ते भी हैं॥
हिन्दू व मुसलिम हैं फिर भी एक और कहते हैं सच।
है नज़र आपस की हम मिलते भी हैं लड़ते भी हैं॥

× × ×

ख़ातिर मज़बूत दिल तवाना रक्खो,
उम्मीद अच्छी ख्याल अच्छा रक्खो।
हो जायेंगी मुश्किलें तुम्हारी आसान,
'अकबर' अल्लाह पर भरोसा रक्खो।

× × ×

भूलता जाता है योरप आसमानी बाप को।
बस ख़ोदा समझा है उसने बर्क़[८] को और भाप को॥
बर्फ़ गिर जायेगी एक दिन और उड़ जायेगी भाप।
देखना 'अकबर" बचाये रखना अपने आपको॥

× × ×

---

(१) शर्म (२) ख़राब (३) सब्र (४) मज़ा (५) लगा हुआ (६) शिकायत (७) एकाएक (८) बिजली।

हासिल करो इल्म तबा[1] को तेज करो।
बातें जो बुरी हैं उनसे परहेज़ करो॥
क़ौमी इज्जत है नेकियों से "अकबर"।
इसमे क्या है कि नकले अंगरेज़ करो॥

× × ×

कहता हूं मैं हिन्दू मुसलमान से यही।
अपनी अपनी रविश[2] पे तुम नेक रहो॥
लाठी है हवाये दहेर[3] पानी बनजाव।
मौजों[4] की तरह लड़ो मगर एक रहो॥

× × ×

मर्द को चाहिये क़ायम रहे ईमान के साथ-
ता दमेंमर्ग रहे यादे खोदा जान के साथ
मैंने माना कि तुम्हारी नहीं सुनता कोई
सुर मिलाना तुम्हें क्या फर्ज है शैतान के साथ

× × ×

मिसकी[6] गदा[7] हो या हो शाहेजीजाह[8]।
बीमारी व मौत से कहाँ किसको पनाह[9]॥
आही जाता है जिन्दगी मे एक वक्त-
करना पड़ता है सब को अल्ला अल्ला

× × ×

तसबीह[10] व दोआ मे जिसने लज्जत[11] पाई।
और जिक्रे खोदा[12] से दिल ने राहत[13] पाई॥

---

(१) तबीयत (२) चाल (३) जमाना (४) लहर (५) मरते वक्त तक (६) गरीब (७) फ़कीर, भीख मांगने वाला (८) बादशाह बलन्द मरतबेवाला या बहुत बड़ा राजा (९) बचाव (१०) माला (११) जायका या मज़ा (१२) ईश्वर की याद (१३) आराम।

कोई नही खुशनसीब[१] इस से बढ़कर।
बस दोनों जहाँ की उसने नेअ्रामत पाई॥

× × ×

रोज़ी मिल जाय माल व दौलत न सही।
राहत हो नसीब शान व शौकत[२] न सही॥
घरबार मे खुश रहे अज़ीज़ो के साथ।
दरबार में बाहमी[३] रेकाबत न[४] सही॥

× × ×

कमेटियो से न होगा कुछ भी ग़रज़ अगर मुशतरक[५] न होगी।
ख़्याले मिल्लत[६] न होगा जब तक मुफीद[७] हरगिज यह बक न होगी॥
बहुत बजा नोट लिख गये है यह अपनी पोथी मे भाई मानिक।
ग़िज़ा न होगी तो क्या जीऊँगा दिया करो तुम हज़ार टानिक[८]॥

× × ×

तासीरे[९] हवाये बाग़ेहस्ती[१०] न गई।
सूरत की अदा नज़र की मस्ती न गई॥
होते ही रहे जमाले दिलकश[११] पैदा॥
तबा[१२] इन्सान से बुतपरस्ती[१३] न गई॥
इस अहेद[१४] में यही है बस दाखिले निकोई।
मज़हब पे नोक़ताचीनी[१५] मिल्लत[१६] की ऐबजोई[१७]॥
शौके अमल नहीं है फ़िक्रे अजल[१८] नही है।

---

(१) अच्छी तकदीर वाला (२) तड़क भड़क (३) आपसी (४) रकीब होना (५) मिली जुली (६) मज़हब (७) फ़ायदेमंद (८) अंगरेजी लफ्ज है मानी दवा (९) असर (१०) हस्ती का बाग़ यानी ज़िन्दगी (११) दिल को लुभाने वाली खूबसूरती (१२) तबीयत (१३) सूरती पूजा (१४) ज़माना (१५) ऐब निकालना (१६) मज़हब (१७) बुराई निकालना (१८) मौत।

नासेह[१] वने है "अकबर" आबिद[२] नही है कोई ॥

× × +

एकता नही इन्के लाव[३] चारा[४] क्या है।
हैरां है मुल्के बशर[५] बेचारा क्या है॥
तसकीन के लिए मगर है काफी यह ख़्याल।
जो कुछ है ख़ोदा का है हमारा क्या है॥

× × ×

दुनियां ने दीन को भुला रक्खा है।
ग़फलत की नीद मे सुला रक्खा है॥
इस दौर[६] मे खुशनसीब[७] वह है "अकबर।"
जिसने कोरान को खुला रक्खा है॥

× × ×

आपस मे मोवाफिक़ रहो ताक़त है तो यह है।
देखो न वहम[८] ऐब मोहब्बत है तो यह है॥
सेहत[९] भी हो रोजी भी हो दिल को भी हो तकसीन।
दुनियां में बशर[१०] के लिए नेआमत[११] है तो यह है॥

× × ×

अरमां न शराब व बज़्मे[१२] शाहिद का है।
सामान न मोहाफिल[१३] व मसाजिद का है॥
"अकबर" को है उन्स कुंज तनहाई[१४] से।
ध्यान उसको फक़त खोदाय वाहिद का है॥

× × ×

---

(१) नसीहत करने वाले (२) परहेज़गार या पूजा करने वाला (३) उलट फेर (४) इलाज (५) आदमी (६) ज़माना (७) अच्छे किस्मत वाला (८) आपस मे या साथ (९) तन्दुरुस्ती (१०) आदमी (११) माल (१२) गवाहो की मजलिस (१३) महफिल (१४) एकांत जगह।

कुछ शक नहीं कि ख़ल्फ[१] से मिलना ज़रूर है।
जो इससे एख़तेलाफ[२] करे हक़[३] से दूर हैं॥
लेकिन ख़ोदा के वास्ते ख़ल्के-ख़ोदा से मिल।
समझेगा इसको वह कि जो अहले शऊर[४] है॥

× × ×

सुनिये जो हिकमत[५] मेरी गुफतार[६] मे है।
एक हद्दे अदब[७] हर एक सरकार में है॥
परवाने ने शमा से लपटना चाहा।
पहले था नूर[८] मे और अब नार[९] मे है॥

× × ×

जिसको ख़ोदा से शर्म है वह है बुज़ुर्गे दीन[१०]।
दुनियां को जिसको शर्म है मर्दे शरीफ है॥
जिसको किसी की शर्म नही उसको क्या कहूँ।
फितरत[११] में वह रज़ील[१२] है दिल का कसीफ[१३] है।

× × ×

हर चन्द कि कोट भी है पतलून भी है।
बगंला भी है पाट[१४] भी है साबुन भी है॥
लेकिन यह मै तुझ से पूछता हूं हिन्दी।
युरप का तेरी रगो[१५] मे कुछ ख़ून भी है॥

× × ×

हमदर्द हूं सब यह लुत्फ[१६] आबादी है।

---

(१) पब्लिक या दुनिया के लोग (२) फर्क़ यानी जो न माने (३) सच्चाई (४) समझदार या अकिलमंद (५) अकिलमंदी (६) बातचीत (७) इज्ज़त की हद (८) रोशनी (९) आग (१०) मज़-हब का बड़ा यानी गुरू (११) पैदायशी (१२) कमीना या नालायक़ (१३) गंदा या मैला (१४) अंगरेज़ी लफ़ज है यानी पाख़ाना फिरने वाला बरतन (१५) नस (१६) मजा।

हमसाया[१] भी हो शरीक तब शादी[२] है ॥
तसकीन[३] है जब की हो खोदा पर तकिया[४] ।
क़ानून बना सके तब आज़ादी है ॥

× × ×

जीना था जिस कदर हमे दुनियां मे जी लिए ।
साग़र[५] कई तरह के मिले और पी लिये ॥
ग़म भी रहा खुशी भी तहइयुर[६] भी फ़िक्र भी ।
जाते हैं अब कि आये थे हम बस इसीलिये ॥

× × ×

पाकीज़गीये[७] नफ्स[८] की दुश्मन मै[९] है ।
इंसान को ख़राब करने वाली शै[१०] है ॥
शैतान की है प्राइवेट सिकरेट्री ।
मुसलिम और इसको मुंह लगाये है है[११] ॥

× × ×

ग़लतफ़हमी[१२] बहुत है आलिमे अलफ़ाज़[१३] मे "अकबर"
बड़ी मायूसियों[१४] के साथ अकसर काम चलता है ॥
यह रौशन[१५] है कि परवाना[१६] है इसका आशिके[१७] सादिक़ ।
मगर कहती है खिलकत[१८] शमां से परवाना जलता है ॥

× × ×

यह तसबीह व तकबीर[१९] व हम्द[२०] व दोआ ।
है नूरे[२१] दिले बन्दगाने[२२] खोदा ॥

---

(१) पड़ोसी (२) .खुशी या व्याह (३) इतमीनान (४) भरोसा (५) शराब का प्याला (६) भौचक्का होना (७) सफाई (८) सांस (९) शराब (१०) चीज़ (११) अफ़सोस अफ़सोस या छिः छिः (१२) ग़लत समझना (१३) लफ़ज़ों की दुनियां (१४) नाउम्मेदियां (१५) ज़ाहिर (१६) पतिंगा (१७) सच्चा आशिक (१८) जनता (१९) बड़ा कहना (२०) ईश्वर की तारीफ़ (२१) रोशनी (२२) ईश्वर के बन्दे ।

यह पलटन के गोरे हर इतवार को।
सजाते हैं गिरजा के दरबार को॥
अगर यह कहो है वह बिलकुल ही हूश[1]।
तो देखो कि आबिद[2] हैं हजरत लदूश[3]॥
जब एडवर्ड हफतुम हुये थे अलील[4]।
तो की क़ौम ने यादे रब्बे जलील[5]॥
कमी की न स्टेट[6] ने 'खर्च में।
दोआयें हुईं धूम से खर्च[7] में॥
हुये जंग[8] से ज़ार[9] अंदेशा नाक[10]।
गिरे सिजदे मे पेश अल्लाहे पाक॥

× × ×

पीर[11] व मुर्शिद[12] ने किया क़ौम मे बचपन पैदा।
वह यह समझे थे कि हो जायगा जोबन पैदा॥
वह तो पैदा न हुआ हाथ से लड़को के मगर।
हो चले दीन के दीवार में रोज़न[13] पैदा॥
पसतिये[14] क़ौम के जब आगये दिन ऐ "अकबर"।
ऊंचे दर्जों मे हुये अक़ल के दुश्मन पैदा॥
दीन क्या चीज़ है शीराज़ये[15] क़ौमी है फ़क़त।
जिस से मिल्लत[16] की है एक सूरते अहेसन[17] पैदा॥

---

(१) जंगली (२) पुजारी (३, एक पादड़ी का नाम है (४) बीमार (५) ईश्वर (६) अंगरेज़ी लफ़ज यानी रेयासत (७) अंगरेज़ी लफज़ है मानी गिरजा (८) लड़ाई (९) यह रशिया का आखीरी बादशाह हुआ है (१०) फिक्रमंद या अफसोस में (११) बूढ़ा (१२) गुरू या अच्छा रास्ता बताने वाला (१३) सूराख या छेद (१४) क़ौम मे निचाई या क़ौम मे गड़बड़ी (१५) मज़हब का जोड़ (१६) मेल या मज़हब (१७) बहुत अच्छा।

आज होता नहीं इसका जरर[१] इनको महसूस[२] ।
हो रहे हैं अभी कुछ लाला व सोसन पैदा ॥
बिलयक़ीं[३] आयेगा इस बाग़ में ऐसा एक वक़्त ।
कर चलेगी रविशें[४] नशतर[५] व सोज़न[६] पैदा ॥
सूरते[७] वर्ग खेज़ां[८] दीदा फिरेंगे उड़ते ।
न बहार आयेगी फिर होगा न गुलशन पैदा ॥
आप के खून से होगी जो हमीयत[९] जायल[१०] ।
होंगे अतफाल[११] भी बेग़ैरत व कोदन[१२] पैदा ॥
काह[१३] की तरह से उड़ जायेंगे दीनी[१४] ऐमाल ।
एख़्तेलाफत[१५] के ही जायेंगे खिरमन[१६] पैदा ॥
जुलमते[१७]जेहल[१८]से घिर जायेंगे दिल के अतराफ[१९] ।
सीनों में हो न सकेंगे दिले रौशन पैदा ॥
कौन कहता है कि इंगलिश का नहो दिल से मुतीय[२०] ।
कौन कहता है न कर उल्फ़ते विलसन पैदा ॥
कौन कहता है तकल्लुफ[२१]से न कर जीस्त[२२]बसर[२३] ।
कौन कहता है न कर वजे में जोबन पैदा ॥
कौन कहता है कि तू इल्म न पढ़ अक़्ल न सीख ।
कौन कहता है न कर हसरते[२४] लन्दन पैदा ॥

---

(१) दुःख (२) मालूम होना (३) जरूर (४) चलन (५) वह औजार जिससे चीड़ा फाड़ा जाता है जो जगह चीरी फाड़ी जाती है उसको भी नशतर कहते हैं (६) सुई (७) पत्ते की शकल (८) पतझड़ देखे हुये (९) हिफाजत (१०) दूर होना (११) बाल बच्चे (१२) बेवकूफ या नालायक (१३) सूखी घास कटी हुई (१४) मजहबी काम (१५) फर्क (१६) खलिहान (१७) अंधेरा (१८) नादानी (१९) चारों तरफ़ (२०) फ़रमा बरदार या ताबेदार (२१) तकलीफ (२२) जिन्दगी (२३) गुजारना (२४) अरमान या ख़्वाहिश ।

बस यह कहता हूँ कि मिल्लत[1] के मानी को न भूल।
राह कौमी का तू ख़ुद ही न हो रहज़न[2] पैदा॥
क़ौम क़ौम आठ पहर सुनते हैं हम कौम कहां।
तार बाकी नहीं तू करता है दामन पैदा॥
मजहबी शाख़[3] फकत है तेरी कौमी हस्ती।
यह जो टूटी तो नहीं कोई नशेमन[4] पैदा॥
कुछ घरौंदा नहीं नेशन[5] कि बनालें लड़के।
फ़ितरती[6] तौर[7] पे खुद होती है नेशन पैदा॥
सेल्फ़ रिस्पेक्ट[8] का फिर याद रहेगा न सबक।
फिर नहीं होने को यह वहेस तो ओमन पैदा॥
बज़्म[9] तहज़ीब[10] से हो जायेंगे कतअन[11] ख़ारिज[12]।
हिर्स[13] ही बाकी न रहेगा कि हो शेवन[14] पैदा॥

× × ×

सइयद पै आज हजरते वायज ने यह कहा।
चरचा है जाबजा तेरे हाले तबाह[15] का॥
शैतान ने देखा कि जमाले[16] उरूस देहर[17]।
बन्दा बना दिया है तुझे हुब्बेजाह[18] का॥
उसने दिया जवाब कि मजहब हो या रवाज।

---

(१) मजहब (२) डाकू या लुटेरा (३) डाली या टहना (४) घोंसला (५) अंगरेजी लफ़ज है मानी क़ौम (६) पैदायशी (७) ढंग (८) अंगरेजी लफ़ज़ है मानी अपनी इज्जत (९) महफ़िल (१०) सलीका (११) बिलकुल हरगिज (१२) निकालना या अलेहदा (१३) हरकत करना या चलना (१४) रोना (१५) ख़राब हाल (१६) दुलहिन की ख़ुबसूरती (१७) जमाना या दुनिया (१८) इज्जत की मोहब्बत।

राहत[1] में जो मोखिल[2] हो वह कांटा है राह का ॥
अफसोस है कि आप हैं दुनियाँ से बेखबर।
क्या जानिये जो रंग है शाम व पगाह[3] का ॥
इवरोप का पेश आये अगर आप को सफ़र।
गुज़रे नजर से हाल रे-आया व शाह का ॥
वह आब व ताव[4] व शौकते[5] इवाने[6] खुसरुई[7]।
वह मोहकमो[8] की शान वह जलवा[9] सिपाह का[10] ॥
आये नज़र ओलूमे[11] जदीदह[12] की रोशनी।
जिससे खिज़िल[13] हो नूर[14] रुखे[15] मेहर[16] व माह[17] का ॥
दावत किसी अमीर के घर मे हो आप की।
कमसिन[18] मिसों[19] से ज़िक्र हो उल्फ़त का चाह का ॥
नौखेज[20] दिल फ़रेब[21] गुल अन्दाम[22] नाज़नीन[23]।
आरिज़[24] पे जिनके वार हो दामन निगाह का ॥
रखिये अगर तो हँस के कहे एक वुते हसी।
वेल[25] मोलवी यह बात नहीं है गुनाह का ॥
उस वक्त किवला[26] झुक के करूं आप को सलाम।

---

(१) आराम (२) खलल डालने वाला या झगड़ा पैदा करने वाला (३) सुवह (४) चमक दमक (५) इज्जत (६) महल (७) बादशाही (८) दफ्तर या कचेहरी (९) जाहिर करना (१०) फौज (११) इल्म (१२) नया (१३) शरमिन्दा (१४) रोशनी या चाँद (१५) मुँह (१६) सूरज (१७) चाँद (१८) थोड़ी उमरवाली या नौजवान (१९) अंगरेजी लफ़्ज़ है मानी कुँवारी (२०) नई उभरती हुई या उठती जवानी वाली (२१) दिल को लुभाने वाली (२२) फूल के जैसी बदन (२३) नाजुकबदन (२४) गाल (२५) अँगरेजी लफ़्ज है मानी अच्छा (२६) जिस तरफ़ मुसलमान लोग मुँह करके निमाज पढ़ते है या काबा या बुजुर्ग।

फिर नाम भी हुजूर जो लें खानकाह[१] का ॥
पतलून व कोट व बंगला व बिस्कुट की धुन बंधे ।
सौदा जनाब को भी हो टरकी कुलाह[२] का ॥
मिम्बर[३] पे यों तो बैठ के गोशे[४] मे ऐ जनाब ।
सब जानते हैं बाज सवाब[५] व गुनाह[६] का ॥

× × ×

गरमीये[७] बहस में "अनवर" ने यह "अकबर" से कहा ।
कि राहे[८] अहमदे मुरसिल[९] पे तू कायम[१०] न रहा ॥
रह गई है फ़कत अवहाम[११] परस्ती[१२] तुझमें ।
बादये जेहल[१३] की बस आगई मस्ती तुझमें ॥
न मक़ासिद[१४] में बलन्दी न ख़ेयालात सही ।
बहेर इसिया[१५] व तअस्सुब[१६] में तू हुवा है सरीह[१७] ॥
सख्त नाआकबत[१८] अन्देश हैं शेख व मुल्ला ।
कौम बरबाद हुई जाती है खुल्लम खुल्ला ॥
कहा "अकबर" ने यह इलजाम[१९] है बेशुबहा[२०] दुरुस्त[२१] ।
तू है मुझसे भी ज्यादा मगर इस राह में सुस्त ॥
कब्र[२२] व तर्जईन[२३] व तहम्मुल[२४] से तुझे है बस काम ।

---

(१) फ़कीरों और साधुओं के रहने की जगह यानी गुफ़ा (२) टर्की टोपी (३) मसजिद की वह जगह जिसकी तरफ मुँह करके मुसलमान निमाज़ पढ़ते हैं (४) कोना (५) अच्छे काम जिसका बदला आख़ीर में मिलेगा (६) खता या बुरा काम (७) तेज़ी (८) रास्ता (९) भेजने वाला (१०) ठहरा हुआ (११) वहेम या शक (१२) पूजना (१३) जेहालत की शराब (१४) इरादा (१५) गुनाह का समुन्दर (१६) तरफ़दारी करना (१७) जाहिर (१८) नतीजे का न सोचना (१९) तोहमत (२०) बेशक (२१) सही या ठीक (२२) बूढ़ा होना (२३) सजाना (२४) बरदाशत करना या सब्र करना ।

दिल मे इंकार है और लब पे है नामे इसलाम ॥
ताअते[१] हक़ की तेरे क़ाफले[२] में गर्द नहीं ।
नफ़से[३] सर्द नहीं है दिले पुर दर्द[४] नही ॥
हम अगर पोखतगी[५] से जाते हैं खामी[६] की तरफ ।
तेरा मीलान[७] है अलहाद व ग़ुलामी की तरफ़ ॥
तू भी उस रंग से महरूम[८] है हम भी महरूम ।
सादिक़[९] आर्ता है यही कौल[१०] शहीदे[११] मरहूम ॥

एक बूढ़ा नहीफ[१२] व ख़स्ता[१३] व ज़ार[१४] ।
एक ज़रूरत से जाता था बाजार ॥
ज़ोफ[१५] पीरी से खम[१६] हुई थी कमर ।
राह बेचारा चलता था झुक कर ॥
चन्द लड़कों को उस पे आई हँसी ।
क़द पे फ़बती[१७] कमान की सूझी ॥
कहा एक लड़के ने यह इससे कि बोल ।
तू ने केतने को ली कमान यह मोल ॥
पीर मर्दे[१८] लतीफ[१९] व दानिश[२०] मंद ।
हँस के कहने लगा कि ऐ फरजन्द[२१] ॥
पहुंचोगे मेरी उम्र को जिस आन[२२] ।
मुफ्त मिल जायेगी तुम्हें यह कमान ॥

× × ×

---

(१) बन्दगी या ईश्वर की पूजा (२) मोसाफ़िरो की भीड़ (३) ठंडी सांस (४) दर्द से भरा हुआ (५) पका हुआ (६) कच्चापन या कमजोरी (७) झुकाव (८) रोका गया (९) सच्चा या दुरुस्त (१०) बात का कहना (११) बेगुनाह मारा जाना (१२) दुबला (१३) ग़रीब या मोहताज (१४) कमजोर (१५) बुढ़ाई की कमजोरी (१६) टेढ़ी या झुकी हुई (१७) आवाजा (१८) बुड्ढा (१९) नेक आदमी (२०) अकिलमन्द (२१) बेटे (२२) वक़्त ।

बहार आई खिले गुल जेब[१] सेहने बोस्तां[२] होकर।
अनादिल[३] ने मचाई धूम सरगरमे[४] फ़ोगां[५] होकर॥
बिछा फर्शे जमुर्रद[६] ऐहतेमामे[७] सब्ज़ ये तर में।
चली मस्तानावश[८] वादे सबा अम्बर[९] फ़िशां[१०] होकर॥
बलायें शाखें गुल[११] की लीं नसीमें[१२] सुबह गाही ने।
हुई कलियां शिगुफता[१३] रुऐ रंगीने[१४] बुतां होकर॥
जवांनाने चमन ने अपना अपना रंग दिखलाया।
किसी ने या समन[१५] होकर किसी ने अरगवां होकर॥
किया फूलो ने शबनम[१६] मे वज़ू सहने गुलिस्तां में।
सदाए[१७] नग़मये[१८] .बुलबुल उठी बांगे अज़ां[१९] होकर॥
हवांये शौक़ मे शाखें[२०] झुकीं खालिक़[२१] के सिजदे को।
हुई तशबीह में मसरूफ[२२] हर पत्ती जबां होकर॥
ज़बानें बर्ग[२३] गुल[२४] ने की दोआ रंगी इबारत[२५] में।
खोदा सर[२६] सब्ज़ रक्खे इस चमन को मेहरबां होकर॥
निगाहें कामिलों[२७] पर पड़ ही जाती हैं ज़माने में।
कहीं छिपता है "अकबर" फूल पत्तों में नेहां[२८] होकर॥

× × ×

(१) अच्छा लगना (२) बाग़ (३) बुलबुल ४) काम मे दिल से लगना (५) शोर (६) एक हरे रङ्ग का कीमती पत्थर है (७) (८) एक क़िस्म के .खुशबू को कहते हैं (९) झाड़ना (१०) फूलों की डाली (११) ठंडी हवा (११) खिली (१३) रंगा हुआ मुँह यानी .खूबसूरत (१४) चमेली का फ़ूल (१५) सुर्ख और नारंजी रंगीका एक फ़ूल होता है (१६) ओस (१७) आवाज़ (१८) राग या अच्छी आवाज़ (१९) नेमाज़ के वक़्त के पहले की आवाज़ जो मसजिद से दी जाती है (२०) डालियाँ (२१) ईश्वर या पैदा करनेवाला (२२) (मशग़ूल या लगा हुआ (२३) पत्ता (२४) फूल (२५) अच्छे लफ्जों में (२६) हराभरा (२७) पूरा या होशियार (२८) छिपना।

मैंने कहा बहुत सी ज़बानें हूँ जानता।
मुद्दत तक इमतहान दिये इमतेहान पर॥
जर्मन-फ़्रेंच लेटिन व इंगलिश पे है ओबूर[१]।
साबित मेरा कमाल है सारे जहान पर॥
एक शोख़तबा[२] मिस ने दिखाई ज़बां मुझे।
बिजली थी अब्र[३] में कि क़मर[४] आसमान पर॥
बोली रहगे जीस्त[५] की लज्जत[६] से बे ख़बर।
कुदरत[७] न पाई तुमने अगर इस ज़बान पर॥

× × ×

एक मिसे सीमी बदन[८] से कर लिया लंदन में अक़्द[९]।
इस ख़ता[१०] पर सुन रहा हूँ तानाहाये[११] दिल ख़राश[१२]॥
कोई कहता है कि बस इसने बिगाड़ी नस्ल[१३] क़ौम।
कोई कहता है कि यह है बद ख़्यालों[१४] बद मआश॥
दिल में कुछ इन्साफ़ करता ही नहीं कोई बुज़ुर्ग।
होके अब मजबूर ख़ुद इस राज[१५] को करता हूँ फ़ाश[१६]॥
होती थी ताकीद लन्दन जाव अंगरेजी पढ़ो।
कौम इंगलिश से मिलो सीखो वही वज़ा व तराश[१७]॥
जगमगाते होटलों का जाके नज्जजारा[१८] करो।
सूप व कारी[१९] के मज़े लो छोड़ कर यख़नी व आश[२०]॥

---

(१) पार जाना (२) तेज़तबीयत वाली (३) बादल (४) चाँद (५) जिन्दगी (६) जायगा (७) ताकत (८) चांदी की तरह बदन यानी गोरा खूबसूरत (९) निकाह या शादी (१०) गुनाह (११) आवाजाकशी या व्यंग (१२) दिल को चीरने वाली या दिल में लगने वाली (१३) कुवां (१४) बुरे ख्याल वाला (१५) भेद (१६) जाहिर (१७) काट छांट की तरकीब (१८) देखो (१९) एक तरह का अंग्रेजी खाना है (२०) गोश्त व रसा !

लेडियों[1] से मिल के देखो इनके अन्दाज[2] व तरीक़ ।
वाल[3] मे नाचो कलब मे जाके खेलो उनसे ताश ॥
वादये[4] तहज़ीब इवरोप के चढ़ाओ खुम[5] के खुम ।
ऐशिया के शीशये तकवा[6] को करदो पाश[7] पाश ॥
जब अमल[8] इस पर किया परियों का साया हो गया ।
जिससे थी दिल की हरारत को सरासर[9] इन्तेआश[10] ॥
सामने थी लेडियां जोहरावश[11] जादू नजर ।
यां जवानी की उमंग और उनको आशिक़ की तलाश[12] ॥
उसकी चितवन[13] सेहरआगीं[14] उसकी बातें दिलरुबा[15]।
चाल उसकी फितना[16] खेज उसकी निगाहे वर्क[17] पाश[18] ॥
वह फरोगे[19] आतशे रुख[20] जिसके आगे आफ़ताब[21] ।
इस तरह जैसे कि पेशेशमा[22] परवाने की लाश ॥
जब यह सूरत[23] थी तो मुमकिन था कि एक वर्के[24] वला[25]।
दस्त सीमीं को वढ़ाती और मैं कहता दूर वाश[27] ॥
दोनो जानिब[28] था रगो[29] मे जोशे खू ने फ़ितनाजा ।

---

(१) अंग्रेजी लफ्ज है मानी औरतों (२) दिल को पसंद आने वाले तरीके (३) अंग्रेज़ी लफ्ज है यानी उस जगह को कहते हैं जहाँ अंगरेज लोग नाचते हैं (४) तहज़ीब की शराब (५) शराब का घड़ा (६) परहेज़ (७) टुकड़े टुकड़े (८) काम (९) बिलकुल (१०) आराम (११) खूब मजबूत (१२) ढूंढना (१३) देखना (१४) जादू से भरा हुआ (१५) दिल को लुभाने वाली (१६) फसाद उठाने वाली या जादू करने वाली (१७) बिजली (१८) टुकड़े टुकड़े होना (१९) रोशनी (२०) आग की तरह तमतमाता चेहरा (२१) सूरज (२२) मोमबत्ती के सामने (२३) शकल (२४) बिजली (२५) मुसीबत (२६) चांदी के ऐसा हाथ यानी खूबसूरत हाथ (२७) दूर रह (२८) दोनो तरफ (२९) नस ।

दिल ही था आखिर नहीं थी वर्फ की यह कोई काश[१] ।
बार बार आता है "अकबर" मेरे दिल में यह खेयाल ॥
हजरते सय्यद से जाकर अर्ज करता[२] कोई काश[३] ।
दरमियाने[४] कार दरिया[५] तख़्तावदंम[६] कर दई[७] ॥
बाद मीगोई[८] कि दामन[९] तरमकुन[१०] होशियार[११]बाश ।

× × ×

बिठाई जायेंगी पर्दे मे बीबियां कब तक ।
बने रहोगे तुम इस मुल्क में मियां कब तक ॥
हरमसरा[१२] की हिफ़ाजत को तेग़ ही न रही ।
तो काम देंगी यह चिलमन[१३]की तीलियां कब तक ॥
मियां से बीबी हैं परदा है इनको फर्ज[१४] मगर ।
मियां का इल्म ही उट्ठा तो फिर मियां कब तक ॥
तबीअतो का नम्र[१५] है हवाये मग़रिब[१६] मे ।
यह ग़ैरतें[१७]यह हरारत[१८]यह गरमियां[१९]कब तक ॥
अवाम[२०] बाध लें दोहर को थर्ड व इन्टर में ।
सेकेन्ड व फर्स्ट की हों बन्द खिड़कियां कब तक ॥
जो मुंह देखाई की रसमों पे है मोसर[२१]इबलीस[२२] ।
छिपेंगी हज़रते हव्वा की बेटियॉं कब तक ॥

---

(१) टुकड़ा या फाक (२) कहता ईश्वर करे (३) बीच (४) नदी की गहराई (५) तख़्त बांधना (६) किया तूने (७) बाद से कहता है (८) आंचल (९) मत भिगो (१०) होशियार रह (११) ज़नान ख़ाना (१२) परदा (१३) लाजिम या जरूरी (१४) फफकना (१५) पच्छिम की हवा (१६) शर्म (१७) गरमी (१८) मोहव्वत (१९) आप लोग या पब्लिक (२०) जिद करने वाला (२१) शैतान ।

जनाब हज़रते "अकबर" हैं हामिये[1] परदा।
मगर वह कब तक और इनकी रुबाईयां कब तक॥

× × ×

सब जानते हैं इल्म[2] से है जिन्दगीये रुह।
बे इल्म है अगर तो वह इन्सां है नातमाम[3]॥
बे इल्म बेहोनर[4] है जो दुनियां में कोई कौम।
नेचर का इक़तेज़ा[5] है रहे बन के वह गुलाम[6]॥
तालीम[7] अगर नहीं है ज़माने के हस्ब[8] हाल।
फिर क्या उम्मीद दौलत[9] व आराम व एहतेराम[10]॥
सय्यद के दिल में नक़्श[11] हुआ इस ख़याल का।
डाली बनाय मदरसा[12] लेकर ख़ोदा का नाम॥
सदमें[13] उठाये रंज सहे गालियां सुनीं।
लेकिन न छोड़ा कौम के ख़ादिम[14] ने अपना काम॥
देखला दिया ज़माने को जोरे दिल व दिमाग़।
बतला दिया कि करते हैं यों करने वाले काम॥
नीयत जो थी बख़ैर[15] तो बरकत[16] ख़ोदा ने दी।
कालिज हुआ दुरुस्त बसद[17] शान व एहतेशाम[18]॥
सरमाया[19] में कमी थी सहारा कोई न था।
सय्यद का दिल था दरपये[20] तकमील[21] इन्तेज़ाम॥

---

(१) मददगार (२) अकिल या पढ़ाई (३) अधूरा (४) बग़ैर कारीगरी (५) ख्वाहिश करना (६) नौकर (७) इल्म (८) अपने हाल की तरह (९) रुपया पैसा (१०) आराम (११) लिखा हुआ (१२) पाठशाले की नींव (१३) तकलीफ या मुसीबत (१४) नौकर (१५) ख़ैरियत से (१६) ज़्यादती (१७) सौशान (१८) बहुत उमदा (१९) पूंजी (२०) पीछे (२१) पूरा करना।

आखिर उठा सफर को वह मर्दे खिजिसता पै[१] ।
अहबाब चन्द साथ थे जो[२] इल्म व ख़ुशकलाम[३] ॥
क़िस्मत की रहबरी[४] से मिली मंज़िले मुराद[५] ।
फरमारवाये[६] मुल्के दकन को किया सलाम ॥
हालत देखाई और जरूरत बयान की ।
खूबी से इल्तेमास[७] किया कौम का पयाम[८] ॥
रहेम आगया हुजूर को हालत पे क़ौम की ।
फिर क्या था मौजजन[९] हुआ दरियाय फैज़आम[१०] ॥
माहाना[११] दो हजार किया एक हजार से ।
उम्मीद से ज्यादा अता थी यह लाकलाम[१२] ॥
"अकबर" की यह दोआ है खोदा की जनाब[१३] से ।
ताहश्र इस रईस व रेयासत को हो क्याम[१४] ॥
क्या वक्त पर हुई है कि बे ऐहतियाज[१५] फिक्र ।
तारीख़ अपनी आप है फैयाज़िये[१६] निजाम[१७] ॥

× × ×

कहा किसी ने यह सय्यद से आप ऐ हजरत ।
न पीर को न किसी पेशवा को मानते हैं ॥
न आप आलमे बरज़ख[१८] से मागते हैं मदद ।
न फ़ातहे के तरीके अदा को मानते हैं ॥

---

(१) मोबारक क़दम वाला (२) पढ़े लिखे (३) अच्छी बात चीत करने वाले (४) रास्ता देखाना (५) इरादा किया हुआ (६) बादशाह (७) अर्ज़ किया, कहा (८) संदेसा (९) लहर मारना (१०) आम बखशिस (११) माहवारी (१२) वह बात जिसमें आगे बात करने की गुंजाइश न हो (१३) सामने या चौखट (१४) कायम रहना (१५) बेजरूरत (१६) दान देना (१७) इन्तेजाम करने वाला या हाकिम (१८) मरने के वक्त से क़यामत के दिन तक को कहते हैं ।

नज़र तो कीजिये इस बात पर जो हैं हिन्दू।
ब सद् ख़ुलूस[1] हर एक देवता को मानते हैं॥
बहुत वह हैं जो अनासिर[2] परस्त हैं दिल से।
वह आग पूजते हैं या हवा को मानते हैं॥
क्रिशचियन[3] भी फ़िदाई हैं नामे मरियम[4] के।
बदिल मसीहअले[5] उस्सना को मानते हैं॥
वह लोग जो हैं मलकब[6] व सूफ़ियाने[7] करम।
फ़िदा कबूर[8] पे हैं अवलिया[9] को मानते हैं॥
मुरादें[10] मांगते हैं लोग पाक रूहों से।
किसी बुजुर्ग[11] को या मक़तेदा[12] को मानते हैं॥
फिर आप में यह हवा क्या समागई है कि आप।
न दस्तगीर[13] न मुशकिलकुशा[14] को मानते हैं॥
जवाब उन्होंने दिया हम हैं पैरवेकोरां[15]।
अदब हर यक का है लेकिन ख़ोदा को मानते हैं॥
इसी का नाम ज़बां पर है हैई[16] और क्ययोम[17]।
इसी की क़ुदरते[18] बेइन्तेहा को मानते हैं॥
यह बूये शरक[19] ही हैं जंग[20] व एख़तेलाफ़[21] की जड़।

---

(१) सादगी व पाकीजगी (२) असल या बुनियाद (३) ईसाई (४) ईसाईयो के एक देवता का नाम (५) यह भी इसाईयों के एक देवता हैं (६) जिनको कोई खिताब दिया गया (७) उन फकीरो को कहते हैं जो सिर्फ कम्मल ओढ़ते है (८) कब्र का बहुवचन है (९) पहुँचा हुआ साधू (१०) मतलब या दोवा (११) बड़ा (१२) वह आदमी जिसको लोग पैरवी करें (१३) मददगार (१४) मुशकिल को सुलझाने वाला या आसान करने वाला (१५) जिन्दा (१६) क़ायम (१७) ताक़त (१८) मिलाना (१९) लड़ाई (२०) फर्क।

तो अकलमंद कब ऐसी बला[1] को मानते हैं ॥
जवाब हज़रते सय्यद का खूब है "अकबर" ।
हम इनके कौल[2] दुरुस्त[3] व बजा[4] को मानते है ॥
वलेकिन इस नई तहजीब के बुजुर्ग अकसर ।
खोदा को और न तरीके दोआ को मानते हैं ॥
जवानी कहते हैं, सब कुछ मगर हकीक़त[5] में ।
वह सिर्फ़[6] कूवते[6] फरमांरवाँ[7] को मानते है ॥

× × ×

क्या शक है आफ़ताब[8] के शान व जलाल[9] में ।
रोशनतर[10] उससे कौन सी शै[11] है ख़्याल में ॥
लेकिन नहीं वह कुछ भी मोअस्सर[12] पसअज ग़रुब[13] ।
लाजिम[14] है ग़ौर[15] कीजिये इस मसलये पेखूब ॥
हरचन्द[16] तुम खेयाल करो आफताब का ।
गोशा[17] भी उठ सकेगा न शब[18] की नेकाब[19] का ॥
पूजोगे उसको तब भी वह फेरा न जायगा ।
उसको पुकारने से अंधेरा न जायगा ॥
इनसान का हाल भी मेरे नजदीक है यही ।
तहक़ीक[20] की नजर जो करो ठीक है यही ॥
केतना ही कोई साहबे ओज व[21] कमाल[22] हो ।
केतना ही बाअसर[23] हो कि आली खेयाल[24] हो ॥

---

(१) मुसीबत (२) बात (३) सही (४) सही (५) सही (६) ताक़त (७) हुकूमत करने वाला (८) सूरज (९) बड़ा (१०) ज्यादा चमकदार (११) चीज (१२) असरदार (१३) डूबने के बाद (१४) जरूरी (१५) सोचिये (१६) जेतना कुछ या जिसक़दर (१७) कोना (१८) रात (१९) पर्दा (२०) मालूम करना (२१) ऊँचाई (२२) पूरा होना (२३) असरदार (२४) ऊँचे ख़्याल वाला ।

जबकर गया जहान से वह मुल्केअदम[1] को कूच[2] ।
फिर उससे कुछ मदद का तसव्वर[3] है हेच[4] व पूच ॥
क़इयूम[5] व हई[6] जात है अल्लाह की फकत[7] ।
ज़िन्दा हमेशा बात है अल्लाह की फ़कत ॥
सुनलो कि इत्तेबा[8] व अदब[9] और चीज़ है ।
मतलब की लेकिन इनसे तलब[10] और चीज़ है ॥
आज़ुर्दा[11] कोई शेख हो या ब्रह्मन खफा ।
हक्कानियत[12] यह है यही ठीक फिलसफा ॥

× × ×

कर चुका कालिज में जब तकमील[13] फन[14] ।
तब यह बोले मुझसे मिस्टर मारीसन ॥
गोकि शोहरत[15] है तुम्हारीं दूर दूर ।
मुझसा तुम रखते नहीं अक़्ल व शऊर[16] ॥
अर्ज़ की[17] मैंने कि ऐ रोशन ज़मीर[18] ।
है यही तो जिसको रोता है बशर[19] ॥
आपने सीखा है अपने बाप से ।
और मैंने जो पढ़ा वह आप से ॥
बेटे को लोग कहते हैं आँखों का नूर[20] है ।
है ज़िन्दगी का लुत्फ़[21] तो दिल का सरूर[22] है ॥
घर में इसी के दम से है हर सिम्त[23] रोशनी ।
नाज़ां है इसपे बाप तो मां को ग़रूर[24] है ॥

---

(१) दूसरे मुल्क (२) रवाना होना (३) ख़्याल (४) बेकार (५) क़ायम रहने वाली या हमेशा रहने वाली (६) जीता हुआ या ज़िन्दा (७) बस या सिर्फ़ (८) पैरवी करने वाले (९) अक़िल (१०) चाहना (११) सताय हुआ (१२) सच्चाई (१३) पूरा करना (१४) होनर (१५) नाम (१६) अक़िल (१७) कहा (१८) अक़िलमन्द (१९) आदमी (२०) रोशनी (२१) मज़ा (२२) ख़ुशी (२३) हर तरफ़ (२४) घमंड ।

खुशकिस्मती की इसको निशानी समझते हैं।
कहते हैं यह खोदा के करम[1] का जहूर[2] है॥
"अकबर" भी इस खेयाल से करता है इत्तेफाक[3]।
इसका भी है यह क़ौल कि ऐसा जरूर है॥
अलबत्ता[4] शर्त[5] यह है कि बेटा है होनहार।
मायल[6] है नेकियों पे बुराई से दूर है॥

सुनता है दिल लगा के बुजुर्गों की पन्द[7] को।
वक्तेकलाम[8] लब[9] पे जनाब व हजूर हैं॥
बरताव इसका सिदक़[10] व सोहब्बत से है भरा।
इसमें न है फरेब[11] न कुछ मक्र[12] व जोर है॥

अफकारे[13] वालदैन[14] मे है दिल से वह शरीक।
हमदर्द हैं मोईन[15] है अहले शऊर है॥
राजी है इसपे बाप की जो कुछ हो मसलहत[16]।
साबिर[17] है बा अदब है अक़ील[18] व गईऊर[19] है॥

रखता है खानदान[20] की इज्जत का वह ख्याल।
नेकोनिकाये[21] दोस्त सोहबते बद से नफूर[22] है॥
क़सबे[23] कमाल को है शब व रोज़[24] उसको धुन।
इल्म व होनर के शौक़ का दिल में वफूर[25] है॥

---

(१) मेहरबानी (२) जाहिर होना (३) एक राय होना (४) बेशक या जरूर (५) जरूरी (६) झुका हुआ या मेल करने वाला (७) नसीहत (८) बात चीत करना (९) ज़बान (१०) सच्चाई (११) दग़ा (१२) दग़ा (१३) फिक्र का बहुवचन है यानी सोच (१४) मां बाप (१५) मददगार (१६) नेक सलाह (१७) सब्र करने वाला (१८) अकिलमन्द (१९) शरमीला (२०) घराना (२१) अच्छे दोस्त (२२) नफ़रत करने वाला (२३) ख़ूब होनर हासिल करना (२४) रात दिन (२५) बहुत होना।

लेकिन जो इन सफात का मुतलक नहीं पता।
और फिर भी है खुशी तो खुशी का क़ुसूर है॥

× × ×

"डारविन साहब" हकीकत[१] से नेहायत दूर थे।
मैं न मानूगा कि मूरिस[२] आपके लंगूर थे॥
अपनी हालत के मोताविक़[३] चाहिये तरजो अमल[४]।
इससे क्या होता है दादा कैसर व फ़ग़फ़ूर थे[५]॥
इस तर्करुब[६] पर हमे कुछ फ़ख्र[७] का मौक़ा नहीं।
पास गो बैठे थे लेकिन उनके दिल से दूर थे॥

× × ×

करज़न सभा

सभा मे दोस्तो "करज़न"[८] की आमद आमद है।
गलो में ग़ैरते[९] गुलशन की आमद आमद है॥
रईस व राजा व नव्वाब मुन्तजिर[१०] हैं व शौक।
कि नायबेशहे[११] लन्दन की आमद आमद है॥
वह होके आते है कायम[१२] मोक़ामे क़ैसरे हिन्द[१३]।
सितारों में महे रोशन[१४] की आमद आमद है॥
हैं उनके साथ मे एतने अकाबिरे[१५] योरोप।
कि गोया देहली मे लन्दन की आमद आमद हैं॥

---

(१) अच्छाइया (२) बिल्कुल (३) असलियत (४) बहुत (५) बाप दादा (६) बराबर (७) काम करने का तरीक़ा (८) यह बादशाहों के नाम हैं (१०) नज़दीकी (११) घमंड (१२) एक वाइसराय का नाम है (१३) आना (१४) शर्म (१५) इन्तज़ार करने वाला (१६) क़ायम मोक़ाम या बादशाह की जगह पर काम करने वाला (१७) जगह पर (१८) हिन्दोस्तान का बादशाह (१९) चमकदार चांद (२०) बड़े बड़े लोग।

गरज़ यह है कि हो तकमील[1] ज़ीनत[2] व रौनक[3] ।
हर एक इल्म की हर फ़न की आमद आमद है ॥
कमर बंधी नजर आती है आब व आतश की ।
इधर से नल उधर अंजन की आमद आमद है ।
देखा रहे है होनरमंद ख़्वावे मक़नातीस[4] ॥
दिलो मे हालते रोशन की आमद आमद है ॥
उमड़ रही है हर एक सिम्त से फरावानी[5] ।
हर एक जिन्स के ख़िर्मन[6] की आमद आमद है ॥
दरूद फौज से है जर्क वर्क[8] का आलम ।
जिधर को देखिये पलटन की आमद आमद है ॥
चमक है किर्चों[9] की हर सू गमक है तोपो की ।
चमाचम और दनादन की आमद आमद है ॥
चहलपहल है उमंगें हैं जोशे मस्ती है ।
वहारे ऐश पे जोवन की आमद आमद है ॥
जो पीर[10] है उन्हें हैं वलवले[11] जवानी के ।
जवान हैं तो लड़कपन की आमद आमद है ॥
तमाम मजहवो व मिल्लत में है कशिश[12] पैदा ।
मोग़ा[13] व शेख़ व बृह्मन की आमद आमद है ॥
गिरह[14] जेजर[15] नहीं और टीमटास लाजिम[16] वफर्ज ।
इसी सवव से महाजन की आमद आमद है ॥
उभारे रखता है 'अकवर' के दिलको फैज़े सोखन ।
अगरचे पीरी[17] व पेन्शिन की आमद आमद है ॥

---

(१) पूरा करना (२) सजाना (३) चमक या अच्छा लगना (४) चुम्वक (५) ज्यादा (६) चीज़ (७) खलिहान (८) चमक दमक (९) एक क़िस्म का हथियार है जो फौजी लोग वंदूक में लगाये रहते हैं (१०) बूढ़े (११) जोश (१२) खिचाव (१३) आग के पूजने वाले (१४) गाँठ (१५) रुपया पैसा (१६) जरूरी (१७) वुढ़ापा ।

आमद एकबाल परी"

एकबाल परी आई जो अंदाज बदल कर ।
दुनियाँ की हवा साथ हुई साज[१] बदल कर ॥

"ग़ज़ल ज़बानी एकबाल परी"

हूँ नाज़ से मामूर[२] हुकूमत से भरी हूँ ।
ज़र्री[३] मेरा दामन है मै "एकबाल परी हूं ॥
हर शोला[४] मोक़ाबिल[५] मेरे चेहरे के है बेनूर[६] ।
कहता है कि हूँ भी तो चिरागे सेहरी[७] हूँ ॥
हर ढङ्ग से देखलाती हूँ शान अपनी जहाँ को ।
हर रङ्ग मे मै मस्त मये जलवागरी हूँ ॥
इंगलैन्ड पे हूँ सायाफिगन[९] हुकमे खोदा से ।
शहनशाहे ऐडवर्ड की सूरत पे मरी हूं ॥

"मोबारकबाद पंच की तरफ से"

क़ौम इंगलिश को यह दरबार मोबारक होवे ।
"लार्डकर्ज़न" सा यह सरदार मोबारक होवे ॥
हो मोबारक शहे इंगलेन्ड को तख्त व देहीम[१०] ।
मुझको यह तवा गोहर बार[११] मोबारक होवे ॥

× × ×

ताज्जुब से कहने लगे बाबू साहब—गौरमिन्ट सय्यदये पे क्यो मेहरबां है ।
इसे क्यों हुई इस कदर कामयाबी—कि हर बज़्म[१२] मे बस यही दास्तां[१३] है॥
कभी लाट साहब है मेहमान इसके—कभी लाटसाहब का वह मेहमां है ।
नही है हमारे बराबर वह हरगिज—दिया हमने हर सेग़[१४] का इमतेहां है ॥

---

(१) बनाव या बाजा (२) भरा हुआ (३) सोने का काम किया हुआ (४) रोशनी, लपट आग (५) सामने (६) बेरोशनी (६) सूरज निकलने के पहले का समय (८) तरह या तरीक़ा (९) साया डालने वाली (१०) राजतिलक (११) अच्छी मोती (१२) महफिल (१३) किस्सा (१४) तरह

वह अंगरेज़ी से कुछ भी वाक़िफ[1] नही है-यहां जेतनी इंगलिश है सब वरजबां[2] है।
कहा हँस के "अकबर"ने ऐ बाबू साहब-सुनो मुझसे जोरम्ज[3] इसमें नेहां[4] है॥
नही है तुम्हें कुछ भी सय्यद से निसबत-तुम अंग्रेजीदां हो वह अंग्रेज़दां है।

× × ×

तबा समझी[5] कि बलन्दी मे वढ़ी जाती है।
ज़ुल्फ खुश है कि यह फांसी पे चढ़ी जाती है॥
वह है नाफहेम[6] यहं अय्यार[7] महल[8] है नाज़ुक।
अहले बीनश[9] में यह यक नज़्म पढ़ी जाती है॥

"जलवये दरबार देहली"

सरमें शौक का सौदा[10] देखा—देहली को हमने भी जा देखा।
जो कुछ देखा अच्छा देखा—क्या बतलायें क्या क्या देखा॥

× × ×

नज़्म[11] है मुझको बादा साफी[12]-शोग़ल यही है दिल को काफी।
मांगता हूँ यारों से माफी—खैर अब देखिये लुत्फ कवाफी॥

× × ×

जमुना जी के पाट को देखा—अच्छे सुथरे घाट को देखा।
सब से ऊँचे लाट को देखा—हजरत डीयुक कनाट को देखा॥

× × ×

पलटन और रिसाले देखे—गोरे देखे काले देखे।
संगीनें और भाले देखे—वैन्ड वजाने वाले देखे॥

× × ×

ख़ेमों का एक जंगल देखा—इस जंगल मे मंगल देखा।
ब्रह्मा और दरंगल देखा—इज्जत ख़्वाहों[13] का दंगल देखा॥

---

(१) जानेवाला (२) जबानी याद (३) इशारा या राज (४) छिपा हुआ (५) कौम (६) नासमझ (७) चालाक (८) मकान, जगह, (६) अक्लिमंद (१०) पागलपन (११) शायरी (१२) साफ शराब (१३) इज्ज़त चाहने वाले।

सड़कें थीं हर कम्प से जारी—पानी था हर पम्प से जारी।
नूर की मौजें लम्प से जारी—तेजी थी हर जम्प[१] से जारी॥

× × ×

कुछ चेहरों पर मर्दी देखी—कुछ चेहरों पर ज़रदी[२] देखी।
अच्छी खासी सरदी देखी—दिल ने जो हालत कर दी देखी॥

× × ×

डाली में नारंगी देखी—महफ़िल में सारंगी देखी।
बेरंगी[३] बारंगी[४] देखी—दहेर की रंगा रंगी देखी॥

× × ×

अच्छे अच्छों को भटका[५] देखा—भीड़ में खाते झटका देखा।
मुंह को अगरचे लटका देखा—दिल दरबार से अटका देखा॥

× × ×

हाथी देखे भारी भरकम—उनका चलना कम कम थम थम[६]।
जर्री[७] झूलें नूर का आलम[८]—मीलों तक वह चम चम चम चम॥

× × ×

पुर था पहलूये मसजिद जामा—रोशनियां थीं हर सौ लामा[९]।
कोई नहीं था किसी का सामां[१०]—सबके सब थे दीद के तामा[११]॥

× × ×

मुर्गी सड़क पर कुटती देखी—सांस भी भीड़ में घुटती देखी।
आतशबाजी छुटती देखी—लुत्फ़ की दौलत लुटती देखी॥

× × ×

चौकी एक चौलक्खी[१२] देखी—खूब ही चक्खी पक्खी देखी।
हर सू न्यामत[१३] रक्खी देखी—शहद और दूध की मक्खी देखी॥

---

(१) कूद (अंग्रेजी शब्द है) (२) पीलापन (३) बिला रंगी हुई (४) रंगी हुई (५) भूला हुआ (६) धीरे धीरे (७) सोनहले कामदार (८) हालत (९) चमकना (१०) सुनने वाला (११) लालची (१२) चार लाख की।

एक का हिस्सा मन[१] व सलवा—एक का हिस्सा थोड़ा हलवा।
एक का हिस्सा भीड़ और बलुआ[२]—मेरा हिस्सा दूर का जलवा॥

× × ×

ओज[३] बृटिश राज का देखा—परतो[४] तख़्त व ताज का देखा।
रग ज़माना आज का देखा—रुख[५] कर्ज़न महराज का देखा॥

× × ×

पहुँचे फांद के सात समुन्दर—तख़्त मे इनके बीसो बन्दर।
हिकमत[६] व दानिश[७] उनके अन्दर—अपनी जगह हर एक सिकन्दर॥

× × ×

ओजें बख्त[८] मलाकी उनका—चर्खें[९] हफ्त[१०] तबाक़ी उनका।
महफिल उनकी साकी उनका—आखें मेरी बाकी उनका॥

× × ×

हम तो उनके खैर तलब[११] है—हम क्या ऐसे ही सब के सब है।
इनके राज के उम्दा[१२] ढ़ब[१३] है—सब सामाने ऐशवतरब[१४] हैं॥

× × ×

एगज़िबीशन[१५] की शान अनोखी[१६]-हरशै उम्दा हरशै चोखी[१७]।
उक़लेदिस[१८] की नापी जोखी—मन भर सोने की लागत सोखी[१९]॥

× × ×

जश्न[२०] अजीम[२१] इस साल हुआ है- है शाही फोर्ट[२२] मे बाल[२३] हुआ है।
रोशन हर एक हाल हुआ है—क़िस्सये माजी[२४] हाल[२५] हुआ है॥

---

(१) अच्छा खाना (२) मुसीबत (३) ऊँचाई (४) किरन या रोशनी (५) मुँह या शक्ल (६) अकिलमंदी (७) अकिलमंदी (८) तक़दीर (९) आसमान (१०) सात आसमान (११) चाहने वाले (१२) अच्छे (१३) तरीक़े (१४) खुशी (१५) नुमाइश (१६) निराली (१७) अच्छी (१८) जिओमेटरी (१९) लगी (२०) खुशी (२१) बड़ी (२२) अंग्रेजी शब्द है यानी गढ़ (२३) अंग्रेजी शब्द है यानी नाच (२४) बीता हुआ (२५) मौजूदा जमाना।

है मशहूर कूचा[1] व वरजन[2]-बाल[3] मे नाची लेडी कर्जन।
तायर[4] होश थे सब के परज़न-रश्क[5] से देख रही थी हरजन[6] ॥

× × ×

हाल में चमकी आके एकाएक-जर्रीं थी पोशाक झकाझक[7]।
महो[8] था उनका औज समातका[9]-चर्ख[10] पे जोहरा[11] इनकी थी गाहक ॥

× × ×

गो रक्कासये[12] ओज[13] फलक[14] थी-उसमे कहां यह नोक पलक थी।
अंदर की महफिल की झलक थी-बज़्मे इशरत[15] सुबह तलक थी ॥

× × ×

की है यह बदिश जाहँ[16] रसाने[17]-कोई माने ख्वाह न माने।
सुनते हैं हम तो यह अफसाने[18]-जिसने देखा हो वह जाने ॥

जमजमा[19] ओजे फलक पर है यह हरवर्ड[20] का।
है यही मफ़हूम[21] रूचेअर्ज पर हरवर्ड[22] का ॥
जीनते गेती[23] है मुल्के आजसे[24] मतानियां।
सिक्का[25] बैठा है दिलों मे हज़रते ऐडवर्ड का ॥

× × ×

सुन रहे थे समा[26] मौलाना-इसी हालत में इन्तकाल[27] हुआ।
वाह क्या खुशनसीब[28] थे हजरत-आलमें[29] वज्द में वेसाल[30] हुआ ॥

---

(१) गली (२) गली (३) अंगरेजी शब्द है उस जगह को भी कहते है जहाँ नाच होता है (४) दिमाग, (चिड़ियो को भी कहते हैं) (५) डाह (६) औरत (७) बहुत चमकदार (८) एक तरफ ध्यान से लगा हुआ (६) आसमान (१०) आसमान (११) एक सितारे का नाम है (१२) नाचने वाली (१३) ऊँचाई (१४) आसमान (१५) खुशी की महफिल (१६) समझ (१७) पहुँचने वाला (१८) किस्सा कहानी (१६) राग या गीत (२०) चिड़िया (२१) समझाया गया (२२) जमीन पर (२३) शब्द (२४) दुनियाँ का सजाव (२५) बहुत बड़ा (२६) धाक (२७) गाना (२८) एक जगह से दूसरी जगह जाना या मरना (२६) अच्छे भाग वाले (३०) हालत।

उमदा मछली मोसल्लम[1] व खाम[2] मिली—
तोहफा[3] पाया मुराद[4] खुद्दाम मिली।
ममनूं[5] करीम क्यों न हों ऐ 'अकबर'—वह दाम में लाये मुझे वेदाम मिली ॥

× × ×

आता नहीं मुझको क़िबला किबलो—बस साफ यह है कि भाई शिबली।
तकलीफ उठाओ आज की रात—खाना यही खाओ आज की रात ॥
हाजिर[6] जो कुछ हो दाल दलिया—समझो उसको पोलाव क़लिया ॥

× × ×

नामा[7] कोई न यार का पैग़ाम[8] भेजिये—
इस फस्ल में जो भेजिये बस आम भेजिये।
ऐसे जरूर हो कि उन्हे रख के खा सकूँ—
पोख्ता[9] अगर हो बीस तो दस खाम[10] भेजिये।
मालूम ही है आप को बन्दे का एड्रेस[11]—
सीधे इलाहाबाद मेरे नाम भेजिये।
ऐसा न हो कि आप यह लिक्खें जवाब में—
तामील[12] होगी पहले मगर दाम भेजिये ॥

× × ×

लंदन को छोड़ लड़के अब हिन्द की खबर ले।
बनती रहेंगी बातें आबाद[13] घर तो करले ॥
राह[14] अपनी अब बदलदे बस पास करके चलदे।
अपने वतन का रुख[15] कर और रुखस्ते[16] सफर[17] ले ॥

---

(१) पूरी (२) कच्ची (३) इनाम (४) जिस बात का इरादा किया जाय और हो जाय (५) एहसान किया गया (६) मौजूद (७) पत्र (८) संदेसा (९) पका हुआ (१०) कच्चा (११) पता (१२) पूरा करना (१३) बसाना (१४) रास्ता (१५) मुंह (१६) विदाई (१७) बाहर जाना।

इंगलिश[१] की कर के कापी दुनियां की राह नापी।
दीनीतरीक़[२] मे भी अपने कदम[३] को धर ले॥
नेचर[४] पुकारता है असल नस्ल[५] तेरी।
कहती है हिसट्री भी वस जा और अपना घर ले॥
वापस नहीं जो आता क्या मुंतजिर[६] है इसका।
मां खस्ता[७] हाल होले वेचारा वाप मर ले॥
मग़रिब[८] के मुर्शिदों[९] से तू पढ़ चुका वहुत कुछ।
पीराने[१०] मशरकी[११] से अब फैज[१२] की नजर ले॥
मैं भी हूँ एक सोख़नवर[१३] आ सुन कलाम[१४] 'अकबर'।
इन मोतियों से आकर दामन[१५] को अपने भर ले॥

× × ×

इश्रती घर की मोहब्बत का मजा भूल गये।
खाके लंदन की हवा अहदवफा[१६] भूल गये॥
पहुँचे होटल में तो फिर ईद की परवा न रही।
केक को चख के सेवइयों का मजा भूल गये॥
भूले मां वाप को अग़ियार[१७] के चर्चों[१८] में वहां।
साय्ये[१९] कुफ्र पड़ा नूरे खोदा भूल गये॥
मोम की पुतलियों पर ऐसी तबीयत पिघली।
चमने हिन्द की परियों की अदा[२०] भूल गये॥
कैसे कैसे दिले नाजुक[२१] को दुखाया तुमने।
खबरे फैसलये[२२] रोजजजा[२३] भूल गये॥

---

(१) अंगरेजी लोग (२) धार्मिक रास्ता (३) पांव (४) प्रकृति (५) वाल वच्चा (६) इंतेजार (७) खराब (८) पच्छिमी (९) अच्छा रास्ता वताने वाला यानी गुरु (१०) वड़े लोग (११) पूरव (१२) फायदा (१३) कविता करने वाला (१४) वात (१५) आंचल (१६) वफा का पूरा करना (१७) पराये लोग (१८) वातचीत (१९) काफिर लोग (२०) नखरा (२१) कमजोर दिल (२२) झगड़ा चुकाना (२३) वदले का दिन।

बोख़्ल[1] है अहले वतन जो से वफा मे तुमको ।
क्या बुजुर्गो की वह सब जूदवअता[2] भूल गये ॥

नकले मग़रिव की तरंग आई तुम्हारे दिल में ।
और यह नोकता[3] कि मेरी अस्ल है क्या भूल गये ॥

क्या ताज्जुब है जो लड़को ने भुलाया घर को ।
जब कि बूढ़े रविशे[4] दीन खोदा भूल गये ॥

× × ×

हिन्द में मै हूँ मेरा नूरेनजर[5] लंदन मे है ।
सीनये पुरग़म[6] है यां लखते जिगर[7] लंदन में है ॥

दफतरे तदबीर तो खोला गया है हिन्द में ।
फैसला किस्मत का ऐ "अकबर" मगर लंदन मे है ॥

× × ×

फिरे एक मोलवी साहब जो कल दरबार देहली से ।
यह पूछा मैंने कुछ लाए भी तुम सरकार देहली से ॥

वह बोले हँस के ऐ 'अकबर' कहूँ क्या तुझसे हाल अपना ।
इसी मतला से बस करता हूँ इजहारे[8] ख़्याल अपना ॥

उधर सुर्खी[9] मयेगुलगूं[10] की थी अंडे की जर्दी[11] थी ।
इधर रीशे[12] सुफेद[13] अपनी थी और शिद्दत[14] से सर्दी थी ॥

× × ×

---

(१) कंजूसी (२) बखशिश (३) बात (४) ढंग या चाल (५) आँख की रोशन' यानी लड़का (६) दुख से भरा हुआ (७) जिगर का टुकड़ा यानी लड़का (८) जहिर करना या बताना (९) लाली (१०) लाल रंग का शराब (११) पीलापन (१२) डाढ़ी (१३) सफेद (१४) जोर की ।

मौलाना महो इश्क़ यजदानी थे।
बेशक इस अहेद ने वह लासानी[1] थे॥
भूले न कभी उन्हें मोहिब्बाने[2] रसूल।
यानी रजवी शरीफ के बानी[3] थे॥

× × ×

चाहा जो मैंने इनसे तरीक़े अमल पे[4] बाज[5]।
बोले कि नज्म[6] जैल[7]को अरक़ाम[8]कीजिये॥
पैदा हुये है हिन्द में इस अहद[9] से जो आप।
खालिक[10] का शुक्र कीजिये आराम कीजिये॥
बेइन्तेहा[11] मुफीद[12] हैं यह मगरिबी ओलूम।
तहसील[13]इनकी भी सहरे व शाम[14]कीजिये॥
योरप में फिरये पेरिस व लंदन को देखिये।
तहकीक[15]मुल्क का शग़र व शाम कीजिये॥
हो जाइये तरीक़ये मग़रिब पे मुतमइन[16]।
खातिर से महो खतरये अजाम[17] कीजिये॥
पीराने बेफरोग़का[18] गुलहोचुका चिराग़।
नाहक न दिल को लावये अवहाम[19] कीजिये॥
रखिये न दिल को दैर[20]व कलीसा[21]से मुंहरिफ[22]।
सतरुक कैदे जामये अहराम कीजिये॥
अलफाजे कुफ्र व फस्क़ को बस भूल जाइये।
हर मिल्लतोतरीक़ का एकराम कीजिये॥

---

(१) बेमिसाल (२) दोस्त लोग (३) बनाने वाला या चलाने वाला (४) काम का रास्ता (५) नसीहत (६) ग़जल (७) नीचे (८) लिखना (९) ज़माना (१०) ईश्वर (११) बहुत अच्छा (१२) फायदेमंद (१३) हासिल करना या सीखना (१४) सुबह शाम (१५) असलियत का जानना (१६) इतमीनान (१७) पूरा करना (१८) बे रोशनी (१९) शकों (२०) मंदिर (२१) गिर्जा या मंदिर (२२) हटा हुआ या फेरा हुआ।

रहिये जहां में वसअते मोशरिव से नेकनाम ।
मुझको मुरीद[१] हिन्दुओं को राम[२] -कीजिये ॥
रखिये नमूद[३] व शोहरत[४] व एजाज[५] पर नजर ।
दौलत को सर्फ[६] कीजिये और नाम कीजिये ॥
सामान जमा कीजिये कोठी वनाइये ।
वासद खुलूस दावते हुक्काम[७] कीजिये ॥
याराने हम मजाक[८] से हम वज़्म हूजिये ।
मौका मिले तो शोग़ल मय व जाम कीजिये ॥
चश्म व लबे बुतां से भी ग़ाफिल न हूजिये ।
तकमील[९] शौके पिसता व बादाम कीजिये ॥
नज्जारये मिसा से तरो ताजा रखिये आंख ।
तफरीह[१०] पार्क में सहेर[११] व शाम कीजिये ॥
मजहब का नाम लीजिये आमिल[१२] न हूजिये ।
जो मुत्तफिक़[१३] न हो उसे बदनाम कीजिये ॥
तर्जेकदीम[१४] पर जो नजर आयें मोलवी ।
पब्लिक में इनको मोरिदे इलजाम[१५] कीजिये ॥
जन्जीर-फ़क्क़ा[१६] तोड़िये कह कर खिलाफे शरा[१७] ।
मजमून लिखिये दावये इलहाम कीजिये ॥
क़ौमी तरक्कीयो के मोशाग़िल भी है जरूर ।
इस मद से भी जरूर कोई काम कीजिये ॥
लड़के न हों तो हो नही सकती चहेल पहेल ।
फिकरें पये वजीफा व इनाम कीजिये ॥

---

(१) चेला (२) गुलाम (३) जाहिर या शान व शौक़त (४) जाहिर करना (५) इज्जत (६) खर्च (७) अफसर लोग (८) खुश मिज़ाज़ (९) पूरा करना (१०) खुश करना (११) सुबह (१२) हासिल (१३) एक राय (१४) पुराना तरीका (१५) तरह तरह का जुर्म लगाना (१६) मजहबी इलम की जंजीर (१७) मजहब ।

तहसील चंदा कीजिये लड़कों को भेजकर।
सारा इलाका हिन्द का अब ख़ाम[१] कीजिये॥
बेरौनकी[२] से काटिये क्यों अपनी उम्र को।
क्यों इंतेज़ारे गरदिशे अय्याम[३] कीजिये॥
जो चाहिये वह कीजिये बस यह ज़रूर है।
हर अंजुमन[४] में दावये इसलाम कीजिये॥
लेकिन न बन पड़ें जो यह बातें हुजूर से।
मुर्दों के साथ कब्र में आराम कीजिये॥

मुतुफ़रक़ात मज़ाकिया

मजे से ज़िन्दगी कटती जो दिल काबू[५] में आजाता।
मगर ऐसा तो जब होता कि वह पहलू में आजाता॥

× × ×

बाहम[६] शबेवेसाल[७] गलत फहमियां[८] हुईं।
मुझको परी का शुबहा[९] हुआ उनको भूत का॥

× × ×

तमाशा देख "अकबर" दीदयेइबरत[१०] से दुनियां का।
अजल[११] की नींद जब आये लहद[१२] में जाके सो रहना॥

× × ×

राहे वहशत[१३] मे अगर कैस से लगज़िश[१४] हो जाय।
हैफ[१५] लैला पे जो आमादये काविश[१६] हो जाय॥

× × ×

भरोसा उनपे करके मुझको पछताना पड़ा आख़िर।
बड़ा दावा किया था मैंने शरमाना पड़ा आख़िर॥

---

(१) कच्चा (२) बिला चमक या बेइज्ज़ती (३) ज़माने का चक्कर (४) महफिल या मजलिश (५) बस (६) आपस मे (७) मिलन की रात (८) समझें (९) शक (१०) नसीहत (११) मौत (१२) क़ब्र (१३) नफरत या (१४) पैर का फिसलना या या गलती (१५) अफसोस या ज़ुल्म (१६) खोज लगाना।

वलवले[१] उठते हैं दिल मे देखकर उनका जमाल[२]।
हौसले[३] होते है पस्त उनकी नजर को देखकर ॥

× × ×

वैठा रहा मैं सुवह से इस दर पे शाम तक ॥
अफसोस है हुआ न मोयस्सर सलाम तक ।

× × ×

फैजे कालिज से जवानी रह गइ वालायेताक़[४] ॥
इमतेहां पेशेनजर[५] और आशिक़ी वालयेताक़ ।
वह चिराग़ो से है जलते ऐसे है रोशन[६] ज़मीर[७] ॥
कहते हैं रखिये पुरानी रोशनी वालाये ताक़ ।

× × ×

पता मेरा यही है मंजिले हस्ती मे ऐ "अकवर" ॥
ग़रीदे हजरते दिल हूँ मोक़ीमे[८] खानयेतन[९] हूँ ।

× × ×

जो वात मुनासिव[१०] है वह हासिल नहीं करते ॥
जो अपनी गिरह[११] में है उसे खो भी रहे हैं ।
वे इल्म भी हम लोग हैं ग़फलत भी है तारी[१२] ॥
अफसोस कि अन्धे भी हैं और सो भी रहे हैं ।

× × ×

मुल्की तरक्क़ीयो मे देवाले निकालिये--
पल्टन नहीं तो खैर रेखाले निकालिये ॥
काफी है वहरे[१३] शोग़ल कलीसाये फ़िक्र रिज्क[१४]--

---

(१) जोश (२) खूवसूरती (३) हिम्मत (४) ताक़ के ऊपर (५) आख के सामने (६ , चमक (७) दिल के अन्दर (८) कायम रहना (९) वदन का घर यानी वदन मे (१०) जरूरी (११) गांठ (१२) छाई हुई (१३) वासते (१४) खाना, रोज़ी ।

अब दिल से मसजिद और शेवाले निकालिये।

× × ×

जाहिद[१] की तबा[२] देख के उस बुत को लच[३] गई।
वह क्या तमाम मुल्क में एक धूम मच गई॥
"अकबर" ही था कि दीन[४] में दिलको छिपा लिया।
वह भी कहां बचा यह कहो जान बच गई॥

× × ×

रह गये कम अरबी शैर समझने वाले।
चल वसे गेसुये[५] लैला मे उलझने वाले॥

× × ×

मायूस[६] कर रहा है नई रोशनी का रंग।
इसका न कुछ अदब[७] है न कुछ एतबार है॥
तकदीस[८] मास्टर की न लीडर का फातेहा।
यानी न नूरे[९] दिल है न शमये मजार[१०] है॥

× × ×

बूढ़े हुए किताब से बोसवकनार[११] है।
अपने लिये अलिफ ही बस अब कद्‌यार[१२] है॥
अपनी जबीं[१३] से चीन के मालिक अगर हो तुम।
मैं भी हूं शाह रुस[१४] कि दिल मेरा जार[१५] है॥

× × ×

या इमीटेशन के मदके चाय दूध और खांडले[१८]।
या एजीटेशन के बदले तू चला जा मांडले॥

---

(१) परहेजगार (२) तबीयत (३) भा गई (४) मजहब (५) बाल (६) नाउम्मेद (७) अकल या कायदा (८) पाक करना (९) दिल की रोशनी (१०) क़ब्र की रोशनी (११) चुगना या बग़ल में लेना (१२) माशूक़ की लम्बाई (१३) माथा (१४) रूस का बादशाह (१५) रूस के बादशाह को कहते थे यह उसका उपनाम था।

था क़नाअत[1] और ताअत[2] में बसरकर[3] जि़न्दगी।
रिज्क़[4] की कश्ती[5] को खे पतवार ले और डांड ले॥

× × ×

दुनियां की हिर्स[6] व आज का वायज़ शहीद[7] है।
गो पीर होगया है मगर जनमुरीद[8] है॥
जब तक रहे जिन्दा आज़मन्द[9] रहे।
जब मर गये हम तो क़ब्र में बन्द रहे॥

× × ×

तान उस बुत ने उड़ाई हमें बलमा भूले।
हमतो क्या शेख़ भी तौहीद[10] का कलमा भूले॥
सनमें[11] हिन्द को हम याद रहे ऐ "अकबर"।
ग़म नहीं हैं जो अरब मे हमें सलमाँ[12] भूले॥

× × ×

फोग़ाँ करने का भी यारा[13] नहीं है।
सेवा अफसोस के चारा[14] नहीं है॥

× × ×

तय हुई बात न क़ीमत[15] अभी उसकी ठहरी।
दिल मेरा लेके चले आप यह अच्छी ठहरी॥

× × ×

हासिल हो कुछ मआश[16] यह मेहनत की बात है।
लेकिन सरूर[17] कल्ब[18] यह किस्मत की बात है॥
आपस की वाह वाह ल्याक़त की बात है।

---

(१) सब्र (२) ईश्वर की पूजा करना (३) गुजर (४) रोजी (५) नाव (६) लालच (७) लालच (८) औरत का गुलाम (९) उम्मीद वाला (१०) एक जानना (११) माशूक़ (१२) माशूक़ (१३) ताक़त (१४) इलाज (१५) दाम (१६) रोजी (१७) खुशी (१८) दिल।

सरकार को क़ुबूल[1] यह हिकमत[2] की बात है ॥
वह मुख़बिरे[3] रक़ीब है मै हूँ शहीदे इश्क़ ।
यह अपनी अपनी हिम्मत व ग़ैरत[4] की बात है ॥
जापान व रूस से नही कुछ वास्ता हमें ।
खर्चे को यां तो बहेस है तिब्बत की बात है ॥
बी० ऐ० भी पास हूँ मिले बीबी भी दिल पसन्द ।
मेहनत की है वह बात यह क़िस्मत की बात है ॥
तहजीब मग़रबी में है बोसे तलक मोआफ़ ।
इससे अगर बढ़ो तो शरारत की बात है ॥

× × ×

तासीर[5] हवाये बाग़ेहस्ती[6] न गई ।
सूरत की अदा नज़र की मस्ती न गई ॥
होते ही रहे जमाले[7] दिलकश[8] पैदा ।
तबयेइंसान[9] से बुतपरस्ती[10] न गई ॥
न गई दिल से मेरे हुस्न परस्ती न गई ।
बुझ गया खून मगर रूह[11] की मस्ती न गई ॥

× × ×

कोई हुआ न मुझसे मोख़ातिब वहाँ मगर ।
चुपके से मेरे कान में एक ग़ैर ने कहा ॥

× × ×

पेच मज़हब का किसी साहब ने ढीला कर दिया ।
सादा तबवों को भी बिलआख़िर[12] रंगीला कर दिया ॥

---

(१) मान लेना (२) अक़्लमन्दी (३) जासूस (४) शर्म (५) असर (६) ज़िन्दगी का बाग़ (७) खूबसूरती (८) दिल को खींचनेवाली या पसन्द आने वाली (९) आदमी की तबियत (१०) मूर्ति पूजा (११) जान (१२) आख़िरकार ।

शौक पैदा कर दिया बंगले का और पतलून का।
वह मसल है मुफलिसी[१] में आटा गीला कर दिया॥
था बनारस पहले ही से ऐ सनम रस में भरा।
चश्म मिस ऐनी ने और इसको रसीला कर दिया॥

× × ×

न हर्फ़े शिकवा[२] बेहतर है न अच्छा अश्क[३] का बहना।
हमारे दिन यही है रंज़ सहना और चुप रहना॥

× × ×

ख़ोदा के वास्ते "अकबर" कोई ज़िक्र और ही छेड़ो।
सुनी बातों का क्या सुनना कही बातों का क्या कहना॥

× × ×

क़ौम की तारीख़ से जो बेख़बर हो जायगा—
रफ़तारफ़ता[४] अदमीयत खोके ख़र[५] हो जायगा।

× × ×

बूट डासन ने बनाया मैंने एक मजमूं लिखा।
मुल्क में मजमूं न फैला और जूता चल गया॥

× × ×

साथ इनके मेरा शेख़ तो चल ही नहीं सकता।
बन्दर की तरह ऊंट उछल ही नहीं सकता॥

× × ×

पूछा कि शोग़ल क्या है कहने लगे गुरु जी।
बस राम राम जपना चेलों का माल अपना॥

× × ×

किया शोर व फोग़ां[६] ने मेरी इसको मुज़महिल[७] कितना।
बहुत शोख़ी शरारत थी मगर औरत का दिल कितना॥

---

(१) गरीबी (२) शिकायत (३) आँसू (४) अहिस्ता-अहिस्ता (५) गदहा (६) शोर (७) सुस्त।

पीरी से कमर खम[१] है वह फरमाते हैं तनजा।
काबू मे नहीं हाथ तो क्या हो सके पंजा॥

× × ×

वसअत[२] है दरेइल्म[३] में हैं राह अमल वन्द।
है साफ सड़क पॉव में लेकिन है शिकंजा॥

× × ×

क्या कहूँ इसको मैं वदवख़्तीये[४] नेशन की सेवा।
इसको आता नहीं अब कुछ इमीटेशन के सेवा॥

× × ×

मेरी तक़रीर[५] का उस मिस पे कुछ क़ावू[६] नही चलता।
जहाँ वंदूक चलती है वहाँ जादू नहीं चलता॥

× × ×

एक ही वोतल से पी होटल मे दोनों ने शराव।
लुत्फ मस्ती उनको आया और तू उल्लू हो गया॥

× × ×

मोहताज[७] दरे[८] वकील व मोख़्तार हैं आप।
सारे अमलों[९] के नाजवरदार[१०] हैं आप॥
आवारा व मुंतशिर हैं मानिन्द गुवार।
मालूम हुआ मुझे जमींदार हैं आप॥

× × ×

ऐनक आँख पे मुंह में मसनवी दांत।
नेचर ने सुखा के कर दिया जिस्म को तांत॥
अव तक है मगर वही हवस हजरत की।
है तूले अमल हनोज शैतान की आंत॥

---

(१) झुका हुआ (२) चौडाई (३) इल्म का दरवाजा (४) बुरी तक़रीर (५) वात करना (६) जोर या बूता (७) हाजतमंद या ग़रीव (८) दरवाजा (९) काम करने वाले (१०) नाज व नख़रा उठाने वाले

हुए इस क़दर मोहज्जब[1] कभी का घर मुँह न देखा।
कटी उम्र होटलों में मरे असपताल जाकर॥

मैं रय्यत[2] हूँ वह शाहाना[3] दिलेरी[4] है कहाँ।
मुझको क्यों रश्क[5] आये वजये मिल्लते[6] अंगरेज पर॥
काँटे बिछ जाते हैं उन लोगों की राहे रिज़्क[7] में।
ख़ौफ[8] आता है छुरी चलती है उनकी मेज पर॥

× × ×

करो न तामीर[9] घर की 'अकबर' हदूद[10] मियुनीसिपल के अन्दर।
यह अहेलकारान बददेयानत[11] बनेंगे फोड़ा बग़ल के अन्दर॥

× × ×

वां शौक़त व जीनत[12] के जो असबाब[13] बहुत हैं।
मानी के यहां गौहरे नायाब[14] बहुत हैं॥
साहब की सी महफिल तो मोअस्सर नहीं लेकिन।
सद शुक्र कि "अकबर" के भी अहबाब बहुत हैं॥

× × ×

झुँझला के बोले उनसे जो लिपटा अँधेरे में।
अँधेर इस तरह का तो देखा कहीं नहीं॥

× × ×

इनायत[15] मुझपे फर्माते हैं शेख व ब्रह्मन दोनों।
मोवाफिक़[16] अपने अपने पाते हैं मेरा चलन दोनों॥
तराने[17] मेरे हम आहंग[18] दैर व काबा हैं एक सा।
जबाँ पर मेरी मौजूं होती है हम्द और भजन दोनों॥

---

(१) बुराइयों से दूर या तहजीब वाला (२) परजा (३) बादशाही (४) बहादुरी (५) हसद या डाह (६) मेल या मज़हब (७) खाना या रोज़ी (८) डर (९) बनाना मकान का (१०) दायरा (११) बुरी नीयत वाले (१२) सजावट (१३) बन्धन (१४) जो चीज़ न पाई जाय (१५) मेहरबानी (१६) अपने से मिलता हुआ (१७) गीत (१८) एक राग।

असीरे[1] दामेज़ुल्फ़े[2] पालिसी[3] मुद्दत से वन्दा है।
फसाहत[4] नज़र लेक्चर है रेयास्त नज़र चंदा है॥

× × ×

सरहद पर वाग़ियों[5] को सिख मारेंगे।
गरदन उर की राम रख मारेंगे॥
क़ायम रहे अल वशीर का यह पर्चा[6]।
हम भी मज़मून कोई लिख मारेंगे॥

× × ×

कौंसिल से हर तरह का क़ानून आ रहा है।
मोतवा[7] से हर तरेह का मज़मूम आ रहा है॥
लेकिन पढ़ूं मैं क्योंकर आंखों की है यह हालत।
अश्क[8] आ रहे थे पहले अब खून आ रहा है॥

× × ×

वाग़ों में तो वहार दरख्तों की देख ली।
कालिज में आके कानवोकेशन[9] को देखिये॥
नमूने काग़ज़ी तो वहुत देखे आपने।
अब कागज़ी[10] तरक्कीये नेशन को देखिये॥

× × ×

पड़ा है कहेत[11] वशर[12] मर रहे हैं फाक़ों[13] से।
खुशी हो क्या मुझे शवरात में पटाकों से॥
बुझी हुई है तबीयत यह रोशनी है फ़ुज़ूल।
उतार लीजिए साहब चिराग़ ताकों से॥

× × ×

---

(१) कैदी (२) वालों का जाल (३) राजनीत (४) मीठे वोल (५) वग़ावत करने वाला (६) अखबार (७) लिखने वाला (८) आंसू (९) उस दिन को कहते हैं जिस दिन लड़कों को यूनीवर्सिटी में डिगरी मिलती है (१०) काग़ज का वना हुआ (११) काल (१२) आदमी (१३) भूख।

दुनियां ही अब दुरुस्त[१] है क़ायम न दीन है।
ज़र[२] की तलब[३] मे शेख़ भी कौड़ी का तीन है॥

× × ×

एक दिन वह था कि दव गये थे लोग दीन से।
एक दिन यह है कि दीन दबा है मशीन से॥

× × ×

चर्चे[४] है न मज़हब के न वह क़िस्सये दिल है।
चर्चे हैं अब अख़बार के और आरटिकल है॥
इस अहेद[५] में मायले[६] सूदे[७] अलहाद जो दिल है।
इसकी तो गौरमेन्ट ही रिस्पान्सेबिल[८] है॥

× × ×

तिल खेत मे मिल जाय तो गोदाम मे ले जायें।
क्या फायदा आरिज[९] पे किसी बुत के जो तिल है॥
तन्ख्वाह के बिल से हमे होती है मसरर्त[१०]।
और शेख यह कहता है कि यह सांप का बिल है॥
गज़ाली[११] और रुमी[१२] की भला कौन सुनेगा।
महफिल मे छेड़ा नग़मये इसपेन्सनर[१३] व मिल[१४] है॥

× × ×

साबिक[१५] के तरीको पे अमल कर नही सकते।
कल आज न था आज को कल कर नहीं सकते॥
इलजाम कहीं मश्क[१६] क़वायद का न लग जाय।
सूफी[१७] भी बहुत कूद उछल कर नही सकते॥

---

(१) ठीक (२) रुपया-पैसा (३) मागना (४) बातचीत (५) ज़माना (६) झुका हुआ (७) तरफ (८) अंग्रेजी शब्द है माने जिम्मेदार (९) गाल (१०) खुशी (११) व (१२) ये आदमियो के नाम है (१३) व (१४) ये दोनों योरप के फिलासेफर थे (१५) पुराना (१६) किसी काम को हर रोज़ करना (१७) जो सिवाय ईश्वर के किसी दूसरे को पूजा न करे।

तसबीह[1] मेरी तो है अताकरदये[2] मुरशिद[3]।
इन अह्मनो के पास तो हैं मोल के माले॥

× × ×

तरकीब तो देखो यह ज़माने के चलन की॥
अफसोस कि इससे कोई वाक़िफ़[4] भी नही है।
गिरजा में तो करनेल व कमिश्नर भी है मौजूद।
मसजिद मे कोई डिपटी व मुंनसिफ भी नही है॥

÷ + +

इस ज़माने मेंजो दिल दहेर[5] से फिर जाता है।
आदमी पाय्ये[6] तहजीब से गिर जाता है॥

+ − +

मोआमला था अरब का खोदाये वाहिद[7] से।
अज़म[8] ने वास्ता[9] रक्खा शराब व शाहिद से॥

+ + +

वेइल्म[10] अगर अकल को आज़ाद करेंगे।
दुनियां तो गई दीन भी वरबाद करेंगे॥
जब ख़ुद नही रहने का किसी अस्ल पे क़ायम।
क्या खाक वह क़ायम कोई बुनियाद[11] करेंगे॥
बारिक कोई कर देगी अता उनको गौरमेन्ट।
या कालोनी अँपनी कोई आबाद करेंगे॥

+ + +

सवत[12] हजार तायरे[13] वदलेहन[14] ने सुनो।
कहने लगा कि भाड़ मे बुलवुल की चोच जाय॥

---

(१) माला (२) दी हुई (३) गुरू (४) जानकर (५) ज़माना (६) लम्बा या पाव (७) एक (८) सिवाय अरब के बाकी सब मुल्कों को फारसी में अजम कहते है और गूंगे को भी आते हैं (९) सरोकार (१०) जाहिल (११) जड़ या नीव (१२) आवाज (१३) चिड़िया (१४) बुरी आवाज़।

उसने कहा मोक़ाबले का कब था यां ख़्याल।
यह तो वह मसल है कि काना हो कोंच जाय॥

× × ×

मसजिद का है ख़्याल न परवाय चर्च है।
जो कुछ है अब तो कालिज व टीचर में ख़र्च है॥

× × ×

इज़्ज़त का है न ओज[1] न नेकी की मौज[2] है।
हमला है अपनी क़ौम पे लफ़्ज़ों की फ़ौज है॥
इस तर्ज़े तबीयत पे हैं अग़ियार[3] ख़न्दाज़न[4]।
लाहौल बाप की है तो मांओं की नौज है॥

× × ×

पीरी[5] ने दांत मुझ पे लगाया है घात से।
बायें तरफ़ की दाढ में है दर्द रात से॥
बारह मसाले एक तरफ़ दर्द एक तरफ़।
पीपल से फ़ायदा है न कुछ तेजपात से॥

× × ×

ख़ूब फ़रमाया यह शाहे जरमनी ने पोप से।
वाज़ हम भी कहते हैं लेकिन दहाना[6] तोप से॥

× × ×

रह गए नाआश्ना[7] अहबाब[8] ग़ायब हो गये।
हमनफ़स[9] दो एक जो बाक़ी थे साहब हो गये॥
वक़्ते बद[10] में कौन करता है रेफ़ाक़त[11] का ख़्याल।
हमनशीं[12] अपने रक़ीबों के मसायब[13] हो गये॥

× × ×

---

(१) ऊँचाई (२) लहर (३) ग़ैर लोग (४) हँसने वाला (५) बुढाई (६) मुँह (७) दोस्त (८) दोस्त (९) एक सांस वाले यानी दोस्त (१०) बुरा वक़्त (११) दोस्ती (१२) साथ बैठने वाले यानी दोस्त (१३) मुसीबत।

किधर जाती है तवये क़ौम इसको कोई क्या जानें।
बसीरत[1] जिनको है वह जाने "अकबर" या ख़ोदा जानें॥

× × ×

तरीकहक[2] में भी वहरेख़ोदा[3] ज़रा चलिये।
फिटिन की राह नहीं है पियादा[4] पा चलिये॥

× × ×

कहा जब ग़ैर को क्यों तूने ऐ गुलरू[5] फंसाया है।
तो बोला दिल्लगी के वास्ते उल्लू फंसाया है॥
इधर चाहेज़कन[6] है उस तरफ हैं जाल गेसू के।
हमारे दिल को उसने करके बेकाबू फंसाया है॥

× × ×

आशिक़ों के भी मोअईयन[7] हो गये हैं अब हकूक।
अहेद[8] अंगरेजी है यह ऐजाने जां शाही गई॥

× × ×

फ़ज्ले[9] ख़ोदा से इज्ज़त पाई आज हुये हम सी. यस आई।
शेख़ न समझे लफज़ अंगरेजी बोले हुये है यह ईसाई॥

× × ×

न रंगे अंजुमन[10] वह है न वह मैकश[11] न वह साकी[12]।
यह दावत क्या है बस है एक अदायेफर्ज[13] एखलाकी॥
न वह मकतब[14] न वह मुल्ला[15] न वह सूरत न वह सीरत[16]।
सेवा नामे ख़ोदा के अब रहा क्या कौम मे बाक़ी॥

---

(१) अकिलमंदी (२) सच्चाई का रास्ता (३) ईश्वर के वास्ते (४) पैदल (५) फूल के मानिन्द चेहरेवाला यानी खूबसूरत माशूक़ (६) ठुड्डी का गड्ढा (७) मोकर्रर (८) ज़माना (९) मेहरबानी (१०) मजलिस (११) शराब पीने वाले (१२) शराब पिलाने वाला (१३ पूरा करना (१४) स्कूल (१५) अरबी व फारसी का पंडित (१६) आदत।

कहाँ वह दावते अहबाब की तय्यारियाँ "अकबर"।
खमोशी से अता करता हूँ बस एक फ़र्जे एखलाक़ी ॥

× × ×

हमने वायज को खूब डाढ़ी नोची।
यह बात मगर न अपने दिल में सोची ॥
मजहब को शिकस्त[1] देके क्या पायेंगे।
आखिर को रहेंगे मोची के मोची ॥

× × ×

थे केक की फिक्र में सो रोटी भी गई।
चाही थी शै[2] बड़ी सो छोटी भी गई ॥
वायज की नसीहतें न मानी आखिर।
पतलून की ताक में लंगोटी भी गई ॥

× × ×

हक़ीक़त[3] मे तो सब जलवा था उनका—
रही एक हालते फर्जी[4] हमारी।
खोदा ही से दोआ पर था भरोसा—
कहीं गुजरी नहीं अर्जी हमारी ॥
खोदा से जब कहा मरता है "अकबर"—
कहा हम क्या कहें मर्जी हमारी।

× × ×

एक़बाल के साथ ऐ ख़िरद तू भी गई।
गैरत[5] के साथ मजहबी बू भी गई ॥
सच कहते हैं हजरते करामत "अकबर"।
रुखसत हुई फारसी तो उर्दू भी गई ॥

× × ×

---

(१) तोड़ना या हराना (२) चीज (३) वास्तव में (४) मानी हुई (५) शर्म।

कालिज में धूम मच रही है पास पास की।
ओहदों[1] से आ रही है सदा[2] दूर दूर की॥

× × ×

पाँव को बहुत झटका पटका जंजीर के आगे कुछ न चली,
वदबीर बहुत की ऐ "अकबर" तकदीर के आगे कुछ न चली।
युरोप ने देखा कर रंग अपना सइयद को मुरीद[3] बना ही लिया,
सब पीरों से तो वह बच निकले इस पीर के आगे कुछ न चली,।

× × ×

जहाँ ने साज़[4] बदला साज़ ने नग़मों[5] की गत बदली।
गतों ने रंग बदला रंग ने यारों की मत बदली॥
फलक[6] ने दौर[7] बदला दौर ने इन्सान को बदला।
गये हम तुम बदल क़ानून बदला सलतनत[8] बदली॥

× × ×

जो काम था घन्टे का निकलता है व पल से।
खुश क्यो न रहें लोग फेरंगी के अमल[9] से॥
तारीख तो खालिद[10] की पढ़ो रात को घर पर।
और दिन को कचेहरी में मिलो नील कमल से।

× × ×

तमाशा देखिये बिजली का मग़रिब और मशरिक़ में।
कलों में है वहाँ दाखिल यहाँ मज़हब पे गिरती है॥

× × ×

मेरी नज़रों में एकसां[11] है शुतुर[12] हों या गऊमाता।
मुझे करते जो वह मदऊ[13] कथा में मै भी झूम आता॥

---

(१) रुतबा (२) आवाज़ (३) चेला (४) बाजा (५) राग (६) आसमान (७) ज़माना (८) राज (९) काम (१०) एक आदमी का नाम है जो बड़ा दानी था (११) बराबर (१२) ऊँट (१३) बोलाना या दावत देना।

पीरेमोगां[१] से रात किया मैंने यह गिला[२] ।
मग़मूम[३] हूँ यहाँ भी मजा कुछ नहीं मिलता ॥

× × ×

जमाना कह रहा है सबसे फिरजा ।
न मन्दिर जा न मसजिद जा न गिर्जा ॥

× × ×

ऐसा शौक न करना "अकबर"-
गोरे को न बनाना साला—
अच्छा—भाई रंग यही है
हम भी काले यार भी काला ॥
रैहमन पुकारी कि निया बुवा—
अजब जानवर है यह काका तुआ ।
बताओ ज़रा अकल मेरी है गुम[४]—
किधर चोंच है और किधर इसकी दुम ॥

× × ×

कर्ज़न[५] व किचनर[६] कि हालत पर जो कल—
वह सनम[७] तशरीह[८] का तालिब[९] हुआ ।
कह दिया मैंने कि है यह साफ बात—
देखलो तुम जन[१०] पे नर[११] ग़ालिब[१२] हुआ ॥

× × ×

पानी पीना पड़ा है पाइप का—
हर्फ़ पढ़ना पड़ा है टाइप का ।
पेट चलता है आख आई है—
शाह एडवर्ड की दोहाई है ॥

(१) माशूक (२) शिकायत (३) रंजीदा (४) खो जाना (५) व (६) यह दोनों वाइसराय थे (७) माशूक (८) खोला या साफ साफ अलहेदा, अलेहदा कहना (९) मांगना (१०) औरत (११) आदमी (१२) फतेहमंद

इस्माल[१] नहीं ग्रेट[२] होना अच्छा—
दिल होना बुरा है पेट होना अच्छा।
पंडित हो कि मोलवी हो दोनो बेकार—
इन्सान को ग्रेजुयट होना अच्छा॥

× × ×

बन पड़े तो क़िबला ही बनना मुनासिब[३] है तुझे।
दिक़्क़तो[४] मे वह फंसा जो स्कवायर हो गया॥
दीदनी है यह तमाशाये मशीने इन्क़लाब[६]।
बाप तो किबला थे बेटा स्कवायर हो गया॥
शेख़ साहब यह तो अपने अपने मोक़े की है बात।
आप किबला बन गए मै स्कवायर हो गया॥
तख़लिये[७] में आज मैने उनका बोसा[८] ले लिया।
देखिये डिगरी जो हो दावा तो दायर हो गया॥
अब तो मुझको भी मुनासिब है कि पटवारी बनूं।
यार को शौके हिसाबे माल व सायर हो गया॥
फिक्र दुनियां ने भुलाया सब वह कोरान[९] व हदीस।
मोलवी भी महवे क़ानून व नज़ायर हो गया॥

× × ×

पका लें पीस कर दो रोटियां थोड़े से जौ लाना।
हमारी क्या है ऐ भाई न मिस्टर है न मौलाना॥

× × ×

आशाइशें उम्र के लिये काफी है—
बीबी राजी हों और कलक्टर साहब।

× × ×

(१) छोटा (२) बड़ा (३) ठीक (४) तकलीफ (५) देखने के क़ाबिल (६) उलट-फेर (७) अकेले मे (८) चुम्बन (९) व (१०) यह मुसलमानों की मज़हबी किताब है (११) आराम्

अन्धेर मचा है जेरफलक[१] खिलक़त[२] भी है चुप और राज भी चुप ।
हम देख रहे है आँखो से पर कल भी थे चुप और आज भी चुप ॥
साहबज़ादे[३] नशे मे हैं और बीफ[४] कुंवर जी का है टिफिन ।
हैं मोलवी साहब क़िबला भी चुप और पंडित जी महाराज भी चुप ॥

× × ×

पर्दा मे ज़रूर है तवालत[५] बेहद—
इन्साफ पसन्द को नही चाहिये हट ।
तशबीह[६] बुरी नहीं अगर मैं यह कहूँ—
बेग़म है पेचवान लेडी सिगरेट ।

× × ×

हज़रते "अकबर" से सुनकर यह लतीफा[७] बज़्म में ।
सब हँसे कुछ रह गये ख़ूने जिगर के पीके घूंट ॥
शेख जी रफरफ बने फ़िरते थे पहले चर्ख पर ।
चश्मबद्दूर[८] अब बने हैं आप कमसरियट के ऊँट ॥

× × ×

कूदते फिरते है यह बाग़ मे मल्लहू[९] की तरह ।
बाग़वां दबके हुये बैठे है उल्लू की तरह ॥
इन नई रोशनी वालों से नहीं है कुछ फैज[१०] ।
शबेतारीक[११] मे चमका करें जुगनू की तरह ॥
आगई जुल्फे मिसां जुल्फे बुता पर ग़ालिब ।
पेच होते थे बहम[१२] अफई[१३] व रासू[१४] की तरह ॥
"अकबर" इस अहेद मे लो सब्र व तहम्मुल[१५] से जो काम ।
इससे बेहतर है कि ग़ुस्सा करो बाबू की तरह ॥

---

(१) आसमान के नीचे (२) पब्लिक (३) लड़के को कहते है (४) गाय का मांस (५) परेशानी (६) मिसाल देना (७) मज़ाक की बात (८) बुरी निगाह से दूर (९) बन्दर (१०) फायदा (११) अंधेरी रात (१२) आपस में (१३) काला सांप (१४) नेवला (१५) सब्र ।

तोहमत[१] ये है शुबहा[२] व हेकारत[३] क नज़र—
पलन पे गुस्सा व शरारत की नज़र।
बेहतर है यही बरहना[४] फिरिये "अकबर"—
शायद पड़ जाय इनकी रग़बत की नज़र।

× × ×

जो दोनों साथ पढ़ें तो यही मुनासिब है।
कि अपने घर में क्रिसमस भी कर तो ईद भी कर॥
खोदा करे कोई बुत आके यह कहे मुझसे।
बिठा भी ले मुझे घर में मुझे मुरीद[५] भी कर॥
जो सुन चुके मेरी गज़लें तो बोले ला चन्दा।
जो हिनहिनाया है एतना तो आज लीद भी कर॥

× × ×

उन्हें शौके इबादत[६] भी है और गाने की आदत भी।
निकलती हैं दोआयें उनके मुँह से ठुमरियाँ होकर॥
तआल्लुक़[७] आशिको माशूक़ का तो लुत्फ रखता था।
मजे अब वह कहाँ बाक़ी रहे बीवी मियाँ होकर॥
नथी मुतलक़[८] तवक्क़ा[९] बिल बना कर पेश[१०] कर दोगे।
मेरी जां लुट गया मैं तो तुम्हारा मेहमां होकर॥
हक़ीक़त[११] में मैं बुलबुल हूँ मगर चारे की ख्वाहिश में।
बना हूँ मेम्बर कौंसिल यहाँ मिट्ठू मियाँ होकर॥
निकाला करती है घर से यह कह कर तू तो मजनू है।
सता रक्खा है मुझको सास ने लैला की माँ होकर॥
रक़ीबे सिफलाखू[१२] ठहरे न मेरी आह के आगे।
भगाया मच्छरों को उनके कमरों से धुआं होकर॥

---

(१) बुराई करना (२) शक (३) नफरत करना (४) नंगा (५) चेला (६) पूजा करना (७) लगाव (८) बिलकुल (९) उम्मीद रखना (१०) सामने रखना (११) असलियत में (१२) कमीनी आदत वाला।

शमा[१] से तसबीह[२] पा सं‌कते हैं यह अइयाश[३] अमीर ।
रात भर पिघला करें दिन भर रहें वालायताक[४] ॥

× × ×

हिन्दू तनते है थाम कर गाय की सींग ।
आग़ा गरमी देखाते हैं वेच के हींग ॥
लेकिन हजरत को है यह किस चीज पे नाज ।
कालिज मे डटे हुये उड़ाते हैं जो डींग ॥

× × ×

खुशी से मैंने किये यह नफीस[५] आम क़बूल[६] ।
अदायशुक्र[७] में अब हो मेरा सलाम क़बूल ॥
न मैं सोख़न[८] का हूँ ताजिर[९] न तालिबे[१०] शोहरत ।
इसी से करती है पब्लिक मेरा कलाम कबूल ॥
जमाना देखिये कहते हैं पंडित अज रहे तान ।
मियां हमारी भी हो जाय राम राम क़बूल ॥
वहीद मुवहे बनारस की मौज में हैं पड़े ।
भला वह करने लगे क्यों अवध की शाम क़बूल ॥
मिसों के होते हुये क्यो बुतों को मैं दिल दूँ ।
मिले हलाल तो फिर क्यों करूँ हराम क़बूल ॥
मुनीर[११] सूरते महरमुनीर[१२] तावां[१३] हो ।
करें ख़्वास[१४] व अवाम[१५] इनका एहतेराम[१६] कबूल ॥
न हो जो ह्विसकिये[१७] लंदन तो घर का ठर्रा हो ।
नहीं है बंग का मुझको तो कोई जाम क़ूबूल ॥

---

(१) मोमबत्ती (२) किसी को दूसरे से मिसाल देना (३) आराम करने वाला (४) ताक़ पर (५) उमदा (६) मानना (७) देने वाले की तारीफ करना (८) बात कहना (९) सौदागर (१०) चाहने वाला (११) चमकदार (१२) चमकदार सूरज (१३) चमकने वाला (१४) खास लोग (१५) आमलोग (१६) इज्जत करना (१७) विलायती शराव ।

मास्टर साहब का इल्म इस वक्त गो है नेक नाम ।
अहलेदानिश[1] में मगर मेरा फर्ज़[2] है एहतराम ॥
बात बिलकुल साफ है पेचीदगी[3] कुछ भी नहीं ।
मैं हूँ सादी[4] का भतीजा वह हैं मिलटन[5] के ग़ुलाम ॥

× × ×

तुझको किया किसी की अदा ने फिदाय गुल ।
मुझको किया किसी की अदा ने फिदाय कौम ॥
आग्रंदलीव[6] मिल के करें आह व जारियां[7] ।
तू हाय गुल पुकार मै चिल्लाऊँ हाय क़ौम ॥

× × ×

आप की फुर्कत[8] मे मै कल रात भर सोया नहीं ।
लेकिन इतनी बात थी गाता रहा रोया नहीं ॥
नोश जां फरमायें हजरत शौक़ से यह नाशता ।
छः बजे हैं मैने तो मुँह भी अभी धोया नहीं ॥

× × ×

बोसा कैसा कि गिलौरी[9] भी नही पाता हूँ ।
बस कलाम अपना उन्हे जाके सुना आता हूँ ॥
वह यह फरमाते है क्या खूब कहा है वल्लाह ।
मैं यह कहता हूँ कि आदाब बजा लाता हूँ ॥

× × ×

हम क्या खाली हवाई गोला छोड़ेंगे ॥
किस जोग[10] के बल पर अपना चोला छोड़ेंगे ।
हजरत ने तो छावनी में रक्खी है दुकान ।
हम क्यों अपना मोहल्ला टोला छोड़ेंगे ॥

---

(१) अक्लमन्द लोग (२) ज्यादा (३) उलझाव (४) फारसी का एक मशहूर शायर (५) अंगरेजी का एक लेखक (६) बुलबुल (७) रोना चिल्लाना (८) जुदाई (६) लगा हुआ पान (१०) तप ।

सूप[१] का शायक[२] हूं यख़नी होगी क्या—
चाहिये कटलट यह कीमां क्या करूं॥
लेथब्रज की चाहिये रीडर मुझे—
शेख़ सादी की करीमां क्या करूं॥
खींचते हैं हर तरफ तानें हरीफ[३]—
फिर मैं अपने स्वर को धीमा क्या करूं॥
डाक्टर से दोस्ती लड़ने से बैर—
फिर मैं अपना जान बीमां क्या करूं॥
चांद मे आया नजर ग़ारे[४] मोहीब—
हाय अब ऐ माह सीमां क्या करूँ॥

× × ×

ज़ोर पर है शहर मे ताऊन चारा क्या करूं।
लाट साहब तक हैं चुप फिर मैं बेचारा क्या करूं॥

× × ×

युरोप वाले जो चाहे दिल मे भरदें।
जिसके सर पर जो चाहे तोहमत धरदें॥
बचते रहो इनकी तेजियो से "अकबर"।
तुम क्या हो खोदा के तीन टुकड़े करदें॥

× × ×

कोठी मे जमां है न डिपाजिट है बेंक्स मे।
कल्लाश[५] कर दिया मुझे दो चार थैंक्स में॥

× × ×

शबों[६] मे कोर्स दिन मे फारमूला वर्क करते हैं।
अदीमउलफुर्सती[७] से उनकी उल्फत तर्क[८] करते हैं॥

(१) अंगरेज़ी शोरवा (२) चाहने वाला या शौकीन (३) एक तरह के रोज़गारी (४) गडढा (५) ग़रीब (६) रातो में (७) कम वक्त मिलना (८) छोड़ना

गो कि वह खाते पुडिंग और केक हैं ।
फिर भी सीधे हैं नेहायत[1] नेक हैं ॥
जब मैं कहता हूँ कि गिव मीं किस डियर ।
सरझुका कर कहते यु में टेक हैं ॥

× × ×

हाले दुनियां से बेख़बर[2] हैं आप ।
गो तक़द्दुस-समआब[3] बेशक[4] हैं ॥
शेख़ जी पर यह कौल[5] सादिक[6] है ।
चाहेज़मज़म[7] के आप मेढक हैं ॥
शेख़ जी को जो आ गया गुस्सा ।
लगे कहने यह फेंक कर धुस्सा ॥
तुम हो शैतान के मोतीय[8] व मुरीद[9] ।
तुमको हर एक जानता है पलीद[10] ॥
है तुम्हारी नमूद[11] बस एतनी ।
जिस तरह हो पड़ी परेड़ पे लीद ॥

× × ×

कल मस्त ऐश व नाज थे होटल के हाल में ।
अब हाय हाय कर रहे हैं अस्पताल में ॥
दुनियां इसे करार दो और आखिरत यह है ।
सुन लो कि साजे मानिये "अकबर" की गत यह है ॥

× × ×

सुनां के मिसरा यह शेख़ साहब बहुत ज्यादा हंसा चुके हैं ।
हमारी गरदन वह क्यों न मारें जो नाक अपनी कटा चुके हैं ॥

---

(१) बहुत (२) जिसको कुछ भी ख़बर न हो (३) वह जगह जहां आदमी लौट कर जाय जैसे अपना घर (४) जिसमें कोई शक न हो (५) बात (६) सच्चा (७) काबे के पास एक कूआं है (८) ख़ादिम या हुक्म माननेवाला (९) चेला (१०) गंदा या नापाक (११) निशान

रक़ीबों ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में।
कि "अकबर" नाम लेता है ख़ोदा का इस ज़माने में॥

× × ×

गये कोल हाफ़िज मोहम्मद हुसेन—
तो मेंहदी से बोले यह हाजी मदन।
कि कर दीजिए उनकी दावत जरूर—
वह है साहबे दानिश[1] व इल्म व फन॥
वह है मोलवी आप भी मोलवी—
ज़रा देख लें रौनके अंजुमन[2]
वह बोले मेरा इनका क्या जोड़ है—
मैं गेलकिंग हूँ वह हैं असट्रेलियन॥

× × ×

बोलें जाड़ों मे लाला गंगादीन—
धूप से मुझको होती है तसकीन[3]।
दादी सूरज को थाम लेता हूँ—
गुद्दोवा यह कि घाम लेता हूँ॥

× × ×

मज़हब ने पुकारा ऐ "अकबर" अल्लाह नहीं तो कुछ भी नहीं।
यारों ने कहा यह क़ौल गलत तंख्वाह नहीं तो कुछ भी नहीं॥
हर बात पे तुम क़समें खाना जब याद करे राजा साहब।
दरबार अवध में ऐ "अकबर" वल्लाह नहीं तो कुछ भी नहीं॥
मिलने का किसी से है यह मज़ा एक जोश तबीयत हो पैदा।
उस बज़्म[4] मे मेरे पहुँचने पर अख़्ख़ाह नहीं तो कुछ भी नहीं॥

× × ×

हम ऐसी कुल किताबें क़ाबिले ज़पती समझते हैं।
कि जिनको पढ़ के लड़के बाप को ख़पती समझते हैं॥

---

(१) अक़िलमंद (२) महफिल (३) दारस (४) मजलिस या महफिल

शेख़ की वह धज नहीं वह शेख़ की डाढ़ी नहीं।
दोस्ती मज़हब से है पर इस क़दर गाढ़ी नहीं॥

× × ×

हैरां हैं इस ज़माने में हम जी के क्या करें।
जायज़[1] सही शराब मगर पी के क्या करें॥
तालीम ऊँचे दर्जे की होती नहीं नसीब।
फिर घर में बैठ कर बजुज़ ए० बी० के क्या करें॥

× × ×

है अमल[3] अच्छे मगर दरवाज़ये जन्नत है बन्द।
कर चुके हैं पास लेकिन नौकरी मिलती नहीं॥

× × ×

शौक़ लैलाये सिविल सर्विस ने मुझ मजनून को।
इतना दौड़ाया लंगोटी कर दिया पतलून को॥
जामये हस्ती के टुकड़े उड़ रहे है नेज़ा[4] में।
फेंकिये अब कोट को तह कीजिए पतलून को॥

× × ×

क़ौम से मय को सिफारिश क्या करूँ—
नेक को शैतान कर देती है यह।
एक जौहर है फक़त इसमें मुफीद—
ख़ुदकुशी[5] आसान कर देती है यह॥

× × ×

ग़जल मेरी सुनते नही शेख़ जी—
तक़द्दुस[6] की भी इन्तेहा हो गई।
तकुल्लुफ के पकवान में दिन ढ़ला—
हमारी तो पूरी सजा हो गई।

---

(१) दुरुस्त या वाजिब (२) सेवाय (३) काम (४) मरने का वक़्त (५) आत्म-हत्या करना (६) पाक होना।

इज़ाफ़ा हुई मुझसे गंदुमये[2] मय[3]—
यह पोते से भी एक ख़ता[4] हो गई।
यह थी क़ीमते रिज़्क़[5] टूटे जो दांत—
ग़रज़ कौड़ी कौड़ी अदा हो गई॥

× × ×

प्यारा है हमको शेख़ हमारा बुरा सही—
चाक़ू विलायती. नही देसी छुरा सही।
"अकबर" का नग़मा क़ौम के हक़ में मुफीद है—
दिल को तो गर्म रखता है वह बेसुरा सही॥

× × ×

इल्म पर भी इश्क़ की तासीर[8] आख़िर पड़ गई।
तख़लिये[9] की बात पब्लिक के दिलो में गड़ गई॥
वस्ल की शब मैंने उस बुत से लड़ाई थी ज़बान।
यह असर इसका हुआ उर्दू से हिन्दी लड़ गई॥

× × ×

लज्ज़ते[10] नानेजुईं तुझको मोबारक ऐ शेख़।
मुझ गुनहगार को है सिर्फ़ मुतनजन काफ़ी॥
हज़रते ख़िज्र टिकट मुझको दिला दें "अकबर"।
रहनुमाई[11] के लिये है मुझे अंजन काफ़ी॥

× × ×

अमूर[12] मुल्की की बहेस मे तुम जो हिन्दुओ के बनोगे साथी।
न लाट साहब ख़िताब देंगे न राजा जो से मिलेगा हाथी॥
न अपना मक्खन वह तुमको देंगे न अपनी पूरी वह बांट देंगे।
पड़ेगा मौक़ा जो कोई आकर तो दोनों ही तुमको छांट देंगे॥

---

(१) ज्यादती (२) गेहूँ (३) शराब (४) गुनाह (५) खाना (६) राग (७) फायदेमन्द (८) असर (९) छोड़ देना या अकेलापन (१०) मज़ा (११) रास्ता दिखाना (१२) काम।

मगर वह रहते हैं दूर तुमसे यह लोग साथी है और पड़ोसी ।
मिले जुले हैं सोसायटी में अहीर उनमें तो हम में घोसी ॥
हजल को अपनी जो छोड़कर तुम उन्हीं की शिरकत[1] करो जटलमें।
तो यह तो कोई न कह सकेगा तुम्हारे दुश्मन कहां बग़ल में ॥
न होगी हुक्काम को भी दिक़्क़त जो होगी एक जा हर एककी ख़्वाहिश ।
ज़रूरत उनको भी यह न होगी करें हर एक से अलहदा ग़रकश ॥
जो मांगोगे एक फल मोसल्लम[2] वह काट कर एक फांक[3] देंगे ।
चलाओगे फिर भी मुँह तो सब को वह एक लाठी से हांक देंगे ॥

× × ×

भाई मुझे कल यह बात थी सुझी की—
तफरीक[4] उड़ा दो शिया सुन्नी की ।
जैसा मौक़ा हो बस बिठा दो वह नगीं—
हीरे की न शर्त हो न जिद चुन्नी की ॥

× × ×

मिलता नहीं गोश्त ख़ैर हड्डी ही सही—
कुछ खेल ज़रूर है फिसड्डी ही सही ।
मौक़ा जो परेड पर क़वायद का नहीं—
चन्दा तहसील कर कबड्डी ही सही ॥

× × ×

वाह क्या धज है मेरे भोले की—
शक्ल कोले की हैट सोले की ।

× × ×

मेरी फोगा[5] पे मिसे नाशेनास[6] बोल उठी ।
कि बाबुवों में तो आदत है गुल मचाने की ॥

---

(१) मेल जोल (२) पूरा (३) टुकड़ा (४) अलग करना (५) शोर
(६) जिससे कोई मेल मुलाक़ात न हो ।

वजायें शौक़ से नाक़ौस[१] ब्रह्मन "अकबर"।
यहाँ तो शेख़ को धुन है बिगुल बजाने की॥

× × ×

कोई शोरिश नहीं है हर तरह से खैर सल्ला है।
न सरगर्मी पुलिस की है न जारी मारशल्ला है॥
यह कलकत्ता[२] की शोखी और यह ढाके की अदा सजी।
वह एक फर्शी कबड्डी है यह लफ्ज़ी गेंद बल्ला है॥
यह देसी वरजिशें[३] हैं मगरबी जमनास्टिक है वह।
नये सन की तनावें[४] हैं क्रिसमस का पुछल्ला है॥

× × ×

अपनी गिरह[५] से कुछ न मुझे आप दीजिये—
अख़बार मे तो नाम मेरा छाप दीजिए।
देखो जिसे वह पानियर आफिस में है डटा—
वहरेख़ोदा[६] मुझे भी कहीं छाप दीजिए॥
चश्मेजहा[७] से हालत असली छिपी नहीं—
अख़बार में जो चाहिए वह छाप दीजिए।
दावा बहुत बड़ा है रेयाज़ी[८] में आपको—
तुले[९] शबेफेराक़[१०] को तो नाप दीजिए॥
सुनते नहीं हैं शेख़ नई रोशनी की बात—
अंजन की उनके कान में अब भाप दीजिए।
उस बुत के दर पे गैर से "अकबर" ने कह दिया—
ज़र[११] ही मैं देने लाया हूँ जान आप दीजिए॥

× × ×

---

(१) परेशानी (२) कलकत्ता कांग्रेस (३) कसर (४) रस्सि-यां (५) गांठ (६) ईश्वर के लिये (७) दुनियां की आंख (८) हिसाब (९) लम्बाई (१०) जुदाई की रात (११) रुपया-पैसा

शेख़ साहब देख कर उस मिस को साकित[१] हो गये।
मास्टर साहब बहुत कमजोर थे चित हो गये॥

× × ×

न कुछ इन्तेज़ारे गज़ट कीजिए—
जो अफसर कहे बस वह झट कीजिये।
बहुत भाती है इसकी फिरती मुझे—
दोवा है कि लड़की यहं नट कीजिए॥
कहां का हलाल और कैसा हराम—
जो साहब खिलाये वह चट कीजिए।
सिखाते हैं तक़लीद[२] इंगलिश जो आप—
कहीं मुफलिसों को न पट कीजिए।
बिगड़ जायगा मेम से सारा खेल—
बस इन लावतों[३] पर न हट कीजिए।
बहुत शौक़ अंगरेज़ बनने का है—
तो चेहरे पे अपने गिलट कीजिए॥
अजल[४] आई "अकबर" गया वक्त बहेस—
अब इफ[५] कीजिए और न बट[६] कीजिए।

× × ×

नब्ज़ आपकी है सुस्त बदन आपका यख़[७] है।
शायद चली बेगम से किसी बात पे चख़ है॥
पहुँचा मैं फलक पर जो नजर तुमने मिलाई।
शायद कि मैं तुक्कल[८] हूं नज़र आपकी नख़[९] है॥
अपने शजरे[१०] हुस्न की वह खैर मनायें।

---

(१) चुप (२) किसी काम की जिम्मेदारी लेना (३) खिलौना (४) मौत (५) अंगरेजी शब्द है माने अगर (६) अंगरेजी शब्द है माने लेकिन (७) बर्फ की तरह ठंडी (८) एक किस्म का पतंग है जो लोग पहले उड़ाया करते थे (९) मंझा (१०) पेड़।

उश्शाक़ की कसरत[1] है कि यह फौज मलख़[2] है॥
जज़िये[3] को सिधारे हुये मुद्दत हुई "अकबर"॥
अलबत्ता अलीगढ़ की लगी एक यह पख़ है॥

× × ×

दिन तो जिन्नात की ख़िदमत मे बसर होता है।
रात परियो की ख़ुशामद मे गुज़र जाती है॥
सेल्फ़ रिसपेक्ट का वक़्त आये कहाँ से "अकबर"।
देख तो ग़ौर से दुनियाँ को किधर जाती है॥

× × ×

सूये[4] फलक चले जो गुब्वारे में बैठ कर।
मुँह हासिदों[5] के ग़ुस्से व ग़ैरत[6] से मुड़ चले॥
अहबाब ने कहा कि मोबारक हो यह उरूज[7]।
शुकरे खोदा कि अब तो यह बाबू भी उड़ चलै॥

× × ×

नौकरो पर जो गुज़रती है मुझे मालूम है।
बस करम[8] कीजिये मुझे बेकार रहने दीजिए॥
राह में लैसेंस ही काफी है इज्जत के लिए।
बस यही ले लीजिये तलवार रहने दीजिए॥
डाक्टर साहब से मिलना आपका अच्छा नही।
बैठिये घर मे मुझे बीमार रहने दीजिए॥
तेज़िये मय का असर था नेज़ा की आमद न थी।
ख़ैर उठिये तोबा इस्तेग्फार[9] रहने दीजिए॥

× × ×

---

(१) ज्यादती (२) टिड्डी (३) एक टैक्स है जो मुसलमानी हुकूमत में हिन्दुओं पर लगा था (४) तरफ़ (५) हसद करने वाला (६) शर्म (७) ऊँचाई (८) मेहरबानी (९) बुराई की क्षमा मांगना।

शूमेकरी[1] शुरू जो की एक अजीज ने ।
जो सिलसिला मिलाते थे बहराम व ग़ौर से ॥
पूछा कि भाई तुम तो थे तलवार के धनी ।
मोरिस[2] तुम्हारे आये थे ग़जनी व ग़ौर से ॥
कहने लगे है इसमें भी एक बात नोक की ।
रोटी हम अब कमाते है जूते के जोर से ॥

× × ×

शेख़ जी घर से न निकले और मुझसे कह दिया ।
आप बी० ए० पास है और बन्दा बीबी पास है ॥

× × ×

मुमकिन नहीं ऐ मिस तेरा नोटिस न लिया जाय ।
गाल ऐसे परीजाद[3] हैं और किस न लिया जाय ॥

× × ×

लंदन में बिगड़ जाओगे विश्वास यही है ।
तुम पास रहो मेरे बड़ा पास यही है ॥

× × ×

हर एक रिमार्क आपका अक़रब[4] का नेश[5] है ।
मुझको भी रंज ग़ैर का सीना भी रेश[6] है ॥
मुझसे कहा कि गोज़ शुतुर[7] है तेरा सोखन[8] ।
उससे यह कह दिया कि तू गोबर गनेश है ॥

× × ×

कुछ शक नही कि हजरते वायज हैं खूब शख्श[9] ।
यह और बात है कि ज़रा बेवकूफ है ॥

× × ×

---

(१) अंगरेजी शब्द माने जूता बनाना (२) बाप-दादा या बुजुर्ग (३). परी की तरह खूबसूरत (४) बिच्छू (५) डंक (६) जखमी (७) ऊँट (८) बात (९) आदमी

की है मेदे ने कमेटी पेट में-
वाईला[1] हर रग के अन्दर ठीक है।
हजरते नजला[2] है सदरे अंजुमन[3]-
दम बदम उनकी भी एक तहरीक है॥

× × ×

तेरे कदम से रौनक[4] शहर प्रयाग है।
यानी तेरे ही दम से बुतों का सोहाग है॥
भड़की है दिल की आग ग्वालिन के इश्क़ में।
अहबाब हंसते हैं कि यह कंडे की आग है॥

× × ×

जब कहा गेसू[5] का बोसा दीजिए दिल लीजिये।
हॅस के बोले आपको सौदा[6] है मुसहिल[7] लीजिये॥

× × ×

दिल में जो पड़ गई हैं गिरह[8] खोल डालिये।
एक दम में कुल मोताये[9] सोखन[10] तोल डालिये॥
तरकीब है तरक़्क़िये उर्दू की बस यह खूब।
जो आप बोल सकते हैं सब बोल डालिये॥

× × ×

हमसे शबेवेसाल[11] वह बेमेल हो गये।
अफसोस इन्टरेंस में हम फेल हो गये॥
दरगाह[12] के चिराग को छोड़ा बराय लैम्प।
सब की नजर मे घी से मगर तेल हो गये॥
बूढ़ों ने पहले लड़कों को खुद ही बनाया खेल।
उनकी नजर मे आप ही अब खेल हो गये॥

---

(१) अंगरेजी शब्द है माने क़ायदा क़ानून (२) ज़ोकाम (३) सभापति (४) सजावट (५) बाल (६) पागलपन (७) जुल्लाब (८) गांठ (९) पूंजी (१०) बातचीत (११) मिलन की रात (१२) मक़बरा।

ऐ शेख जब नकेल नही दस्ते[1] कौम मे।
फिर क्या खुशी जो ऊँट तेरे रेल हो गये॥
हम भी कुलेल करने लगे गाय की तरह।
इस मुल्क मे भी हजरते गऊ[2] खेल हो गये॥

× × ×

मैंने जो कहा कल इंतेजाम आपका है॥
है फायदा आपका यह काम आपका है॥
कहने लगे मुसकुरा के यह सब है सही।
लेकिन खुश हूजिये कि नाम आपका है॥

× × ×

बाबू जी का वह बुत हुआ नौकर—
गैर उसको पयाम[3] देता है॥
बाबू कहते हैं वह न जायेगा—
मेरे अन्डर में काम देता है॥

× × ×

वास्ता कम हो गया इसलाम के कानून से।
दब गई आखिर मुसलमानी मेरी पतलून से॥

× × ×

अब कहाँ तक बुतकदे[4] में सर्फ[5] ईमा कीजिये।
ताकुजा[6] इशके बुताने सस्त[7] पैमा[8] कीजिए॥
है यही बेहतर अलीगढ़ जाके सय्यद से कहूँ।
मुझसे चंदा लीजिए मुझको मुसलमां कीजिये॥

× × ×

उनको क्या काम है मुरौव्वत से—
अपने रुख से वह मुँह न मोड़ेंगे।

---

(१) हाथ (२) गाय (३) संदेशा (४) मंदिर (५) खर्च (६) कहा तक (७) ढ़ीला (८) वादा।

जान शायद फरिशते छोड़ भी दें-
डाक्टर फीस को न छोड़ेंगे ॥

× × ×

राह तो मुझको बतादी खिज्र[१] ने-
ऊँट का लेकिन केराया कौन दे।
अब तो जागो एशियाई भाइयो-
नींद में ग़फलत की सदियों[२] सो लिये ॥
हो मोबारक जुस्तजूये[३] खिज्र उन्हे-
हम तो अब अंजन के पीछे हो लिये।
अब थियेटर मे हंसेंगे जाके ख़ूब-
खानकाहों[४] में तो बरसो रो लिये ॥

× × ×

होता है नफा[५] योरोपियन नान पाव से।
मैं ख़ुश हूँ एशिया के ख़ेयाली पोलाव से ॥
ईमान वेचने पे है अब सब तुले हुये।
लेकिन खरीद हो जो अलीगढ़ के भाव से ॥
धमका के बोसा लूँगा रुखे रश्के[७] माह का।
चंदा वसूल होता है साहब दबाव से ॥

× × ×

हिन्दी मुसलिम मे हिन्द की नीव भी है-
अफतार[८] में है खजूर तो सेव भी है।
अल्ला अल्ला है जवां पर वेशक[९]-
लेकिन एक रंग बम महादेव भी है ॥

× × ×

---

(१) एक पैग़म्बर का नाम है (२) सैकड़ो वर्ष (३) ढूंढ़ना (३) साधुओं के रहने का मकान (४) फायदा (५) गाल (६) हसद (७) चांद (८) रोज़ा खोलना (९) ज़रूर।

बुरा हुआ कि रक़ीबों में बढ़ गये बाबू।
जरा सी बात हुई और यह सूये[1] थाना चले॥

\+ + +

अबस[2] उनका गिला[3] है मुस्तग़ीसा[4] बोलती क्यों है।
कोई पूछे तो नाहक़ तुमने ढाली ओलती क्यों है॥

\+ + +

जो अकल खरी थी की वह खोटी उसने।
अच्छे अच्छों से छीनी रोटी उसने॥
मस्तों पे शराब फाका मस्ती लाई।
पतलून को कर दिया लंगोटी उसने॥

\+ + +

कहा जो मैंने कि उनकी अदा अनोखी है।
कहा बुतो ने कि उर्दू मियां को चोखी है॥

\+ + +

नोकता यह सुना है एक बंगाली से।
करना हो बसर जो तुम को ख़ुशहाली[5] से॥
खाली हो जगह तो अपने भाई को दिलाओ।
ग़ुस्सा आये तो काम लो गाली से॥

\+ + +

इनकी तहरीकों[6] से यों रहती है दुनियां बेचैन।
जिस तरह पेट में बीमार के बाई दौड़े॥
मेम्बरी के लिये लपका मेरी जानिब वह ग़ोल।
गाय मोटी नजर आई तो कसाई दौड़े॥

\+ + +

---

(१) तरफ (२) बेफायदा (३) शिकायत (४) फरियाद करने वाली (५) आराम से (६) हिलना।

मार[१] व कज़्दुम[२] रह गये कीड़े मकोड़े रह गये।
सूरतें तो हैं मगर इन्सान थोड़े रह गये॥
ख़िज्र उनका[३] हो गये मूज़ी[४] बने हैं सद्दे राह[५]।
गिर गये संगे[६] निशां सड़कों पे रोड़े रह गये॥
परदादर[७] की राय सुनकर बीबियां कहने लगीं।
अब हमारे वारिस ऐसे ही निगोड़े रह गये॥
शेख़ साहब चल बसे कालिज के लोग उभरे हैं अब।
ऊँट रोख़सत हो गये पोलो के घोड़े रह गये॥

× × ×

जो वक़्त ख़तना मैं चीख़ा[८] तो नाई ने कहा हंसकर।
मुसलमानी में ताकत ख़ून ही बहने से आती है॥

× × ×

आशिकी का हो बुरा उसने बिगाड़े सारे काम।
हम तो ए० बी० मे रहे अग़ियार बी० ए० हो गये॥

× × ×

नाक रगड़ी बरसों इस अरमान[९] में।
सुन लें मेरी बात एक दिन कान में॥

× × ×

क़िस्सये मन्सूर सुनकर बोल उठी वह शोख़[१०] मिस।
कैसा अहमक़[११] लोग था पागल को फांसी क्योंदिया॥
काश[१२] ऐ "अकबर" वही हालत मुझेभीपेश[१३]आये।
और यह काफिर पुकारे दरपनाहेमनबेआ[१४]॥

× × ×

---

(१) सांप (२) बिच्छू (३) एक जानवर का नाम है (४) दुःख देने वाले (५) रास्ते की दीवार (६) पत्थर (७) परदा रखने वाले (८) चिल्लाया (९) आरज़ू (१०) दिलेर या चालाक (११) बेवक़ूफ़ (१२) ईश्वर करे (१३) सामने (१४) मेरे साये में आ।

कहते हैं "अकबर" यह तेरी अंकल का क्या फेर है।
तबा[1] तेरी इस नई तहजीब से क्यों मेर है॥
अर्ज करता[2] हूँ कि मैं भी हूँगा हाजिर अनक़रीब[3]।
हो चुका हूँ पीर[4] बस नाबालग़ी की देर है॥

+ + +

मिलता नहीं घी तो खुश्क रोटी ही सही।
न्यामत जो बड़ी नहीं तो छोटी ही सही॥
मैं क़ौम की फरबेही[5] का मुशताक़[6] नहीं।
बस जाइये मेरी अकल मोटी ही सही॥

+ + +

नफरत थी मुझको बेशक मच्छर के बोलने से।
कहता था अपने दिल में बेचारा क्या बुरा है॥

+ + +

आखिर खुला यह ओकदा[7] नफरतका मुझको "अकबर"।
आवाज बेतुकी है कमबख्त बे सुरा है॥

+ + +

निकाला शेख को मजलिस से उसने यह कह कर।
यह बेवकूफ है मरने का जिक्र करता है॥

+ + +

तुम नाक चढ़ाते हो मेरी बात पे ऐ शेख।
खींचूंगा किसी रोज मैं अब कान तुम्हारे॥

+ + +

आदत जो पड़ी हो हमेशा से वह दूर भला कब होती है।
रक्खी हो चुनौटी पाकिट में पतलून के नीचे धोती है॥

+ + +

(१) तबीयत (२) कहता हूँ (३) जल्दी या अभी (४) बूढ़ा (५) मोटापा (६) चाहने वाला (७) गांठ या बात।

न तू अंगरेज़ बने हम न मुसलमान रहे।
उम्र सब मुफ्त में खोया किये नादान रहे॥
ताक़त इसलाम की कहती थी मुसलमानों से।
जब मैं जानूं कि मेरे बाद मेरा ध्यान रहे॥
उनकी सब सुनते हैं अपनी नहीं कह सकते कुछ।
क्या कयामत है ज़बां कट गई और कान रहे॥
थी बहुत उनको मुसलमानों की तहज़ीब की फ़िक्र।
बोले मसजिद के तले मय[1] का भी सामान रहे॥
राहते[2] जां है तेरी नज़्म दिलावेज[3] "अकबर"।
तन्दुरुस्ती रहे ईमान रहे जान रहे॥
हम तो कालिज की तरफ जाते हैं ऐ मोलवीयो।
किसको सौंपें तुम्हें अल्लाह निगहबान[4] रहे॥

\+ \+ \+

सब समझते हैं कि यह इश्क़े बुतां एक रोग है।
लेकिन इसको क्या करें मिलता जो मोहनभोग है॥
शाहिदाने[5] मग़रबी[6] करते नहीं मुझको क़बूल।
टाल देते हैं यह कह कर आप काला लोग है॥

\+ \+ \+

कचेहरियों में है पुरसिश[7] ग्रेजुएटों की।
सड़क पे मांग है कुलियों की और मेटों की॥
नहीं है क़द्र तो बस इल्म दीन[8] व तक़वे[9] की।
खराबी है तो फ़क़त शेख़ जी के बेटों की॥

\+ \+ \+

वह ऐसी रीश वाले को भला कब पान देते हैं।
जनाबे शेख़ नाहक़ इस हविस में जान देते हैं॥

---

(१) शराब (२) आराम (३) दिल पसन्द (४) चौकीदार (५) गवाह (६) पच्छिम (७) पूज (८) मजहब (९) डरना या परहेज़ करना।

गुरप वाले जो चाहें दिल में भर दें।
जिसके सर पर जो चाहें तोहमत[१] धर दें॥
बचते रहो इनकी तेजियों से "अकबर"।
तुम क्या हो खोदा के तीन टुकड़े कर दें॥

\+ \+ \+

हाजिर हुआ मैं खिदमते सैय्यद में एक रात।
अफसोस है कि हो न सकी कुछ ज्यादा बात॥
बोले कि तुझको दीन की इसलाह[२] फर्ज है।
मैं चल दिया यह कहके कि आदाब अर्ज है॥

\+ \+ \+

अब इन् किस्सों का क्या हासिल[३] अब इन बातों का क्या रोना।
यही मर्जी खादा की थी यही किसमत में था होना॥
कहां की दौलत व सरवत[४] कहां की इज्जत व हशमत[५]।
मोयस्सर है तुझे दो रोटियाँ बस घर का ले कोना॥

\+ \+ \+

दिल मेरा उनपे जो आया तो कजा भी आई।
दर्द के साथ ही साथ उसकी दवा भी आई॥
आए खोले हुये बालों को तो शोखी से कहा।
मैं भी आया तेरे घर मेरी बला भी आई॥
वाय किसमत कि मेरे कुफ्र की वकअत[७] न हुई।
बुत को देखा तो मुझे याद खोदा भी आई॥
हुई आगाजे[८] जवानी मे निगाहें नीची।
नशा आँखों मे जो आया तो हया भी आई॥
डस लिया अफइये[९] शामे शबेफुर्कत[१०] ने मुझे।
फिर न जागूंगा अगर नीद जरा भी आई॥

---

(१) बुराई (२) दुरुस्तगी (३) नतीजा (४) न्यामत (५) बुजुर्गी (६) मौत (७) इज्जत (८) आरम्भ (९) साँप (१०) जुदाई की रात।

ख़िरमने[१] गुल[२] को ख़ेज़ां[३] ले जायगी[ना] है तू—
आशियाना[४] यां न तू ऐ अन्दलीबे[५] ज. तरफ़।
शैर से "अकबर" यही मज़मून तू हर बौन—
ऐ मुसलमां सब्ह[७] ले ऐ नह्मन जुन्नार[८] ॥
सर में सौदा[९] आख़िरत का हो यही मक़सूद[११]
मग़रबी[१२] टोपी पहेन या मशरक़ी[१३] दसतार[१४] बांध ॥
खल्क़ तुझ से बेख़बर है दे ख़बर ख़ालिक़ को तू।
तार बर्क़ी[१५] गर नहीं है आंसुओं का तार बांध ॥

\+ \+ \+

मशरकी तो सरे दुश्मन को कुचल देते है।
मग़रबी उनकी तबीयत को बदल देते हैं॥
नाज क्या उस पे जो बदला है ज़माने ने तुम्हे।
मर्द वह हैं जो जमाने को बदल देते हैं॥
हजरते होश है गो दिल के बफादार रफीक़[१६]।
आपकी याद जो आती है तो चल देते है॥

\+ \+ \+

फेतना नहीं फेसाद नहीं शोर व शर नहीं।
आ जन नही जमीन नहीं और ज़र नहीं॥
माना कि हर तरह से मैं बेअख़तियार हूँ।
पर यह बताओ तुमको ख़ोदा का भी डर नहीं॥

\+ \+ \+

---

(१) खलियान (२) फूल (३) पतझड़ (४) घोंसला (५) बुलबुल (६) परेशान (७) तसबीह (८) जनेव (९) पागलपन (१०) अंजाम (११) इरादा किया गया (१२) पच्छिमी (१३) पूर्वी (१४) पगड़ी (१५) बिजली (१६) दोस्त।

नहीं कुछ गुफ्तगू इसमें यकीनन शेर हैं हजरत-
बस इतनी बहस बाकी है यह भैंसा है कि इंजन है।
नमक तेगों की हाथों की सफाई वाह क्या कहना-
मगर यह देख लो गट्टा खर का है कि गरदन है॥
मगर कार जब हो इत्तेफाक़[1] व अकल व हिकमत[2] पर-
तो इससे जो करे ग़फलत[3] वह अपना आप दुश्मन है।

+ + .

मोवक्किल छुटे इनके पंजे से जब—
तो बस कौम मरहूम के मर हुये।
पपीहे पुकारा किये पी कहाँ—
मगर वह प्लीडर से लीडर हुये॥

+ + +

कुछ "सेन" ख़ुश आते हैं न भाते हैं "बनर्जी"—
मैं जैल[4] का तालिब[5] हूँ न ख्वाहां[6] हूं अनरजी।
सुनता नहीं लेकचर मै पड़ा रहता हूँ दिन रात—
लगता है फक़त लेडियों मे वक़्त डिनरजी॥

+ + +

वजे[7] मग़रिब सीख कर देखा तो यह काफ़ूर थी—
अब मैं समझा वाकई दाढ़ी खोदा का नूर थी।

+ + +

दुनियाँ की हवा रास[9] जो आई भड़क उट्ठे—
अगारे हुये जाते हैं अब कौल के काले।
कमजोर की हाँडी जो जबरदस्त ने देखी—
दिल ने कहा बे पूछे हुये खोल के खा ले॥

---

(१) अचानक (२) अकिलमंदी (३) लापरवाही (४) कोशिश (५) चाहनेवाला (६) चाहनेवाला (७) तौर तरीका (८) पच्छिम (९) मोआफिक़।

यार ने पूछा किधर जाता है तू—
अर्ज की मैंने हेलाकत[1] की तरफ।
पूछा इस जानिब लिये जाता है कौन—
मैंने देखा उसकी सूरत की तरफ॥

\+ \+ \+

मुमकिन नहीं हम उनकी कोई बात टाल दें।
दें हुक्म अगर तो सीने से दिल को निकाल दें॥

\+ \+ \+

लताफत को न छोड़े रंग तेरी शादी व[2] ग़म का—
हंसी आये तो फूलों का जो रोना होतोशवनम का।

\+ \+ \+

शबाब उम्र ने खोया तमां ने दीन लिया—
फलक ने हमसे बड़ी नेयामतों को छीन लिया।

\+ \+ \+

आप का बरताव मौसिम के मोआफिक था हुजूर—
वाकई इसके असर से दिल बखूबी पक गया।

\+ \+ \+

तेरी तिरछी नजर से हमको डर क्या—
मोहव्वत की तो फिर दल क्या जिगर क्या।

\+ \+ \+

पर्दा उठा है तरक्की के यह सामान तो है—
हूरें[3] कालिज मे पहुँच जायेंगी गुलमान तो है।
कट गई नाक हरम[4] में तो नहीं कुछ परवाह—
थैंकइव देर में सुनने के लिये कान तो हैं॥
खासदान[5] आगे बढ़ाकर मेरी बातों पे कहा—
आप क्यों जान मेरी खा रहे हैं पान तो है।

(१) खुदकुशी (२) खुशी (३) परियॉ (४) कावा (५) पानदान।

उनसे मिलने में है ईमान का नोक़सान "अकबर"--
ख़ैर जो कुछ हो निकलते में अरमान तो है ॥

× × ×

आगे इन्जन के दीन[1] है क्या चीज़-
भैंस के आगे वीन है क्या चीज़।

× × ×

हिन्द मे शेख़ रह गया अफसोस--
ऊंट गंगा मे यह गया अफसोस ॥
देख कर हमको ऐसे दलदल मे--
राह चलता भी कह गया अफसोस ॥

× × ×

मिस को देखा आशिक़े ज़ुल्फें चलीपा हो गया--
मस्त था दिल फूल कर हिसकी का पीपा हो गया।

× × ×

यह क्या सबब है जो रह रह के जी भर आता है--
यह क्या हुआ जो मुझे शहर काटे खाता है।
यह खून हो गई क्यों मेरे दिल की रंगीनी--
यह दाग़ देने लगी क्यों चमन की गुलचीनी ॥
उदास हो गई क्यों रूह खानये[2] तनसे--
उचाट हो गईं क्यों बुलबुलें यह गुलशन से।

× × ×

मैं देखता हूँ सुलह[3] व मोहब्बत है उठ गई--
हर दिल से हर ग्रोह[4] से हर ख़ानदान से।
इसका सबब नहीं है सेवा इसके और कुछ--
यानी कि उठ गया है ख़ोदा दरमियान से।

---

(१) मजहब (२) घर (३) मेलजोल (४) जमात।

और हां थीं साअत वीरों का निशाना और था।
यह ज़माना और है और वह ज़माना और था॥
यो न यह लीडर की रक़ासी[1] न यह क़ानून था।
सुनने वाले और थे उस वक़्त गाना और था॥

× × ×

जहान फ़ानी[2] के हादसों[3] का ख़्याल कब तक किया करेगा।
जो हो रहा था वह हो रहा है, जो हो रहा है हुआ करेगा॥
कहां तक अख़बार होंगे शाया[4] न कर इबादत का वक़्त ज़ाया।
कमेटियां क़ब्र मे न होंगी न तू हमेशा जिया करेगा॥

× × ×

जो चाहे कुफ़्र के आगे सरे तसलीम ख़म करना।
बजा[6] है तुमको "अकबर" अपना मिलना उससे कम करना॥
मोराक़िब को बहुत आसान है गरदन को ख़म करना।
मगर मुशकिल है दिल को याद ख़ालिक़ से बहम करना॥

× × ×

फ़लक मुझको अगर ईवान[7] देता और चमन देता।
मज़ा जब भी मेरे दिल का यही दामे कोहन देता॥
दिमाग़ व दिल पे अब क़ाबू नहीं है वरना ऐ "अकबर"।
हरीफ़ों[8] को देखाता बांकपन दादे सोख़न देता॥

× × ×

होश मे लाई है अब मायूसियां[9]।
नशये उम्मीद फ़रदा[10] हो चुका॥

---

(१) नाच (२) मिटने वाली (३) वाक़्यात (४) छपना (५) पूजा (६) ठीक (७) महल (८) चोहल बाज़ो या मज़ाक़ियों (९) नाउम्मीदियों (१०) कल।

इश्क़ से कहदो क़्यामत[1] है करीब।
हुस्न कम सुनते हैं परदा हो गया॥

× × ×

फ़ख़[2] था अपनी चमक पर आपको।
दो ही सदियों में मोलम्मा खुल गया॥
विल बिला उट्ठी रेआया हर तरफ़।
अर्श[3] व कुर्सी तक फोग़ां का गुल गया॥
भाग़ निकले लोग होकर बेक़रार।
कोई अमरीका कोई काबुल गया॥
इस क़दर तेजी से दौड़ी इनकी लहेर।
था जो मसनूई[4] मसाला घुल गया॥

× × ×

नये गमला में पड़ कर फूलजाना,
खोदा और आख़िरत[5] को भूल जाना।
बहुत बेजा[6] है यह वल्लाह "अकबर",
जरा सुनलो तो फिर स्कूल जाना॥

× × ×

आग बरसाने को लाई है हवा,
जेठ में इस लूह की है क्या दवा।
कास्ये[7] सर हो गया बालाय[8] पर,
जिस तरह चूल्हे के ऊपर हो तवा।

× × ×

शेख जी का वक़्त आख़िर हो गया,
जान बुल का हाल ज़ाहिर हो गया।
क्या तमाशा है कि चुप मारा पड़ा,
और जो बोला वह काफ़िर हो गया।

× × ×

उम्र गुज़री तब खुला दुनिया का हाल।
और ही कुछ दिल में अब आने लगा॥
पहले तनहाई[9] से घबराता था मैं।
ज़िन्दिगी से अब तो घबराने लगा॥

---

(१) मिटने का दिन (२) घमन्ड (३) आसमान (४) बना हुआ। (५) मिटने का दिन या आखिर दिन (६) ख़राब (७) खोपड़ी (८) सर के ऊपर (९) अकेलापन।

सावन भी बादलों को इस साल है तरसता।
गरमी नहीं खिसकती पानी नहीं बरसता॥
हेलवाईयों को भी है गरमी से तल्ख[१] कामी।
पूरी सज़ा मिली है खुद हो रहे हैं खस्ता[२]॥
करना पड़ेगी बाहम[३] यारों को चश्म पोशी।
बाज़ार में जो उनको कपड़ा मिला न सस्ता॥

× × ×

क्या करूँ यारब मैं सरदी की दवा।
चल रही है आज फिर ठण्डी हवा॥
जोफ़[४] पीरी अब तो जाने की नहीं।
मुर्ग खायें आप या खायें लबा[५]॥
आप के आगे हकीकत[६] मेरी क्या।
आप शाहे कामरां मैं बेनवा[७]॥
हिल नहीं सकती ज़बां फरियाद को।
मुझसे आजिज़ पुरसितम[९] है नारवा॥
करते फिरते हैं वह जिकरे शीर माल।
घर में चुल्हे पर नहीं लेकिन तवा॥

× × ×

इस वक्त, शेख जी को गांधी से मेल सूझा।
साहब ने रोक चाही उनको भी खेल सूझा॥
दोनों ने आखिर अपनी अपनी निकास देखी।
स्कीम उनको सूझी और उनको जेल सूझा॥

× × ×

---

(१) कड़वा (२) परेशान (३) आपस में (४) कमजोर (५) एक चिड़िया है (६) सच्चाई (७) बे आवाज (८) परेशान (९) जुलम से भरा हुआ।

मुबतिला[1] होकर अगर दुनियां को पहचाना तो क्या।
दाम[2] में फँसकर अगर सय्याद[3] को जाना तो क्या॥
थोड़ी सी तहसीन[4] भी अहले नजर की है बहुत।
बे बसीरत[5] ने अगर ओस्ताद भी माना तो क्या॥

× × ×

देदिया फितरत[6] ने ठीका बाग़ का सय्याद को।
मौसिमे गुलज़ार[7] में बुलबुल को चुप होना पड़ा॥
हज़रते ईसा की आमद है यह था वक़्ते खुशी।
भाइयों में देख कर मातम मगर रोना पड़ा॥
मिल गई उनको कमेटी उनको ग़रबी[8] मजलिसें।
मेरे हिस्से में मगर घर का ही एक कोना पड़ा॥

× × ×

जो कुछ हुआ नतीजा था अपने ही अमल का।
क्यों कर कहूँ कि ऐसा होना न चाहिये था॥
"अकबर" को आसमां ने ग़ज़लगो[9] ग़र्जी बनाया।
महफिल के मुस्तहक़[10] को कोना न चाहिये था॥
हिस देख कर अलम का बेरहम हंस रहा है।
बेदादगर[11] के आगे रोना न चाहिये था॥

× × ×

उठाई क़ैद की तकलीफ गो "इवसुफ" ने ज़िन्दां में।
जुलेखा को तो क़ायल कर दिया अपनी बुज़ुरगी का॥
गवर्नमेन्ट इन्तेज़ामे मल्ला अब कर दे सिपुर्द उनके।
करें यह शेर बन कर सामना महँगी की गुरगी का॥

---

(१) फसना (२) जाल (३) शिकारी (४) तारीफ (५) बेवक़ूफ (६) प्रकृति (७) बहार का मौसिम (८) पश्चिम (९) ग़ज़ल कहने वाला (१०) हकदार (११) फरियाद न सुनने वाला।

चदरों ने खूब नोचा, मुझको इसमें शक नहीं।
लेकिन इतनी बात है भाई कि मैं चीखा[1] भी खूब॥

एक गंवार असाढ़ में

गरमी कहती है जान हम मारब।
दौंगड़ा मेंज असाढ़ का यारब॥

× × ×

माना कि जो हुआ वह होना न चाहिये था।
लेकिन जो रो दिया मैं रोना न चाहिये था॥
इवरोप के जागने पर सदियों[2] नजर नहीं की।
क़िसमत को एशिया की सोना ही चाहिये था॥
मौजूं[3] न अंजुमन[4] में मैदान के न लायक़।
इस वक़्त मुझको घर का कोना ही चाहिये था॥
उमरे हरीस[5] जर क्यों ग़फलत में कट न जाती।
सोने के बदले बेशक सोना ही चाहिये था॥
हो या न हो असर कुछ अशक़ेखां[6] का "अकबर"।
ग़फलत का दाग़ दिल से धोना ही चाहिये था॥

× × ×

निमाज में दिल लगाये मुसलिम, सुकून खातिर इसी से होगी।
दवाये कूवत[10] यही बनेगी, इलाजे काफिर इसी से होगा॥
खोदा की समझेंगे जब हुजूरी, तो होगी मायूसियों[11] से दूरी।
ज़बान पर है जो जिक्र ईमां, अमल मे जाहिर इसी से होगा॥

---

(१) चिल्लाना (२) सैकड़ों साल (३) दुरुस्त या लायक (४) महफिल (५) लालची (६) बहता हुआ आंसू (७) नागरवाही (८) तसकीन (९) दिल (१०) ताक़त (११) नाउम्मीदिश्रों।

जो हालते नज़ा[1] होगी तारी[2], इसी की बरकत करेगी यारी।
यक़ीन रक्खो कि सहेल तुम पर, वह वक़्त आखिर इसी से होगा॥
करो इबादत[3] से दिल मुनौव्वर[4], सर अपना सजदे में रक्खो "अकबर"
ख़ोदा का फज़लव[5] करम[6] तुम्हारा, मोईन[7] वनासिर इसी से होगा॥

× × ×

अम्बिया[8] ही कर गये दुनियां में काम अल्लाह का।
हम तो हैं महवे ख़ुदी और वर है नाम अल्लाह का॥
कुछ अगर करना भी हम चाहें तो कर सकते नहीं।
कालिज और आफिस में क्या पहुँचे कलाम[9] अल्लाह का॥
तज़किरा[10] हो भी जो कुछ उस पर अमल करता है कौन।
नाम तक लेना है मुशकिल सुबह व शाम अल्लाह का॥
ख़ान क़ाहें चुप हैं होटल और क्लब आबाद है।
मग़रिबी[11] क्प दौर[12] में है गुम है जाम[13] अल्लाह का॥

× × ×

वजा है शहद की मक्खी को. है जो फूल की चाट।
अवस[14] है हमको मगर सोरिशे[15] फ़ुज़ूल की चाट॥
ख़बर नहीं थी कि "गांधी को ले उड़ेंगे शेख़।
जनाब ख़ुश न हुये देके होमरुल की चाट॥

× × ×

छकड़े पे जो चढ़ते थे है मोटर पे सवार आज।
क्यों उसको समझते नहीं तुम लोग स्वराज आज॥

× × ×

---

(१) मौत का वक़्त (२) छाया हुआ (३) पूजा (४) रोशन (५) रहमत (६) मेहरबानी (७) मददगार (८) पैग़म्बर (९) बात (१०) ज़िक्र (११) पश्चिमी (१२) चाल (१३) प्याला (१४) फ़ुज़ूल (१५) जलन।

शेख़ साहब को यह सदमा[१] है कि नेटिव[२] हो गये।
मिर्ज़ाजी खुश है कि सर पर आ गया कौंसिल का ताज॥

× × ×

किया तलब[३] जो स्वराज भाई गाँधी ने।
मची यह धूम कि ऐसे ख़याल की क्या बात॥
कमाल प्यार से 'अंगरेज़ ने कहा उनके।
हमी तुम्हारे हैं फिर मुलक व माल की क्या बात॥

× × ×

मच्छरों पर कहाँ तलक यह चार्ज।
नाबदान अपना देखें लायेड जार्ज।

× × ×

धर्म की रखले ऐ भगवान तू लाज॥
हमारा हिन्द हो दुनियां का सरताज।
हवायें फिर वही हो और वही अमन॥
वही गायें वही बंसी वही राज॥

× × ×

डारविन का चला सिल सिला तैमूर के बाद।
देखें किस नसल की अब जीत हो लंगूर के बाद॥

× × ×

मुझको यह झोल झाल यह घुस घुस नहीं पसंद।
मात[४]-हतिये रक़ीब[५] में आफिस नहीं पसंद॥

) रंज ... यती (३) मांगना (४) आधीन (

यह लाज़िम[1] है क्या, कीजिये हुजूर . . हुजूर।
खोदा खोदा भी किये जाइये जरूर . . . जरूर॥

× × ×

काम यह अच्छा किया जाये जो करना सीख कर।
खूब यह मरना मेरे हमसा जो मरना सीख कर॥
बेकरारी[2] खूब थी राहे फना के वास्ते।
मुझको गाफिल[3] कर दिया दिल ने ठहरना सीख कर॥
खूब तर इस कशमकश[4] से था वह एक सानी का लुतफ।
सितहे गुम को चन्द जरेरा ने उभरना[5] सीख कर॥

× × ×

वजद आजाता है मशरिक[7] की शकल को देखकर।
होश उड़ जाता है मगरिब[8] की रफल[9] को देखकर॥
डर रहा हूँ जोफ[10] से ईमान के इस उपहेद[11] में।
देखिये क्या हाल होता है अजल[12] को देखकर॥

× × ×

गरज़ इससे नहीं मुझको बनी है यह ज़मी क्योंकर।
यह फ़रमायें मोयस्सर[13] आयगो नाने जुई[14] क्योंकर॥
यही पुरसिश[15] है हरसू[16] आप बी.ए. हैं कि एफ.ए. हैं।
यह है जब रङ्ग दुनियां का वो सीखें इलमे दीन[17] क्योंकर॥

× × ×

आशिक़ हुआ हूं चश्मे बुते लाजवाब[18] पर।
नरगिस भी सोवाद[19] करती है इस इंतेखाब[20] पर॥

---

(१) ज़रूरी (२) परेशानी (३) लापरवाह (४) खींचातानी (५) उठना (६) भूसना (७) पच्छिम (८) पूर्व (६) एक किसिम का बंदूक है (१०) कमज़ोरी (११) ज़माना (१२) मौत (१३) हासिल होना या मिलना (१४) जौ की रोटी (१५) पूँछ (१६) हर तरफ (१७) मज़हब (१८) उमदा (१६) सही (२०) चुनाव।

खिलाया डाक्टर साहब ने खाना ख़ुश रहा "अकबर"।
शिकमयत हज़म क्यों हो सुलेमानी नमक खाकर॥

× × ×

उम्मीदे फरदा[१] का क्या सहारा अजल[२] से एतना क़रीब होकर।
हुई भी दुनियां तो होयगी क्या मोताये[३] दुनियां नसीब होकर॥

× × ×

रक्खे अल्लाह आप का गांधी का जोश बरक़रार।
आपका हो खांसामां और उनके हों कंहार॥

× × ×

न तू यों नेक[४] व बद[५] का फैसला फिलफौर[६] कर "अकबर"।
ज़माना देख तासीरों[८] को देख और ग़ौर कर "अकबर"॥

× × ×

सरकार तो है शाद[९] कि गांधी हुये हाजिर।
और क़ौम है मग़मूम[१०] कि पकड़े गये फाख़िर[११]॥

× × ×

नाज़ुक बहुत है वक्त ख़मोशी[१२] से रब्त कर।
गुस्सा हो आह हो कि हँसी सब को ज़ब्त[१३] कर॥

× × ×

दिलगीर[१४] हैं मेहमां मेरे क्यों हो न इस पर मुझको नाज़[१५]।
अपने लिये दिलगीर हैं मेरे लिये हैं दिल नेवाज़॥

× × ×

---

(१) कल (२) मौत (३) दुनियां की दौलत (४) कायम (५) अच्छा (६) बुरा (७) जल्दी (८) असर (९) ख़ुश (१०) रंजीदा (११) जिनपर लोगों को घमंड हो (१२) चुपचाप (१३) बरदाश्त करना (१४) रंजीदा (१५) घमंड।

अफसोस है कि आशिके शैतां वह हो गये।
पायेंगे अब हुजूम[1] रकीबों का हर तरफ॥

× × ×

दवा यही है तवज्जेह[2] रहे दोवा की तरफ।
खुदी से कीजिये हिजरत बस अब खोदा की तरफ॥

× × ×

रुख[3] जो हो तरके मोवालात का उकबा[4] की तरफ।
तेरी आँखें न उठें जीनते[5] दुनियां की तरफ॥

× × ×

मगरबी तालीम से दिल एशिया का है मलूल[6]।
कर दिया खिलकत को इसने बे तमीज व बेवसूल॥
जो करे इसलाह[8] इसकी मदेह[9] का है मुसतहक़[10]।
और बातों को बजाहिर मे समझता हूं फुजूल[11]॥

× × ×

सवारी है उन्हीं की राह उनकी और डांक उनकी।
उन्हीं की फौज है उनकी पुलिस है और नाक उनकी॥

× × ×

फक़त ज़िद्दी है जो कहते हैं कि जब अपनी जबा खोलो।
हमारे पेश्वायें[12] मुलक "गांधी जी" की जै बोलो॥

× × ×

तूने पढ़ा है दुनिया को सिर्फ हिस्टरी मे।
दुनियां को देख ग़ाफिल कुदरत की मिस्टरी में॥

---

(१) भीड़ (२) झुकाव (३) मुँह (४) आकबत (५) सजावट (६) रंजीदा (७) रिआया या पब्लिक (८) दुरुस्ती (९) तारीफ (१०) हक़दार (११) बेकार (१२) बुजुर्ग।

है सलतनत[१] की खोवाहिश लेकचर मे तन रहे हैं।
साहब बना रहे है हम लोग बन रहे हैं॥

× × ×

ओहदा[२] देते है सनद[३] देते हैं ज़र[४] देते है।
खानसामा वह मोजाहिद को भी कर देते हैं॥

× × ×

विदेशी परचे[५] मे आग क्यों हजरत लगाते है।
वह बोले बात तो यह है कि साहब को जलाते हैं॥

× × ×

सीनये गांधी में स सें गालिबन रुकने लगीं।
लक्ष्मी जी तो फिरंगी की तरफ झुकने लगीं॥

× × ×

ग़म भी है, बहुत लूने जिगर भी पी रहे हैं।
सब कुछ है मगर शुक्र खोदा जी भी रहे हैं॥

× × ×

ऐयरशिप[७] से हम अमां[८] ऐ चर्ख[९] पायेंगे कहां।
आसमां बोला कि हमसे उड़के जायेंगे कहां॥

× × ×

गांधी हमारे कुलजमे हसती के फेन हैं।
इंगलिश हवाये दैर[१०] में ऐरोप्लेन हैं॥

× × ×

फंसा दिया है उन्होने अजीब फंदों में।
मगर हनोज़[११] हूँ उनके न्याज मंदों मे॥

---

(१) हुकूमत (२) पद (३) सारटीफिकेट (४) रुपया पैसा (५) कपड़ा (६) अंगरेज लोग (७) हवाई जहाज (८) चैन (९) आसमान (१०) जमाना (११) अब भी।

बज़ाहिर[1] एक जानिब[2] हैं मगर लाखों ही राहें है।
ख़बर क्या तुझको कितने दिल हैं और कितनी निगाहें हैं॥

× × ×

बेहतर यह फ़िक्र है कि जिऊँ तो रहूँ कहां।
यह क्या ख़्याल है कि मरूँ तो गडूं कहां॥

× × ×

ज़्यादा आख़िरत का शौक़ हो दुनियां को चाहे
मगर यह क़ौल बरहक़[3] है ख़ोदा चाहे तो हम चाहें॥

× × ×

उसको मैं ज़ालिम कहूँ या बदमाश उसको कहूँ।
गोमगो की बात है "अकबर" बुरा किसको कहूँ॥

× × ×

इसके सिवा अब क्या कहूँ मुझको किसी से कद[4] नहीं।
कहना जो था कह चुका बकने की कोई हद नहीं॥

× × ×

मुँह से अलफ़ाज़ कुछ निकाले हैं—चुप हैं वह जो समझने वाले हैं।
शेख़जी को ज़रा घुलाना है—लाला साहब तो देखे भाले हैं॥

× × ×

कांउंसिल में देखता हूँ मूरतें अच्छी तो हैं।
मगरवी एक़बाल की यह सूरतें अच्छी तो हैं॥

× × ×

हम कलकों से कहाँ राहत[5] है इनको मेल में।
यह तो है अब वफ़्द में या बाज़ मे या जेल में॥

---

(१) जाहिर में (२) तरफ़ (३) सच (४) मैल (५) आराम।

शुक्र है इस शर्त पर अब सुलह उनसे हो गई।
वह मुझे वहशी[1] कहें और मैं उन्हें मुलहिद कहूँ॥

× × ×

कहते हैं इसलाम में ख़ैरात नहीं है।
खुल जायेगा यह हाल जो तारीख़ को उलटे॥

× × ×

सवाब आख़िरत[2] का भी हासिल करें।
सूये[3] हक़ तबीयत को मायल[4] करें॥

× × ×

हज़रते "अकबर" नहीं मालूम हैं किस सोंच में।
ज़िंदिगी से हो लिये रोख़सत, मगर मरते नहीं॥

× × ×

ताकुजा[5] रंज व मुसीबत का करूँ मैं इज़हार[6]।
मोख़्तसर[7] यह है कि फ़ुरक़त[8] में मरा जाता नहीं॥

× × ×

नहीं हरगिज़ मुनासिब पेशबीनी[9] दौरे[10] गांधी में।
जो चलता है वह आंखें बन्द कर लेता है आंधी में॥

× × ×

हमारे लिये आप क्या कुछ नहीं है।
मगर पेशे अरज़ो समां कुछ नहीं है॥

× × ×

उनसे दिल मिलने की "अकबर" कोई सूरत ही नहीं।
अक़्लमंदों को मोहब्बत की ज़रूरत कुछ नहीं॥

× × ×

---

(१) जंगली (२) मरने के बाद (३) ईश्वर की तरफ (४) लगायें (५) कहां तक (६) ज़ाहिर (७) थोड़ा (८) जुदाई (९) आगे देखना (१०) जमाना।

बात कुछ होयेगी लाएड जार्ज में।
आज कल दुनियां है उनके जाल में॥

× × ×

जो लोग कैम्प में तरके[1] नेमाज़ करते हैं।
सुना है क़ूवते[2] शैतां पे नाज़[3] करते हैं॥

× × ×

हो चुका नशोनुमा वह लुत्फ नेचर अब कहाँ।
हलक़ये[5] ऐदा में हूँ आगोश[6] मादर[7] अब कहाँ॥

× × ×

अब शेखजी मोक़ीम ब्रह्मन के पास हैं।
गायें उछल रही हैं कसाई उदास हैं॥

× × ×

दिमाग़ो दीदाव दिल[9] को बहुत माज़ूर[10] पाता हूँ।
अब अपने आपको मैं जिन्दिगी से दूर पाता हूँ॥

× × ×

दीन[11] की दीवार में अब गोलियों के छेद हैं।
छूत छात इनकी है मुशकिल यह खोदा के भेद हैं॥

× × ×

भाई "गांधी" खुदसरी[12] की आरज़ू[13] के साथ हैं।
और साहब लोग ग़रबी रंग व बू[14] के साथ हैं॥

× × ×

'मालवी जी' सबसे बेहतर हैं मेरी दानिस्त[16] में।
पानी मंदिर में है और अपनी गऊ के साथ हैं॥

---

(१) छोड़ना (२) ताकत (३) घमंड (४) ऊपर नीचे या घटा बढ़ी (५) दायरा (६) गोद (७) मां (८) ठहरे हुये (९) आँख (१०) कमजोर व उदास (११) धर्म (१२) घमंड (१३) तमन्ना (१४) पश्चिमी (१५) खुशबू (१६) समझ।

इसलिये[1] हक़ का तसव्वर[2] है तो हम तुम अब कहाँ।
आफ़ताब[3] आया नमूदे[4] बज़मे[5] अंजुम अब कहाँ॥
शाख़ 'गाँधी कैप' सर पर दोस्तों के लग गई।
वह कुलाहे[6] तुर्क और फुंदने की वह दुम अब कहाँ॥

× × ×

ख़ोदा के बाब में क्या आप मुझसे बहेस करते हैं।
ख़ोदा वह है कि जिसके हुकम से साहब भी मरते हैं॥
मगर इस शेर को मैं ग़ालिबन[7] क़ायम[8] न रक्खूँगा।
मचेगा ग़ुल[9] ख़ोदा को आप क्यों बदनाम करते हैं॥

× × ×

वह साहब हैं परेडों पर मनों बारूद उड़ाते हैं।
यह बाबू हैं कमेटी में गपेंबे[10] सूद उड़ाते हैं॥
इलाहाबाद में हैं हम तो अब मेहमान "अकबर" के।
सोख़न की चाशनी चखते हैं और अमरूद उड़ाते हैं॥

× × ×

हादी तो मिलें मंज़िले दिलख़्वाह[11] तो पायें।
चलने को हैं तय्यार कोई राह तो पायें॥
क्या बरकते अंफ़ास बुज़ुर्गाँ के हों तालिब[12]।
सुनते हैं कहीं क़ल्बे[13] हक़ आगाह तो पायें॥

एक सूई[14] व तक़वा भी बड़ी चीज़ है 'अकबर'।
लेकिन यह हमें दे अगर अल्लाह तो पायें॥

---

(१) ईश्वर (२) ख़्याल (३) सूर्ज (४) ज़ाहिर (५) महफ़िल (६) टोपी (७) जहाँ तक उम्मीद है (८) रखना (९) शोर (१०) बे वजह (११) दिल पसन्द (१२) माँगना (१३) दिल (१४) एक आत्मचित।

फ़लक[1] दबेगा नहीं और ज़मीं हटेगी नहीं।
बग़ैर रंज व अलम[2] ज़िन्दगी कटेगी नहीं॥
समझ रहा हूँ बढ़ेंगी मुसीबतें लेकिन।
तुम्हारे साथ मोहब्बत मेरी घटेगी नहीं॥
उम्मीद ने तो खड़ी ख़ूब की हैं दीवारें।
ज़माना कहता है यह छत कभी पटेगी नहीं॥

× × ×

सींघ है फिर भी वह झुकाये है सर।
आप बे सींघ सर उठाते हैं॥
हामिये[3] गांव है इसी से बहुत।
इसको कम लोग मुँह लगाते हैं॥
इसके गोबर से लीपते हैं मकां।
ऊँट की मींगनी[4] जलाते हैं॥

× × ×

इस सोंच में हमारे नासेह[5] टहल रहे हैं।
गांधी तो वजद[6] में हैं यह क्यों उछल रहे हैं॥
नशोनुमा[7] से कांउसिल जिनके नहीं मोयस्सर।
पब्लिक की जी में उनके मज़मून पल रहे हैं॥

× × ×

हैं वफ्द[8] और अपीलें फरियाद और दलीलें।
और क़ब्र मग़रबी के अरमां निकल रहे हैं॥
यह सारे कारख़ाने अल्लाह के है "अकबर"।
क्या जाय दमज़दन[9] है यों ही यह चल रहे हैं॥

× × ×

---

(१) आसमान (२) ग़म (३) मानने वाले (४) लेंडी (५) नसीहत करने वाले (६) धेयान (७) चढ़ाव उतार (८) डेलीगेशन (९) दम मारना।

सुकूं[1] होता नहीं दिल को मुरादें[2] वर नहीं आतीं।
यह आहें अर्श[3] तक जाती तो हैं कुछ कर नहीं आतीं॥
शबेग़म[4] को वसर[5] कर सुबह राहत[6] की उम्मीदों मे।
बलाओं[7] से न डर खामोश रह किस पर नहीं आतीं॥
जो सिर्फ आशिक़ जेहनी क़ूवतें[8] हैं तन से हैं ग़ाफिल[9]।
सभा की हैं जो परियां अकसर अपने घर नहीं आतीं॥
हमारी गरदनें तो सिर्फ मसजिद ही मे झुकती हैं।
मगर देखें कि यह कब तक तहे खंजर नहीं आतीं॥

× × ×

अपनी वहदत[10] को तुम आलूदये[11] कसरत न करो।
जान अमानत है अमानत मे ख़्यानत[12] न करो॥

× × ×

फिदा हो बेंक पर तुम आप खुद बिसकुट पे गिरते हो।
तो फिर क्या बेकरी को मुनहदिम[13] करने को फिरते हो॥

× × ×

इलम व ईमान भी हो और मौक़ये दिलख़्वाह[14] भी।
यानी हो आंख भी और शमा[15] भी हो राह भी हो॥
यही शरतें है पये मंजिले मक़सूद "अकबर"।
सई[16] भी चाहिये और रहमते अल्लाह भी हो॥

× × ×

जेतना जमाना हश्र के पहले है सब है आज।
कहता हूं कल मैं सिर्फ क़यामत के रोज़ को॥

---

(१) तसकीन होसले (३) आसमान (४) मुसीबत की रात (५) गुजारना (६) आराम (७) मुसीबतें (८) ताकत (६) लापरवाह (१०) अकेलापन (११) जाहिर (१२) गबन (१३) गिरना या मिटाना (१४) दिल का पसन्द आना (१५) मोमबत्ती की रोशनी या रोशनी (१६) को शिश।

बदल गई हो हवायें तो रोक दिल की तरंग[१] ।
न पी शराब अगर मौसिमे बहार न हो ॥
लतीफ[२] बन जो उठे सूजग़म[३] से दर्दे जिगर ।
न फेर मुँह को फलक से जमीं पे बार[४] न हो ॥
मुझे भी दीजिये अखबार का वर्क कोई ।
मगर वह जिसमें दवाओं का इश्तेहार न हो ॥
जो हैं शुमार[५] में कौड़ी के तीन है इस वक्त ।
यही है खूब किसी मे मेरा शुमार न हो ॥
मैं क्या करूँ कि निभे[६] उनके खानसामों से ।
चमार कैसे बने वह कि जो चमार न हो ॥
गिला[७] यह जब्र[८] का क्यो कर रहे हो ऐ "अकबर" ।
सुकूत[९] ही है मुनासिब जब अख्तियार[१०] न हो ॥
न हूँ मैं किसी गिनती मे पेशे अहले जहां ।
खोदा करे कि कयामत में भी शुमार न हो ॥

× × ×

परवा नहीं है आज की है कल की मझको फिक्र ।
क्या पूछते हैं आप मेरे सोज व साज़ को ॥

× × ×

बेकरारी[११] ने जो पाई है उभरने की जगह ।
दिल को मिलती नहीं सीने मे ठहरने की जगह ॥
होगा जीने के लिये और ही आलम[१२] कोई ।
इसमें कुछ शक नही दुनियां तो है मरने के लिये ॥

---

(१) उभार या जोश (२) मजा देने वाला (३) मुसीबत की जलन (४) बोझ (५) गिनती (६) बने (७) शिकायत (८) जुलम (९) खामोशी (१०) जोर (११) बेसबरी (१२) हालत ।

हुक्काम[1] हैं खजाना व तोप व रफल[2] के साथ।
खुद्दाम[3] है शिगुफतये[4] तरके[5] अमल के साथ॥
बाजू में थां न जोर गले को न शौके शोर।
हम तो मोशायरे में है अपनी गज़ल के साथ॥

+ + +

नेटिव की है तनख्वाह अगर सौ से ज़्यादा।
इस वक्त यह है "कै-सरो" "खुसरू" से ज़्यादा॥

+ × +

इंक़िलाव[6] आया नई दुनियां नया हंगामा[7] है।
शाहनामा हो चुका अब वक्त गांधी नामा है॥

+ + +

मिला करते थे जो मजनून मुझको जिक्र 'गांधी' से।
खोदा जाने किधर वह उड़ गये शिमले की आंधी में॥

+ + +

लुंगी और धोती बहुत तंग आई थी पतलून से।
लेकिन अब पतलून ढीली है इसी मज़मून से॥

+ + +

न साहब को मारो न साहब से भागो
मचाते रहो गुल[8] पिटो और मांगो॥

+ + +

मुत्तहिद[9] इवरोप की क़ूवत[10] हो तो हो।
हम भी अब है कल्लू गंगू एन्ड को॥

+ + +

होटलों को कथा मोबारक हो।
रेल को यह जत्था मोबारक हो॥
घर मे खाने को कुछ न था कल रात।
क़ौम को यह न था मोबारक हो॥

---

(१) अफसर लोग (२) बंदूक (३) नौकर लोग (४) खिला हुआ था खुश (५) छोड़ना (६) उलटफेर (७) भीड़, चहल पहल (८) शोर (९) एकट्ठा (१०) ताक़त।

शेर कहता है वज़म[1] से न टलो दाद[2] लो वह की हवा में पलो।
वक़्त कहता काफिया है तंग चुप रहो भाग जाव सांस न लो॥

× × ×

भाइयो यह नातवानी[3] छोड़, दो भाइयों से वदगुमानी[4] छोड़ दो।
ऐब[5]पोशी[6] में रहो मसरू[7] फकार[8], तान[9] वतशनीये[10] ज़बान छोड़ दो॥
पंद[11] ही काफी है बाद इसके सुकूत[12], गुस्सा और लाठी चलानी छोड़दो॥

× × ×

कहा उनके वैरे ने गोहूँ शरीक,[13] ख़्यालात हैं गांधी बाबा के साथ।
मैं समझूंगा लेकिन यही डोमरूल, तअल्लुक जो हो जाय आया के साथ॥

× × ×

सुने ज़िक्र हज़रतवली[14] ज़ौक़,[15] से तनाउल करें माहज़र शौक़ से॥

× × ×

सभा रचाने में सब की शिरकत ख़ुशी है इसकी कि मै[16] न छूटे।
मगर ज़बानों का फैसला है, "महातमाजी" की जै न छूटे॥

× × ×

ख़िरद[17] पूंछती है यह क्या हो रहा है, सदाये[18] दिली है खोदा हो रहा है॥

× × ×

न छोड़ो भाई गांधी की हुज़ूरी, खिला ही देंगे तुमको राम पूरी॥

× × ×

जंगवाहम[19] और कीना[20] देखिये, मरने वालों का यह जीना देखिये॥

× ×

यह मिसरा मेरे होश को खो रहा है, वही था वही है, वही हो रहा है॥

---

(१) महफिल (२) तारीफ (३) कमज़ोरी (४) रंज (५) बुराई (६) छिपाना (७) लगे रहना (८) काम (९) तानामारना (१०) तारीफ (११) तारीफ (१२) चुप्पी (१३) शामिल (१४) पैग़म्बर (१५) शौक़ (१६) शराब (१७) अकल (१८) आवाज (१९) आपस का लड़ाई झगड़ा। (२०) दिल का कालापन।

झूठ से सच को कौन चुनता है—आर कहते हैं बन्दा सुनता है।

! + + +

मुरव्वत कभी है कभी खौफ[1] है—मजामीन का दिल यहां में तौफ है ॥

+ + ×

सूये जेल टोली[2] मेरी बढ़ रही है—गवर्नमेंट पर हत्या चढ़ रही है ॥

+ + +

मिल मे कहदो कि तुममे खामी है—जिंदगी खुद ही एक गुलामी है ॥

+ + +

किसी वली खोदा का यह कौल सच्चा है।
अजल[3] के सामने पीरे[4] फलक भी बच्चा है ॥

+ + +

आकिल की नजर सुफीद[5] पर है—ताजिर[6] गाहक को देखता है।

+ + +

हरतरफ ताकीद क्यों चुप चुप की है— वहेस तो अब एशिया इवरोप की है ॥

+ + +

अशकेदीं पोंछ देता है अनर—लाट साहब का दम गनीमत है ॥

+ + +

यही मरजी खोदा की थी हम उनके चार्ज मे आये।
सरे तसलीम खम[8] है जो मिजाजे यार मे आये ॥

+ + +

लशकरे गांधी को हथियारों की हाजत[9] कुछ नहीं।
हां मगर बेइन्तेहा[10] सब्र व कनाअत[11] चाहिये ॥

---

(१) डर (२) टुकड़ी (३) मौत (४) बुड्ढा (५) फायदेमंद (६) सौदागर (७) आंसू (८) झुका हुआ या टेढ़ा (९) जरूरत (१०) बहुत ज़्यादा (११) सब्र ।

मैं यह कहता हूं कि मुझको कुछ न कहना चाहिये।
क्यों कहा यह भी अगर ख़ामोश[१] रहना चाहिये॥

+ + +

उम्र गुज़री न हुआ कोई जहां मे मेरा।
अब दोआ यह है कि यारब मुझे अपना करले॥

+ + +

भाई "गांधी" का नेहायत ही मोक़द्दस[२] काम है।
राम पूरी साथ हैं और राम ही का नाम है॥

+ + +

जो पूछा मैने हज़रत मेरी इज्ज़त क्यो नही करते।
तो वह बोले कि तुम इज़हारे[३] कूवत क्यों नहीं करते॥

+ + +

न मौलाना मे लग़जिश[४] है न साजिश की है गांधी ने।
चलाया एक रुख़[५] उनको फक़त मग़रिब की आंधी ने॥

× × ×

तुम दूसरी मचान पे बैठो नही है हर्ज।
बस इतनी बात हो कि निशाना वही रहे॥

+ + +

यह दावा है मेरा इस पर मेरे दिल की गवाही है।
हुआ जो कुछ, जो होता है, जो होगा सब ख़ोदा ही है॥

+ + +

वाज़[६] यह कहिये अगर इसलाहे[७] नेशन[८] चाहिये।
नफ्स[९] की ख्वाहिश से तन को आपरेशन चाहिये॥

---

(१) चुप (२) पाक (३) जाहिर (४) कांपना या रुकावट (५) एक तरफ (६) लेक्चर (७) दुरुस्ती (८) कौम अँगरेजी लफ़्ज है (९) सांस।

आलूदगी[1] ग़लीज़[2] से अफसोस नाक है।
क्या आंख से तुम्हारी कई कोस नाक है॥

\+ + +

मज़हब मेरा सही है मेरी पीठ ठोंकिये।
लेकिन मुझे भी हुक्म यह है भाड़ झोंकिये॥

\+ + +

ख़्वाहान[3] मेम्बरी नहीं मजहब के काम के।
चूहे बने हुये हैं यह ग़रबी[4] गुदाम के॥

\+ + +

हमको इससे कुछ न मतलब है न कौल[5] व काल है।
उनके सर पर अब उन्हीं की शामते आमाल है॥

\+ + +

करो आनर को वापस भाई जी की चिट्ठी आई है।
अरे यह क्या ग़जब है लाठ साहब की दोहाई है॥

\+ + +

ख़ूब तकलीफें उठाई नेज़ा[6] मे रगड़े गये।
लेकिन इससे ख़ुश है दुनियां के वह सब झगड़े गये॥

\+ + +

बिला साईस के परदेस में कुछ भी नहीं चलती।
फकत चल सकती है रोटी डबल रोटी नहीं चलती॥

\+ + +

न टमटम है न मोटर है न घोड़ा है न हाथी है।
नमूद[7] उनको मोबारक बन्दा तो छकड़े का साथी है॥

---

(१) मिला हुआ (२) गंदगी (३) चाहने वाले (४) पश्चिमी (५) उजर या इनकार (६) मरने के वक़्त (७) बनावट।

"जरमन" के बाद "गांधी" है पालसी, की आँधी।
नादां समझ न इसको जिसने कमर न बाँधी॥

× × ×

झूठ सच की है न याँ छोटे बड़े की बात है।
हक़[1] कहाँ का कैसी मंतिक बन पड़े की बात है॥

× × ×

तोबा करना है पक्का रहना हैं और मरना है।
आप क्या कहते हैं अब आपको क्या करना है

× × ×

सुना हर एक ने ज़ुबाँ व कलम पे क्या गुज़री।
मगर ख़ोदा ही ने जाना की हम पे क्या गुज़री॥

× × ×

वे फायदा है "अकबर" अब तुमको शौक़ उसका।
"साइनस" की सड़क में जन्नत[2] भी आ गई है॥

× × ×

तेग़े[3] ज़बाँ की देखो हरसू[4] बरेंहगी[5] है।
बाबू के हौमले[6] हैं साहब की दिल्लगी है॥

× × ×

गांधी से क्यों हो वहेशत[7] बातिन[8] की मिस्टरी है।
"शौकत" से क्यों न खटकने उनकी तो हिस्टरी है॥

× × ×

जै की भी सदा[9] आयेगी चरखे भी चलेंगे।
लेकिन यह समझ लीजिये म'हब न टलेंगे॥

---

(१) सच (२) वैकुण्ठ (३) तलवार (४) हर तरफ (५) नंगापन (६) हिम्मत (७) डर (८) झूठी (९) आवाज।

"गांधी" ने मान ली' है मदन मोहनी सलाह।
हिन्दी तो थे ही अब वह "मदनी" भी हो गये॥

× × ×

जहूरे[1] जोरे आतश[2] है वही है किब्र शैतानी।
बहुत कुछ खाक उड़ाई पर न आई बूये इंसानी॥

× × ×

ढीट जब हद से रोवा यह मकोआपरू हो गये।
चुप हुये "चिन्तामनी हैरान" "सपरू" हो गये॥

× × ×

'हमें भगवान् की कृपा ने तो बाबू बनाया है।
मगर इवरोप के शाला लोग ने उल्लू बनाया है॥

× × ×

शेरे "अकबर लीजिये गांधी" का चर्खा लीजिये।
कीजिये "बरगद" से हिजरत[3] मुझसे खर्चा लीजिये॥

× × ×

पार्क के खातिर तुम्हें मर[4] व सनौवर[5] चाहिये।
हमको चौके के लिये थोड़ा सा गोबर चाहिये॥

× × ×

क़वी[6] तरके[7] मुकाबिल सर को ख़म[8] करना ही पड़ता है।
अजल[9] आती है तो साहब को भी मरना ही पड़ता है॥

× × ×

मद्द खिरद[10] से कुछ इस अंजुमन[11] में मिल न सकी।
निगाह उठ न सकी और जबान हिल न सकी॥

---

(१) जाहिर (२) आग (३) जाइये या छोड़िये (४) एक क़िसम का पेड़ होता है (५) एक क़िसम का फूल होता है (६) ताक़तवर (७) छोड़ना (८) टेढ़ा या झुकाना (९) मौत (१०) अक़ल (११) मजलिस या महफिल।

जिदगानी हो दराज़[१] उनकी' खुश एक़बाली[२] की।
मोलवी साहब की न चलती है न बंगाली की॥

\+ + +

हमारे यार बुज़ुर्गा—न मोहतरिम[३] न हुये।
सबब यह है कि कभी पार्टी मे हम न हुये॥

\+ + +

नफ्स[४] की ममती थी और दौर[५] शराबे ज़िन्दगी।
लेकिन अब ग़ैरत है और बारे[६] अजाबे[७] जिन्दगी॥

\+ + +

शिगुफ़ता[८] होके क्याम[९] अपना चाहती थी कली।
मगर हवाये फेना[१०] अफरी से कुछ न चली॥

\+ + +

आप कहते हैं अभी तुझको बहुत जीना है।
क्या ख़ुशी इसकी अगर ख़ूने जिगर पीना है॥

\+ + +

लाख समझाता हूँ उसको मेज़ पर आ चाय पी।
यह उरू से हिन्द अब तक कह रही है हाय पी॥

\+ + +

फर्ज लायलटी भी है अल्लाह से डरना भी है।
बात यह है भाइयो जीना भी है मरना भी है॥

\+ + +

गाय का तो कुछ ठेकाना भाई "गांधी" ने किया।
शेख़ जी का ऊँट किस कल[११] बैठता है देखिये॥

---

(१) ज़्यादा या बड़ी (२) बलंद ऐक़बाली (३) मेहरबान (४) मांग (५) जमाना या चलना ६) बोझ (७) सराप (८) खिलना (९) ठहरना (१०) मिटना (११) करवट।

दीद[1] के क़ाबिल[2] अब उस उल्लू का फ़ख़्र[3] नाज़ है।
जिससे मग़रिब ने कहा तू आनरेरी बाज़ है॥

\+ + +

हवा में आप को उड़ना भी आ गया साहब।
यहाँ तो मश्क अभी है फ़कत उछलने की॥

\+ + +

अजल[4] बोली कि बस फ़र्ज़ अब मुझे ख़ामोश[5] रहना है।
बहुत कहता रहा बन्दा अभी कुछ और कहना है॥

\+ + +

हाल औरों का तो तुम भी देख लेते हो कभी।
सूफ़िये के हाल से अल्लाह भी आगाह है॥

\+ + +

ठोकते थे मरदे मैदां ही की पीठ।
अब रेज़ूलिवशन पे जे होने लगी॥

\+ + +

धूम है हिन्द में अब डाक्टर अंसारी की!
सब से बढ़कर है सिफत उनमे मिलनसारी की॥

\+ + +

तबीयत इस तसव्वर[6] से बहुत मायूस[7] होती है।
कि वे यादे ख़ोदा भी जिन्दगी महसूस होती है॥

\+ + +

दैर[8] मे हँसते हैं अब काबे में बरसों रोलिये।
शेख़ जी करते ही क्या बाबू के पीछे हो लिये॥

---

(१) देखना (२) लायक़ (३) घमंड (४) मौत (५) चुप
(६) ख़्याल (७) नाउम्मीद (८) मंदिर।

मोलवी जेल मे बटने को जो मूंज उठता है।
गुंबदे[1] चर्ख़[2] मेरी आह से गूंज उठता है॥

× × ×

सब को सौदा[3] है यही दौलत बढ़े शोहरत[4] बढ़े।
इसका क्या गम चुपके ही चुपके अगर शामत बढ़े॥

× × ×

अब कहाँ अगली[5] लगावट और वह इज़हारे[6] न्याज़।
बात यह है वक़्त बदला मैं घटा हज़रत बढ़े॥

× × ×

दिल की ताकत क्या यों ही यारों को खोना चाहिये।
यानी बस बकता फिरे हर एक यह होना चाहिये॥
अहले जाहिर के तमाशों मे तो कुछ होता नहीं।
साहबे बातिन[7] को तनहाई[8] में रोना चाहिये॥

× × ×

तकवा के चमन की भी कली खूब खिलेगी।
इस खौफ को तुम छोड़ दो रोटी न मिलेगी॥
यह पोलीटिकल हिर्स[9] यह हंगामा[10] है बेसूद[11]।
इसमे कोई चीज अपनी जगह से न हिलेगी॥

× × ×

तसवीर खुब खिंची इस बुत की काफिरी[12] की।
एक धूम मच गई है "अकबर" के शायरी की॥

---

(१) मीनार (२) आसमान (३) पागलपन (४) इज़्ज़त (५) पहली (६) जाहिर (७) झूठा (८) अकेला (९) लालच (१०) शोरगुल (११) बेफायदा (१२) नासतिक।

तेरे अक़वाल[1] में बेसूद हुज्जत[2] की झलक देखी।
तेरे अफ़आल[3] में काफ़िर परस्ती[4] की चमक देखी॥
ख़ोदा आइन्दा कुछ असलाह[5] करदे फज़्ल है उसका।
मगर अच्छी नहीं जो तेरी हालत आज तक देखी॥

× × ×

सारी दुनियाँ वहेम[6] आमादये खूरेज़ी[7] है।
यह खोदाई है, कि शाही है, कि अंगरेज़ी है॥
तिफ़्ले[8] कालिज को समझ लीजिये एक पेन नाइफ़।
बस क़लम ही के लिये इसमें बहुत तेज़ी है॥

× × ×

गुस्से में ग़रीबों की वह चीं चीं भी चली जाय।
साहेब के मशीनों की वह पीं पीं भी चली जाय॥
लेकिन जो फ़ना[10] पेशेनज़र[11] हो तो खोदारा।
कुछ खिदमते अरबाब रहेदीं[12] भी चली जाय॥

× × ×

सूये कौंसिल क़ौम के ऐसे करमफ़रमा[13] गये।
क्या तअाज्जुब है जो दिल अहेबाब[14] के गर्मा गये॥

× × ×

ग़ाफ़िल[15] ख़ोदा से काम किये भी तो क्या किये।
उक़बा से बेनसीब[16] जिये भी तो क्या जिये॥
इसदौर[17] में वह बादये[18] हाफ़िज़ कहां नसीब।
बनकर जो रिन्द[19] कोई पिये भी तो क्या पिये॥

---

(१) क़ौल व फ़ेल या वादा (२) वहेस (३) कामों में (४) पूजना (५) दुरुस्ती (६) मेहरबानी (७) आपस में (८) ख़ून बहाना (९) लड़के (१०) मिटना (११) सामने (१२) मज़हब का रस्ता (१३) मेहरबान लोग (१४) दोस्त लोग (१५) लापरवाह (१६) बदक़िस्मत (१७) ज़माना (१८) शराब (१९) परहेज़गार।

आसमानी कोतवाली पर लिखा दी है रपट।
हुक्म पाया इसतेग़ासा रजे[1] तहक़ीक़ात है॥

+ + +

ईमान गो बज़ाहिर[2] अब तक बचा हुआ है।
ख़तरे में आकबत है एक गुल[3] मचा हुआ है॥
बेचैन है धर्म भी मनजूर है भरम भी।
संसार का तमाशा अच्छा रचा हुआ है॥

+ + +

मंजूर उन्हें इस वक्त मुलाकात नहीं है।
नींद आ रही है और कोई बात नहीं है॥
अहेबाब[4] पड़े सोते हैं मैं जाग रहा हूँ।
मेरे लिये अब दिन है यहां रात नहीं है॥
तरक़ीबे तरक्क़ी मैं नहीं जानता "अकबर"।
जो जानते हैं उनसे मुलाकात नहीं है॥

+ + +

बाग़े दुनियाँ में नजर ग़मनाक[5] होकर रह गई।
रंग बदले खाक ने फिर ख़ाक होकर रह गई।
दाख़िले स्कूल हो दोख़्तर तो कुछ हासिल करे।
क्या नतीजा सिर्फ अगर बेबाक[6] होकर रह गई॥
वह तरक्क़ी है कि जो करदे शिगुफ़ता, मिसले गुल।
वह कली क्या जो गरेबां[9] चाक[10] होकर रह गई॥

+ + +

रात भेजा मैंने उनके घर कई बार आदमी।
जब सुना तो यह सुना बैठे है दो चार आदमी॥

---

(१) नीचे (२) ज़ाहिर मे (३) शोर (४ दोस्त लोग (५) अफसोस नाक (६) लड़की या बेटी (७) निडर (८) खिलना (९) गला (१०) फाड़ा हुआ।

क्या हाले[1] दिल कहूँ मैं इस गैरते परी से।
फुरसत कहाँ है उसको अन्दाजे[2] दिलवरी[3] से॥
मुल्की यह गरम जोशी अब ख़ातमे पे आई।
यानी अलाव[4] रोख़सत आइन्दा फरवरी से॥
जुलफो[5] के दाम[6] में जब देखी हमारी हालत।
बाज़ आईं[7] सब बलायें दावाय हमसरी[8] से॥

\+ + +

वह हैं गो हुस्न से महरूम[9] तनाजी[10] तो आती है।
अमल[11] अच्छे न हो लेकिन सोखन[12] साजी तो आती है॥
बुताने[13] दैर[14] रखने[15] डालते हैं कार मुसलिम मे।
न हो नाक़ूस[16] की आवाज ग़मसाजी[17] तो आती है॥
फरोगे इश्क़ के मानी नहीं हैं खामोशी इसकी।
कि परवाने को पेशे शमा जाँबाजी[18] भी आती है॥

\+ +

पेट के वास्ते पीता है—दिल बढ़ाने को दर्स[19] गीता है।
हिन्द ही में दिया खोदा ने मोक़ाम—बन्दा अब दैर ही से जीता है॥

\+ + +

हिसटरी सिर्फ एक फसाना है—इसकी क़ुदरत[20] है और जमाना है॥
अक्ल को चक्कर और जुनूको[21] रक्स—यही फितरत[22] का कारखाना है।

\+ +

इंडिया ने कमर तो बाँधी है—कोई "शौकत" है कोई "गांधी" है।
लेकिन अब भी बहुत से हैं अडिपन—सिर्फ पुस्तक है और काँधी है॥

---

(१) दिल का हाल (२) नखरा (३) दिल का चाहना (४) जहाँ जाड़े मे लोग बैठ कर आग तापते हैं (५) बाल (६) जाल (७) मुसीबतें (८) बराबरी (९) बेबहरा (१०) ताना मारना (११) काम (१२) बात का बनाना (१३) मूरती (१४) मदिर (१५) अड्गे (१६) सरवर (१७) ग़म मनाना (१८) जान खोना (१९) नसीहत (२०) पराकृत (२१) पागलपन (२२) पराकृत।

मुसलिम का मियापन सोख्त[1] करो, हिन्दू की भी ठकुराई न रहे।
बन जाओ हर एक के बाप यहां—दावा को कोई भाई न रहे॥
हम आपके फन[2] के गाहक हों, खुद्दाम[3] हमारे हों गायब।
सब काम मशीनों ही से चले, धोबी न रहे नाई न रहे॥

+ + +

भाई गांधी ने मुल्क से जैली—लाट साहब की पालसी फैली।
थे जो चलते हुये वह रुक ही गये—लद गई उनके कैश की थैली॥

+ × +

"गांधी" तो हमारा भोला है, और शेख ने बदला चोला है।
देखो तो खोदा क्या करता है, साहब ने भी दफ्तर खोला है॥
आनर की पहेली बूझी है, हर एक को तअल्ली सूझी है।
जो चोकर था वह सूजी है, जो मासा था वह तोला है॥
कट ही जाती है रात ऐ "अकबर—दिन को देखा गुजर ही जाता है।
जिसको लाती है होश में फितरत—जी ही लेता है मर ही जाता है॥

× × ×

है मजाक हजरते वायज[4] सहो—इनकी खिदमत में बस एतनी अर्ज है।
ऊंट पर चढ़ना तो सुन्नत[5] है जरूर—रेल पर चढ़ना मगर अब फर्ज है॥

+ + +

ख्वाहिशों[6] ने जलील[7] रक्खा है, जी नहीं चाहता कि जी चाहे।
खूब तो है वही जो है महबूब,[8] वह सोहागिन है जिसको पी चाहे॥
गैर मुमकिन है चश्मे[9] इल्फामे, जोश भी हो सकून भी चाहे॥

---

(१) खतम (२) काम (३) नोकर या काम करने वाले (४) लेकचर देने वाले या नसीहत करने वाले (५) सुन्नी पन (६) हविसों (७) गिरा हुआ (८) दोस्त (९) निगाह।

आप क्यों अपना खेताब ऐ खान वापस कीजिये।
खुद उन्ही से कहिये मेरी शान वापस कीजिये॥
वापसी आनर[1] का झगड़ा खत्मकर सकती नही।
लोग कहते हैं खोदा को जान वापस कीजिये॥
यह तवाजे का बर[2] आमद खुद नही होते जो वह।
छोड़िये डेवढ़ी को हुक्का पान वापस कीजिये॥
आप जिसको नेजा[3] समझे थे ग़शी[4] थी वह फक़त[5]।
लाइये कुर्ता, कफन का थान वापस कीजिये॥
मदेह[6] का बे इन्तेहा[7] ममनून[8] हूं लेकिन जनाब।
दाम अगर देने न हो दीवान वापस कीजिये॥

× × ×

ठीकेन्दारे बाग़ से है दोस्ती स्याद की।
या इलाही खैरियत हो बुलबुले नाशाद[9] की॥
दाद मिलती है बुताने दैर[10] को बेदाद की।
दीदनी[11] है बेकसी[12] यारब मेरी फरियाद की॥
क्या कहूं हालत मैं इस दैरे[13] खराब आबाद की।
है फना ही पर यहां तामीर[14] हर बुनियाद[15] की॥
उसको क्या परवा बुतों के लुत्फ[16] या बेदाद थी।
जिसके दिल को मिलगई लज्जत खोदा की याद की॥
सुल्हे कुल के मसअले पर हो अमल का जिसको शौक।
वह करे तक़लीद महराजा "किशन प्रशाद" की॥
बेगुनाही के यक़ीं से कांपता है उसका हाथ।
क़तल भी होता हू हमदरदी भी है जल्लाद की॥

---

(१) अंग्रेजी शब्द है मानी इज्जत (२) बाहर आना या निकलना (३) आखरीवकत (४) बेहोशी (५) सिर्फ (६) तारीफ़ (७) बहुत ज्यादा (८) मशकूर या एहसान मंद (९) नाउम्मेद (१०) मंदिर (११) देखने लायक (१२) बेवसी (१३) ज़माना (१४) बनाना (१५) जड़ (१६) मजा (१७) नापका (१८) तारीफ।

देख कर उसकी तलब मैं खुद ही उसका हो गया ।
दाम[1] ही बनकर पड़ी मुझ पर नजर सय्याद की ॥
माघ लाया है[2] नवेदे आमदे फसले[3] बहार ।
गूंज भंवरे की है एक ठुमरी मोबारकबाद की ॥
आप की चश्मे[4] करम[5] काफी है "अकबर" के लिये ।
इसके शेरों को जरूरत कुछ नहीं है दाद[6] की ॥
तजरुबे के बाद रंज व ग़म से करली उसने सुलेह ।
'अकबर' अब परवा नहीं करता दिले नाशाद की ॥

× × ×

जमीं तो खोद खोदा कर हो गई है कैम्प में शामिल ।
मगर हां आसमां की कुछ पुरानी शान बाकी है ॥
बहुत आरास्ता[7] हमको किया तालीम मग़रिब ने ।
बस एतनी ही कसर समझो जो कुछ ईमान बाकी है ॥
हुये नेकी से बेगाना[8] तरक्की इसको कहते हैं ।
फरिश्ते हो गये रोखस्त फकत शैतान बाकी है ॥
तबीयत में अभी पतलून से सीरी[9] नहीं पाता ।
यह सच है कट गये हैं पांव लेकिन रान बाकी है ॥

× × ×

पाव में उनकी तुमने जंजीर क्यों न बांधी ।
बोले कि शेख बनकर उठे नहीं हैं "गांधी" ॥

× × ×

"महातमा" जी से मिलके सीखो तरीक क्या है स्वभाव क्या है ।
पड़ी है चक्कर में अक्ल रुब की बिगाड़ क्या है बनाव क्या है ॥

(१) जाल (२) निमन्त्रण (३) बहार का मौसिम (४) आंख (५) मेहरबानी (६) तारीफ (७) सवारना (८) लापरवाह (९) आसूदगी ।

नुमायाँ[1] दागे सिजदा से अगर तेरी जबीं होती।
यक़ीनन जेर[3] गरदूं[4] ग़ैरते माहे[5] मोबीं होती॥
फ़लक का खून अलवाने नफ़स[7] को नतको नहीं देता।
अजल[8] जबरन उठा देती है और सेरी[9] नहीं होती॥
सितारों ही को यह ढूंढा किये है दूरबीनों[10] से।
खोदा की जुस्तजू[11] करते जो चश्मे दूरबीं[12] होती॥
तुम्हारे शौक़ में रोता तो हूं लेकिन मजा जब था।
कि मेरी चश्मे तर होती तुम्हारी आस्तीं होती॥
रसाई[13] तो हुई उन तक मगर अब यह मुसीबत है।
उन्हें फ़ुरसत नहीं है और मुझे सेरी[14] नहीं होती॥
जो याद उनके लबे[15] शीरीं[16] को आजाती दमे आख़िर।
यह तलख़ी नेज़ा की लज्जत[18] में मिसले अगबीं होती॥
तुम्हारे हाथ से नालां[19] है नेचर वरना ऐ साहब।
न यह मोटर का गुल होता न यह अंजन की पीं होती॥

× × ×

यह अलफ़ाज कह कर दहने[20] ख़ुफ़त[21] को जगाना है।
शरीयत[22] सर झुकाना है तरीक़त दिल लगाना है॥

× × ×

उधर घेरे हुये साहब है और जोरे हवाई है।
इधर रूठे हुये "गाधी" है शिकवा[23] और ढिठाई है॥
जो 'हर' को जप रहे थे तंग है वह इन बखेड़ो से।
किधर फरियाद को जायें खोदा ही की दोहाई है॥

चमकते आये हैं शातिर किसी नज़ीरे में।
तुम अपने शहेद को वदलो न उनके ज़ीरे से॥
न खोओ जमज़मये अरगवां[1] में हुस्ने सोखन[2]।
संभाल सकते हो तुम अपनी लै मज़ीरे में॥
उदूये[3] दीं के तकल्लुफ़ से ऐहते राज भला।
मुफ़ीद तर नहीं आदमक़ौम गौरे से॥
वह कह रहे हैं कि देखोगे देर में तुम अगर।
कि काम करता है हम लोग धीरे-धीरे में॥

× × ×

जाने मुश्ताक़ है तेरी मेरा जीना है यही।
मस्त हूं जामे अज़ल से मेरा पीना है यही॥
तेरे महबूब[4] के मंजिल की ज़्यारत हो नसीब।
देखले नज़्मे तमन्ना[5] कि मदीना है यही॥
जिन्दा ईमान को करदे बुते खुदबीन का गरूर[7]।
क्या खबर गैंच की अलबत्ता करीना[8] है यही॥
नूर व ज़ुलमत में नज़र आये फ़क़त शाने ज़हूर।
रात दिन आरज़ूये[9] दीदये बीना[10] है यही॥
मंज़िले इश्क में रख अपनी खुदी ज़ेरे क़दम।
हुस्न[11] कहता है मेरे बाम[12] का जीना[13] है यही॥
पेशे तौहीद बुतों[14] का सरे मग़रूर[15] हो ख़म[16]।
उनका कीना[17] है जो मुझसे तो वह कीना है यही॥
मौजे[18] दिल के लिये है जिस में रवानी[19] की उमंग[20]।
यह वही वहेर[21] है 'अकबर' वह सफ़ीना[22] है यही॥

(१) लाल रङ्ग (२) बात (३ मज़हब के दुश्मन (४) दोस्त (५) दरशन (६) हौसला (७) घमंड (८) तरीक (९) तमन्ना (१०) देखना (११) खुबसूरती (१२) कोठा (१३) सीढ़ी (१४) मूरती (१५) घमंड [१६] झुकना या टेढा होना (१७) मैल (१८) लहर (१९) बहाव [२०] जोश (२१) समुद्र (२२) नाव।

अपनी तह[१] में ऐ जमीं अब मुझको जाये[२] गोर[३] दे।
वह रहे जेरे[४] फलक अल्लाह जिसको जोर दे॥

अब तो है अहले वसीरत की खोदा से यह दोआ।
दफा[५] करना दीदनो या हमको चश्मे[७] कोर[८] दे॥

तालिबे[९] दुनियां मे तकवा की कहां पाबन्दियां[१०]।
माल से इसको है मतलब शाह दे यां चोर दे॥

× × ×

तिब[११] देहली की मदद से बुत की सेहत[१२] बढ़ गई।
कुदरते बारी[१३] से बुतखाने[१४] को शौकत[१५] बढ़ गई॥

डन्डवत जब शेख साहब ने भी की पेशे सनम[१६]।
"गॉधी" आँधी हो गये चेलो की हिम्मत बढ़ गई॥

वह यह कहते हैं कि साहब ही का है सारा सितम[१७]।
आप फरमाते हैं साहब की शरारत बढ़ गई॥

× × ×

खिरद[१८] के साथ कहां तक वफा करे कोई।
हवास[१९] ही न बजा हो तो क्या करे कोई॥

बुतो का कौल यह है अब खोदा के बन्दों से।
हमे जरूर है जीना मरा करे कोई॥

किसी के फितन्ये[२०] कामत का जुलम है ऐ हशर।
तेरी तरफ से भी उट्ठे खोदा करे कोई॥

भलाई यह है कि फितने को तुम[२१] फरो करदो।
यह क्या, कि फितने[२२] में फितना बपा[२३] करे कोई॥

× × ×

छोड़ अमरीका की सैर न जा हांग कांग तू।
जो मांगना है तुझको खोदा ही से मांग तू॥

---

(१) नीचे (२) जगह (३) कब्र (४) आसमान के नीचे (५) दूर (६) देखना (७) आंख (८) अंधा (९) मांगना (१०) बंदिश या रोक (११) हकीम (१२) तंदुरुस्ती (१३) खोदा (१४) मूरती का घर ... (१५) शान (१६) मूरती (१७) जुलम (१८) अकल (१९) होश (२०) जुलम (२१) छोड़ना (२२) फसाद (२३) जुलम ढाना।

जो खतरे हैं तुझे उनकी अजीयत[1] रह न जायेगी।
अगर टल जायेंगे उनकी भी लज़्ज़त[2] रह न जायेगी॥
कहा उसने तबीयत करती है[3] आजिज, कहा मैंने।
किसी दरवेश[4] से मिल यह तबीयत रह न जायेगी॥
कहा दरवेश अब ऐसे कहां, मैंने कहा अच्छा।
मुसीबत झेल ली फिर यह जरूरत रह न जायेगी॥
मुसीबत खुद ही बन जायेगी तेरे हक़ में एक मुरशिद[5]।
जो दिल ठहरेगा नफसानी यह ताकत रह न जायेगी॥
खोदा के जिक्र से तसकीने दिल हो जायगी आखिर।
करीबे मरग बाक़ी कोई कुलफत[6] रह न जायेगी॥
दोआये मगफिरत में आखरी अइयाम[7] गुजरेंगे।
खोदा चाहेगा दुनियावी कुदरत रह न जायेगी॥
ख़्याले ऐशे बाक़ी में बसर कर वक्त, ऐ "अकबर"।
यह फानी हालतें हैं कोई हालत रह न जायेगी॥

× × ×

चौंक तो उट्ठे हैं मुर्गो सुबह की आवाज से।
कम है वह लेकिन जो वाकिफ[8] है सेहर[9] के राज से॥
साहबे बातिन[10] को काफी हैं इशाराते लतीफ़[11]।
शकले मानी को समझले लफज के अंदाज[12] से॥
खुद ही हम इञ्जन डराइवर थे हुये रोखसत वह दिन।
दिल धड़कता है अब अपना रेल की आवाज से॥

× × ×

खुली गो सब पर अब उनकी दशा है।
मगर वायज की यह अच्छी कथा है॥

---

(१) तकलीफ (२) मजा (३) परेशान (४) फकीर (५) गुरु (६) तकलीफ (७) जमाना (८) जानकार (९) सवेरा (१०) भूठा (११) उमदा या मजेदार (१२) तरीका।

है छत्तरी भी चुन, न पट्टा है, न वाक है।
पूरी भी, खुशक लब है, कि घी छः छटाक है॥
गो हर तरफ है खेत फलो से भरे हुये।
थाली मे खरबूजे की फकत[१] एक फांक है॥
कपड़ा गरा[२] है सत्तर है औरत का आशकार[३]।
कुछ बस नहीं जबां पे फकत ढांक ढाक है॥
भगवान का करम[४] हो स्वदेशी के बैल पर।
लीडर की खींच खांच है गांधी की हांक है॥
"अकबर" पे बार[५] है यह तमाशाये दिल शिकन[६]।
उसकी तो आखिरत की तरफ ताक झांक है॥

× × ×

खोदा एतनी समझ दे भाई जी को।
है मुशकिल मेम बनना बाई जी को॥

× × ×

मै समझाता हूं फिर उनको दोबारा।
बने लेहंगा पहेन कर क्यों गुवारा॥

× × ×

"गांधी" और "मालवी" मे है क्या फरक।
आप इस बहेस मे है नाहक गरक[७]॥

× × ×

फरक वह है जो अकल व इश्क में है।
एक "काशी" में एक "दमिशक" मे है॥

× × ×

चक्कर में है आज हिस्टरी भी।
चर्खा भी है और मिनिस्टरी भी॥

---

(१) टुकड़ा (२) महँगा (३) खुला हुआ या जाहिर (४) महरबानी (५) बोझ (६) दिल को तोड़ने वाला (७) डूबे हुये (८) एक जगह का नाम है इसको "डमसकस" अंग्रेजी में कहते है।

मरकज से वहुत हटे हुये है—मैदां मे मगर डटे हुये हैं ॥

× × ×

जिन पर है खोदा की मेहरवानी—दोनो को समझते है वह फानी ॥

× × ×

शक नहीं इस में कि इस लड़के मे है तेजी वहुत ।
वक्त लेकिन लेती है तालीम[२] अंग्रेजी वहुत ॥
खैर जो कुछ हो वह हो जायेगा एक दिन नामवर[३] ।
हर तवालत[४] को वह करलेगा चिल[५] आंखिर मोख़तसर ॥
इस जमाने की रक़ाकत का असर कब इसमे है ।
जौहरे संजीदगी[७] अक्ल व अदव[८] सव इसमें है ॥
यह भी कहता हूँ मगर वेसाखता मैं आप से ।
कुछ सफात[९] उसने वरासत[१०] पाये है मां वाप से ॥

× × ×

मुझे तो शोहरते "अकवर" मे ग़ौर[११] कुछ भी नहीं ।
खोदा के नाम की वरकत है और कुछ भी नहीं ॥
जव उसके दिल ने खोदा का वना दिया उसको ।
खोदा ने तरजे[१२] सोखन[१३] भी वना दिया उसको ॥
जो रोशनी थी नई उसने राहे कालिज की ।
और उसके दिन ने उसे खुद वना दिया विजली ॥
चमक मिली है तो साथ उसके वेकरारी भी ।
सरूरे तवा[१४] भी वेहद और आह[१५] व जारी भी ॥
वही वहार मुझे भी पसन्द है वल्ला ।
हजार रङ्ग हो और सव मे वूये या अल्ला ॥

---

(१) मिटने वाली (२) पढ़ाई (३) नामी (४) मुसीबत (६) आखिर-कार (६) छोटा (७) गम्भीर (८) तहजीव (९) वसफ या सिफता (१०) तरका (११) सोचने की वात (१२) तरीका (१३) वात-चीत (१४) तवीयत (१५) रोना पीटना ।

अमीर शरीयत[1] की तहरीक है—कहा अकसरों ने यही ठीक है ॥
फिरंगी[2] महल को है इसमे सुकूत—जरूरत का पाते नही वह सवूत ॥
वह कहते हैं फैसल का उट्ठा है हाथ—अमीरे शरीयत ही आजायें साथ ॥
वह कहते हैं कोशिश में जब है कमाल—नई बात का क्यो करो तुम ख़्याल ॥
गौरमेन्ट तो खुश है इस बात से – कि यह काम हो हिन्द के हाथ से ॥
बफज़ले[3] खोदा कम नही मोलवी—सुनाया करे तख़्त से मसनवी ॥
नये मोलवी ब्रसरे जोश[4] हैं—जो पीरे[5] तरीकत है खामोश[6] हैं ॥
तवक्को[7] करें ऐसी अकलों से क्या—हुकूमत नही जब तो नकलों से क्या ॥
कहां तक करें इंतेजारे वसंत—अखाड़े जुदा हों जुदा हो अनन्त ॥
वह कहते हैं काफी हैं अहले तरीक—न ढूंढो यहां तुम स्यासी[8] रफीक[9] ॥

\+ \+ \+

नामुनासिब है किसी और तरह की तहरीक[10] ।
सच कहा हजरते ब्रह्मन ने फकत हमला है ठीक ॥
जिक्र वुतका कोई मौका है न चारा[11] अब है ।
शायरी मे भी खोदा ही का सहारा अब है ॥
चाहता अब नही मैं अंजुमने[12] शैर मे वाह ।
बस मसले पर क्या करता हूँ सुभान अल्लाह ॥

\+ \+ \+

चरख[13] बोला कि यह दुनियां नही राहत[14] के लिये ।
इनकलाबो[15] की जरूरत है कयामत के लिये ॥
एक तरफ गॅस है और एक तरफ ऐ एखराज[16] रेयाह ।
कर दिया हिन्द मे फितरत ने तमाशा यह मोवाह ॥
इनकी ख़्वाहिश[17] है वजाया करें ताशा अपना ।
और देखाया करें हम लोग तमाशा अपना ॥

---

(१) कानून (२) अंग्रेज (३) मेहरबानी (४) बहुत ज्यादा जोश मे (५) बुजुर्ग (६) चुप (७) उम्मीद (८) राजनीतिक (९) दोस्त (१०) आंदोलन (११) चारा (१२) मजलिस (१३) आसमान (१४) आराम (१५) उलटफेर (१६) निकालना या खारिज करना (१७) इच्छा ।

अब तो खबर नहीं है मगर इससे पेशतर[१]।
मुल्ला मजिस्ट्रेट थे सूफी प्रोफेसर ॥
सीधे चले तो दोनों मे लाजिम[२] था इत्तेहाद[३]।
टेढ़े हुये तो काम ही दुनियां का है फसाद[४] ॥

× × ×

यह हुकम तरके दुनियां सेहरा[५] नशी[६] यह क्या है।
सोंचो तो कोह[७] व सहरा[८] दुनियां से क्या जुदा[९] है ॥
इस तरक का तअल्लुक वैसे हैं ऐ बादर।
दिल मे अगर हो दुनिया फिर क्या मोकाम बसतर ॥

× × ×

जहेन शायक[१०] रहा ठेकाने का---रंग वदला किया जमानेका ॥
शोखिये अक़्ल रह गई शक मे---कट गई उम्र मुफ्त वक-वक में ॥

× × ×

दिल से जो तू किसी का मोहिब[११] व मोतीय[१२] है।
इस पर असर न हो तो यह अमरे[१३] बदीय है ॥
मजहब का एख़तेलाफ नही माने व दाद[१४]।
अलबत्ता है जरूर मोहब्बत मे इसतेदाद ॥
मजहब अलग है और अंग तेरी जात है।
हर एक न समझेगा इसे बारीक बात है ॥
यहां वासलाने हक मे नही इसका इमतेयाज[१५]।
खुलता है कौल हजरते सादिक़ से इसका राज ॥
सुनले यह मगरबी है कहां इसमें पोस्त है।
अल्लाह का जो दोस्त है वह मेरा दोस्त है ॥

---

(१) पहले (२) ज़रूरी (३) मेल (४) झगड़ा (५) जंगल (६) बैठना (७) पहाड़ (८) जंगल (९) अलग (१०) चाहनेवाला (११) दोस्त (१२) कायल (१३) काम (१४) तारीफ (१५) फरक।

बोले मसजिद मे रात आके अकील—है महल मे नेमाज सुभपेसकील[१] ॥
वहां क़ालीन या चटाई है—वां अमीरी हैं यां गदाई[२] है ॥

× × ×

नातवा[३] होश पे दुनियां का है एक वारे[४] अजीम[५] ।
यह दोआ "अकबरे" आजिज[६] की है ऐ रबे करीम ॥
दारे[७] फानी[८] से तेरा नाम ही लेते गुजरें ।
नफसे[९] चन्द जो बाकी है वह अच्छे गुजरें ॥

× × ×

राहे खोदा में आगे होती थी सरफरोशी ।
अब क़ौम का प्रेस है पेशा खवर फरोशी[१०] ॥
मग़रिव की ही लासाजी दौड़ी है वेतहाशा ।
कालिज में कर रहे हैं ग़ाजीमियां तमाशा ॥
कुछ बात होते-होते हो ही रहेगे आखिर ।
इस वक़्त तो हैं लेकिन वरवादियां वजाहिर ॥

× × ×

आगे तुम्हारे रंग किसी का नहीं जमा ।
जै हो तुम्हारी ऐ मेरे "गांधी महात्मा" ॥
लेने को तुम नहीं हो गौरमेन्ट की मदद ।
चूरन को क्या जरूर पिपरमेन्ट की मदद ॥

× × ×

नई तहरीक[११] का दिल मे भी गुजर है कि नहीं ।
अमली तौर पे भी उनका असर है कि नहीं ॥

---

(१) सख़्त (२) फकीरी (३) कमजोर (४) बोझ (५) वड़ा (६) परेशान (७) सूली या फांसी (८) मिटनेवाला (९) थोड़ी जिन्दगी (१०) वेचना (११) अंदोलन ।

जो शामे फितना[1] उफक[2] पर जहां मे तारी[3] है।
वह सिलसिला अभी क़ायम है और जारी है॥
नतीजा इसका अयां[4] होगा चन्द[5] रोज के वाद।
जहूर साज[6] भी होगा वफूरे साज के वाद॥
खोदा की याद से पुरनूर[7] जिनका है सीना।
समझ रहे हैं कि फितरत[8] नहीं है नावीना॥

× × ×

खोदा का काम खोदा ही के वासते वेहतर।
मिले जो नफ्स[10] की लज्जत[11] तो काम है अवतर॥
रही जो आप पे ग़ालिव[12] नमूद[13] शख़सीयत।
तो काम ठीक नहीं गो दुरुस्त हो नीयत॥
जो तख्ता तुझको उठाना है रख न उस पे क़दम।
अलग से जोर देखा हाथ ही से ले वस काम॥
सही मोलवी वारी ने यह सदा दी है।
कलामे पाक हमारा इमाम व हादी है॥

× × ×

तौहीद का मुसलिम ने वजा रक्खा है डंका।
ताअत[14] से वह रुकता नही लंदन हो कि लंका॥
दुनियां की यह तरकीव तो वालू की है एक भीत।
दीनों जो नजर कीजिये इसलाम की है जीत॥

× × ×

खूब यह कौले[16] मरद कामिल[17] है—मौत भी इरतेक़ा मे दाखिल है॥
हां जहा है उरूजे[18] रूहानी—नाम इसका है क़ुरवे[19] यजदानी॥

---

(१) फसाद (२) छितिज (३) छाई हुई (४) जाहिर (५) थोड़े दिन (६) वनाने वाला (७) रोशनी से भरा हुआ (८) प्रकृति (९) अंधा (१०) सांस या आदमी (११) मजा (१२) फतेहमन्द (१३) जाहिर (१४) पूजा (१५) दीवार (१६) वात (१७) पूरा (१८) ऊॅचाई (१९) करीव या नजदीक।

मेरी खुद्दारी[1] को आखिर लेगये उसमें घसीट।
अब है मेरी नौहा[2]ख़्वानी[3] और उनकी इस्टरीट॥
सब्र व एकसूई[4] व तक़वे को कहूँगा मैं बजा[5]।
यह तमाशाये हेकारत[6] अफ़रों लेकिन बुरा॥

× × ×

दामें[7] फना[8] मे फंसना और उम्र खतम करना।
बे अख़तियार जीना बे अख़तियार मरना॥
शोगाये[9] खलक सुना और खुद भी दखल देना।
फिर आंख बन्द करना और अपनी राह लेना॥

× × ×

हरचन्द हाले दुनियां इस वक्त मुनक़लिब[10] है।
ईमान मुतमइन[11] है और कुफर मुज़तरिब[12] है॥
ज़ाहिर पे तुम न जाओ है एतबार बातिन[13]।
ओक़दा[14] मेरे सोखन[15] का खुल जायगा किसी दिन॥

× × ×

छापे खानों की फेज़ा[16] में तो वह बेशक बदले।
देखना यह है कि हालात कहा तक बदले॥
नहीं काफी थी कमेटी तेरी कूवत[17] पकड़े।
एक जमाअत[18] हो कि जो दीन[19] की सूरत पकड़े॥

× × ×

पाल टैक्सी झगड़े छोड़ो-इन बातो से अब मुंह मोड़ो।
कैसे "डायर" कैसे "हंटर"-लाओ सागर लाओ कंटर॥

---

(१) स्वाभिमान (२) मातम (३) पढ़ना (४) एक तरफ (५) दुरुस्त (६) ज़लील (७) जाल (८) मिटने वाला (९) शोरगुल (१०) उलट फेर मे है (११) इतमीनान से (१२) परेशान (१३) झूठा (१४) राज या गाठ (१५) बातघात (१६) वातावरण (१७) ताक़त (१८) गरोह (१९) मज़हब।

कुफर से जिन को है अ ा [१] को खोआहां [२] होना ।
कौन तसलीर [३] करे उनका मुसलमां होना ॥
हां वह आप्स ही में इस बात को करलें मंजूर ।
चोर के भाई ग्रह कट यह मसल है मशहूर ॥

× × ×

अपनी जगह हर एक का अरमां [४] निकल रहा है ।
तोपें भी चल रही हैं, जूता भी चल रहा है ॥
लेकिन रड़ा मैं चुनका दिल में यह बात सोची ।
किस तकवियत [५] पे उट्ठू इन्जीनिअर न मोची ॥

× × ×

न इलमे दी है कि राहे [६] खोदा के हो हादी ।
न तो पर्चा है कि जर मे रहे हर आबादी ॥
ग्रेजुयट है खाते हैं और तनते हैं ।
बनाते अपनो को हैं दुश्मनों मे वनते हैं ॥

× × ×

मरदे दींदार [७] थे वकारउल मुलक-उनका मद्दाह [८] रहता था कुल मुलक ।
हाकिमों मे बहुत मोहज्जिज थे-अहले इलम व खिरद [१०] के मरकज थे ॥
आप क्या पूछते हैं कैसे थे-यादगारे सलफ थे ऐसे थे ॥

× × ×

जाना नहीं पड़ा कहीं ओस्ताद के लिये ।
हाजिर कहीं हुआ नहीं मे दाद [१२] के लिये ॥
मेरे सोदाये दिल ने मुझे अपनी दाद दी ।
दिल ही ने मुझको दरस [१३] दिया खुद हो दाद दी ॥

× × ×

---

(१) नतीजा (२) चाहना (३) मानना या मंजूर करना (४) हौसला (५) हिम्मत या ताकत (६) रास्ता (७) मजहबी (८) हिमायत (९) इज्जतदार (१०) अकिलमन्द (११ जमाना (१२) तारीफ (१३) तालीम ।

नवाब और अली से तरकीब नाम की है।
मकबूले[1] तबा[2] ख़ूबी उनके कलाम[3] की है॥
क्या लाजवाब मतला[4] कल आप ने सुनाया।
सालिक ने राह पाई आरिफ को वजद आया॥
उतरे हैं जो जमीं पर रोशन[5] दिमाग ले कर।
यह ढूंढते है तुझको दिलका चिराग लेकर॥

× × +

"आपरेशन" इन मसायब[6] का यहा वेहार्म[7] है।
मुसलिमो का कूव्ते इमां "क्लोरोफार्म" है॥
जिसपे है तासीर तौहीदी क्लोरोफार्म की।
इसको दुनियावी मसायब का न होगा हिस कमी॥

× × ×

कहा "गाधी" ने कि मौजूं[8] नही यह आप का काम।
हँस के बोले कि मोकफ्का है सरीहन[9] यह निजाम[10]॥
आप का ज़ोर तो जङ्गी[11] नये आलात[12] में है।
काफिया इसका फकत तरके मवालात से है॥

× × ×

अरमा बकदरे ताकत हरसू[13] निकल रहे है।
साहब तो उड़ रहे हैं और हम उछल रहे हैं॥
गुस्से में है हम उन पर वह हमपे हँस रहे हैं।
दामे[14] फरेबे[15] दुनिया से दोनों फंस रहे हैं॥
दोनो को चाहिये यह ताकत से मुँह न मोड़ें।
वह अपना जब्र[16] छोड़े हम सब्र को न छोड़े॥

---

(१) पसन्द आना (२) तबीयत (३) बात या शायरी (४) गजल के पहले शेर को कहते हैं (५) अच्छे दिमाग वाले (६) मुसीबतो का (७) अंग्रेजी शब्द है मानी नुकसान (८) ठीक (९) जानबूझ कर (१०) हुकूमत या काम (११) लड़ाई (१२) हथियार या औजार (१३) हरतरफ (१४) जाले (१५) धोखा (१६) जुलम।

स्वराज आपके अहेवाव[1] ने पाया जो ऐ हज़रत।
तो यह फरमाइये फिर क्या करेगी आप की मिल्लत[2] ॥
वह बोले मिश्र तक अंग्रेज होंगे हम सफर अपने।
वह चल देंगे वहां से सूये लंदन और हम मक्के ॥

× × ×

हर चीज़ हो ऐ जनाव वापस—ओहदा वापस खेताव वापस ॥
गुस्से को करूं मैं ज़ब्त[3] ताचन्द[4]—वापस पतलून लाओ तहवन्द[5] ॥
वीवी भी खोदा से अब डरेंगी—वापस वेपरदगी करेंगी ॥
जब तक हैं तुम्हारे जिसम में जान—लपटा ही रहेगा तुमसे शैतां ॥
रक्खूं गालों को क्यों सफाचट—वापस लूंगा मैं रीश भटभट ॥
वेहतर है न देखो पेशया[5] पस—अल्ला को कर दो जान वापस ॥
होगी वही दिल नेवाज अपनी—वापस लंगा नेमाज़ अपनी ॥
कुत्ते मोटर से वढ़ रहे हैं—लाला फिर रथ पे चढ़ रहे हैं ॥

× × ×

वस आप ही कीजिये उछलकूद—हमसे यह उम्मीद अब है वेसूद[6] ॥
तेज़ाव में हम तो गल चुके हैं—इनके सांचे मे ढल चुके हैं ॥

× × ×

यह नानको आपरेटिव तर्ज़[7] गो फैला है नेटिव मे।
व लेकिन हज़रते "वाजिद" रहे कोआपरेटिव में ॥
उम्मीदे इन्डिया ओन्नीस सौ ओन्नीस मे चमकी।
तवक्को[8] हो गई रिन्दों[9]को दौरे[1] "सागरो[11]जम[12]की ॥
किया है हज़रते "वाजिद" ने इसका तरजुमा अच्छा।
जो मज़मूं सख्त पेचीदा[18] था अवरेशम का है लच्छा ॥

---

(१) दोस्त (२) मेलजोल या कमेटी (३) वरदाश्त (४) कब तक (५) आगा पीछा सोचना (६) वेफायदा (७) तरीका (८) उम्मीद (६) परेहजगार (१०) ज़माना (१०) जिसमे शराव रक्खी जाती है (१२) गूंगा या हिन्दुस्तान (१२) टेढ़हा।

इनाम अगर चाहिये तो आम[1] से मिले।
आराम अगर चाहिये तो राम[2] से मिले॥
दुनियां का वह हासिल है तो यह दीन का हासिल।
"अकबर" का कलम सनअते[3] लफजी में है कामिल[4]॥

× × ×

नई रोशनी का हुआ तेल कम—हुकूमत ने इससे किया मेल कम।
इधर मोलवी किस मोयरसी में थे—न आफिस मे थे और न कुर्सी में थे॥
यह ठहरी कि आपस मे मिल जाइये—सियासी[5] कमेटी में पल जाइये।
इसी मेल का आज कल है जहूर—खोदा जाने जुलमत है इसमें कि नूर॥

× × ×

हज़रते बरहम ने फरमाया पसन्द इस राय को।
ऊँट को जेवा मतानत और कुलेलें[6] गाय को॥
इनको बढ़ना चाहिये और हमको बचना चाहिये।
होमरूल इनको मोवारक हमको तक़वा चाहिये॥

× × ×

यही "गांधी" से कह कर हम तो भागे।
क़दम जमते नहीं साहब के आगे॥
वह भागे हज़रते "गांधी" से कहके।
मगर से वैर क्यों दरिया मे रहके॥

× × ×

किसी की चल सकेगी क्या अगर क़रवे[7] क़यामत है।
मगर इस वक़्त इधर चरखा उधर उनकी वज़ारत है॥

---

(१) जन्ता (२) ईश्वर या आराम (३) कारीगरी (४) पू
(५) राजनीति (६) कूद फांद (७) नज़दीक।

पूछता हूँ आप "गांधी" को पकड़ते क्यों नहीं।
कहते हैं आपस ही में तुम लोग लड़ते क्यों नहीं॥
पेच[1] किसमत के तुम्हारे जब देखायेंगे कजी[2]।
आदलाना[3] रंग में उठ कर करेंगे हम जजी॥

× × ×

ख्वाह महुआ हो ख्वाह हो अंगूर—दोनों अब हैं व क़ब्जये लंगूर।
पालसी में रिन्द अब जो पड़ते हैं—उनके दिल मुफ्त ही में सड़ते हैं॥
क़लमीजंग[4] गो जरूरी है—बाहमी[5] बोग़ज़[6] बे शऊरी[7] है।
दौर[8] काम अपना कर ही जायेगा—यह ज़माना गुज़र ही जायेगा॥
चैन दुनियां को अब न होगा नसीब—इससे बदतर ज़माना भी है क़रीब॥

× × ×

इधर इस्ट्राइक उधर होमरूली।
कहाँ तक भरे जेल और दें वह सूली[9]॥
मगर एयरशिप[10] से तवक़्क़ो[11] है पूरी।
कि रक्खेगा क़ायम वह अमने[12] जरूरी॥
यही ज़ाहरी पेशे नज़र[13] है।
ख़ुदा के इरादों की किसको ख़बर है॥
अजब क्या नहीं ऐसे बन्दों का जागे।
कि जो गिड़गिड़ाते हों मालिक के आगे॥

× × ×

जाती रही उनकी कम निगाही—हर घर में है अब तो बादशाही।
नाफ़हेम[14] को अब यह डाटते हैं—दौलत आपस में बाटते हैं॥
शाही का गुर देखा दिया है—मुँह में खोंच अड़ी हुई है।
बातों के हैं पेच उनके आगे—तलून है हेच[15] उनके आगे॥

---

(१) टेढ़ापन या उलट फेर (२) टेढ़ापन (३) इंसाफ़ (४) क़लमी लड़ाई (५) आपस में (६) जंग (७) नालायकी (८) ज़माना (९) फांसी की क़िस्म है (१०) अंगरेज़ी शब्द है मानी हवाई जहाज (११) उम्मीद (१२) शांति (१३) नज़र के सामने (१४) ना समझ (१५) कुछ नहीं।

भाई की तो टांग तोड़ते हैं—लन्दन में हाथ जोड़ते है ॥
गैरो के साथ बह न जाओ—रहने न दो या तो रह न जाओ ॥

मुलकी इज्जत तो भेंट मे है—अपना मतलब वह टेन्ट मे है ॥
सब दे गये दौड़ने मे कांधी—जीते मैदान भाई गांधी ॥

जब चोर न हो तो जागना है—खटका जब हो तो भागना है ॥
दुनियां का जो खेलता है फगुआ—अंगरेज ही रहेगा अगुआ ॥

कुर्ता तो गरीब का है मंहगा—रानी पहने जरी[1] का लेहंगा ॥
साहब का हिसाब उनसे सुनलो—हर मद का जवाब उनसे सुनलो ॥

कोउनसिल मे यह हैं मालिके मेज—चौकी पहरे को बस हैं अंगरेज ॥
शाखों को कुतर रहे है फजलू—और दूरसे देखते हैं कल्लू ॥

लाला साहब कि मीर साहब—दोनो अब है वजीर साहब ॥
सीनों मे नेहां[2] है बेवफाई[3]—चेहरो पे परिन्द की सफाई ॥

तहमद आगे लटक रहे हैं—गाजी है मगर मटक रहे है ॥
रुपये की है एक तरफ छुना छुन—तोपों की है एक तरफ दनादन ॥

लगता नहीं उनका अब कहो जी—बेताब हुई है लक्ष्मी जी ॥
मियां भाई है हाथ के साथ—हिन्दू भाई हैं गाय के साथ ॥

पोथी पंडित की है अकारथ[4]—लाला हुये आशिके बजारत ॥
दफतर का जो हो पसन्द नखरा—छोड़ो भाई से हिस्सा बखरा ॥

इंगलिश काम अपना कर रहे है—गांधी नाम अपना कर रहे है ॥
भाड़े के बने है यह जो टट्टू—समझो इन्हे खेल ही के लट्टू ॥

देखला जो गया दुरबीन अन्दर—हजरत समझे उसे चोकुन्दर ॥
क्या काम चलेगा गालियों से—दरिया न रुकेगा नालियो से ॥

---

(१) सजावदार या सोने का काम किया हुआ (२) छिपा हुआ (३) गद्दारी (४) बेकार ।

"गांधी" ही को दें वह अल्टीमेटम[1]—हम तो अब ओढ़ते हैं गेटम ॥
ख़ोवाने[2] अलवान पे करते हैं जस्त—बू[3] से ग़ाफ़िल[4] हैं रङ्ग में मस्त ॥
झूठा है रेफ़ारम का बहाना—मुल्की दौलत का है उड़ाना ॥

× × ×

वह कहते हैं कि लो घर की गौरमेंट—मगर चूरन में शामिल हो पिपरमेंट ॥
यही बायस[5] तो है पूरा स्वराज्य—तलब करने लगे "गांधी" महाराज ॥
ख़ोदा की याद में हैं साहबे हिस—चली जायेगी दुन्यिाँ की यह घिसघिस ॥
अभी तो जोर मग़रिब हंस रहा है—जईफ़उलहाल[6] मशरिक़[7] फंस रहा ॥
हमारे यार पिटने पर हैं ना जान[8]—हमारे नक़शा मिटने पर हैं नाजान ॥

× × ×

हम हैं माज़ूर[9] घर ही में हैं धरे—आफ़ीयत[10] में ख़लल पड़ा तो मरे ॥
'जिसको हो जौर खाना[11] जंगी का—वह करे सामना फेरङ्गी[12] का ॥

× × ×

बनाया तुमने चन्दो की फेरावानी[13] से कालिज को ।
नई तालीम ने खोया बुज़ुरगाना मदारिज को ॥
जमीदारों से कह दो भाइयो वेसूद रोते हो ।
असामी "वैल" साहब आदमी तुम कौन होते हो ॥
बस अब तो लाट साहब को दोआ और घर का कोना है ।
चलेगी पोप ही की, काम रुपये ही से होना है ॥

× × ×

यह मग़रबी तरक्की ऐख़लाक़[14] की बदू[15] है ।
घर घर है इसका चरचा यह ज़िक्र कू बकू[16] है ॥
दोनों तरीक़ को अब समझे हैं एक तमाशा ।
कालिज के कोर्स पर हम गिरते हैं बेतहाशा ॥

---

(१) अंगरेज़ी शब्द ह मानी चुनौती (२) दस्तर ख़्वान (३) महक (४) लापरवाह (५) वजह (६) बूढ़ा या कमजोर (७) पूरब (८) घमंड या' तय्यार (९) कमज़ोर (१०) आराम (११) घर के अन्दर लड़ाई (१२) अंगरेज (१३) भट (१४) रसमेहा (१५) दुश्मन (१६) जगह जगह ।

वह फखर अमरे[१] दीनी दिल से निकल गया है।
इज्जत का अब तो हममें हिस ही बदल गया है ॥
हिस से कहां मोफर है ऐहसास है तो सब कुछ।
होजाय पास लड़का और पास[२] है तो सब कुछ ॥
वह मिस को सज रहे हैं गाजे की ले के पुड़िया।
और इनके ज़िद पे हम भी अब खेलते हैं गुड़िया ॥

× × ×

कौले शैतां है कि क्या ग़म है मेरा नाम मिटे।
असल मकसूद[३] मेरा यह है कि इसलाम मिटे ॥
कह दो यह उससे कि कितना ही छुपे उसका असर।
गैर मुमकिन है कि लाहोल न बरसे उस पर ॥

× × ×

"गांधी" है गऊ आदमी वह बुल तो नहीं है।
गुजरात ही की बात है काबुल तो नहीं है ॥
कुछ इससे भड़कने की जरूरत तो नहीं है।
मानों हो खतरनाक वह सूरत तो नहीं है ॥

× × ×

कम्पाउन्डर मगन है शीशी उबल रही है।
गायें कुलेलें पर है बकरी उछल रही है ॥
है इनके डाक्टर को इंआम की मसरत[७]।
अहेबाब[४] शाद[५] खुरम[६] और हासिदों को हसरत ॥

× × ×

---

(१) मज़हबी काम (२) नजदीक या डर या शर्म (३) मक़सद या मतलब (४) दोस्त लोग (५) खुश (६) खुश (७) वाक़या तो।

"मेम्बरी"

हारूँ हजार बार न आये हया[1] मुझे।
तेवरी पे बल[2] भी आये तो देना सजा मुझे॥
दुश्मन के आगे लाश भी गर हो पड़ी हुई।
एक बार फिर मैं ईंट उखाड़ूं गड़ी हुई॥
साकी किताबखान्ये कानून की क़सम।
दूकान हाय गल्ला व परचून की कसम॥
काका को जो हुआ इसी ताऊन[3] की कसम।
भागूँ न लाला जी की कलम दान की कसम॥
इस मेम्बरी के वास्ते सब घर भी है निसार[4]।
जर क्या है इस मोहल्ले का जरगर[5] भी है निसार॥
घोड़ा निसार, ऊँट भी, खच्चर भी, है निसार।
यह पौने छः हजार की मोटर भी है निसार॥
जब बातें आ पड़ी है तो दूकान भी फिदा[6]।
दूकान कौन चीज है ईमान भी फिदा॥
देखें हराय जायें वह कब तक हरायेंगे।
अब हमको भी यह है कि हरबार जायेंगे॥
कितना ही जोर हमको मोखालिफ देखायेंगे।
तुम देखना कि बाज न हम हरगिज़ आयेंगे॥
हम सर पर ऐसी केतनी ही चोटें उठा चुके।
चपरासियों के हाथ से धक्के भी खा चुके॥
"अकबर" यह गौर करके ज़रा दिल मे देखिये।
थकने पे बैठते नहीं महफ़िल में देखिये॥
गैरत[8] नहीं है आंख के भी तिल मे देखिये।
इस साल फिर भी दौड़ है कौंसिल में देखिये॥

---

(१) शर्म (२ सिकुड़न (३) पलंग (४) नेवछावर ५) रुपया बनाने वाला (६) नेवछावर (७) दुश्मन (८) शरम।

जब नकीरैन[1] आये मेरी कब्र पर बहरे[2] सवाल।
मैंने यह चाहा कि लिखवा दूं उन्हें सब अपना हाल॥
हाय पाकेट में जो डाला मुझको हैरत[3] हो गई।
यानी जो थी नोट बुक वह इस सफर मे खो गई॥
कह दिया मैंने कि मैं अब हर तरह माजूर हूँ।
रह गई दुनियां मे मेरी नोट बुक मजबूर हूं॥

× × ×

पानी पीना पड़ा है पाइप का—हरफ पढ़ना पड़ा है टाइप का॥
पेट चलता है आंख आई है—शाह एडवर्ड की दोहाई है॥

× × ×

जहाँ सूई घड़ी की होती है वक्त इसको कहते हैं।
गई चोरी तो हम समझे जमाना इसको कहते है॥

× × ×

मेरे शिकवों[4] से क्यो भरते हैं वह अखबार का कालम।
कोई यह शेख से कहदे कि सुनिये किवल्ये[5] आलम॥
जिधर साहब उधर दौलत जिधर दौलत उधर बन्दा।
जिधर बन्दा उधर आनर[6] जिधर आनर उधर बन्दा॥

× × ×

भाइयो तुम कभी हिन्दी के मोखालिफ न बनो।
बाद मरने के खुलेगा कि यह थी काम की बात॥
बसके था नामयेआमाल[7] मेरा हिन्दी मे।
कोई पढ ही न सका मिल गई फिलफोर[8] निजात॥

× × ×

---

(१) मुंकिर नकीर दो फरिश्ते हैं जो मरने के बाद कब्र में आते हैं। एक तो मुरदा बदन में फिर से जान डालता है और दूसरा कुछ सवाल उसी मुरदे से करता है बाद में फिर रूह निकाल कर चला जाता है इन्हीं को नकीरैन कहते हैं (२) वास्ते (३) ताज्जुब (४) शिकायत (५) बुजुर्ग (६) अंगरेजी शब्द है मानी इज्जत (७) कामों का हिसाब (८) फौरन या जल्दी।

मोहररम और दशहरा साथ होगा–निबाह इसका हमारे हाथ होगा।
खोदा ही की तरफ से है यह संजोग–तो क्यों रक्खें न बाहम सुलह हम लोग॥

× × ×

मालवी का हाल कुछ और मोलवी का मोल कुछ।
कहते हैं बाज़ार में "अकबर" से तू भी बोल कुछ॥
बोला वह दुनियाँ का सौदा तो फकत एक खेल है।
उमदगी है माल मे और. मोल मे जब मेल है॥

× × ×

हाल दिल मैं सुना नहीं सकता—लफ्ज मानी को पा नहीं सकता॥
इश्क नाजुक मिजाज है बेहद—अक़्ल का बोझ उठा नहीं सकता॥
होश आरिफ की है यही पहचान—कि खुदी मे समा नहीं सकता॥
पोछ सकता है हमनशी[1] आंसू—दाग दिल को मिटा नहीं सकता॥

× × ×

मस्तिये नशोनुमाये[2] फलेस गुल का जोश है।
है हवा मे फैज साक़ी हर कली मैनोश[3] है॥
बज्म[4] मे इमाये चश्मे साकीये मैनोश है।
वह बहक जाने के खतरे मे है जिसको होश है॥
जिसके आँखें हैं वह है दीवाना चश्में आफरीं।
आलमे इरफान[5] मे जो जीहोश[6] है बेहोश है॥

× × ×

तलब है हक की तो मिल आके हमसे मस्तो से।
नहीं है मैकदा खाली खोदा परसतों[7] से॥

× × ×

खोदा के दर से अगर मैं नहीं हूँ बेगाना[8]।
तो जर्रा जर्रा यह आलम है आशना[10] मेरा॥

---

(१) दोस्त (२) चढ़ाव उतार (३) शराब पीये हुये या मतवाली (४) महफिल (५) मिटनेवाली दुन्यिाँ (६) होश में (७) पूजना (८) गैर (९) दोस्त या पहचाना हुआ।

खोदा बनता था "मनसूर" इसलिये मुशकिल यह पेश[1] आई।
न खिचता दार[2] पर साबित अगर होता खोदा होना॥

× × ×

एक अक्से[3] नातमाम[4] पे आलम[5] को वजद[6] है।
क्या पूछना है आप के हुस्न व जमाल[7] का॥

× × ×

होश भी बार[8] है तबीयत पर—क्या कहूँ हाल नातवानी[9] का॥

× × ×

आता है वज्द मुझको हर दीन की अदा पर।
मसजिद में नाचता हूँ नाक़ौस[10] की सदा पर॥

× × ×

रंग चेहरे का तो कालिज ने भी रक्खा कायम।
रंग बातिन में मगर बाप से बेटा न मिला॥

× × ×

फैज कालिज से जवानी रह गई बालाये ताक़।
इमतेहां पेशे नजर और आशिकी बालाये ताक॥
वह चिरागों से हैं जलते ऐसे है रोशन ज़मीर।
कहते हैं रखिये पुरानी रोशनी बालाये ताक॥

× × ×

लेमूये कागज़ी तो बहुत देखे आपने।
अब कागज़ी तरक्कीये फैशन को देखिये॥

---

(१) सामने या आगे (२) सूली (३) प्रतिबिम्ब या परछाई (४) मिटने वाली (५) दुनियां (६) झूमना (७) खूबसूरती (८) बोझ (९) कमज़ोरी (१०) घंटा घड़ियाली (११) झूठा।

एक झलक उनकी देख ली थी कभी।
वह असर दिल से आज तक न गया॥

× × ×

मोहब्बत का तुम से असर क्या कहूँ—नजर मिल गई दिल धड़कने लगा॥

× × ×

निगाहें मिल गईं थीं मेरी उनकी रात महफिल में।
यह दुनिया है बस इतनी बात फैली दास्तां[1] होकर॥

× × ×

मेरी निगाहे शौक का अल्लाह रे असर।
मारूफ भूल जाते हैं अपनी नहीं नहीं॥

× × ×

संभालें दिल को, कि हम हालते जिगर देखें।
तमाम आग लगी है किधर-किधर देखें॥

× × ×

मेरी बेताबिये[2] दिल पर अदा से मुसकुराते हैं।
क़यामत करते हैं बिजली पे वह बिजली गिराते हैं॥

× × ×

दिल हो वफा पसन्द नजर हो हया पसन्द।
जिस हुस्न में यह वस्फ़[3] हो वह है खोदा पसन्द॥

× × ×

राह[4] पर उनको लगा लाये हैं हम बातों में।
और खुल जायेंगे दो चार मुलाकातों में॥

× × ×

अगरचे तलख़[5] मिला जाम[6] उमरे फानी[7] का।
मगर सहल[8] नहीं साक़ी से बदगुमानी[9] का॥

---

(१) क़िस्सा (२) परेशानी (३) सिफत (४) रास्ता (५) कड़ुवा (६) शराब (७ मिटना (८) नतीजा (९) बेवफाई।

आज आराइशे[1] गेसूये[2] दोता होती है।
फिर मेरी जान गिरिफ़्तारे[3] बला[4] होती है॥
शौक़ पाबोसिये[5] जाना मुझे बाक़ी है अभी।
घास उगती है जो तुरबत पे हिना[6] होती है॥
जिसने देखी है वह चितवन[7] कोई उससे पूछे।
जान क्यों कर हदफ़े[8] तीर क़ज़ा[9] होती है॥
नेज़ा[10] का वक़्त बुरा वक़्त है ख़ालिक़ की पनाह।
है वह सायत कि क़यामत से सेवा होती है॥
रूह तो एक तरफ़ होती है तन से रोखसत।
आरज़ू एक तरफ़ दिल से जुदा होती है॥
हूँ फ़रेबे[12] सितमे[13] यार का क़ायल "अकबर।
मरते-मरते न खुला यह कि जफ़ा होती है॥

× × ×

तमकीन एक निशान है असमत[14] की आन का।
परदा बस एक ज़हूर है औरत की शान का॥
परदा तो उनका हक़ है नहीं उनपे जब्र[15] कुछ।
आया है उनपे वक़्त यह सख़्त इमतेहान का॥
शोख़िये मग़रबी के ख़रीदार हैं बहुत।
गाहक मगर ज़ियादा है हया की दुकान का॥

× × ×

मिस ने बेगम से कहा कल तुम कहां और हम कहां।
बूट की चर-चर से क्या रक्खा है यह चम-चम कहां॥
मिस यह बोली पढ़ के निकलो तो ज़रा स्कूल से।
और ही चालें नज़र आयेंगी यह आलम कहां॥

---

(१) संवारना (२) बाल (३) फंसना (४) मुसीबत (५) पैरचूमना

परदा पर लिखा है

उठगया परदा तो "अकबर का बड़ा कौन सा हक़।
वे पुकारे जो मेरे घर में चला आता है॥
बेहेजाबी[1] मेरी हमसाये[2] की ख़ातिर से नहीं।
सिर्फ हुक्काम से मिलने में मज़ा आता है॥

× × ×

अफसोस है गुलशन को खेज़ां लूट रही है।
शाखे गुलेतर सूख के अब टूट रही है॥
इस कौम से वह आदतें देरीन्ये[3] ताअत।
बिलकुल नहीं छूटी है मगर छूट रही है॥
वह राहे शरीयत कि जहां बिछती थी आखें।
यह कुफ्र के कंकरा में इरो कूट रही है॥

× × ×

रक़बा तुम्हारे गांव का मीलों हुआ तो क्या।
रकबा तुम्हारे दिल का तो द इंच भी नहीं॥

× × ×

गये ब्रह्मन के पास लेके जो अपने झगड़े को शिया सुन्नी।
बिगड़ के बोला कि जाओ भागो मलेच्छ तुम भी मलेच्छ वह भी॥

× × ×

क्या कहे औरों को यह ऐसे है वह ऐसे हैं।
सच जो पूछो तो हमीं कौन बहुत अच्छे हे॥

× × ×

शमा[4] से तशबीह[5] पा सकते है यह अइयाश[6] अमीर।
रात भर पिघला करें दिन भर रहे बालाये[7] ताक॥

---

(१) बेशर्मी (२) पड़ोसी (३) पुराना (४) मोमबत्ती या चिराग़ (५) मिसाल (६) आराम तलब (७) ऊपर।

क्या शक है आफताब[1] के शान व जलाल[2] में।
रोशन[3] तर इससे कौन सी शै है ख़ेयाल में॥

लेकिन नहीं वह कुछ भी मोअस्सर पस[4] अज ग़रूब[5]।
लाज़िम[6] है गौर कीजिये इस मसले पर ख़ूब॥

हर[7] चन्द तुम खेयाल करो अफताब का।
गोशा[8] भी उठ सकेगा न शब[9] की नेकाब[10] का॥

पूछोगे उसको तब भी वह फिर आ न जायगा।
इसको पुकारने से अंधेरा न जायगा॥

इंसान का हाल भी मेरे नजदीक है यही।
तहक़ीक की नज़र जो करो ठीक है यही॥

केतना ही कोई साहबे औज व[11] कमाल हो।
केतना ही बा[12]असर हो कि आली ख्याल[13] हो॥

जब कर गया जहां से वह मुलके अदम को कूच।
फिर इससे कुछ मदद का तसव्वर[14] है हेच व[15] पूच॥

कैयूम[16] व हई[17] जात है अल्लाह की फ़क़त[18]।
ज़िन्दा हमेशा बात है अल्लाह की फ़क़त॥

× × ×

यह बात तो अच्छी है कि उलफ़त हो मिसों से।
हूर उनको समझते हैं क़यामत है तो यह है॥

× × ×

अहर्से फुजूल थीं यह खुला हाल देर में।
अफसोस उम्र कट गई लफ़जों के फेर में॥

× × ×

यहाँ की औरतों को इल्म की परवा नहीं बेशक।
मगर यह शौहरों से अपने बेपरवा नहीं होती॥

---

(१) सूरज (२) दबदबा (३) ज्यादा चमकदार (४) पीछे (५) डूबना (६) जरूरी (७) जेतना भी (८) कोना (९) रात (१०) परदा (११) बलन्द मरतबे वाला या बड़ा आदमी (१२) असरदार (१३) ऊँचे ख्याल वाला (१४) ख्याल (१५) बेकार (१६) क़ायम रहने वाला (१७) सच्चा (१८) सिर्फ।

जो देखी हिस्टरी इस बात पर कामिल[1] यकीं आया।
इसे जीना नहीं आया जिसे मरना नहीं आया॥

× × ×

हिन्दू व मुसलिम एक हैं दोनों—यानी यह दोनों एशियाई हैं॥
हम वतन हम जबान व हम किस्मत—क्यों न कहदूं कि भाई-भाई हैं॥

× × ×

ऐ इकबाल कहूँगा हर बहेर[2] को मैं भाई।
मौकूफ कुछ नहीं है गंगा व नरबदा पर॥

× × ×

लाखों को मिटा कर जो हजारों को उभारे।
इसको तो मैं दुनिया की तरक्की न कहूगा॥

× × ×

देखें परवाने के दावे पे उभरने वाले।
इश्क इसे कहते हैं यों मरते हैं मरने वाले॥

× × ×

ज़वाल[3] जाह व दौलत में बस इतनी बात अच्छी है।
कि दुनियां को बखूबी आदमी पहेचान लेता है॥

× × ×

कहां मसजिद में वह अगले से मुसल्लिम।
खोदा के नाम को खाना पुरी है॥

× × ×

आदम छुटे बिहिश्त से गेहूं के वास्ते।
मसजिद से हम निकल गये बिस्कुट की चाह ने॥

---

(१) पूरा (२) समुन्द्र (३) बरबादी के दिन या बिगड़ना (४) इज्जत।

जो पूछा मुझ सेदौरे[1] चर्ख[2] ने क्या तू मुसलमां है।
मै घबराया कि इस दरयाफ्त मे क्या रम्ज[3] पिनहां[4] है॥
कहूं ऐक़रार तो शायद यह बेमहरी[5] करे मुझसे।
अगर इनकार करता हूं तो खौफे क़हेर मजदा है॥
बिल[6] आखिर कह दिया मैंने कि गो मुसलिम तो है बन्दा।
व लेकिन मोलवी हरगिज नही है ख़ानसामा है॥

× × ×

करेंगे शौक़ से मुसलिम गिजा[7] मे मै दाखिल।
शराब को भी हरीसा बना के छोड़ेंगे॥

× × ×

खोदा ही की इबादत[8] जिनको है मक़सूद ऐ "अकबर"।
वह क्यों बाहम[9] लड़ें गो फर्क हो तर्जे इबादत मे॥

× × ×

आज बंगले मे मेरे आई थी आवाजे अजां।
जी रहे है अभी कुछ अगले जमाने वाले॥

× × ×

जज बनाकर अच्छे अच्छो का लुभा लेते हैं दिल।
किस क़दर है खुशनुमा[10] दो नीम इनके हाथ से॥

× × ×

पूछा "अकबर" है आदमी कैसा।
हंस के बोला वह आदमी ही नहीं॥

× × ×

मुझको कुछ पूछना है "अकबर" से।
यह कभी होश में भी आते है॥

मै हूं नानको आप्रेशन के लिये तय्यार जस्त[11]।
तुम तो लेकिन ऐन्टी को-आपरेशन में हो मस्त॥

---

(१) ज़माना (२) आस्मान (३) भेद (४) छिपे हुये (५) बेमुरवती (६) आखिर कार (७) खाना (८) आपस मे (१०) दिल को लुभाने वाले (११) कूद फांद।

वह दिलाता है दिले दीदार[1] को तक़वा की याद।
ऐन्टी को-आपरेशन है मगर शर[2] व फ़साद॥
शामिल है सिलसिले मे सारे ओलूमें मंतिक।
हर ख्वांदगी[3] है आला[4] तंजीम[5] के मोताविक॥
तजवीद व हिफ्ज़[6] क़ोरआं ऐहतेमाल[7] भी है।
और इब्तेदाई[8] अरवी का इन्तेज़ाम भी है॥
दारूल अकामा में है यह ख़ास मसलहत भी।
पेशे नजर है यानी तुलवा की तरबियत[9] भी॥
इस मदरसे की इमदाद अब आप पर है वाजिब।
शफकत[10] का मुसतहक[11] है जो इलम का है तालिब[12]॥

× × ×

जेहे बरकते हज़रते गौसेपाक।
कि है नाम से उनके दिल तावनाक॥
बनो के वह प्यादे खोदा के वली।
शिगुफता[13] है इस नाम से हरकली॥
इसी जिक्र से है यह मोहफिल लतीफ[14]।
वजा है कही ग्यारहवीं को शरीफ॥
यह है अर्ज[15] मेरी व इज्ज व नेयाज़[16]।
कि अहेवाव मुझको करें सरफराज़[17]॥
सवाव आखिरत[18] का भी हासिल करें।
सूये हक़[19] तबीयत को मायल[20] करें॥
सुनें जिक्र हजरत वली जौक़[21] से।
तनावल[22] करें माहज़र[23] शौक़ से॥

---

(१) मजहबवाला (२) सरारत या लड़ाई झगड़ा (३) पढ़ाई लिखाइ (४) ऊँचा (५) तहजीब (६) ज़बानी याद करना (७) बंदोवस्त (८) शुरू (९) तहज़ीब (१०) मेहरबानी (११) हक़दार (१२) चाहने वाला (१३) खिलना (१४) उमदा (१५) कहना (१६) आजजी के साथ (१७) सुबुकदोश (१८) मरने के वाद का (१९) ईश्वर की तरफ (२०) लगायें (२१) शौक़ (२२) शुरू करें (२३) खाना।

बनाम मुंशी नेसार हुसेन साहब "लखनऊ"

नामा[१] कोई न यार का पैग़ाम[२] भेजिये।
इस फस्ल में जो भेजिये बस आम भेजिये॥
ऐसे जरूर हों कि उन्हे रख के खा सकूं।
पोख़ता[३] अगर हों बीस तो दस ख़ाम[४] भेजिये॥
मालूम ही है. आपको बन्दे का एंडरेस।
सीधे एलाहाबाद मेरे नाम भेजिये॥
ऐसा न हो कि आप यह लिक्खें जवाब में।
तामील[५] होगी पहले मगर दाम भेजिये॥

× × ×

काम कोई मुझे बाक़ी नहीं मरने के सेवा।
कुछ भी करना नहीं अब कुछ भी न करने की सेवा॥
हसरतों[६] का भी मेरी तुम कभी करते हो ख़्याल।
तुमको कुछ और भी आता है सँवरने[७] के सेवा॥
मौत से डरते हैं अब पहले यह तालीम न थी।
कुछ नहीं आता था अल्लाह से डरने के सेवा॥
महवे[८] हैरत ही रही बहेर[९] में हर चश्मे हुबाब[१०]।
कुछ न थी हस्तीये अमवाज[११] गुजरने के सेवा॥
मेरे शिकवों[१२] को न पूछें रहें ख़ामोश[१३] हुज़ूर।
कुछ न बन आयेगी वल्लाह मुकरने[१४] के सेवा॥
इश्क़ के फन मे है 'अकबर' का भी दर्जा आला[१५]।
ऐब[१६] कुछ इसमें नहीं जब्त[१७] न करने के सेवा॥

---

(१) ख़त (२) ख़बर (३) पक्का (४) कच्चा (५) पूरा करना (६) अरमानों (७) सजना (८) ताज्जुब में डूबना (९) समुन्दर (१०) बुलबुला (११) लहरें (१२) शिकायत (१३) चुप (१४) बदल जाना (१५) बड़ा (१६) बुराई (१७) बरदाश्त करना।

मसरर्त[1] हुई हँस लिये दो घड़ी-मुसीबत पड़ी रोके चुप हो रहे।
उसी तौर[2] से कट गया रोजेजीस्त[3] -सोलाया[4] शबेगोर[5] ने सो रहे॥

\+ + +

छोड़ लिटरेचर को अपनी हिस्टरी को भूल जा।
शेख व मसजिद से तअल्लुक[6] तर्क[7] कर स्कूल जा॥
चार दिन की ज़िन्दगी है कोफ्त[8] से क्या फ़ायदा।
खा डबल रोटी कलर्की कर खुशी से फूल जा॥

\+ + +

इसलाम को जो कहते हैं फैला बजोरे तेग़[9]।
यह भी कहेंगे फैली खोदाई बज़ोर मौत॥

\+ + +

मै हुआ उनसे रोखसत[10] ऐ "अकबर"-वस्ल के बाद थैंकइव कहकर॥

\+ + +

कर लिया बीबी ने उनकी इन्टरेंस इस साल पास।
वाल्दा साहब तो है खामोश लेकिन खुश हैं सास॥

\+ + +

किसी में दम ही नही है तो दम भरें किसका।
बुजुर्ग ही नहीं बाकी अदब करें किसका॥

\+ + +

बहुत रोये वह स्पीचों में हिकमत[11] इसको कहते है।
मैं समझा खैरख़्वाह उनको हिमाकत इसको कहते हैं॥

\+ + +

लपट जा, न रुक ऐ "अकबर" गज़ब की ब्रिउटी है।
नही नहीं पे न जा यह हया की डिउटी है॥

---

(१) खुशी (२) तरीका (३) जिन्दगी के दिन (४) रात (५) कब्र (६) लगाव (७) छोड़ना (८) तकलीफ (९) तलवार (१०) विदा (११) अक्लमंदी।

रात अफसोस से कहते थे यह वनसी भाई ।
हमसे नाहक़ है अलग कांफ्रेनसी भाई ॥

× × ×

साहिल नज़र आता है न मछली है न वंसी ।
क्या लहरें लिया करते है यह कांफ्रेनसी ॥

× × ×

वह तो गिरजा पर रुका और यह गया कावे को फांद ।
शेख का टट्टू तो अंजन से भी बढ़ कर तेज है ॥

+ + +

काविले रश्क[1] है जमाने मे—दिन वकीलों का रात रंडी की ॥

+ + +

सुदेशी गौरमेन्ट से लच[2] गई--यह वाई पिपरमिन्ट से पच गई ॥

+ + +

मुझ खस्ता[3] की हस्ती नहीं कुछ आपके आगे ।
भुरते की है क्या अस्ल सटन चाप के आगे ॥

+ + +

हम क्या कहे अहेवाव[4] क्या कारे नुमायां कर गये ।
बी० ए० हुये नौकर हुये पेंशिन मिली और मर गये ॥

+ + +

कुछ इलाहावाद मे सामां नहीं वहवूद[5] के ।
यां धरा क्या है वजुज़[6] अकबर के और अमरूद के ॥

+ + +

उनके वीवी ने फ़क़त स्कूल ही की बात की ।
यह न वतलाया कहा रक्खी है रोटी रात की ॥

---

(१) हसद (२) झुक गई (३) जख्मी (४) दोस्त (५) भलाई (६) सवा ।

मुसलिम है मगर बात नबी की नहीं सुनता।
लड़का है मगर अपने वली[1] की नहीं सुनता॥
हां आप जो फरमायें[2] तो सब हैं हमां[3] तन गोश[4]।
आपस में तो अब कोई किसी की नहीं सुनता॥

+ + +

हकीम और वैद एकसां[5] है अगर तशखीश[6] अच्छी हो।
हमें मतलब सेहत[7] से है बनफशा हो कि तुलसी हो॥

+ + +

इस पेड़ में खूब ही कटहल आये हैं।
हर शाख मे पांच सात फल आये हैं॥
"अकबर" ने कहा कि हम गरीबो के लिये।
नेचर की तरफ से पारसल आये हैं॥

+ + +

शेख अपनी रग को क्या करें रेशे को क्या करें।
मजहब के झगड़े छोड़ें तो पेशे को क्या करें॥
फरहाद ने कहा कि मुनासिब है तुझको सब्र।
कहने लगा बताइये तेशे[8] को क्या करें॥

+ + +

क़दम अंगरेज कलकत्ते से देहली में जो धरते हैं।
तिजारत खूब की अब देखें शाही कैसी करते है॥

+ + +

किश्त दिल को नफा[9] पहुँचे अश्क[10] ऐसी चीज है।
दीदये[11] गिरियां[12] पे वाटर टैक्स की तजवीज[13] है॥

---

(१) दोस्त (२) कहें (३) सब (४) कान (५) बराबर (६) जांच (७) तंदुरुस्ती (८) बसूला (९) फायदा (१०) आंसू (११) आँख (१२) रोना (१३) सुझाव या राय देना।

एक वर्ग[१] मुज़महिल[२] ने यह[३] स्पीच में कहा।
मौसिम को कुछ ख़बर नहीं ऐ डालियो तुम्हें॥
अच्छा जवाब खुश्क[४] यह एक शाख़[५] ने दिया।
मौसिम से वाख़बर हों तो क्या जड़ को छोड़ दें॥

\+ + +

क्यों कर कहूं तरीक़े अमल[६] उनका नेक है।
जब ईद मे ग़ज़ाये सेवइयों के केक है॥
मज़बूर हूं मगर न मिलूं उनसे किस तरह।
अब तक वह कह रहे हैं कि अल्लाह एक है॥

\+ + +

शमशीर[७] ज़न[८] को अब नये सांचे मे ढ़ालिये।
शमशीर को छिपाइये ज़न को निकालिये॥

\+ + +

लुत्फ़[९] इमरोज[१०] और है और फ़िक्र फरदा[११] और है।
राहे दुनियां और है और राहे उक़बा[१२] और है॥
नौजवानो से बुज़ुर्गों को न क्यों हो एख़तेलाफ[१३]।
चश्मे[१४] बीना[१५] और है चश्मे तमाशा और है॥

\+ + +

बेहतर[१६] यही है फेर लें आंखों को गाय से।
क्या फायदा है रोज़ की इस हाय हाय से॥

\+ + +

दुनियां ही अब दुरुस्त[१७] है क़ायम न दीन[१८] है।
ज़र की तलब मे शेख भी कौड़ी का तीन है॥

---

(१) पत्ता (२) नाचीज़ (३) लेकचर (४) सूखा (५) डाल (६) काम (७) तलवार (८) मारना या औरत (९) मज़ा (१०) आज (११) कल (१२) आख़िरत (१३) मोख़ालफत (१४) आंख (१५) देखना (१६) अच्छा या मुनासिब (१७) सही (१८) मज़हब (१९) रुप्या पैसा

कायम यही बूट और मोजा रखिये।
दिल को मुश्ताक[1] मिस डिसोज़ा रखिये॥
इन बातों पे मोतरिज[2] न होगा कोई।
पढ़िये जो निमाज और रोजा रखिये॥

+ + +

खेयाल आता है अकसर ऐ खोदा क्या होने वाला है।
करीवउलमर्ग[3] है इमपर भी कोई रोने वाला है॥

+ + +

हो खैर यारव अकवर आशुफ्ता[4] हाल की।
मुरजग रकीव और दवा अस्पताल की॥

+ + +

तालीम है लड़कियों की, कि एक दाम[5] वला[6] है।
ऐ काश कि इस अहेद[7] मे हम वाप न होते॥
यह आप की वरकत[8] है कि पेचीदगियां है।
वेहतर था कमेटी मे अगर आप न होते॥

+ + +

जिंदगी ही मे वतदरीज[10] है मरते जाते।
वक़् के साथ ही हम भी हैं गुजरते जाते॥

+ + +

मैं बहुत अच्छा हूं जी हां कदरदानी आपकी।
गैर पर फिर क्यों है एतनी मेहरवानी आपकी॥

+ + +

लफ्ज़ कौमी पर विला मरकज़ अकड़ना चाहिये।
इसके यह मानी हुये आपस मे लड़ना चाहिये॥

---

(१) चाहेना (२) एतराज़ करना (३) मरने के करीव (४) परेशान (५) जाल (६) मुसीवत (७) ज़माना (८) मेहरवानी (९) घुमाव (१०) धीरे धीरे।

अंगरेज खुश है मालिके ऐरोप्लेन है।
हिन्दू मगन हैं उसका बड़ा लेन देन है॥
बस एक हमीं हैं ढ़ोल मे पोल और खोदा का नाम।
बिसकुट का सिर्फ चूर है लेमनेड का फेन है॥

\+ + +

तेरादिल तो हमेशा अमर[१] खातिर[२] ख़्वाह चाहेगा।
मगर होगा वही "अकबर" कि जो अल्लाह चाहेगा॥
ग़ज़ल सुनी हो "अकबर" की तो उसको उज्र[३] ही क्या है।
मगर हर शेर पर वह अंजुमन[४] मे दाद[५] चाहेगा॥

\+ + +

ग़ैर की हसरत[६] निकलने दीजिये—खैर मेरे दिल को जलने दीजिये
पार्क में क्या जाऊं है वक्ते नेमाज़—बाबूसाहब को टहलने दीजिये॥

\+ + +

अम्बरफेशां[७] हुआ है मोअत्तर[८] मकान है।
केवड़े का यह अरक़ नहीं केवड़े की जान है॥
केवड़ा बनेगा पंद्रह क़तरों से एक गिलास।
इसकी यही है जांच यही इमतेहान है॥

\+ + +

तूने जिसे बनाया उसको बिगाड़ डाला।
ऐ चर्ख[९] मैंने अपनी अरजी को फाड़ डाला॥
दस्तार[१०] व पैरहन[११] गुम[१२] और जेब व कीसा खाली।
तहज़ीब मग़रबी[१३] ने मुझको चिथाड़ डाला कहिये॥
बरबाद क्या अजल ने मुझको किया यह कहिये।
रूहे[१६] रवां[१७] ने अपने दामन को फाड़ डाला।

---

(१) काम (२) दिल को पसन्द आनेवाला (३) इनकार (४) महफिल (५) तारीफ (६) अरमान (७) भाड़ना (८) खुश्बूदार या खुश्बूसे भरा हुआ (९) आसमान (१०) पगड़ी (११) कपड़ा (१२) ग़ायब (१३) पच्छिमी (१४) टुकड़े टुकड़े कर डाला (१५) मौत (१६) जान (१७) चलता हुआ।

ज़ालिम ने ज़ुल्म व ज़ोर से मुझको किया तबाह।
बाद इसके रहेम से मेरी हालत पे की निगाह॥
पूछा सबब तो उसने बसदनाज़[१] यह कहा।
मौका निकालना था मुझे लुत्फ व रहेम का॥

\+ + +

गौरमेन्ट की जो यह तालीम है—गौरमेन्ट की जो यह स्कीम है॥
नुमायां हुये लीडरे दिलपज़ीर[२]—बनाया है मेन्टो को उसने वज़ीर॥
इसीमें हैं पोशीदा[३] कुल बरकतें—खबरदार छोड़ो बुरी हरकतें।
जो साहब कहें मानलो उनकी बात—बस अब पाप छोड़ो करो पुन की बात॥

\+ + +

बहेस आज है गोरे काले की—बू गई गजहबी मसाले की।
मुत्तहिद[४] हों अगर न दैर[५] वहरम[६]—रह न जायेगा ऐशिया का भरम॥

\+ + +

लाला साहब को तो स्वराज्य की तरकीब है ठीक।
शेख जी कूद के क्यों हो गये हैं इस में शरीक॥
इनके इस डाढ़ी को चोटिया से ताल्लुक क्या है।
इनके इस बधने को लोटिया से ताल्लुक क्या है॥

\+ + +

हज़रत गांधी फिरे हैं शिमलये पुरनूर[७] से।
वापसी मूसा की यह आई है कोहे[८] तूर से॥

\+ + +

कमज़ोर नहीं है लार्ड साहब—पाकेट से नहीं है ज़हेर गायब।
लेकिन इसी पालिसी को देखो—गुड़ से जो मरे तो ज़हेर क्यों दो॥

---

(१) बहुत नज़ाकत से (२) दिल का मान लेना (३) छिपी हुई (४) एकट्ठा (५) मंदिर (६) काबा (७) रोशनी से भरा हुआ (८) पहार।

बुनियाद[1] दीं[2] हवायें दुनियां ने मुंहदिम[3] की।
तूफान ने शजर[4] को जड़ से उखाड़ डाला॥
अच्छा मिला नतीजा मुझको मुरासेलत[5] का।
क़ासिद[6] को क़त्ल[7] करके नामे[8] को फाड़ डाला॥

\+ + +

पैग़ाम[9] आ रहा है दिले वेकरार[10] का।
क़ायम है सिलसिला मेरे अश्कों[11] के तार का॥
शायक[12] हुआ है बोसये दामाने यार का।
अल्ला रे हौसला मेरे मुश्ते[13] गुबार[14] का॥
बाग़े जहां से कोई रविश[15] वे खलिश[16] नहीं।
दौड़ाऊँ गुल[17] पे हाथ तो खटका है खार[18] का॥
शमश[19] व कमर[20] को देखते हैं तुझको भूलकर।
क्या शोवदा[21] है गरदिशे[22] लैलो नेहार[23] का॥

\+ + +

ऐ जां शबे फुर्कत[24] मे मैं सोही नहीं सकता।
तुझ विन मुझे नींद आये यह हो ही नहीं सकता॥
इस बहरे[25] मे हूं मिसले हुबाव[26] ऐ ग़मे हस्ती।
तूफां मेरी कश्ती को डुबो ही नहीं सकता॥
खाके[27] कदम उसने मेरी आंखो में लगादी।
अब और मुसीबत है कि रो ही नहीं सकता॥

\+ + +

---

(१) जड़ या नेह (२) मजहब (३) गिराना (४) पेड़ (५) एक दूसरे से चिट्ठी पत्री करना (६) खत ले जाने वाला (७) मार डालना (८) चिट्ठी (९) खत (१०) परेशान (११) आंसू (१२) चाहने वाला (१३) मुट्ठी (१४) गरद (१५) चाल या बाग़ की क्यारी (१६) चुभना या खटकना (१७) फूल (१८) काटा (१९) सूरज (२०) चांद) (२१) जादू (२२) उलट फेर (२३) रात दिन (२४) जुदाई का रात (२५) समुन्द्र या दुनियां (२६) बुलबुला (२७) मिट्टी।

राज़[1] खुल जाता हमारे नालां[2] व फरियाद[3] का।
आप सुनते ही नहीं किस्सा दिले नाशाद[4] का॥
आसमां ने दिल की बरबादी की कुछ परवा न की।
खेल था वीरान[5] करना खानये[6] आबाद[7] का॥
इस निगाहे हसरत आगीं[8] से नेहायत तंग हूँ।
हाथ उठता ही नहीं मुझ पर किसी जल्लाद का॥
मिस हवये बाग़ का है अब परों को नागवार[9]।
एतना खूगर हो गया हूं पंजये सय्याद का॥
उनके चरचे[10] के लिये "अकबर" ने कह दी यह ग़ज़ल।
शुक्र है उतरा तक़ाजा हजरते आज़ाद का॥

\+ + +

हया[11] से सर झुका लेना अदा[12] से मुस्कुरा देना।
हसीनों को भी कितना सहेल है बिजली गिरा देना॥
यह तर्ज़[13] एहसान करने का तुम्हीं को जेब[14] देता है।
मरज में मुबतेला[15] करके मरीजों को दवा देना॥
बलायें[16] लेते हैं उनको हम उन पर जान देते हैं।
यह सौदा दीद[17] के क़ाबिल है क्या लेना है क्या देना॥

\+ + +

क्या कहें औरों को यह ऐसे है वह ऐसे हैं।
सच जो पूछो तो हमीं कौन बहुत अच्छे हैं॥
जानते हैं कि अजल[18] सर पे खड़ी है लेकिन।
महो[19] हैं अंजुमने दहेर[20] में खुश बैठे हैं॥
अक़्ल हैरान है परवानों की इस हालत पर।
शमा को हिस[21] नहीं यह जान दिये देते हैं॥

---

(१) भेद (२) शोर (३) दोहाई देना (४) नाउम्मेद या रंजीदा (५) जङ्गल या बरबाद (६) घर (७) बसा हुआ (८) भरा हुआ (९) बुरा मालूम होना (१०) जिक्र (११) शरम (१२) नजाकत (१३) तरीका (१४) अच्छा लगना (१५) फँसाना (१६) मुसीबत (१७) देखना (१८) मौत (१९) डूबे हुये (२०) जमाना (२१) मालूम करना।

हम कब शरीक होते है दुनियां की जंग[१] में।
वह अपने रंग में है हम अपनी तरंग मे॥
मफतूह[२] होके भूल गए शेख़ अपनी बहेस।
मंतिक़ शहीद हो गई मैदाने जंग मे॥
ह्विसकी की वू से शेख़ की चितवन बदल गई।
इनकी नज़र भी मिल गई साकी के रंग मे॥

× × ×

मेरी बेताबिये दिल पर अदा से मुसकुराते है।
क़्यामत करते हैं बिजली पे वह बिजली गिराते हैं॥

× × ×

वोसय ज़ुलफे सियहफाम[४] मिलेगा कि नही।
दिल का सौदा है मुझे दाम मिलेगा कि नही॥
ख़त में क्या लिखा है क़ासिद[५] को ख़बर क्या इसकी।
पूछता है मुझे ईनाम मिलेगा कि नहीं॥
मैं तेरी मस्ते नज़र का हूँ दोआ गो[६] साकी।
सदका[७] आँखों का कोई जाम[८] मिलेगा कि नहीं॥
क़ब्र पर फातेहा पढ़ने को न आयेगे वह क्या।
जान देने का कुछ ईनाम मिलेगा कि नही॥
वू किसी सिम्त से आती नहीं हमदर्दी की।
मुझको मुझसा कोई नाकाम[९] मिलेगा कि नही॥
जुसतुजू[१०] ही में वह लज्ज़त[११] है कि अल्ला-अल्ला।
क्यों मैं पूछूं वह दिल[१२] आराम मिलेगा कि नहीं॥
आरज़ू मर्ग[१३] की तुम करते हो 'अकवर' लेकिन।
सोचलो क़ब्र मे आराम मिलेगा कि नही॥

---

(१) लड़ाई (२) जीतने के बाद (३) बाल (४) काला (५) ख़त ले जाने वाला (६) दावा करने वाला (७) न्योछावर (८) शराब से भरा हुआ प्याला (९) नाउम्मेद या नामुराद (१०) खोज (११) मजा (१२) माशूक़ या दिल को आराम पहुँचानेवाली (१३) मौत।

मेरी तक़दीर मोआफिक़ न थी तस्वीर के साथ।
खुलगई आंख निगेहवां[1] की भी जन्जीर के साथ॥
खुल गया मुसहफे रोख़सार[2] बुताने मग़रिब।
हो गये शेख़ भी हाजिर नई तफसीर[3] के साथ॥
नातवानी[4] मेरी देखी तो मोसव्विर[5] ने कहा।
डर है तुम भी कही खिंच आओ न तसवीर के साथ॥
बाद सैयद के मैं कालिज का करूं क्या दरशन।
अब मोहब्बत न रही इस बुते बे पीर के साथ॥
मैं हूँ क्या चीज़ जो इस तरज़ पे जाऊ "अकबर"।
"नासिख" व 'जौक' भी जब चल न सकें 'मीर' के साथ॥
क्या रहे दौरे[6] फलक[7] मे कोई तम्कीन[8] के साथ।
जब ज़माना न चले एक ही आईन[9] के साथ॥
ग़रब[10] की मदह[11] भी है शरक़ की तहसीन के साथ।
हम पिआनो भी बजाने लगे अब बीन के साथ॥
इस तमाशागहे हसती मे मुझे हैरत[13] है।
एक नया फिलसफा हो जाता है हर सीन के साथ॥
शेख़ डरते हैं कहीं दम न निकल जाय मेरा।
उन्स[14] इस वजेह से कम रखते हैं यासीन के साथ॥
मुख़लेसाना जो न हो मदह[15] तो क्या लुत्फ[16] आये।
चश्मे ग़म्माज़[17] की गर्दिश[18] भी है तहसीन के साथ॥
दिल दिया, माल दिया प्यार किया उनको मगर।
इन बुतों को वहीं काविश[19] है मेरे दीन के साथ॥

---

(१) पहरेदार या चौकीदार (२) गाल (३) मज़हबी क़ानून (४) कमजोरी (५) तस्वीर बनाने वाला (६) ज़माना (७) आसमान (८) इज्जत (९) कानून (१०) पच्छिम (११) तारीफ (१२) तसल्ली (१३) ताज्जूब (१४) मुहब्बत (१५) तारीफ (१६) मज़ा (१७) चुग़लख़ोर (१८) उलटफेर (१९) खटक।

हलक़े[1] नही हैं ज़ुल्फ़[2] के हलके हैं जाल के।
हां ऐ निगाहे शौक़ ज़रा देख भाल के॥

पहुँचे हैं ता कमर जो तेरे गेसुये रसा[3]।
मानी यह हैं कमर भी बराबर है वाल के॥

बोसो कनार[4] व वसले[5] हसीना[6] है खूब शग़ल[7]।
कमतर[8] बुज़ुर्ग होंगे खेलाफ इस ख़्याल के॥

क़ामत[9] से तेरे सानयें[10] कुदरत ने ऐ हसी।
देखला दिया है हश्र[11] को सांचे मे ढाल के॥

शान व दिमाग़ इश्क के जलवे से यह बढ़ी।
रखता है होश भी कदम अपने संभाल के॥

\+ + -

रही न कल्ब[12] में क़ूवत[13] ज़माना साज़ी[14] की।
दोवा करो न मेरे उम्र की दराज़ी[15] की॥

फलक ने हमको किया मुंतखिब[16] मिटाने को।
हमीं से दाद भी चाहें खुश इनतेयाज़ी की॥

वहुत ख़ुलूस[18] से हाज़िर रहा में ख़िदमत में।
मगर हुज़ूर ने मुझसे जमाना साजी की॥

हमेशा पेशे नज़र हैं वज़ू[19] शिकन[20] मंजर[21]।
इस अंजुमन में निभे किस तरह नेमाज़ी की॥

हम अपने हाल पर अफसोस क्या करें 'अकबर'।
ख़ोदा ने शान देखाई है वे नेयाज़ी[22] की॥

× × ×

मुशताक[23] तेरा 'अकवर' रजूर[24] वहुत है।
अफसोस यही है कि दकन दूर बहुत है॥

---

(१) घेरा (२) वाल (३) पहुँचना (४) वग़ल (५) मुलाकात (६) ख़ूबसूरत लोग (७) काम (८) कम (९) क़दर (१०) वनानेवाला (११) क़यामत या मिटने का दिन (१२) दिल (१३) ताकत (१४) वनाना (१५) वढ़ना (१६) चुना (१७) फरक करना (१८) सादगी (१९) नेमाज़ के वास्ते हाथ धोना (२०) तोड़ना (२१) देखने की जगह (२२) आज़्ज़ी (२३) चाहने वाला (२४) वीमार।

हंगामा[1] है क्यों बरपा[2] थोड़ी सी जो पी ली है।
डाका तो नहीं मारा चोरी तो नहीं की है॥
नातजुरबेकारी से वायज़[3] की यह हैं बातें।
इस रंग को क्या जाने पूछो तो कभी पी है॥
उस मय[4] से नहीं मतलब दिल जिससे है बेगाना।
मकसूद[5] है इस मय से दिल ही में जो खिचती है॥
ऐ शौक वही मय पी ऐ होश ज़रा सोजा।
मेहमाने नजर इस दम एक वर्क़[6] तजल्ली[7] है॥
वा दिल मे कि सदमें दो, यां जी में कि सब सहलो।
उनका भी अजब दिल है मारा भी अजब जी है॥
हर ज़र्रा चमकता है अनवार[8] इलाही से।
हर सांस यह कहती है हम हैं तो खोदा भी है॥
सूरज मे लगे धब्बा फितरत के करश्में[9] हैं।
बुत हमको कहें काफिर अल्लाह की मरज़ी है॥
तालीम का शोर ऐसा तहज़ीब का ग़ुल एतना।
बरकत जो नहीं होती नीयत की खराबी है॥
सच कहते हैं शेख 'अकबर' है ताअते[10] हक[11] लाजिम।
हां तर्क में वह शाहिद यह उनकी बुज़ुर्गी है॥

× × ×

मैं शेफता[12] हूँ आपसे वे मिस्ल हँसी का।
हैरां हो मेरे काम संवर[13] क्यों नहीं जाते॥
जब कहता हूँ मरता हूँ मेरी जान मैं तुमपर।
फरमाते हैं मरते हो तो मर क्यों नहीं जाते॥
वह नींद मे हैं शहर मे फिरने लगे फेरे।
पूछे कोई 'अकबर' से यह घर क्यों नहीं जाते॥

---

(१) शोर (२) मचा हुआ (३) नसीहत करने वाला (४) शराब (५) इरादा किया हुआ (६) बिजली (७) रोशनी (८) रोशनियां (९) तमाशा (१०) पूजाकर (११) प्रमेश्वर (१२) आशिक (१३) बनना।

बुतों से मेल खोदा पर नजर यह खूब कही ।
शवे गुनाह निमाजे सेहर[१] यह खूब कही ॥
फिटन नफीस[२] सड़क खुशनुमा[३] डिनर हर शव[४]।
यह लुत्फ[५] छोड़ के हज का सफर यह खूब कही ॥
तुम्हारी खातिरे[६] नाजुक का है खेयाल फक़त[७] ।
वगर न मुझको रक़ीवों[८] का डर यह खूब कही ॥
जनाव शेख का हो जाऊँ मोतकिद[९] माकूल[१०] ।
निगाहे चार रहे वे असर यह खूब कही ॥
शवाव व वादओ[११] फिकरे मआल[१२] कार चे खुश[१३]।
जुनून[१४] इश्क़ व खेयाले खतर[१५] यह खूब कही ॥
सवाल वस्ल करूं या तलव[१६] हो वोसे की ।
वह कहते हैं मेरी हर वात पर यह खूब कही ॥

× × ×

अफसोस है गुलशन को खेजां लूट रही है ।
शाखे गुलेतर सूख के अव टूट रही है ॥
इस कौम से वह आदते देरीनये[१७] ताअत[१८] ।
विलकुल नहीं छूटी है मगर छूट रही है ॥
वह राहे शरीयत[१९] की जहा विछती थी आंखें ।
यह कुफ्र के कंकड़ से उसे कूट रहे हैं ॥

× × ×

चल रही है जिस तरह दुनियां को चलने दीजिये ।
मल रही है हाथ अगर मंतक़ तो मलने दीजिये ॥

+ + ÷

जानते हैं कि सदा खूने जिगर पीना है ।
फिर खुशी क्या कि अभी हमको वहुत जीना है ॥

---

(१) सुवह या तड़का (२) उमदा (३) उमदा (४) रात (५) मजा (६) दिल (७) सिर्फ (८) दुश्मन (९) भरोसा करने वाला (१०) ठीक (११) शराव (१२) नतीजा (१३) क्या कहना (१४) पागलपन (१५) आफत या खतरा (१६) मागना (१७) पुराना (१८) पूजा (१९) मजहवी कानून ।

दिन रात की यह बेचैनी है यह आठ पहर का रोना है।
आसार[१] बुरे हैं फुरकत[२] में मालूम नहीं क्या होना है॥
दुनियां के लिये हंगामे थे खल्क[३] एक तरफ आप एक तरफ।
अब शहरे खमोशां[४] आलमेहू[५] मिट्टी है लहेद[६] का कोना है॥
क्यों पस्त हुई है हिम्मते दिल क्यों रोक रही है मायूसी[७]।
कोशिश तो हम अपनी सी करलें होगा तो वही जो होना है॥
तरकीब व तकल्लुफ लाख करो फितरत नहीं छिपती ऐ 'अकबर'।
जो मिट्टी है वह मिट्टी है जो सोना है वह सोना है॥

× × ×

शेखने नाक़ूस[८] के सुर में जो खुद ही तान ली।
फिर तो यारों ने भजन गाने की खुल कर ठान ली॥
मुद्दतों क़ायम रहेंगी अब दिलों में गरमियां।
मैंने फोटो ले लिया उसने नजर पहचान ली॥
रो रहे हैं दोस्त मेरी लाश पर बे अख़्तियार[९]।
यह नहीं दरयाफत करते किसने इसकी जान ली॥
हजरते 'अकबर' के इसते कलाल[१०] का हूं मोतरिफ[११]।
ताब मर्ग[१२] उस पर रहे क़ायम जो दिल में ठान ली॥

× × ×

कौम अब कहां हर एक की खुशी ग़म के साथ है।
सच तो यह कि मै का मजा हम के साथ है॥

× × ×

होटल में ब्रह्मन ने अगर भोग लगाया।
समझो कि धर्म को यह बड़ा रोग लगाया॥

---

(१) शगून (२) जुदाई (३) दुनिया (४) कब्रस्तिान (५) संनाटा (६) कब्र (७) नाउम्मेदी (८) संख (९) क़ाबू के बाहर (१०) सब्र (११) मानने वाला (१२) मरने के वक्त तक (१३) बीमारी।

आह जो दिल से निकाली जायगी—क्या समझते हो कि खाली जायगी ॥
नेज़ा कहता है कि रूठी तुमसे जान—हश्र कहता है मनाली जायगी ॥
इस नज़ाकत पर यह शमशीरे[1] जफ़ा—आप से क्यों कर संभाली जायगी ॥
बेतकल्लुफ चाहिये सोज़[2] व गुदाज़—शमा क्यों सांचे में ढाली जायगी ॥
क्या ग़मे दुनियां का डर मुफ़रिन्द[3] को—और एक बोतल चढ़ाली जायगी ॥
जिन्दगी की कल है पेचीदा तो खैर—सांस लेलेकर चला ल जायगी ॥
शेख़ की दावत मे मय का काम क्या—ऐहतियातन कुछ मंगाली जायगी ॥
पाद अबरू मे है "अकबर" महो क्यों—कज तेरी यह कज[4]ख़्याली जायगी ॥

× × ×

आप से बेहद मोहब्बत है मुझे—आप क्यों चुप हैं यह हैरत[5] है मुझे ॥
शायरी मेरे लिये आसां नहीं—झूठ से वल्लाह नफरत है मुझे ॥
ज़ोर रिन्दी है नसीबे दीगरां[6]—शायरी की सिर्फ कूवत है मुझे ॥

× × ×

रंगे शराब से मेरी नीयत बदलगई ।
वायज़ की बात रहगई साक़ी की चलगई ॥
तय्यार थे निमाज़ पे हम सुनके ज़िकरे हूर ।
जलवा बुतोंका देखके नीयत बदल गई ॥
मछली ने ढील पाई है लुकमे पे शाद है ।
सइयाद मुतमइन[7] है कि कांटा निकल गई ॥

× × ×

बेपास के तो सास की भी अब नहीं है आस ।
मौकूफ[8] शादियां भी हैं अब इमतेहान पर ॥

× × ×

अंजन को यह आग हो मोबारक—अंगरेज़ को भाग हो मोबारक ॥
देहली को सोहाग हो मोबारक— क़ौमी हमे राग हो मोबारक ॥

---

(१) जुल्म की तलवार (२) जलन (३) परहेज़गार (४) टेढ़ा (५) ताज्जुब (६) दूसरे लोग (७) इतमिनान से (८) टालना ।

जर्रे जर्रे से लगावट की जरूरत है यहाँ।
आफियत[1] चाहे तो इन्सान जमींदार न हो॥
शेख साहब यह मये सुर्ख मुझे तो है मुफीद।
शग़ल[2] कुछ आप भी फरमायें जो इनकार न हो॥
मय भी होटल से पिओ चन्दा भी दो मसजिद में।
शेख भी खुश रहें शैतान भी बेजार[3] न हो॥
फेर सकती नहीं तक़वा[4] से मुझे कोई सदा[5]।
शर्त[6] यह है कि वह पाजेब की झंकार न हो॥
तोप की तरह चल इस अहेद में गो मुंह हो सियाह।
सुर्ख[7] रूई अब इसी में है कि तलवार न हो॥
आपकी जुम्बिशे[8] अबरू[9] से हुये शेख भी चुप।
सच तो यह है न चले काम जो तलवार न हो॥
अब्र[10] फ़िक्र आपका बरसा तो बहुत ऐ 'अक़बर'।
एतराजात[11] की अहेबाब में बौछार न हो॥
क़ह दो "अक़बर" से यही लोग हैं इस वक़्त के शेख।
और सैय्यद को बुरा कहके गुनहगार[12] न हो॥
दिल है पैग़ाम[13]रसा[14]जाते हैं खालिक़[15]की तरफ।
हमको क्या ग़म है अगर रेल न हो तार न हो॥
गो तबर्रुक़ है यह ऐ शेख व लेकिन है सक़ील[16]।
देखिये शब[17]की इबादत[18]कहीं दुश्वार[19]न हो॥

× × ×

हैट ही कर लिया जब कौम के सर ने क़ुबूल।
दख्ल[20]अंग्रेजी पे उर्दू की शिकायत है फुजूल[21]॥

---

(१) आराम (२) काम (३) परेशान या रंजीदा (४) परहेज (५) आवाज़ (६) जरूरी (७ नेकनामी या कामयाबी (८) हिलना (९) अब (१०) बादल (११) नोकता चीनी १२) खतावार (१३) खबर (१४) पहुचाने वाला (१५) ईश्वर (१६) भारी या सख़्त (१७) रात (१८) पूजा (१९) मुश्किल (२०) कब्जा (२१) बेकार।

वह मनाने मे भी बनाते हैं—कहते हैं मान जाओ मंसाराम ॥

× × ×

कोई कहता है रक्खो साहब से मेल—कि आनर की घर मे रह रेलपेल ॥
किसी की सदा है कि हिन्दू भले—मेरी अंजुमन भी उसी रुख[1] चले ॥
किसी सिम्त कौंसिल की है दिल मे चोट—ऐवजलठ[2] के आपसमे चलते है वोट ॥
कोई शौक[3] तहकीक़ मे ग़र्क़[4] है—कोई राहे तकलीद[5] मे वर्क़[6] है ॥
किसी का है मज़मूं निगारी[7] की धुन—कोई चदा देने को समझा है पुन ॥
किसी को इमारत बनाने का शौक़—किसी को नुमूद[8] व नुमाइश[9] काजौक़[10] ॥
किसी को कोई टोक सकता नही—सड़क को कोई रोक सकता नहीं ॥
जिधर बेहेर[11] हसती[12] बहाये बहे—खोदा से दोआ है कि सब खुश रहे ॥
मगर शेख़ सादी को है एक बात—मुसलमा को है फर्ज[13] उधर इलते फात[14] ॥

× × ×

क्योंकर कहूँ तरीक[15] अमल[16] उनका नेक[17] है ।
जब ईद मे बजाय सेवय्यो के केक है ॥
मजबूर हूँ मगर न मिलूं उनसे किस तरह ।
अब तक वह कह रहे है कि अल्लाह एक है ॥

+ + +

मोटर से न गरदन कभी ऐ यार निकाली ।
तूने न मेरी हसरते[18] दीदार[19] निकाली ॥

+ + +

जिस तरफ उठ गई है आहे है—चश्मे[20] बददूर क्या निगाहें हैं ॥
जर्रा जर्रा है खिज्र शौक तो हो—चलने वाले को लाख राहे है ॥

---

(१) तरफ (२) बदला या बजाय (३) खोज (४) डूबा हुआ (५) तारीफ या पैरवी (६) तेज या होशियार (७) मजमून लिखना (८) नाहर ९) देखलावा (१०) शौक़ ११) समुंदर (१२) जिन्दगी (१३) जरूरी (१४) तवज्जेह करना (१५) तरीक (१६) काम (१७) ठीक या अच्छा (१८) दिली आरजू (१९) देखना (२०) आँख (२१) बुराई से दूर रहे ।

आफते जाँ है तजल्ली[1] आतिशे[2] रोख़सार[3] की।
ख़ैर[4] हो यारब[5] निगाहें[6] शौक[7] सहल इनकार की॥

मस्त कर देती है मुझको फस्ले गुल[8] मे बूये[9] गुल।
वज्द[10] मे लाती है हालत सब्जा[11] व अशजार[12] की॥

भीनी भीनी हाय वह नारंज के फूलों की बू।
जिसपे सौ जाने फ़िदा हों तबलये अत्तार[13] की॥

क़तराहाये शबनमे पाकीज़ा[14] पत्तो पर नहीं।
सब्ज परियों पर चमक है मोतियों के हार की॥

हर[15] शीगूफे पर तड़प जाती है तबये[16] हुस्न दोस्त।
पत्ती पत्ती पर निगाहे डालता हूं प्यार की॥

नाचता हूँ सहने[17] गुलशन मे हवा के साथ साथ।
हमनवाई[18] चाहता हूं बुलबुले गुलजार[19] की॥

मुझको दीवाना बना देता है फितरत का जमाल[20]।
आरिज़े[21] गुल से ख़बर मिलती है रुखे यार की॥

सर झुका कर याद कर लेता हूं अपनी मौत को।
हाज़री हो जाती है अल्लाह के दरबार की॥

निकहते[22] गुल-हाय शाखे गुल मे यह मसती कहाँ।
और ही खुशबू है कुछ तेरे गले के हार की॥

\+ \+ \+

गुरूजी देख कर हमको लहू के बूंट पीते है।
जो सच पूछो तो हम भगवान की कृपा से जीते हैं॥

\+ \+ \+

खोदा की राह में अब रेल चल गई "अकबर"।
जो जान देना हो अञ्जन से कट मरो एक दिन॥

---

(१) चमक या रोशनी (२) आग (३) गाल (४) खैरियत हो (५) ऐ खुदा (६) आँख (७) आरजू मंद (८) मौसिम बहार (९) खुशबू (१०) झूमना (११ हरियाली (१२) पेड़ो (१३) इत्र बेचने वाला (१४) पाक (१५) कली का खिलना (१६) तबियत (१७) मैदान (१८) सुर मे सुर मिलाना या एक सङ्ग में गाना (१९) बाग़ (२०) खूबसूरती (२१) गाल (२२) खिलना।

श्री इशरत हुसेन के बंगले पर जौनपुर में लिखा

फज्ल हो अल्लाह का हो जमा साले सालियां।
वह उछालें बाल यह चमकायें अपनी बालियां॥
लेम्प को हो जगमगाहट और बजे फोनों ग्राफ।
इशरती झूमा करें बच्चे बजायें तालियां॥

घर रहे आबाद समधी और समधन खुश रहे।
डोमनो इनआम पाये गाये प्यारी गालियां॥
गिर्द[1] बंगले के रहे सरसब्ज हर शाखे[2] दरख्त।
नहेर के पानी से लहराती रहे सब नालियां॥

ढेर हो फूलो का गुलदस्ते बनाये बाग़बां।
पेड़ फल देते रहे माली लगायें डालियां॥
सोने चांदी की बहे मौजें[3] दुल्हिन के हाथ से।
ले बलायें[6] और दो-आये दें उन्हे घर वालियां॥

गुलमचायें खेल मे बच्चे रहे बंगले में घूम।
मेंहमानों के लिये पकवान की हो थालियां॥
झांक कर देखें तो जज साहब का दिल भी हो नेहाल।
कमरे की दीवार में दो एक बनी हों जालियां॥

× × ×

हिज्र की शब यों ही काटो भाईयों—उनका फोटो लेके चाटो भाइयो॥

× × ×

इंगलिश से भी हम कहते हैं इंसाफ करो न्यामत[5] चक्खो।
जब तुमको खोदा खुश रखता है तो खलक[7] खोदा को खुश रक्खो॥

---

(१) चारों तरफ (२) डाली लहरे (४) मुसीबत या सदका (५) अच्छा-अच्छा माल (६) बंदे।

जो चाहते हैं कटे उम्र एतदाल[१] के साथ।
खिला रहे हैं वह बिसकुट का जोड़ दाल के साथ॥

× × ×

अज़ीज़ लड़ते हैं आपस में यह सितम[२] क्या है।
ख़ोदा की मार से वोटों की मार कम क्या है॥

× × ×

काफी है अमीरों को क़वानीन गौरमेंट।
मज़हब की ज़रूरत तो ग़रीबों के लिये है॥

× × ×

मेम ने शेख़ को डांटा को पुकारे वह गरीब।
देखिये तोप ने लाठी को दबा रक्खा है॥

× × ×

तुम्हारे हुस्न में साइंस का भी दिल उलझता है।
कमर को देख कर वह ख़ते उक़्लैदिस[३] समझता है॥

× × ×

भाईयो गेहूँ का आटा ढाई आना सेर है।
फिर अजब क्या इसने आदम ज़िन्दगी से सेर है॥

× × ×

भाई अरबी, दोस्त हिन्दू, बादशा अंगरेज़ है।
आप की फ़िकरे तरक़्क़ी इंतेशार अंगेज़ है॥

× × ×

रुक्ने[४] मैहफिल वह हुये रंग बदल देने से।
बात मेरी भी बनी रह गई चल देने से॥

---

(१) आराम (२) ज़ुलम या बे इन्साफी (३) जिवमेटरी (४) खम्भा या जान।

उस बुत के लब[1] व रुख़[2] का लिया बोसा पस[3] अज़ अक़्द[4] ।
मुझ शायरे मशरिक़ का हनीमून यही है ॥

× × ×

अजब हालत है शेख़े हिन्द की अतफ़ाल[5] की निसबत[6] ।
जवानी भी यहीं गुज़रे वचें भी बुत परसती से ॥

× × ×

कालिज व स्कूल की बजती हर सू तोमड़ी ।
चार दूनी आठ हैं और फाक्स मानी लोमड़ी ॥

× × ×

दिलेरी सिखाते हैं हमको यह कह कर ।
जहन्नुम से डरना बड़ी बुज़दिली[7] है ॥

× × ×

नजर में तीरगी[8] है और रगों में नातवानी[9] है ।
जरूरत क्या है परदे की जहां बम्बे का पानी है ॥

× × ×

मेरा टट्टू ज़्यादा मशरक़ी[10] है शेख़ साहब से ।
कि वह मोटर पे चढ़ते हैं यह मोटर से भड़कता है ॥

× × ×

शाप में सब जमा है मुझसे न पी पी कीजिये ।
आप इस बोतल को मेरे घर पे वी० पी० कीजिये ॥

× × ×

पहले सुनते थे सदायें[11] मरदे मैदां कौन है ।
अब तो यह सरगोशियां[12] हैं मेरी गोइयां कौन है ॥

---

(१) होंठ (२) चेहरा (३) पीछे (४) निकाह या शादी (५) बालबच्चे (६) लगाव (७) कमज़ोरी (८) धुंधलापन (९) कमज़ोरी (१०) पश्चिमी (११) आवाज़ें (१२) कानाफूसी ।

गये ब्रह्मन के पास लेके जो अपने झगड़े को शियासुन्नी।
बिगड़ के बोला कि जाओ भागो मलेच्छ तुम भी मलेच्छ वह भी॥

× × ×

न तीर अफगनी[१] है न अब हुक्मरानी[२]।
न वह बज़े[३] मिल्लत[४] न कोरान ख्वानी[५]॥
न बाहम[६] अदब[७] है न वह मेहरबानी।
यही कहती फिरती है लड़के की नानी॥
हर एक शास्त्र में पास यह ऐ बुआ है।
मेरा लाल कालिज का काका हुआ है॥

× × ×

पसिंजर की आमद रही दर किनार[८]।
हुआ डाक गाड़ी में भी इनतेशार[९]॥
जोली रेलवालों ने राहे[१०] फरार[११]।
टेराफिक का है बन्द सब कारोबार॥
कई दिन से सूनी है ई० आई० आर०।
यह सच कह गया शायरे नामदार[१२]॥
ब एक गरदिशे[१३] चश्मे नीलोफरी[१४]।
न अंजन बजा[१५] मानद[१७] न इंजीनियरी॥

× × ×

फिक्र सारी को है व कंगन की।
अब तो धुन है उन्हे फिरंगन[१८] की॥

× × ×

पेट मसरूफ[१९] है केलरकी मे।
दिल है ईरान और टरकी मे॥

---

(१) तीर चलाना (२) हुकूमत (३) तरीका (४) मिलना (५) पढ़ना (६) आपस मे (७) तहज़ी (८) दूर (९) शक (१०) रास्ता (११) भागना (१२) मशहूर या नामवर (१३) दौरा या उलटफेर (१४) आँख (१५) कमल (१६) दुरुस्त (१७) रहा (१८) मेम (१९) लगा हुआ।

जबाने संस्कृत इस वक्त पंडित जी से कहती है।
कि अच्छा है मेरी उलफत[1] तुम्हारे दिल में रहती है।।
मैं खुश हूंगी बिलाशक[2] तुम अगर मुझको जिलाओगे।
मगर ह्विसकी पिलाओगे कि गंगा जल पिलाओगे।।
जिऊंगी मैं कि फिर तुम को मिलाऊँ देवताओ से।
भिड़ाओगे मुझी को या कि दुनियां की बलाओ से।।
अगर शौके इबादत[3] है तो मै मौजूद हूँ अब भी।
अगर दुनियां का सौदा है तो कब मै इससे राज़ी थी।।

× × ×

उठ गया पर्दा तो "अकबर" का बढ़ा कौन सा हक।
वे पुकारे जो मेरे घर मे चला आता है।।
वे हिजाबी[4] मेरे हमसाये[5] की खातिर से नहीं।
सिर्फ हुक्काम[6] से मिलने मे मजा आता है।।

× × ×

एक गजल मे इत्तेफाक़न मेरा एक मिसरा यह था।
दीदये[7] इबरत[8] से रंगे दैर[9] थानी[10] देखिये।।
कोई बोल उट्ठा जवाले[11] हुसने बुत मक़सूद[12] है।
इस सोखन[13] में बदशगूनी[14] की निशानी देखिये।।
आरिफाना[15] शायरी भी आजकल दुशवार[16] है।
बज़्में दुनियां मे यह ज़ोरे बदगुमानी[17] देखिये।।

× × ×

क़नायत[18] नही है तो ईमान रोखसत।
इबादत[19] नही तो मुसलमान रोखसत।।

---

(१) मोहब्बत (२) बिला शुबहा (३) पूजा (४) बेपरदगी (५) पड़ोसी (६) अफसरलोग (७) आंख (८) नसीहत (९) जमाना (१०) मिटने वाला (११) मिटना (१२) जरूरी (१३) बातचीत (१४) बुरा शगुन (१५) ईश्वरी (१६) मुश्किल (१७) बुराशक (१८) सबर (१९) पूजा।

न वह जान के हैं न हैं तन के दुश्मन।
फ़क़त हैं हमारे मियांपन के दुश्मन ॥
जो हों दोस्त अपने कहां वह मोयस्सर[1]।
ग़नीमत है इस वक्त दुश्मन के दुश्मन ॥

× × ×

कांटे बोने लगे अब शेक्सपियर पढ़ के अजीज।
गुल खिलायेंगे कहां तक यह गुलिस्तां वाले ॥

× × ×

खींचो न कमानों को न तलवार निकालो।
जब तोप मोक़ाबिल[2] है तो अख़बार निकालो ॥

× × ×

बाबू साहब का यह है शिकवये[3] इफलास[4] बजा[5]।
सच तो कहते हैं कि मछली न सही भात तो हो ॥

× × ×

शेख़जी के दोनो बेटे बाहोनर पैदा हुये।
एक हैं ख़ुफ़िया पुलिस में एक फांसी पागये ॥

× × ×

सिविल सारजन तो साढ़े सात से पहले नहीं उठते।
व लेकिन उनके मुर्गे की सेहर[6] खेज़ो[7] नहीं जाती ॥

× × ×

डाढ़ी ख़ोदा का नूर[8] है बेशक[9] मगर जनाब।
फ़ैशन के इन्तेजाम सफ़ाई को क्या करूं ॥

× × ×

ख़्याले हालते क़ौमी से दिल को पस्त[10] करता हूँ।
मगर जब अपना बंगला देखता हूं जस्त[11] करता हूँ ॥

---

(१) किस्मत में (२) सामने (३) शिकायत (४) ग़रीब (५) सही (६) सुबह (७) उठना (८) रोशनी (९) जरूर (१०) नीचा या कमजोर (११) कूदना।

न कटलट है न यां कांटा छुरी है।
मगर घी है तो खिचड़ी क्या बुरी है॥
कहां मसजिद मे वह अगले से मुसलिम।
खोदा के नाम की खानापुरी[१] है॥
तरक्कीपा के वह अगेड मे पहुँचे।
किसी को क्या कि जब तनहा[२] खुरी[३] है॥
यह लीडर गारहे हैं हम्द[४] के गीत।
मगर आवाज बिलकुल बेसुरी है॥

× × ×

अक़्द से क्या हों वह खुश कहती है बीबी उनकी।
बे निमाज़ आये तो कब हाथ लगने दूंगी॥
मैं मुसलमान की बेटी हूं मुसलमान हूं खुद।
सामने भी उन्हें वल्लाह न आने दूंगी॥
सास कहती हैं कि पढ़वाऊंगी समझा के नेमाज।
ऐसे निस्टर को भला हाथ से जाने दूंगी॥

× × ×

गपें उड़ाने को एक वादिये[५] अमल तो है।
हमारे वास्ते एक नाज का महल तो है॥
इलाही रख तू सलामत हमारे लीडर को।
कि बज्मे क़ौम में इससे चहेल पहेल तो है॥
चलाही लेंगे किसी खेत में बहुक्मे हुजूर।
खोदा के फज्ल से महफ़ूज़ अपना हल तो है॥

× × ×

मोअर्रिख[६] और सूफी[७] से यही है फर्क ऐ "अकबर"।
कि वह मसरूफ[८] माजी है और इसको हाल आता है॥

---

(१) घर भरना (२) अंधेरा (३) खाना (४) तारीफ (५) जङ्गल या खाड़ी (६) हिस्ट्री लिखनेवाला (७) फकीर (८) लगा हुआ।

धुन देस की थी जिसमें गाता था एक देहाती ।
विस्कुट से है मोलायम पूरी हो था चपाती ॥
शाने नेमाज़ "अकवर" शाहाना हो चली है ।
मसजिद अलग बनायें अपनी मियां वफाती ॥

× × ×

शाही[१] व हुकूमत की है असली यही डिवटी ।
हर तौर[२] से इंसान समझ ले उसे डिवटी ॥
हाकिम में अगर नाज है और ऐश[३] परस्ती[४] ।
हाकिम में अगर वादये[५] नख़वत[६] की है मस्ती ॥
कितना ही जवरदस्त व वलंद[७] उसका हो पाया[८] ।
हरगिज़ न कहेंगे उसे अल्लाह का साया ॥
हाकिम को जरूरी है मजाहिब की अयानत[९] ।
अल्लाह की हो जिससे परसंतिश[१०] व फ़रागत[११] ॥
वाई[१२] हमा[१३] करना है मुझे साफ़ यही अर्ज[१४] ।
हाकिम की अताअत[१५] है वहेरहाल तुम्हें फर्ज[१६] ॥
दुनियां ये वनी है पये[१७] तइयारीए ओक़वा[१८] ।
बेजा है हुकूमत का जो हर एक को हो सौदा[१९] ॥
यह मुल्क न फितरत का है शैदा न ख़ोदा का ।
दादा का कहीं वुत है कहीं रस्म का खाका ॥
जो शर्क[२०] में डूवा है न फूला न फलेगा ।
ग़ैरों ही की इमदाद[२१] से काम उसका चलेगा ॥

× × ×

होश में रह के करो दूर नकायस[२२] अपने ।
मग़रवी लोग तो मस्त अपने कमालात[२३] में है ॥

---

(१) बादशाही (२) तरीका (३) आराम (४) पूजने वाला (५) शराब (६) घमन्ड (७) ऊँचा (८) ओहदा (९) मदद (१०) पूजा (११) खाली होना (१२) इस (१३) सब (१४) हुकुममानना (१५) जरूरी (१६) पीछे (१७) आखिरी वक्त (१८) इश्क या पागलपन (१९) प्राकृत (२०) असलियत (२१) मदद (२२) बुराइयां (२३) खूबी ।

बूये[१] वफा नहीं है मिसों के असूल में।
बस रंग देख लीजिये गमले के फूल में॥

× × ×

हो उसका भला जिसने कहा दिल को कवी[२] रख।
जो तुझ पे गुजरती है ख़ोदा देख रहा है॥

× × ×

ख़िलवते[३]-नाज में क्या शान ख़ुद आराई[४] है।
हुस्न ख़ुद आलमे[५] हैरत[६] में तमाशाई है॥

× × ×

जब गम हुआ चढ़ालें दो बोतलें एकट्ठी।
मुल्ला की दौड़ मसजिद "अकबर" की दौड़ भट्ठी॥

× × ×

दुनियां की बेवफाई से "अकबर" मलूल[७] है।
लेकिन ज़्यादा इसका तसव्वर[८] फजूल[९] है॥

× × ×

न अजल[१०] की रही याद और न अबद[११] को है खबर।
आफरीं[१२] तुझपे मुझे होश मे लाने वाले॥

× × ×

हजरत की शेर गोई[१३] कुछ मुसतनद[१४] नहीं है।
कहने की एक हद[१५] है बकने की हद नहीं है॥

× × ×

हकीकी[१६] और मजाजी[१७] शायरी में फर्क यह पाया।
कि वह जामे[१८] से बाहर है यह पाजामे से बाहर है॥

---

(१) ख़ुशबू (२) हिम्मत या ताकत (३) तनहाई (४) संवरना (५) हालत (६) ताज्जुब (७) उदास (८) ख़्याल (९) बेकार (१०) मौत (११) जिसकी इंतेहा न हो (१२) शाबाश (१३) कहना (१४) मातबर या प्रमाणित (१५) इन्तेहा (१६) असली या सच्चाई (१७) जो असल न हो या झूठा (१८) कपड़ा।

क्या ख़बर .ख़ुलद[1] से क्यों हज़रते आदम निकले।
हम तो मसरूफ़[2] हैं गेहूँ की ख़रीदारी में॥

× × ×

लाख छांटें वह मज़हबी बातें—फ़र्क़ है शेख़ो व केलरकों में॥

× × ×

ताऊन के बदौलत उनको भी इरतेका[3] है।
जो मारते थे मक्खी अब मारते हैं चूहे॥

× × ×

तुम ख़ोदा को .ख़ुश करो सब की .ख़ुशामद छोड़कर।
बाख़ोदा हाकिम जो होगा .ख़ुद ही ख़ुश हो जायगा॥

× × ×

यही उनके अक़ायद[4] हैं यक़ीं उसका नहीं होता।
जो करते हैं न करते यह अगर उनको यक़ीं होता॥

× × ×

यां न मंतिक़ है किताबों के न पुश्तारे[5] हैं।
जोश है दिल में मज़ामीन के फ़ौव्वारे हैं॥

× × ×

हर्ज क्या रुप्या जो कागज का चला—ग़म न खा रोटी तो गेहूँ की रही॥

× × ×

वह .ख़ुद आराई[6] कहां-ख़ुशियों की तमहीद अब कहां।
रस्म अदा करते हैं मिल लेते हैं ईद अब कहां॥

× × ×

शागिर्द डारविन तो ख़ोदा ही ने कर दिया।
"अकबर" मगर नहीं है मदारी के हाथ में॥

---

(१) बैकुंठ (२) मशग़ूल या लगे हुये (३) चिढ़ (४) कायदे (५) बोझ वा गठरी (६) अपने को संवारना या बनाव सिंगार करना।

शहंशाह जार्ज पंचम के तख्त नशीनी पर

जो एडवर्ड ने छोड़ा शाही का चार्ज।
हुये जलवा आरा शहंशाह जार्ज॥
खुशी इनकी है और उनका अलम[१]।
दो दिल हो रही है जवाने कलम॥
कसीदा[२] कहे या कि नौहा[३] लिखे।
किधर रुख़[४] करे क्या कहे क्या लिखे॥
लहेद[५] भी है और मसनेद जाह[६] भी।
मोबारक[७] सलामत[८] भी है आह भी॥
बड़े शोर ईवाने[९] दौलत मे है।
वह तुरबत[१०] में हैं और यह हैरत मे हैं॥
शहंशाह मरहूम थे सुलहजू[११]।
नये इम्परर है बहुत नेक खू[१२]॥
वफा व अदब[१३] से है यहां रावता[१४]।
हमारी दोआ है यह बाजाबता[१५]॥
खोदा इनसे खुश हो इन्हे दे फरोग़[१६]।
बढ़े नेक और बद रहें बे फरोग़॥
रहे तख़्त बरतानियां बर क़रार।
रहे हिन्द योंही अताअत[१७] शआर॥
वह संभले जो रहते हैं गफलत मे मस्त।
यहां तो है पहले ही से दिल शिकस्त[१८]॥

बिगड़ता है दुनिया में जो घर बना।
सोसलसल[1] है रफतार[2] मौजे[3] फना[4]॥

खुशी की भी लेकिन है पैहम[5] नमूद[6]।
बला[7] है तो न्यामत का भी है दरूद[8]॥

× × ×

फर्ज[9] औरत पर नहीं है चारदीवारी की कैद।
हां अगर जब्ते[10] नजर की और खुद्दारी की कैद॥

हां मगर खुद्दारी व जब्ते नजर आसां नहीं।
मुँह से कहना सहेल है करना मगर आसां नहीं॥

तुममें वह जब्ते नजर उनमें वह खुद्दारी कहां।
गेवे कौमी सिन्स फातेह मुल्क पर तारी[11] कहां॥

अब रही तालीम-कौन इस अमर[12] का मफतूं[13] नहीं।
बीबियों पर मगरबी सांचा मगर मौजूं[14] नहीं॥

यह तो जाहिर है हरीफे[15] शोख क्यों रखने लगा।
शौक ने लेकिन खरावी पर मैं क्यों झुकने लगा॥

× × ×

जंगटरकी और इटली के मोताल्लिक राये

देखायेगी नया अब रंग टरकी—न होगी मुबतिलाये[16] जंग[17] टरकी॥
वहां भी आगईं मगरिब की लहरें—हुई अब हम किनारे गंग टरकी॥
बहुत खुदराय[18] थे सुलताने माविक[19]—रहा करती थी इनसे तंग टरकी॥
हुये रोखसत वहां से ओल्ड फैशन—तरक्की अब करेगी यंग टरकी॥

× × ×

मुझपे है तकलीद[20] वाजिब[21] हिन्द के दरबार की।
राय मेरी है वही जो राय है सरकार की॥

---

(१) बराबर (२) चाल (३) लहर (४) मिटना (५) बराबर (६) जाहिर होना (७) मुसीबत (८) ईश्वर की मेहरबानी (९) जरूरी (१०) बरदाश्त करना (११) छाई हुई (१२) काम (१३) आशिक (१४) नापा तुला हुआ या दुरुस्त (१५) शरीफ (१६) फंसना (१७) लड़ाई (१८) अपनी राय के या जिद्दी (१९) पुराने (२०) पैरवी (२१) जरूरी।

ज़िंदगी का मज़ा दिल का सहारा न रहा।
हम किसी के न रहे कोई हमारा न रहा॥

बोलने की है न क़ूवत न इशारे की सकत[१]।
एतना बस भी मेरा फ़ितरत को गवारा न रहा॥

पूछता कोई दमे मर्गे सिकंदर "अकबर"।
कितने दिन को यह तअल्ली[२] थी कि दारा न रहा॥

× × ×

जब यह देखा कि जहां[३] से कोई मेरा न रहा।
शिद्दते[४] यास[५] से मैं आप भी अपना न रहा॥

आप तसनीफ़[६] शरायत की न तकलीफ़ करें।
मुझको ख़ुद वलवलये[७] अज़्[८] तमन्ना[९] न रहा॥

इसकी परवा न रही ख़ुश रहे दुनियां मुझसे।
आक़िलों[१०] मे मेरी गिन्ती हो यह सौदा[११] न रहा॥

सुन्तशिर[१२] रहने मे पाते हैं अब आराम हवास।
शौक़ मजमुअये[१३] होशे ख़िरद[१४] अफज़ां[१५] न रहा॥

हैरत अफज़ा है मेरा हाल मगर कौन सुने।
दीदनी[१६] भी है मगर देखने वाला न रहा॥

देखने की तो है यह बात रहा क्या उसमें।
आप "अकबर" से अबस[१७] पूछते हैं क्या न रहा॥

+ + +

ग़म क्या जो आसमान है मुझसे फिरा[१८] हुआ।
मेरी नज़र से ख़ुद है ज़माना गिरा हुआ॥

मग़रिब[१९] ने ख़ुरदबीन[२०] से कमर उनकी देखली।
मशरिक़[२१] की शायरी का मज़ा किरकिरा रहा॥

---

(१) ताक़त (२) चमक (३) दुनियां (४) तकलीफ या ज़्यादती

शेख़जी को उस बुते काफ़िर ने अपना कर लिया।
दीन से क्या हो सका ईमान ने क्या कर लिया॥

× × ×

देख कर रंगे फ़ना[१] ख़ूने जिगर पीना पड़ा।
ज़िंदगी से सख़्त घबराया मगर जीना पड़ा॥

× × ×

तनहाई[२] और शबे[३] ग़म हम और दिल हमारा।
अल्लाह से दोआयें उम्मीद का सहारा॥

× × ×

अत्तिब्बो[४] को तो अपनी फीस लेना और दवा देना।
खोदा का काम है लुत्फ़[५] व करम[६] करना शफ़ा[७] देना॥

× × ×

खोदा का नाम गो अकसर जबानों पर है आ जाता।
मगर काम इससे जब चलता कि यह दिल में समा जाता॥

× × ×

हाले दिल सुना नहीं सकता—लफ्ज मानी को पा नहीं सकता॥
इश्क़ नाजुक मिजाज है बे हद—अक़्ल का बोझ उठा नहीं सकता॥
होशे आरिफ[८] की है यही पहेचान—कि ख़ुदी में समा नहीं सकता॥
पोंछ सकता है हमनशी[९] आंसू—दाग़े दिल को मिटा नहीं सकता॥
मुझको हैरत[१०] है उसकी क़ुदरत[११] पर—इल्म इसको घटा नहीं सकता॥

× × ×

मैं क्या कहूं उसे और क्या करूं गिला[१२] उसका।
मुझे हनोज[१३] पता ही नहीं मिला उसका॥

---

(१) मिटना (२) अकेला (३) मुसीबत की रात (४) हकीम (५) मेहरबानी (६) मेहरबानी (७) आराम या तंदुरुस्ती (८) ईश्वर को जानने वाला (९) दोस्त या साथी (१०) ताज्जुब (११) ताक़त (१२) शिकायत (१३) अभी तक।

नहीं है काम जवां का कुछ अब दोआ के सिवा।
नजर किसी पे नहीं है मेरी खोदा के सिवा॥
कभी करेंगे न वह मेरे दिल से हमदरदी।
कोई इलाज नहीं तर्के मुद्दोआ[1] के सिवा॥

× × ×

"अकबर" के कुफ्र[2] का न रहा कदरदां कोई।
उस बुत को शेख जी ने मुसलमान कर लिया॥

× × ×

मुसीबत है मुझे उस बुत से उलफत[3] हो गई "अकबर"।
कि जिसको बुतकदे[4] मे भी कोई अच्छा नहीं कहता॥

× × ×

किसी के मरने से यह न समझो कि जान वापस नहीं मिलेगी।
बईद[5] शाने करीम[6] से है किसी को कुछ देके छीन लेना॥

× × ×

रजोल्लुशन की सोरिश[7] है मगर इसका असर गायब।
प्लेटो की सदा सुनता हूं और खाना नहीं आता॥
खोदा के फजल से बीबी मियां दोनों मोहज्जब हैं।
हेजाब[8] उसको नहीं आता उन्हें गुस्सा नहीं आता॥

× × ×

फलक को मैंने मुझे दी फलक ने दाद[9] "अकबर"।
उसे सितम[10] तो मुझे सब्र आजमाना था॥

× × ×

आतशीरुख्येबुतां[11] देख के वायेज न कहा।
कारे[12] "अकबर" ही है दोजख[13] से लगावट करना॥

---

(१) आरजू या मतलब (२) नाशुकरी (३) मोहब्बत (४) मंदिर (५) दूर (६) रहम करने वाला या ईश्वर ७) जलन (८) परदा (९) इंसाफ (१०) जुल्म (११) चमकदार चेहरा या खूबसूरत (१२) काम (१३) नरक।

अगरचे दिल को है सौदा उसे बुरा न कहो।
किसी की जुल्फ से मिलता है सिलसिला उसका॥

× × ×

उन्हें हसरत है "अकबर" काश[1] मेरा हमनवा[2] होता।
मैं कहता हूं जरा सोचो जो होता भी तो क्या होता॥

× × ×

रहा तो मुरदों से हाल बदतर[3], जिया भी "अकबर" तो वह जिया क्या।
नये तरीकों के हामीयों[4] ने कहा बहुत कुछ मगर किया क्या॥
यह चाय हरगिज नहीं है काफी नहीं है लेमनेड का बन्दा क़ायल।
शराब ही हलक़ से न उतरी तो शेख साहब ने फिर पिया क्या॥

× × ×

खुशी से शेख कालिज सूये मसजिद अब नहीं चलता।
जहां रोटी नहीं चलती वहां मजहब नहीं चलता॥

× × ×

दूंगा जरा समझ के जवाब उनकी बात का।
रुख[5] देखता हूं सिलसिलये वाक़्यात का॥

× × ×

जिसे हुकूमत का नशा होगा फलक[6] सदा उससे कद करेगा।
जो सब्र व ताअत[7] से काम लेगा खोदा उसी की मदद करेगा॥

× × ×

ऐ दोस्त मुझे तो है खोदा ही पे भरोसा।
दुश्मन को मोबारक हो मेरी घात में रहना॥

---

(१) अगरचे या ईश्वर करे (२) एक आवाज होना (३) बुरा (४) मदद करने वाला या हिमायत करने वाला (५) चेहरा (६) आसमान (७) पूजा या बंदगी।

जलवा अयां[१] है कुदरते[२] परवरदिगार[३] का ।
क्या दिलकुशा[४] यह सीन है फस्ले बहार का ॥

नाज़ां हैं जोशे हुस्न पे गुलहाये दिल फरेब[५] ।
जोबन दिखा रहा है यह आलम उभार का ॥

हैं दीदनी बनफशा व सुम्बुल के पेच[६] व ताब[७] ।
नक़शा खिंचा हुआ है खतो ज़ुल्फे[८] यार का ॥

सबज़ा है या यह आबे ज़मुर्रद[९] की मौज[१०] है ।
शबनम[११] है वहेर[१२] या गौहरे[१३] अबदार का ॥

मुर्ग़ाने बाग़[१४] ज़मज़मा[१५] संजी में महो[१६] हैं ।
और नाच हो रहा है नसीमे बहार[१७] का ॥

परवाज़[१८] मे है तितलियां शाद[१९] व चुस्त व मस्त ।
जेबे बदन किये हुये खि़लअत[२०] बहार का ॥

मौजे हवा व ज़मज़मये अंदलीब[२१] मस्त ।
एक साज़े दिलने वाज़[२२] है मिज़राब[२३] व तार का ॥

अफसोस इस समा मे भी "अकबर" उदास है ।
सोहाने[२४] रूह हिज्र[२५] है एक गुलेज़ार का ॥

× × ×

कल की उम्मीदवार है दुनियां—आलमे इन्तेशार है दुनियां ॥
बे खबर रखता है हकीक़त[२६] से—होश पर मेरे बार[२७] है दुनियां ॥

× × ×

पैदा किया है जिसने उम्मीद है उसी से ।
कुछ शक नहीं है इसमे बस है वही हमारा ॥

---

(१) ज़ाहिर (२) ताक़त (३) ईश्वर (४) दिलका लुभाने वाली (५) दिल को लुभाने वाली (६) घूमा हुआ (७) ताक़त (८) बाल (९) एक हरे रंग का पत्थर है (१०) लहेर (११) ओस (१२) समुन्दर (१३) मोती (१४) चिड़ियां (१५) राग या गीत (१६) लगे हुये या मस्त (१७ सुबह की हवा (१८) उड़ना (१९) खुश (२०) उमदा कपड़ा (२१) बुलबुल (२२) दिल को पसंद आने वाला (२३) जिससे सितार बजाया जाता है (२४) दुःखी (२५) जुदाई (२६) सच्चाई या असलियत (२७) बोझ ।

अफसोस है कि जिन्दा हूं कहना पड़ा है हाल।
क्या मोख़्तसर[1] जवाब यह होता कि मर गया॥

× × ×

रहता बहुत है शौक दलील[2] व क़यास[3] का।
मालिक मगर नहीं हूं मैं अपने हवास[4] का॥

× × ×

पाकर ख़िताब नाच का भी जौक[5] हो गया।
सर हो गये तो बाल का भी शौक हो गया॥

× × ×

वह मेरे पेशे[6] नज़र ये फलक न देख सका।
छुटे तो फिर मैं उन्हें आज तक न देख सका॥

× × ×

तंग दुनियां से दिल इस दौरे[7] फलक[8] में आगया।
जिस जगह मैंने बनाया घर सड़क में आ गया॥
आसमां को तो ग़लत साबित किया साइन्स ने।
अर्श[9] बाक़ी था सो वह भी मह्‌शक में आ गया॥

× × ×

यह फिक्र छोड़ कि दुनिया का हाल क्या होगा।
इसी को सोच कि तेरा मआल[10] क्या होगा॥

× × ×

शेख़ साहब जमाबन्दी में न क्यों उलझे रहे।
हिन्द का इसलाम ही खेवट में दाख़िल हो गय॥

× × ×

क्या करूं इज़हार[11] अपने हाल का—आइना है आप के एक़बाल का॥

---

(१) छोटा (२) सबूत (३) अंदाजा (४) होश (५) शौक (६) सामने (७) ज़माना (८) आसमान (६) आसमान (१०) नतीजा (११) जाहिर करना।

दिले ज़ख़्मी से ख़ूं ऐ हमनशीं कुछ कम नहीं निकला।
तड़पना था मगर क़िसमत में लिखा, दम नहीं निकला॥
हमेशा ज़ख़्मे दिल पर ज़हेर ही छिड़का ख़्यालों ने।
कभी इन हम-दमों की जेब से मरहम नहीं निकला॥
हमारा भी कोई हमदर्द है इस वक्त दुनियां में।
पुकारा हर तरफ मुंह से किसी के हम नहीं निकला॥
तजस्सुस[१] की नज़र से सैर फितरत की जो ऐ "अकबर"।
कोई ज़र्रा न था जिसमें कि एक आलम[२] नहीं निकला॥

× × ×

फेराग़े[३] तबा हमको अपने ही ग़म से नहीं मिलता।
किसी से हम नहीं मिलते कोई हमसे नही मिलता॥
किया है ज़ौक़[४] तर्के[५] मासवा[६] ने मुझको दीवाना।
दिल अपना उससे मिलता है जो आलम से नहीं मिलता॥

× × ×

बिसाते[७] दिल तो यह और इस पे या अल्लाह ग़म एतना।
न थी ताक़त जबां में रह गये बस कहके हम एतना॥
नहीं नाज़ां[८] मुझे वे जां समझ कर यह बुते ज़ालिम।
खोदा का नाम लेता हूं अभी बाकी है दम एतना॥
खेयालाते उदूये[९] होश का सौदा[१०] है "अकबर" को।
हरीसे[११] बेख़ुदी होगा कोई दुनिया में कम एतना॥

× × ×

यास[१२] ही यास थी जब मौत का पैग़ाम आया।
मै न समझा कि यह जीना मेरे किस काम आया॥

---

(१) तलाश (२) दुनियां (३) फुरसत (४) चखना (५) छोड़ना (६) सेवा या अलावा (७) बिछौना या फरश (८) घमन्ड (९) दुश्मन (१०) इश्क (११) लालची (१२) नाउम्मेदी।

चलना जो मै चाहूं तो क़दम उठ नहीं सकता।
लिखने की हो ख़्वाहिश तो क़लम उठ नहीं सकता॥
हो अज़्मे[१] फ़ोगां[२] का तो ज़ुबां हिल नहीं सकती।
चुपका जो रहूं बारे[३] अलम[४] उठ नहीं सकता॥

× × ×

इमतेयाजे[५] हसरतो[६] रंजो व अलम[७] जाता रहा।
ग़म हुआ एतना कि अब एहसास[८] ग़म जाता रहा॥
बज़्मे[९] दुनियां में कहां सामाने हशमत[१०] को सबात[११]।
गुम हुई मोहरे "सुलेमा"[१२] जामे जम[१३] जाता रहा॥
जिससे था ख़ुद्दारिये[१४] अरबाबे[१५] हाजत[१६] का निबाह।
वह सलीक़ा[१७] तुमसे ऐ अहले करम जाता रहा॥
नक़्ले मग़रिब में जो छोड़ी एशिया ने अपनी अस्ल।
छुट गई शाने अरब हुस्ने अजम[१८] जाता रहा॥
नक़्शे सूरत ही को तज़इन[१९] पर रही जिसकी नज़र।
उस सोख़न में हुस्न मानी एक क़लम जाता रहा॥

× × ×

हमेशा होते हैं दुनियां की राहत[२०] से अलम[२१] पैदा।
वह क्या शादी[२२] कि जिस शादी से हों असबाबे ग़म पैदा॥

× × ×

जुदा रहता तो हूं तुमसे मगर दिल ख़ुश नहीं रहता।
जो बस होता जहां रहते हो तुम मैं भी वहीं रहता॥

---

(१) इरादा (२) शोर (३) बोझ (४) ग़म (५) फ़रक़ (६) अफ़सोस (७) रंज (८) मालूम करना (९) महफ़िल (१०) दबदबा (११) पायदारी या मज़बूती (१२) बादशाह सुलेमान के वक़्त का मोहर (१३) जमशेद बादशाह के शराब का प्याला (१४) घमंड (१५) दोस्त या मालिक (१६) ज़रूरत (१७) शऊर (१८) अरब के अलावा और उलको को अजम कहते हैं (१९) संवारना (२०) आराम (२१) तकलीफ़ या रंज (२२) ख़ुशी

आतशे[1] ग़म से चमकने लगे अशआर मेरे।
दाग़े दिल करने लगे मानिये रोशन पैदा ॥

\+ + +

घटता जाता है मेरी नज़रों से मक़दूर[2] मेरा।
बढ़ता जाता है शुमार[3] उनके ख़रीदारों का ॥
वेख़तर[4] फिरता हूँ बाजारे जहाँ मे हर सू[5]।
खीसा[6] ख़ाली है तो क्या ख़ौफ है अय्यारों का ॥
फितरत उट्ठो है शफाअत[8] को मलायक[9] है ख़मोश।
हस्र है इश्क़ व मोहब्बत के गुनहगारों का ॥

\+ + +

इशारा है यही वादेसबा का—चमन एक रंग है इसकी अदा का ॥
नसीमें[10] सुबहगाही वज्द मे है—अजब मतलब है बुलबुल की सदा का ॥

\+ + +

जहां मे हाल मेरा इसक़दर ज़बून[11] हुआ।
कि मुझको देखके बिसमिल[12] को भी सुकुन[13] हुआ ॥
ग़रीब दिलने बहुत आरज़ूयें पैदा की।
मगर नसीब का लिक्खा कि सब का खून हुआ ॥
वह अपने हुस्न से वाक़िफ मैं अपनी अ़क़्ल से सेर[14]।
उन्हों ने होश संभाला मुझे जुनून हुआ ॥
उम्मीदे चश्मे मुरौव्वत कहां रही बाक़ी।
ज़रिया बातों का जब सिर्फ टेलीफून हुआ ॥
निंगाहे गर्म क्रिसमस मे भी रही हम पर।
हमारे हक़ मे दिसम्बर भी माह जून हुआ ॥

---

(१) आग (२) ताक़त (३) गिन्ती (४) निडर या बे खटके (५) तरफ (६) जेब (७) चालांक लोग (८) सिफारिश (९) फरिश्ते (१०) सुबह की ठंडी हवा (११) बुरा (१२) २ ख़ूनी (१३) आराम (१४) आसूदा।

जुदा रहता तो, हूँ तुम से मगर दिल ख़ुश नही रहता।
जो वस होता जहां रहते हो तुम मैं भी वही रहता॥

× × ×

न राज़े[१] आसमां जाना न कुछ हाले ज़मीं जाना।
रहीं बहसें बहुत और दरहक़ीक़त[२] कुछ नहीं जाना॥

× × ×

दवा जो ग़ैर ने भेजी है वह हरगिज न खाऊँगा।
अगर है जिन्दगी बाकी तो अच्छा हो ही जाऊंगा॥

× × ×

क्या सख़्तिये मौसिम जो हो मतलब के मोवाफ़िक़।
इन बर्फ़ फ़रोशों[३] के लिये जून ही अच्छा॥

× × ×

मुझी पर जब गुजरती है तो अब इनकार क्या मानी।
जो कोई दूसरा कहता तो मुशकिल से यकीं आता॥

× × ×

हयात[४] अब मुझसे कहती है कि मैं मजबूर हूँ वरना[५]।
किसी पर बार[६] होकर मुझको रहना खुश नहीं आता॥

× × ×

तहमद[७] मे बटन अब लगने लगे अब धोती से पतलून उगा।
हर पेड़ पर एक पहेरा बैठा हर खेत में एक क़ानून उगा॥

× × ×

इससे तो इस सदी[८] में नही हमको कुछ ग़रज़।
सोक़रात[९] बोले क्या और अरस्तू[१०] ने क्या कहा॥
बहरे[११] ख़ोदा जनाब यह दें हमको इत्तेला।
साहब का क्या जवाब था बाबू ने क्या कहा॥

---

(१) भेद (२) असलीयत से (३) बेचना (४) ज़िंदगी (५) लेकिन या नहीं तो (६) बोझ (७) लुंगी (८) सौ (९) एक मशहूर हकीम का नाम है (१०) वह हकीम जी सिकंदर का गुरु व वजीर था (११) वास्ते।

ख़ोदा का चाहना है चाहना, मैं कुछ न चाहूंगा।
जहां तक हो सकेगा बन्दगी का हक निभाऊंगा॥

× × ×

आप के हाथ मे मैं हाथ नही दे सकता।
दाद देता हूं मगर साथ नहीं दे सकता॥

× × ×

तूही है नाज़ मेरे दिल का उठाने वाला।
ऐ जुनू अब मैं नही आप में आने वाला॥
होश उड़ा देता है इन खा़क के पुतलों का जमाल[१]।
खुद वह क्या होगा उन्हें होश मे लाने वाला॥
दाग़े दिल ही का सहारा है फक़त ऐ "अकबर"।
कब्र पर कोई नहीं शमा[२] जलाने वाला॥
अपने ग़ुमख़ाने[३] का दरवाजा करो बन्द "अकबर"।
अब नहीं कोई सेवा मौत के आने वाला॥

× × ×

जमाना मेरे ज़ख़्मे दिल को हरगिज़ सी नही सकता।
जिऊं शायद मगर आराम से अब जी नही सकता॥
बशर को ज़िंदगी मे ग़फलते[४] उम्मीद व फरदा[५] है।
मगर दम भर भी अपने क़स्द से वह जी नहीं सकता॥
ख़ोदा ही से बिलआखिर काम पड़ जाता है ऐ "अकबर"।
नहीं होता किसी का कोई और हो ही नहीं सकता॥

⊥ ⊥ ⊥

हुस्न देखो बुताने काशी का—चेहरा चान्द पूरनमाशी का ॥
चश्मेतर देख कर वह मिस बोली—मोहकमा है यह आबपाशी का ॥
हो गया फेल इमतेहानों में—अब इरादा है बदमआशी का ॥

× × ×

पूछोगे जब फलक[1] से तुमसे यही कहेगा।
जो था न रह गया वह, जो है वह क्यों रहेगा ॥
होंगे हुबाब[2] उभर कर यों ही फना हमेशा।
मौजें घटें बढ़ेंगी दरिया योंही बहेगा ॥
जिक्र खोदा का होगा जिस दिल को जौक 'अकबर'।
वह मुतमइन[3] रहेगा गम भी अगर सहेगा ॥

× × ×

खैर उनको कुछ न आये फांस लेने के सिवा।
मुझको अब करना ही क्या है सांस लेने के सिवा ॥
थी शबे[4] तारीक[5] चोर आये जो कुछ था ले गये।
कर ही क्या सकता था बन्दा स्वांस लेने के सिवा ॥

× × ×

बालाये अर्श[6] है कि तहे[7] आसमां हैं आप।
दावे से क़ब्ल[8] देख तो लीजे कहां हैं आप ॥

× × ×

मग़रबी जौक़ है और वज़े को पाबन्दी भी।
ऊंट पर चढ़के थियेटर को चले हैं हज़रत ॥

× × ×

है मुंतज़िम[9] जहां का परवरदिगार खुद।
हैरत[10] में है हवदिसे बे अख़तियार खुद ॥

---

(१) आसमान (२) बुलबुला (३) इतमीनान से (४) रात (५) अंधेरा (६) तख़्त (७) नीचे (८) पहले (९) इंतेजामकार (१०) ताज्जुब (११) मुसीबत व गरदिश ।

जी के मरने में है क्या नाज की वात—मरके जीना है इम्तेयाज[१] की बात ॥
चाहती थीं जवां करे तौजीह—दिल पुकारा कि है यह राज की बात ॥

× × ×

पादरी से वह मिले पहले तो क्या शेख को उज्र ।
देखिये पीर[२] का नम्बर तो है एतवार के बाद ॥

× × ×

ग़ाफिल यहां लज्ज़त व आराम पर न हो ।
दुनियां में हाय हाय बहुत है मजे के बाद ॥
एक इज़्तेराब[३] दिल को मेरे कर गया खराब ।
क्या पूछते हो हाले ज़मीं जलज़ले[४] के बाद ॥

× × ×

मुझको जायज़ नहीं यह अर्ज़[५] कि वेदाद[६] न कर ।
उनको ज़ेवा[७] है यह इरशाद[८] कि फरियाद[९] न कर ॥
शेख कहते हैं कि पीरों[१०] की परसतिश[११] भी है फ़र्ज़[१२] ।
मास्टर कहते हैं अल्लाह को भी याद न कर ॥
वहेशतअंगेज़[१३] तरक्की है तहेचर्ख[१४] इस वक्त ।
तू बगूला न बन और उम्र को बरबाद न कर ॥
हुस्ने सुम्बुल[१५] से जो दो ज़ुल्फे बुता का सौदा ।
छोड़ सैरे चमन कुफ्र की इमदाद न कर ॥

× × ×

क़स्द[१६] तो जायज़ है लेकिन अपना क़ाबू देख कर ।
हाथ उठाना चाहिये इंसां को बाजू देख कर ॥

---

(१) फ़र्क करना (२) सोमवार (३) परेशानी (४) भूडोल (५. ज़ाहिर करना या कहना (६) जुल्म (७) खपना (८) कहना (९) शोर (१०) बुज़ुर्ग लोग या बुढे (११) पूजा (१२) ज़रूरी (१३) खौफनाक (१४) आसमान के नीचे (१५) एक फूल का नाम है (१६) इरादा ।

वह टाल देते है मुझको बेरी बिज़ी[1] कह कर।
मैं उठ ही आता हूँ अलफाज़ आख़िरी कह कर॥

\+ + +

है यह रफतारे[2] जहां कौन सी हालत की तरफ।
बस जवाब इसका यही है कि क़यामत की तरफ॥

\+ + +

कोई सुनता नहीं तेरी तो इस बकने का क्या हासिल[3]।
कोई मंजिल नहीं दरपेश[4] फिर थकने का क्या हासिल॥

\+ + +

कुछ न समझा शबे[5] फेराक[6] का हाल-खुलगया यार के मज़ाक का हाल॥
एतबार आप को न आयेगा-क्या कहूं अपने इश्तेयाक[7] का हाल॥

\+ + +

करदें जो बेकसों से ज़रा यह गरूर कम।
जब भी नहीं रहेगे किसी से हुजूर कम॥

\+ + +

कोई मौक़ा नहीं है बनने का—सब को मालूम है कि मैं क्या हूं॥
हो गई है उम्मीदे मर्ग[9] कवी[10]—कल की निसबत[11] तो आज अच्छा हूँ॥

\+ + +

मोलवी हो ही चुके थे नज़रे कालिज इससे क़ब्ल[12]।
ख़ान काहें[13] रह गई थीं अब है उनका इनहेदाम[14]॥
लेकचर व मजमून लिखते हैं तस्व्वफ के ख़िलाफ।
अलवेदा[15] ऐ ज़ौके बातिन[16] अलवेदा ऐ फैजे[17] आम[18]॥

---

(१) अंगरेजी शब्द है मानी बहुत मशगूल या काम मे लगा हुआ (२) चाल (३) नतीजा (४) सामने (५) रात (६) जुदाई (७) शौक (८) घमंड (९) मरना (१०) मज़बूत या पक्का (११) बनिस्बत (१२ पहले (१३) फ़कीरों के रहने की जगह (१४) गिरादेना (१५) बिदा (१६) अंदरूनी (१७) फायदा (१८) सबके वास्ते।

जो बात मुनासिब[1] है वह हासिल[2] नहीं करते।
जो अपनी गिरह[3] में है उसे खो भी रहे है॥
बे इल्म भी हम लोग हैं गफलत[4] भी है तारी[5]।
अफसोस कि अंधे भी है और सो भी रहे हैं॥

× × ×

चेहरये युरोप का मैं परवाना[6] हूं।
इसकी हर एक बात का दीवाना हूँ॥
शब[7] में पैदाइश हुई है पेश शमा[8]।
जलवये[9] ख़ुरशीद[10] से बेगाना हूँ॥

× × ×

बिला ताकत[11] तहे इफलाक[12] इंसां को नहीं चलती।
वहां तो रेल चलती है यहां रोटी नहीं चलती॥

× × ×

न कुछ इंतेजार गजट कीजिये—जो अफसर कहें बस वह झट कीजिये।
कहां का हलाल और कैसा हराम—जो साहब खिलायें वह चट कीजिये॥

× × ×

दरिया में तो साहब से अगिन बोट मे हारे।
मैदान एलेकशन में गये वोट में हारे॥

× × ×

कहा सैय्याद ने बुलबुल से क्या तूने नहीं देखा।
कि तेरे आशियां[13] से यह क़फस[14] आरास्ता[15] तर[16] है॥

× × ×

राह तो मुझको बतादी खिज़्र ने—ऊंट का लेकिन केराया कौन दे॥

---

(१) ठीक (२) नतीजा निकालना (३) गांठ या टेंट (४) बेहोशी (५) छाई हुई (६) पतंगा या आशिक (७) रात (८) रोशनी (९) रोशनी (१०) सूरज ११) नीचे (१२) जमा है फलक की मानी आसमान (१३) घोंसला (१) कैदखाना (१५) सजा हुआ (१६) ज़्यादा।

हुआ आज ख़ारिज[१] जो मेरा सवाल—कहा मैंने साहब से बासद[२] मलाल ॥
कहां जाऊं अब मैं ज़रा यह बताव—वह झुन्झला के बोले झहंनुम में जाव ॥
यह सुन कर बहुत तबा[३]ग़मगीं[४] हुई—मगर इस तसव्वर[५]से तसकीं हुई ॥
कि जब अहले इवरोप में भी ज़िक्र है—तो बेशक झहंनुम भी है कोई शै ॥

+ + +

क्यों न अपने दिल को हो उनसे मिलाप ।
लार्ड साहब है हमारे माई बाप ॥
इनके हक़ मे भी दोआ करते है हम ।
मंदिरों में जब कभी करते हैं जाप ॥
इनकी बढ़ती सब मनाते हैं यहा ।
ख़्वाह वह हों, ख़्वाह हम हों, ख़्वाह आप ॥
हर तरफ़ सामान हैं आराम के ।
खुल गई है हर तरफ़ हरशैकी शाप[६] ॥
हो गये रोशन हुदूदे[७] आसमान ।
इल्म चमका हो गई तारों की नाप ॥
सारी धरती दबगई साइंस से ।
लग गये पाइप गया दुनिया से पाप ॥
हज़रते वायेज़ है राज़ी रक़्स[८] पर ।
देर क्या है अब पड़े तबले पे थाप ॥

+ + +

कहते हैं साबिक़[९] में सब ऊपर ख़ोदा नीचे हुज़ूर ।
इस मक़ूले को मगर बदलेंगे अब अहले शऊर ॥
ज़ेरपा[१०] है रेलवे और सर पे है इंजन की भाप ।
अब यह कहना चाहिये नीचे भी आप ऊपर भी आप ॥

---

(१) रद (२) बहुत रंजके साथ (३) दिल ४) रंजीदा ५) ख़्याल (६) अंगरेजी शब्द है यानी दूकान (७ किनारा या हद (८ नाच (९) पहले (१०) पांव के नीचे ।

जब आंख को खुलने से हो झपक, जब मुँह में ज़बां जुम्बिश[१] से डरे।
इस क़ैद में क्यों कर जीना हो अल्लाह ही अपना फ़ज़ल[२] करे॥
क्या नाज़ हो ऐसी साइत पर, अफसोस है ऐसी हालत पर।
या झूठ कहे या कुछ न कहे, या कुफ्र बके या कुछ न करे॥
क़ातिल[३] को भरोसा क़ूवत[४] का, और हम को ख़ोदा की रहमत[५] का।
होना था जो कुछ हो ही लिया, वह भी न रुका हम भी न डरे॥

\+ + +

बने बन्दर से हम इंसां तरक्की इसको कहते हैं।
तरक्क़ी पर भी नेटिव बदनसीबी इसको कहते हैं॥

\+ + +

न लैसेंस हतियार का है न ज़ोर—कि टरकी के दुश्मन से जाकर लड़ें।
तहेदिल[६] से हम कोस्ते हैं मगर—कि इटली की तोपों मे कीड़े पड़ें॥

\+ + +

क़ुली एक इस तबीयत का मिला जो कल यह कहता था।
मेरे दिल में ख़्यालात बलन्द[७] आने नही पाते॥
सड़क पर काम में तकलीफ है बङ्गले पे बेलुत्फ़ी[८]।
यहां साया नहीं है और वहां गाने नहीं पाते॥

\+ + +

मज़े से तुमको कम फ़ुरसत यहां फाक़े से कम खाली।
चलो बस हो चुका मिलना न तुम खाली न हम खाली॥

\+ + +

मसर्रत[९] हुई हंसलिये दो घड़ी—मुसीबत पड़ी रोके चुप हो रहे॥
इसी तौर से कट गया रोज़ज़ीस्त[१०]—सोलाया शबे[११]गोर[१२]ने सोलिये॥

---

(१) हिलना (२) मेहरबानी (३) क़त्ल करने वाला (४) ताक़त (५) मेहरबानी (६) दिल से (७) ऊँचे (८) बेमज़ा (९) ख़ुशी (१०) जिंदगी के दिन (११) रात (१२) क़ब्र।

तुझे हम शायरों में क्यों न "अकबर" मुन्तखिब[१] समझें।
बयां ऐसा कि सब मानें जवां ऐसी कि सब समझें॥

+ + +

गो मुझमें है बलाग़त गो शैर बा असर हैं।
लेकिन मेरे मसायब[२] मुझसे बलीग़तर[३] हैं॥

+ + +

न पाई दिल ने राहत[४] इस कदर बज़्में[५] अहिब्बा[६] में।
उन्होंने जब दरे[७] तहसी[८] मेरे अशआर पर खोला॥
हुई जिस दर्जा कुलफत[९] कैम्प में ऐसे सवालों से।
यह तुम किस वास्ते लिक्खा यह तुम किसवासते बोला॥

+ + +

करो सुकूत[१०] नहीं वक्त एतराज[११] "अकबर"।
फुजूल बहेस से अपनों को तुमने ग़ैर किया॥

+ + +

हाले दिल मैं सुना नहीं सकता—लफ्ज़ मानी को पा नहीं सकता॥

+ + +

उस मिस की जवां रात जो ली मैंने दहेन[१२] मे।
बोली कि तेरी राहे तरक्की में यह हेज है॥
मैंने कहा स्कालर[१३] मशरिक हूं मैं ऐ मिस।
चुप रह कि यही मेरी सेकेन्ड[१४] लैंगवेज़ है॥

+ + +

वायज़ का जो इरशाद[१५] है वह रीजनएबिल[१६] है।
रिन्दों की यह मसती भी मगर सीजनएबिल है॥

---

(१) चुना हुआ (२) मुसीबतें (३) ज्यादा अच्छे (४) आराम (५) महफिल (६) दोस्त लोग (७) दरवाजा (८) तारीफ (९) तकलीफ (१०) खामोशी या चुप रहना (११) नोकताचीनी करना (१२) मुँह (१३) अंग्रेजी शब्द है मानी विद्यार्थी (१४) अंग्रेजी शब्द है मानी दूसरी भाषा (१५) कहना (१६) अंग्रेजी शब्द है; मानी सही (१७) अंग्रेजी शब्द है मानी मौसमी।

तालीमों को तबीयत रिजेक्ट[१] करती है।
जो दिल शिकस्ता हैं उनको सेलेक्ट[२] करती है॥
मिला हूं खाक में खुद इस सबब से मेरी नजर।
गिरा के क़सर[३] बगूले एरेक्ट[४] करती है॥

+ + +

सांस लेते हुये भी डरता हूँ—यह न समझो कि आह करता हूँ॥

+ + +

है ग़ुलामी ही जो क़िसमत में तो हो लुत्फ के साथ।
कह दो हिन्दी से कि आबाद परिस्तां में हो॥

+ + +

पहनने को तो कपड़े ही न थे क्या बज़्म में जाते।
खुशी घर बैठे करली हमने जश्ने[६] ताजपोशी[७] की॥

× × ×

पांव कांपा ही किये खौफ से उनके दर पर।
चुस्त पतलून पहनने पे भी पिंडली न तनी॥

× × ×

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वह क़त्ल भी करते है तो चर्चा[८] नहीं होता॥

× × ×

मौजें हैं तबीयत मे मगर उठ नही सकतीं।
दरिया है मेरे दिलमें मगर बह नहीं सकते॥
पतवार शिकस्ता[१०] में नहीं ताक़ते परचम[११]।
है नाव में सूराख[१२] मगर कह नही सकते॥

× × ×

---

(१) अंग्रेजी शब्द है मानी नामंजूर (२) अंग्रेजी शब्द है मानी मंजूर करना या चुनना (३) महल (४) अंग्रेजी शब्द है मानी बनाना (५) महफिल (६) खुशी (७) ताज पहनना (८) जिकर (९) लहरें (१०) टूटा हुआ (११) झंडा या वह कपड़ा जो नाव पर बांधते हैं (१२) छेद।

बिगड़े है गो ख़राबीये तालीम[१] से अमल[२]।
आता नही है फहेम[३] व अक़ायद मे कुछ खलल[४]॥
अग़वा[५] मे गो हनोज़[६] शयातीन चुस्त[८] हैं।
शुक्र खोदा कि दिल तो हमारे दुरुस्त हैं॥
असराफ[९] व मैकशी[१०] को बुरा जानते है हम।
किब्र[११] व ग़रूर[१२] बद[१३] है इसे मानते हैं हम॥
बाहम[१४] कुछ एख़तेलाफ[१५] है गाहे[१६] लड़ाई है।
लेकिन ख़ेयाल है कि हमारा यह भाई है॥
दुनियां में इंकेलाब[१७] ज़रूरी है रोज़ व[१८] शब[१९]।
है यह दोवा नसीब रहे ताअत[२०] व अदब[२१]॥

× × ×

न शायक़[२२] हिस्ट्री का हूं न मतलब मुझको नाविल से।
मगर होता हूं ख़ुश इस फस्ल सरमां[२३] में रसावल से॥
वह मैख़ाना कहां अब वह न साग़र है न साक़ी है।
मगर रिन्दों पे बाकी खां का लुत्फ अलबत्ता बाक़ी है॥
ख़ोदा महफूज[२४] रक्खे चश्मेबद[२५] से उनको दुनिया में।
रहे एज़ाज़[२६] से ज़िन्दां बलन्दी पायें उक़बा में॥

× × ×

उनको मंज़िल के मोसाफिर हो गये—देखिये शिमले पे हाज़िर हो गये॥
लाट साहब ने बहुत अच्छा किया—सूत को भी रेशमी लच्छा किया॥
कुछ मोलायम तबा[२७] गाधी हो गये—अब नसीमे सुबह[२८] आंधी हो गये॥

---

(१) लिखाई पढ़ाई (२) काम (३) समझ (४) फेतूर (५) बहेकाना (६) अब भी (७) शैतान लोग (८) चालांक (९) फुजूल खरची (१०) शराब पीना (११) घमंड (१२) घमंड (१३) बुरा या ख़राब (१४) आपसमें (१५) फरक (१६) कभी-कभी (१७) उलटफेर (१८) दिन (१९) रात (२०) बड़ो की इज्ज़त (२१) तहज़ीब (२२) शौक़ीन (२३) जाड़ा (२४) हिफाज़त से (२५) नज़र व टोना (२६) इज्ज़त (२७) तबियत (२८) सुबह की ठंडी हवा।

शेखजी तुमको मोबारक रूम[1] व रम[2]–हम तो कहते हैं कि गांधीजी की जै ॥
फ़र्क़ ज़ाहिर गाय और दुलदुल का है–वहेशत[3] अफज़ा हम में बुलकाबुल का है ॥

× × ×

चालांक पहले ही से बरगेड के हैं मोजाविर[4] ।
ग़ाफ़िल[5] है आख़िरत से महवे[6] निशाते[7] ख़ातिर ॥
आक़िल तो थे बतद्‌रिज़ अब वह खिसक रहे है ।
पंजो पे काउनसिल में जाकर दुबक रहे ॥

× × ×

तालीम लड़कियों की ज़रूरी तो है मगर ।
ख़ातून खाना हो वह सभा की परी न हों ॥
जी इल्म व मुत्तकी हों जो हों इनके मुंतज़िम ।
ओस्ताद अच्छे हो मगर ओस्ताद जी न हों ॥

× × ×

कौन कहता है कि तालीम ज़नान खूब नहीं ।
एक ही बात फक़त कहना है यां हिकमत को ॥
दो उसे शौहर व अतफ़ाल की ख़ातिर तालीम ।
कौम के वासते तालीम न दो औरत को ॥

× × ×

बे इल्म अगर अक़्ल को आज़ाद करेंगे ।
दुनियां तो गई दीन भी बरबाद करेंगे ॥

× × ×

तालीम दोख़्तरान से यह उम्मीद है ज़रूर ।
नाचें वही ख़ुशी से ख़ुद अपनी बरात में ॥

---

(१) अंग्रेजी शब्द है मानी कमरा (२) अंग्रेजी शराब का नाम है (३) डरपैदा करने वाला (४) पुजारी (५) लापरवाह (६) डूबे हुये (७) ख़ुश ।

सद[1] शुक्र कि काम कर गया गुड़—वाबू टूटे तो फिर गये जुड़ ॥

× × ×

लाजपत हैं हर जगह ममदूह[2] हिन्दुस्तान में ।
मतलये[3] आतश यह है गोया उन्ही की शान में ॥
लालये वेदाग़ तुझसा कोई गुलशन में नहीं ।
एक बुत इस शान का दैरे[4] ब्रहमन मे नहीं ॥

× × ×

ऐ खोदा मुझको करदे साहब लोग ।
दूर हो मुझसे इस जहन्नुम का रोग ॥
मेरा क़ालिब[5] हो क़ालिबे ग़रबी[6] ।
भूल जाऊँ जबान भी अपनी ॥
रंग चेहरे का मेरे जाये बदल ।
करूं ईजाद[7] मैं भी तोप व रफल ॥
सोके उठूं जो आज सुबह को मैं ।
सब यह समझें कि लाट साहब हैं ॥

× × ×

मोयस्सर[8] जब आजाय ख़ोवाने[9] नईम ।
तो लाज़िम[10] है शुक्रे ख़ोदाये करीम ॥
बहुत है यह बेजा कि खाकर पोलाव ।
कहो तुम मोतनजन भी कुछ हो तो लाओ ॥

× × ×

मशरकी को है ज़ौक रूहानी—मग़रबी मे है मेल जिसमानी ॥
कहा मंसूर ने ख़ोदा हूं मैं—डारविन बोले बूज़ना[11] हूं मैं ॥
हस के कहने लगे मेरे एक दोस्त—फिक्र हर कस[12] बक़द्र हिम्मते ओस्त[13] ॥

× × ×

---

(१) सौ (२) जिसकी तारीफ हो (३) ग़ज़ल का पहला शेर (४) मंदिर (५) दिल (६) पच्छिमी (७) नई चीज बनाना (८) मिलना (९) वैकुन्ठ का दसतरख्वान (१०) जरूरी (११) बन्दर (१२) आदमी (१३) उसका ।

क्या फर्ज है कि हम ढिठाई से रहें,
लाजिम क्या है बलंद[1] अदाई से रहे ॥
काफी है ख़ोदा की याद एक गोशे[2] में।
रोटी मिलजाये और सफाई से रहें ॥

× × ×

उस बुत ने कहा कि तू है बे इल्म व ख़िरद[3]।
खोल आँख, ज़माने के मोवाफिक़ हो जा ॥
आख़िर में खुला कि इसका मतलब यह था।
अल्ला को छोड़ मुझ पर आशिक़ हो जा ॥

× × ×

एक पीर ने तहज़ीब से लड़के को उभारा।
एक पीर ने तालीम से लड़की को संवारा ॥
पतलून में वह तन गया यह साये में फैली।
पाजामा ग़रज़[4] यह है कि दोनों ने उतारा ॥
बैरा वह बना कैम्प में यह बन गई आया।
बीबी न रही जब तो मियांपन भी सिधारा ॥
दोनों जो कभी मिलते हैं गाते हैं यह मिश्रा।
आग़ाज़[5] से बदतर है सरअंजाम[6] हमारा ॥

× × ×

एज़ाज़ बढ़ गया है आराम घट गया है।
ख़िदमत में हैं वह लेजी[7] और नाचने को रेडी[8] ॥
तालीम की ख़राबी से हो गई बिल[9] आख़िर।
शौहर परस्त[10] बीबी पब्लिक[11] पसन्द लेडी[12] ॥

---

(१) ऊंचा (२) कोने (३) अक़्ल (४) मतलब (५) शुरू (६) आखीर (७) अंग्रेजी शब्द मानी सुस्त (८) अंग्रेजी शब्द मानी तय्यार (९) आखिरकार (१०) पूजा (११) अंग्रेजी शब्द मानी जनता (१२) अंग्रेजी शब्द मानी औरत।

मिल का आंटा है नल का पानी है—आब[1] व दाने की हुकमरानी[2] है ॥
एक अदा से कहा मिसों[3] ने कमआन[4] —तीर की मुझ में अब रवानी[5] है ॥

× × ×

हरचन्द कि है मिस का लेवन्डर भी बहुत खूब ।
बेगम का मगर इत्र हेना और ही कुछ है ॥

+ + +

क्यो अपने सर पे ज़हमते[6] बेसूद[7] लीजिये ।
कौंसिल के बदले घर में उछलकूद लीजिये ॥
खा पी के घर में बैठिये और गाइये भजन ।
काशी से जल प्रयाग से अमरूद लीजिये ॥
हो वज़ा अपने देश की माल अपने देश का ।
बेहतर है राह मंजिले बहबूद[8] लीजिये ॥

+ + +

खाना[9] जंगी ही में हजरत मर्द हैं–ऐबजोई[10] के होनर में फर्द[11] हैं ॥
अपनों ही के वासते हैं शोला[12] खू–सामने ग़ैरों के बिलकुल सर्द[13] है ॥

+ + +

मुझको हैरत[14] है कि हैं यह किस गुरु की चेलियां ।
हस्र[15] बरपा[16] कर रही हैं मग़रबी अलबेलियां ॥
लुत्फ आज़ादी की दिल में बढ़ गई है चाशनी ।
अब तो शीशे में उतरने की नही यह जेलियां ॥
अपने हाथो अपने सांचे का करेंगी बन्दोवस्त ।
यह नही वह गुड़ कि तुम उनकी बनाओ भेलियां ॥

---

(१) पानी (२) हुकूमत (३) अंग्रेजी शब्द मानी क़ुवांरी लड़की (४) अंग्रेज शब्द है मानो आओ (५) चलना (६) तकलीफ (७) बे फायदा (८) भलाई (९) आपसी लड़ाई (१०) बुराई ढूंढना (११) अकेले या सब से बढ़ बढ़ कर है (१२) तेज मिज़ाज (१३) ठंडे (१४) ताजुब (१५) क़यामत (१६) ढाना ।

कुछ समझ में नहीं आता यह तिलिस्मे[१] हस्ती।
उसकी कुदरत[२] के करिश्मे[३] भी अजब होते हैं॥
जान जब खाक मे पड़ती है तो होती है खुशी।
खाक जब खाक में मिलती हैं तो सब रोते है॥

× × ×

कालिज में हो चुका जब यह इमतेहां हमारा।
सीखा जबां ने कहना हिन्दोस्तां हमारा॥
रकबे[४] को कम समझ कर "अकबर" यह बोल उट्ठा।
हिन्दोस्तान कैसा सारा जहां हमारा॥
लेकिन यह सब गलत है कहेना यही है लाजिम[५]।
जो कुछ है सब खोदा का वहेम[६] व गुमां[७] हमारा॥

× × ×

बहारे बेवफा[८] पर नाज कैसा और खुशी कैसी।
बजा[९] है हैरते नरगिस कि गुल की यह हंसी कैसी॥
खिलाफे बे.खुदी[१०] क्यों है यह बाज ऐ हजरते वायेज़।
खुदी ही को नहीं समझा मैं अब तक बे.खुदी कैसी॥
न पूछा क़ैस ने लैला ने कुछ मुझको भी पूछा था।
जो आया वां से बस एतना ही पूछा उससे थी कैसी॥

× × ×

ऐ फलक इंगलिश व जरमन हो मुबारक तुझको।
हमको तो उर्दू व हिन्दी में बसर[११] करना है॥

× × ×

---

(१) जादू (२) प्रकृति (३) तमाशे (४) दायरा (५) जरूरी या ठीक (६) शक (७) ख़्याल (८) न ठहरने वाली (९) सही (१०, आपे से न रहना (११) गुज़ारना।

शेरों ने शुतुर[1] बनके उठाया है उनका बार[2]।
बकरी बने हुये हैं तरफदार गाय के ॥
फातेह[3] के सामने नहीं रहते तआसुबात[4]।
आखिर मोतीय[5] होते हैं सब उनकी राय के ॥
अच्छे वही जो शौके इलाही में महो[6] हैं।
तुम कर ही क्या रहे हो बजुज हाय हाय के ॥

× × ×

गफलतों[7] का खूब देखा है तमाशा दहेर[8] में।
मुद्दतें गुजरी हैं मुझको होश मे आये हुए ॥
खानये दिल को मेरे तोड़ा तो क्या ऐसी नमूद[10]।
चश्म[11] बद्दूर आप तो है मसजिदें ढाये हुए ॥
सेठ साहब के यहां शादी है रिन्दों को नवेद[12]।
अच्छे-अच्छे तायफे है शहर मे आये हुए ॥
बाई जी ने सच कहा लाओ कोई ताजा गजल।
गीत क्या गाऊँ ग्रामोफोन में गये हुए ॥
हो चुकी दो दिन को शादाबी[13] उड़ा रंगे बहार।
फूल में सूखे हुये गुंचे[14] है मुरझाये हुए ॥

× × ×

आँख साक़ी की थी रसीली—अब तक मैं बचा था आज पीली ॥
फाड़े मगरिब ने [illegible]बे[15] निसवां[16]—मशरिक़ ने तो आँख अपनी सीली ॥

× × ×

मौज है दिल में मेरे काफ़िया पैमाई[17] की।
जाके गंगा पे कहा करता हूं जैमाई की ॥

---

(१) ऊँट (२) बोझ (३) जीते हुये (४) दिल मे मैल रखना (५) मानने वाले (६) लगे हुये (७) लापरवाही (८) जमाना (९) घर (१०) जाहिर होना (११) आंख (१२) नेवता (१३) खुशी (१४) कली (१५) चादर, परदा या बोरका (१६) औरतें (१७) नाप।

उनसे बोसा[१] मांगता हूं इनसे वोट।
बुत भी मुझसे तंग है और शेख़ भी॥

× × ×

नफ्स[२] से बचने की इन्सां चारा जोई[३] क्या करे।
फितरती रहेबर[४] यही है इसको कोई क्या करे॥

× × ×

शिकम[५] से हजरते इन्सां नेजात[६] पा न सके।
अब अपने पेट मे है पहले मां के पेट में थे॥

× × ×

पड़े हैं बिसतरे[७] ग़म पर न दाना है न पानी है।
नजर तक उठ नहीं सकती यह जोरे नातवानी[८] है॥
चमन का रंग जोशे मौसिमे गुल मे मआजअल्ला।
ख़ोदा हाफिज[९] निगाहों[१०] का हसीनो की जवानी है॥

+ + +

उनको बिस्कुट के लिये सूजी की थैली मिल गई।
कैम्प में गुल मच गया मजनू को लैली मिल गई॥

+ + +

मैं किसी बात का नहीं ख़ूगर[११]—सिर्फ आदत है सांस लेने की॥

+ + +

चुपका खड़ा हूं अपनी तबाही के सामने।
कहना जो है कहूंगा ख़ोदा ही के सामने॥
हूं हर नफस में अपने ख़ोदा ही के सामने।
कैसी दलील[१२] दिल की गवाही के सामने॥

कसीदे से न चलता है न यह दोहे से चलता है।
समझ लो .खूब कारे[1] सलतनत[2] लोहे से चलता है॥

× × ×

गुल[3] हुआ चाहती है शमये[4] हयात[5]—अब .खोदा ही से लौ लगायेंगे॥

× × ×

मुशताक[6] नहीं ज़िन्दगी के—मरना है तो क्या करेंगे जी के॥
पाई न किसी में बू वफा[7] की—चाहा था कि हो रहे किसी के॥
तौहीद[8] का मसला है असली—बाकी हैं शिगूफे हिस्ट्री के॥
रिन्दी किस काम की यह 'अकबर'–मिलते नहीं जब किसी से पीके॥

× × ×

क़ौमी तरक़्क़ियों की ज़माने में धूम है।
मरदाने से ज्यादा ज़नाने में धूम है॥

× × ×

बस इशक व वफा ही की मेरे दिल में ठनी है।
नासेह की मैं सुनता नहीं हो जो शुदनी[9] है॥
पर्दे ने मियां हमको बना रक्खा है अब तक।
बिगड़ी हुई हालत है मगर बात बनी है॥

× × ×

नेक हों मंज़िल[10] तो "अकबर" राहेबद[11] क्यों मांगिये।
दोस्त से मिलने को दुशमन से मदद क्यों मांगिये॥

× × ×

मेरी दुनियां जो थी वह हो चुकी कल एक कहानी थी।
कोई कहता है फानी[12] है मैं कहता हूँ कि फानी थी॥

× × ×

---

(१) काम (२) हुकूमत (३) बुझना (४) चराग (५) ज़िंदिगी (६) चाहने वाले (७) वफाकी .खुशबो या वफादारी (८) एक मानना (९) होने वाली (१०) उतरने की जगह (११) बुरा रास्ता (१२) मिटने वाली।

इस अंजुमन[1] में आकर राहत[2] नसीब किस को।
परवाना भी जलेगा और शमां भी जलेगी॥
दुनियां उभारती है आज अपने आशिक़ों को।
मरजायेंगे तो इनका कल नाम भी न लेगी॥
दुनियां की आरज़ू से ख़ालिक बचाये दिल को।
पैदा हुई ता पीकर ख़ूने जिगर पलेगी॥
इबरतजदा[4] जो दिल हो अरमान इसमें कैसे।
बिजली गिरी हो जिसपर वह शाख़[5] क्या फलेगी॥
जन्नत बना सकेगा हरगिज़ न कोई इसको।
दुनियां योंहीं चली है "अकबर" योंही चलेगी॥

× × ×

जहां तक अपने लिये हों वह मय[6] को मस्ता है।
जो कुछ खोदा के लिये हों वह अस्ल हस्ती है॥
नहीं है नशये वहेदत[7] मे ख़ौफे ज़ुल्फे[8] बुतां।
जो होश में हैं यह ज़ालिम उन्हीं को डस्ती है॥
न भूल शहरे[9] ख़मोशां का नक़शा ऐ कालिज।
ख़्याल रख कि यही हिस्ट्री की बस्ती है॥
बुतों को मुझसे तवक्क़ो[10] है मदद[11] की "अकबर"।
यह सुन लिया हैं कि उर्दू ज़बान सस्ती है॥

× × ×

आपके आरिज़[12] के आगे क्या जमेगा उसका रंग।
गुल जो गुलशन में संवरता है संवरने दीजिये॥
हो चुका बिसमिल[13] कहां तक आफरी[14] हर वार पर।
वाह की ताक़त नहीं अब मुझको मरने दीजिये॥

---

(१) महफिल (२) आराम (३) पैदा करने वाला यानी ईश्वर (४) नसीहत (५) डाली (६) शराब (७) एक दिल होना (८) बाल (९) क़ब्रस्तान (१०) उम्मीद (११) तारीफ (१२) गाल (१३) घायल (१४) शाबाश।

हिन्द में तो मज़हबी हालत है अब नागुफता[१] वेह।
मोलवी की मोलवी से रूबकारी[२] हो गई॥
एक डिनर[३] में खा गया एतना की निकली तन[४] से जान।
ख़िदमते कौमी मे वारे जानिसारी[५] हो गई॥
अपने मीलाने[६] तवीयत पर जो की मैंने नजर।
आप ही अपनी मुझे वे एतवारी[७] हो गई॥
नजद[८] में भी मग़रबी तालीम जारी हो गई।
लैला व मजनू में आख़िर फौजदारी[९] हो गई॥
साजे ऐशे[१०] मग़रवी की दिल ने-वाजी कुछ न पूछ।
मैंने जिस मिस को यहां छेड़ा सितारी हो गई॥

× × ×

मिट गये हैं मगर एक नक़्श[११] अभी वाक़ी है।
आँख मायूस[१२] है शोरीदहसरी[१३] वाकी है॥
आँख से नूर[१४] गया दिल से गया सब्र व करार[१५]।
जान भी जिस्म से रोखसत हो यही वाक़ी है॥
इस मसायब[१६] में भी मायूस नहीं हूँ "अकबर"।
कैद हस्ती से रेहाई[१७] की ख़ुशी वाक़ी है॥

× × ×

जो रहा हूँ फकत अब इन्तेज़ारे मरग में[१८]।
सांस लेना रह गया है जान देने के लिये॥

× × ×

इन आंखों ने बहुत नैरंगियां[१९] फितरत[२०] की देखी हैं।
मेरे दिल ने वहारें आलमें हैरत की देखी हैं॥

---

(१) न कहने लायक (२) सामना या मोक़ाविला (३) अंग्रेजी शब्द है मानी नेवता (४) बदन (५) जान का नेछावर करना ६) झुकाव (७) अपने पर भरोसा न रहा (८) अरब के एक देश का नाम है (९) लड़ाई (१०) आराम (११) निशान (१२) नाउम्मीद (१३) सरदर्द या नाउम्मेदी (१४) रोशनी (१५) आराम (१६) मुसीबतें (१७) छुटकारा (१८) मौत (१९) जादू (२०) प्रकृत।

हर क़दम कहेता है तू आया है जाने के लिये ।
मंज़िले हस्ती नही है दिल लगाने के लिये ॥
क्या मुझे ख़ुश आये यह हैरत सराये वेसबात[1] ।
होश उड़ने के लिये है जान जाने के लिये ॥
दिल ने देखा है बिसाते[2] क़ूवते इद्राक[3] को ।
क्या बढ़े इस बज्म में आंखें उठाने के लिये ॥
ख़ूब उम्मीदें बंधीं लेकिन हुई हिरमां[4] नसीब ।
बदलियां उट्ठी मगर बिजली गिराने के लिये ॥
सांस की तरकीब पर मिट्टी को प्यार आ ही गया ।
ख़ुद हुई क़ैद इसको सीने से लगाने के लिये ॥
जब कहा मैंने भुला दो ग़ैर को हंस कर कहा ।
याद फिर मुझको दिलाना भूलजाने के लिये ॥
दीदाबाजी[5] वह कहां आँखें रहा करती हें बन्द ।
जान ही बाकी नहीं अब दिल लगाने के लिये ॥
मुझको ख़ुश आई है मस्ती शेख़जी को फरव[6] ही ।
में हूं पीने के लिये और वह है खाने के लिये ॥
अल्ला अल्ला के सेवा आख़िर रहा कुछ भी न याद ।
जो किया था याद सब था भूल जाने के लिये ॥
सुर कहां के, साज़ कैसा, कैसी बजमे सामयेन[7] ।
जोश दिल काफी है "अकबर" तान उड़ाने के लिये ॥
इंतेसाब[8] ऐसे कमालों का शिकम[9] से चाहिये ।
जिनको तुम हासिल करो रोटी कमाने के लिये ॥

× × ×

ख़ुद नातवां व मुज़तर[11] औरो के रंग फीके ।
कर रक्खें क्या किसी को क्या हो रहें किसी के ॥

---

(१) न ठहरने वाली (२) बिछौना (३) पाना (४) नाउम्मेदी (५) आँख लड़ाना (६) मोटापा (७) सुनने वाले (८) लगाव (९) पेट (१०) कमजोर (११) बेचारा या कमज़ोर ।

इसका पसीजना[1] है और उसके है बफारे।
इवरोप ने एशिया को इंजन पे रख लिया है॥
इस ख़्वाने[2] मग़रवी से बचता है कौन लेकिन।
हज़रत निगल रहे है बन्दे ने चख लिया है॥

× × ×

क़दम रखता है वह उसमें जिसे जो राह मिलती है।
सदाक़त[3] हो तो हरसू[4] दाद[5] खातिर ख़्वाह[6] मिलती है॥

× × ×

दिल तो है पास मेरे अक़्ल पे क़ाबू न सही।
शोहरते[7] क़ैस तो हासिल है अरस्तू न सही॥

× × ×

ऐ चर्ख़[8] मुझे दैर से अकराह[9] कहां है।
लेकिन बुते ख़ुदवीं[10] की तरफ राह कहां है॥
इसलाम के दावे से मैं बाज आता हूं साहब।
यह कौन बताये तुम्हें अल्लाह कहां है॥
सर्विस में मैं दाखिल नही, हूं कौम का ख़ादिम[11]।
चन्दों की फकत आस[12] है तंख्वाह कहां है॥

× × ×

वह फिल्लारु[13] हैं जिन्हें रू बराह होना है।
वहक[14] गये हैं वह जिनको तवाह[15] होना है॥
जो आज साकित[16] व ख़ायफ[17] हैं साथ ताअत[18] के।
उन्ही को हश्र[19] में सब पर गवाह होना है॥

× × ×

इबतिदा[20] में ग़फलतों[21] पर वाह है—इन्तेहा[22] में अल्ला ही अल्लाह है॥

---

(१) नरम पड़ना (२) दस्तरख्वान (३) सच्चाई (४) हरतरफ (५) तारीफ (६) आप ही आप (७) मशहूर होना (८) आसमान (९) नफरत या घृणा (१०) अपने को देखना (११) नौकर (१२) उम्मीद (१३) सामने (१४) भटक गये हैं (१५) बरबाद (१६) चुप (१७) डरे हुये (१८) इबादत या पूजा (१९) क़यामत के दिन (२०) शुरू (२१) लापरवाही (२२) आखीर ।

ख़िरद[१] ने ज़हेन[२] को हालत तवाह[३] पाई है।
खोदा के नाम में दिल ने पनाह[४] पाई है॥
रहा न होश में तकवा[५] जिधर उठीं आंखें।
वुते हसीं[६] ने ग़जव की निगाह[७] पाई है॥

× × ×

शिगुफता[८] किस क़दर बेला है केतनी मस्त जूही है।
तेरा ही रंग है गुलशन मे ख़ुशबूवों में तू ही है॥
खोदा के शौक़ का जिनपर असर हो दीदनी[९] वह हैं।
खोदा के नाम की हममे तो ख़ाली गुफ़तगू[१०] ही है॥
दिल अपना दोस्त होकर जव देखाता है ग़लत राहें।
तो उनकी आँख को मैं क्या कहूँ वह तो उदू[११] ही है॥

× × ×

हर चन्द वाअसर[१२] है तदवीर वाग़वां भी।
लेकिन वहार भी है एक चीज़, और खेजां भी॥
दौरान[१३] सर की अपने मैं क्या करूं शिकायत।
गर्दिश[१४] मे है ज़मी भी चक्कर में आसमां भी॥

× × ×

थे को भुला के आप फकत हैं को देखिये।
हम का ज़माना अव न रहा मै को देखिये॥

× × ×

ऐसा जो हो तो शायद यह दिल रहे ठिकाने।
दुनियां को मैं न जानू दुनिया मुझे न जाने॥

---

(१) अकिल (२) समझ (३) खराव (४) बचाव (५) डर (६) ख़ूबसूरत (७) आँख (८) खिला हुआ (९) देखने लायक़ (१०) वातचीत (११) दुश्मन (१२) असर रखने वाली (१३) गर्दिश या दौरा (१४) दौरा या चक्कर।

कान में बात बुजुर्गों की समाती ही नहीं।
नाक मे दम है जवानी के खरीदारों से॥

× × ×

रिन्दी मे जरा खौफ बुतों का न करेंगे।
डरना कभी होगा तो खोदा ही से डरेंगे॥
इस हुस्न के आशिक़ को फना हो नहीं सकती।
जो आप पे मरते है वह हरगिज़ न मरेंगे॥

× × ×

हमांतन[१] दर्द का मजमून हुआ जाता है।
हालत ऐसी है कि दिल खून हुआ जाता है॥
इत्तेफाक अमर[२] मुसीबत को मैं समझा था मगर।
अब वह मेरे लिये क़ानून हुआ जाता है॥

× × ×

दिले शिकस्ता[३] मे ईमान रह सके तो रहे।
उजाड़ घर मे यह मेहमान रह सके तो रहे॥
दिले जईफ[४] को चारा[५] नहीं है कुफ्र[६] से अब।
अगर जबान मुसलमान रह सके तो रहे॥

× × ×

सारी दुनियां आप की हामी[७] सही—हर क़दम पर मुझको नाकामी[८] सही॥
नेक नाम इसलाम मे रक्खे खोदा—कुफ्र के हलके[९] में बदनामी सही॥

× × ×

खेल जीने का खेल ही लेंगे—जो गुजरती है झेल ही लेंगे॥

× × ×

कमेटी मे चन्दा दिया कीजिए—तरक़्क़ी के हिज्जे किया कीजिये।

---

(१) पूरा बदन (२) काम (३) टूटा हुआ (४) बूढ़ा या कमजोर (५) इलाज या तदबीर (६) ईश्वर को न मानना (७) मददगार (८) नाउम्मेदी (९) घेरा या दायरा।

वही अलम[१], वही सोजे[२] जिगर, फोग़ां[३] भी वहीं।
वही जमीं का चलन दौरे[४] आसमां भी वही॥
भरा हुआ है मजामीन ग़म से मकतबे[५] दहेर[६]।
फलक[७] का कोर्स[८] वही मेरा इम्तेहां भी वही॥
मैं साफगो[९] वह सितमगर[१०] खोदा ही खैर करे।
मेरी जवां भी वही और बदगुमां[११] भी वही॥
न उनसे मेरी सफाई न उनसे मेरा बिगाड़।
कदूरतें[१२] भी वही और चुनी चुना भी वही॥
हरम[१३] नज़र में है, क़िसमत है दैर[१४] से अटकी।
खोदा का घर भी वही बुत की शोखियां भी वही॥
मजाक़ बज्म अहिब्बा[१५] जो कुछ हो ऐ "अकबर"।
मरी जवां भी वही और मेरा बयां भी वही॥

\+ \+ \+

जिसने दिल को ले लिया है दिल्लगी के वास्ते।
क्या तअज्जुब है कि तफरीहन[१६] हमारी जान ले॥

\+ \+ \+

अलम जईफ[१७] हो लज्जत[१८] अगर अदम हो जाय।
खुशी को मुंह न लगाओ तो ग़म भी कम हो जाय॥

\+ \+ \+

फिलसफा ग़म का जिसे मालूम है—हो मोबारक वह अगर मग़मूम[१९] है॥
कर दिया उसको बसीरत[२०] ने खमोश–अब तो 'अकबर' की नज़र की धूम है॥

\+ \+ \+

घुलाया शेख को उस शोख की शीरीं तकल्लुम[२१] ने।
मिटाया जोहद[२२] की खुशकी को एक मौजे[२३] तबस्सुम ने[२४]॥

---

(१) दुःख (२) जलन (३) शोर (४) गोलहाना या चलना (५) पाठशाला (६) ज़माना (७) आसमान (८) अंग्रेजी शब्द है मानी पाठ (९) साफ कहने वाला (१०) जुलम करने वाला (११) बुरे ख़्याल वाला (१२) दिल की मैल (१३) काबा (१४) मन्दिर (१५) मित्र मंडली (१६) दिल बहलाना (१७) बूढ़ा (१८) मज़ा (१९) रंजीदा (२०) अक़िल मंदी (२१) मीठी बात चीत (२२) पूजापाठ (२३) लहेर (२४) मुसकुराहट।

क्या पूछते हो दिल को मेरे क्या मोकाम[1] है।
फ़ितरत[2] के कारखाने में ग़म का गुदाम है॥

× × ×

अगरचे तकलीफ नेज़ा[3] में हूँ सुकून[4] खातिर भी कम नहीं है।
किसी से मिलने की हैं उम्मीदें किसी से छुटने का ग़म नहीं है॥

× × ×

इतने साथी उठ गये इस बज़्में ग़म अंजाम[5] से।
दिल को शर्म आने लगी अब ख़्वाहिशे[6] आराम से॥

× × ×

कहां दिलों से शरीयत[7] का काम चलता है।
फकत ज़बां से बुज़ुर्गों का नाम चलता है॥
हुई तरीक[8] बुज़ुर्गों की पैरवी मफकूद[9]।
बस उनके नाम पे लठ सुबह व शाम चलता है॥

× × ×

आलमे[10] मानी में हैं एतना ही हममें जोर है।
हाथ में राशा[11] है अब लेकिन कलम में जोर है॥

× × ×

संवरते[12] थे कि एक[13] आलम की आंखें हमको देखेंगी।
ख़बर क्या थी हमारी मजलिसे[14] मातम[15] को देखेंगी॥

+ + +

हुज़ूर से सबब अफसुर्दगी[16] का क्या मै कहूँ।
निशात[17] तबा[18] ग़ुलामी के साथ मुशकिल है॥

---

(१) ठहरने की जगह (२) प्रकृत (३) मरने का वक्त (४) दिल जमई (५) आख़िर (६) चाहना (७) ईश्वर तक पहुँचने का रास्ता (८) तरीका (९) खोया गया (१०) हालत (११) एक बीमारी है जिसमें हाथ पैर कांपने लगता है (१२) सिंगार करना (१३) सारी दुनियां (१४) महफिल (१५) ग़म (१६) मुरझाना (१७) ख़ुशी (१८) तबीयत।

सब्र रह जाता है और इश्क़ की चल जाती है।
जब्त[1] करता हूं मगर आह निकल जाती है॥
कुछ नतीजा न सही इश्क की उम्मीदों का।
दिल तो बढ़ता है तबीयत तो बहेल जाती है॥
शमां[2] के बज़्म[3] मे जलने का जो कुछ हो अंजाम[4]।
मगर इस अज़्म[5] से सांचे मे तो ढल जाती है॥
बादये बोसये[6] अवरू[7] का न कर ग़ैर से जिक्र।
दिल्लगी में कभी तलवार भी चल जाती है॥

+ + +

कितमान[8] राज[9] इश्क मेरे आब[10] व गिल[11] मे है।
ख़मोश है जवान जो कुछ है वह दिल में है॥
अफई[12] ज़ुल्फे[13] मिस[14] का तो सौदा[15] बुरा नहीं।
पेचीदगी[16] जो कुछ है फकत उसके दिल मे है॥

× × ×

जहां में अक़्ल की हसरत[17] निकल नहीं सकती।
ख़ोदाई ज़हेन[18] के सांचे में ढल नहीं सकती॥

+ + +

शुक्र है सुन्नी व शिया का इरादा नेक है।
तर्ज़[19] ताअ़त[20] दो सही तरकीब कालिज एक है॥
घर मे गो यह फर्क ज़ाहिर हो कि हलवा या पोलाव।
ख़्वाने[21] मग़रिब पर मगर दोनो के आगे केक है॥

× × ×

काफी अगरचे लेटने को एक पलङ्ग है।
अंगड़ाइयों को अरसये[22] दुनियां भी तंग[23] है॥

---

(१) बरदाश्त (२) मोमबत्ती या रोशनी (३) महफिल (४) नतीजा (५) इरादा (६) चुम्मां (७) भंव (८) छिपा हुआ (९) भेद (१०) पानी (११) मिट्टी (१२) काला सांप (१३) बाल (१४) अंग्रेजी शब्द है मानी कुंवारी (१५) पागलपन (१६) उलझाव (१७) अरमान (१८) समझ (१९) ढंग (२०) पूजा करना (२१ दस्तरख़्वान (२२) दायरा या घेरा (२३) छोटा।

ंहां सबात[1] का इसको खेयाल होता है।
ज़माना माज़ी[2] ही होने को हाल[3] होता है॥

फरोग़[4] बदर[5] न बाक़ी रहा न बुत का शबाब[6]।
ज़वाल[7] ही के लिये हर कमाल[8] होता है॥

मैं चाहता हूं कि बस एक ही खेयाल रहे।
मगर खेयाल से पैदा खेयाल होता है॥

बहुत पसन्द है मुझको खमोशी व इज़्लत[9]।
दिल अपना होता है अपना ख़ेयाल होता है॥

वह तोड़ते हैं तो कलियां शिगुफ्ता[10] होती हैं।
वह रौंदते[11] हैं तो सब्ज़ा[12] नेहाल[13] होता है॥

सोसायटी से अलग हो तो ज़िन्दगी दुश्वार[14]।
अगर मिलूं तो नतीजा मलाल होता है॥

पसन्द चश्म का हरगिज़ कुछ एतबार नहीं।
बस एक करिश्मा[15] वहेम व खेयाल होता है॥

अगरचे आह से तकलीफ दिल को हो लेकिन।
दवाये नफस में कुछ एतेदाल होता है॥

निगाहे लुत्फ बुतां मुतमइन[16] नहीं करती।
फरेब[17] ही का मुझे ऐहतेमाल[18] होता है॥

खोदा का शौक हो जिसको मैं उसका शाएक[19] हूं।
खोदा का यों तो हर एक को ख़ेयाल होता है॥

अगरचे रीश[20] मुंड़ाने से है सफाइयें रुख़[21]।
गुनाहगार मगर बाल बाल होता है॥

\+ \+ \+

इबतिदा[22] गर्मी की है अप्रैल से—अब मैं घबराने लगा खपरैल से॥

---

(१) मज़बूती (२) गुज़रा हुआ (३) मौजूद (४) रोशनी (५) चौदस का चांद (६) जवानी (७) बरबाद होना (८) उठना (९) पूजे के वासते कोने में बैठना (१०) खिलना (११) पैर से मसलना (१२) हरियाली (१३) खुश (१४) मुशकिल (१५) तमाशा या नाज़ व नख़रा (१६) इतमीनान दिलाना (१७) धोखा (१८) खेयाल या बरदाशत करना (१९) चाहने वाला (२०) डाढ़ी (२१) चेहरा (२२) शुरू।

दूसरों पर नोकताचीनी[1] का तुझे क्यों शौक़ है।
अपनी-अपनी ख़ू[2] है "अकबर" अपना-अपना जौक[3] है॥

+ + +

फंसा हूं जिन्दिगी में सांस रोके रुक नहीं सकती।
मगर दुनियां की खातिर मेरी गरदन झुक नहीं सकती॥

+ + +

हसी[4] जैसे हो तुम योंही जो खुश[5] एखलाक हो जाते।
जमाना मदद[6] करता शोहरये आफाक़[7] हो जाते॥
हवास व होश रोखसत[8] हो चुके दम भी निकल जाता।
तो फितरत के जो कर्ज है वह सब बेबाक़[9] हो जाते॥

+ + +

इन बुतों के बाब[10] में एतनी ही मेरी अर्ज़[11] है।
कुफ्र[12] है उनकी परस्तिश[13] प्यार करना फर्ज़[14] है॥

+ + +

सबह[15] संदल[16] का है मगर अफसोस—दब गई बू फ्रेंच पालिश से॥

+ + +

अफ़वाह[17] है कि "अकबर" बेहोश हो गया है।
यह तो गलत है लेकिन खामोश हो गया है॥

+ + +

सेठ जी को फिक्र थी एक एक के दस दस कीजिये।
मौत आ पहुंची कि हज़रत जान वापिस कीजिये॥
मातमे शामे अवध में मैं तो अब मसरूफ[18] हूं।
आप ही नज्जारये सुबहे बनारस कीजिये॥

---

(१) बारीकी ढूंढ़ना या बुराई निकालना (२) आदत (३) शौक़ (४) खूबसूरत (५) अच्छे तरीके वाला (६) नारो (७) दुनियां में मशहूर (८) छुट्टी (९) कुछ बाकी न रहे (१०) दरवाजा (११) कहना (१२) जो ईश्वर को न माने (१३) जरूरी या मानना (१५) सुमिरनी जो माले मे होती है (१७) चन्दन (१७) झूठी खबर (१८) लगा हुआ (१९) देखना।

अक्ल ने अच्छी कही कल लाला मजलिस राय से।
झुक के चलना चाहिये हम सब को वाइसराय से॥
शेर कैसा ही हो लेकिन काफिये इसके है खूब।
कौन ऐसा है कि जो हो मोखतलिफ[१] इस राय से॥

× × ×

बंगलये जाना सवा दो कोस है—चल नहीं सकता बड़ा अफसोस है॥

× × ×

ईफान[२] ज़ूफेगन[३] है शरीयत की आड़ से।
आतश[४] फिशां[५] ज़मीन दबी है पहाड़ से॥

× ×

तदबीर बसर[६] खूब उलट फेर करेगी–रफतारे[७]फेना[८] सबको मगर ज़ेर[९]करेगी॥

× × ×

ज़िन्दगी से मेरा भाई सेर[१०] है— फिर भी खोराक उसकी ढाई सेर है॥

× × ×

यादे हक़[११]दिल से दूर कर न सके–मुझसे यह बुत गुरूर[१२] कर न सके॥
मुझको रंजे शिकस्ता[१३] शीशये दिल–उनके गुस्से को चूर कर न सके॥
मुझको तो बस में कर लिया बेशक–हक को राज़ी हुज़ूर कर न सके॥

× × ×

फैलाइये न पाव को ज़ंजीर के लिये।
दुनियां से हाथ उठाइए तक़बीर[१४] के लिये॥

× × ×

आगया हूँ तंग सरजन[१५] से तबीब[१६] और वैद से।
देखिये कब हो रेहाई ज़िन्दगी की कैद से॥

× × ×

---

(१) खिलाफ (२) ईश्वर को पहचानना (३) रोशनी बरसाना (४) झाड़ना (६) आदमी (७) चार (८) मिटाना (९) नीचा (१०) आसूदा या रंजीदा (११) परमेश्वर का ध्यान (१२) घमंड (१३) टूटा हुआ (१४) ईश्वर के लिये (१५) अंग्रेजी शब्द है मानी चीड़ फाड़ करने वाला (१६) हकीम (१७) छुटकारा।